पवित्र *आत्मा* के वरदान

आशीष रायचूर

केवल विनामूल्य वितरण के लिए

ऑल पीपल्स चर्च अँड वर्ल्ड आउटरीच, बैंगलोर, भारत द्वारा मुद्रित और वितरित।
पहला हिंदी संस्करण मुद्रितः जून 2019.

सम्पर्क

All Peoples Church & World Outreach, # 319, 2nd Floor,
7th Main, HRBR Layout, 2nd Block, Kalyan Nagar,
Bangalore 560 043, Karnataka, INDIA.
Phone: +91-80-25452617
Email: bookrequest@apcwo.org
Website: apcwo.org

अन्यथा सूचित न हो तो, सभी पवित्र शास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबल, बाइबल सोसायटी इंडिया संस्करण से लिया जाता है।

आर्थिक साझेदारी

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों, सहभागियों और मित्रों की आर्थिक सहायता की वजह से सम्भव हुआ है। यदि आपने इस विनामूल्य प्रकाशन के माध्यम से आशीष पाई है, तो हम आपको ऑल पीपल्स चर्च के विनामूल्य प्रकाशनों के मुद्रण और वितरण में सहायता के लिए आर्थिक रूप से योगदान करने के लिए आमंत्रित करते हैं। कृपया **apcwo.org/give** पर जाएं या अपना योगदान कैसे करें यह देखने हेतु इस पुस्तक के पीछे ऑल पीपल्स चर्च के साथ प्रतिभागी पृष्ठ देखें। धन्यवाद!

डाक सूची

यदि आप हमारी नई पुस्तके पाने के लिए अपना नाम हमारी डाक सूची में चाहते हैं, तो कृपया ईमेल द्वारा अपना सही पता हमें भेजें : bookrequest@apcwo.org

भारत में विनामूल्य बल्क ऑर्डर

आपकी स्थानीय कलीसिया में, बायबल अध्ययन समूह, बाइबल कॉलेज, सेमिनारों, सभाओं, पुस्तकालयों, व्यापार केन्द्रों में वितरण हेतू हम आनंद के साथ हमारी पुस्तकें विनामूल्य भेजना चाहते हैं। कृपया ईमेल द्वारा पुस्तकों की संख्या और पाने वालों के पते भेजें : bookrequest@apcwo.org

(Hindi book - Gifts of the Holy Spirit)

पवित्र *आत्मा* के वरदान

आभारोक्ति

इस पुस्तक में प्रस्तुत अंतर्दृष्टियां मेरे अपने व्यक्तिगत अनुभव, अध्ययन और परमेश्वर के साथ मेरी यात्रा से प्राप्त हुई हैं, उसी तरह जो मैंने परमेश्वर के कई सेवकों से उनकी पुस्तकों, उपदेशों के माध्यम से और उनके जीवनों और सेवकाइयों का अवलोकन करने के द्वारा सीखी हैं। परमेश्वर के सेवकों में से प्रत्येक के प्रति मैं कृतज्ञ हूं, उनमें से कइयों से मैं कभी नहीं मिल पाया। मैं ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर के पासबान और सेवकों की टीम का अत्यंत धन्यवादी हूं कि वे आत्मा की बातों में निरंतर आगे बढ़ते हैं, खतरों को मोल लेते हैं और हमारी यात्रा मे आगे बढ़ते जाते हैं। इसके अलावा, सप्ताह अंत की शालाएं अध्ययन का एक उत्तम स्थान है, जहां हम परमेश्वर के आत्मा के पास जो कुछ है उस विषय में आदान–प्रदान करते हैं, चर्चा करते हैं और उनमें कदम बढ़ाते हैं। इसलिए, जिन लोगों ने सप्ताह अंत की शालाओं में भाग लिया है (और भाग लेते रहेंगे), उन्हें हम "धन्यवाद" कहते हैं कि उन्होंने एक साथ बढ़ने में हमारी सहायता की। सभी बातों में, मसीह को महिमा मिले और उसकी कलीसिया की उन्नति हो।

पासबानों और अगुवों के लिए एक शब्द

प्रिय पास्टर/मसीही अगुवा,

प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा को भेजा कि वह कलीसिया के द्वारा और प्रत्येक विश्वासी के द्वारा उसका पूर्ण प्रतिनिधित्व करे। वह चाहता है कि प्रत्येक विश्वासी के द्वारा उसकी महिमा प्रगट हो। पवित्र आत्मा यहां पर यीशु मसीह की महिमा करने के लिए है और उत्सुकतापूर्वक चाहता है कि अपने वरदानों के द्वारा प्रत्येक विश्वासी के माध्यम से अपने आपको प्रगट करे। वही पवित्र आत्मा जो फलों को उत्पन्न करता है, अपने आपको वरदानों के द्वारा प्रगट करना चाहता है। आत्मा के वरदान विश्वासियों के हत्यारों की संदूक है और उसके बिना, अधिकतर लोग परमेश्वर के राज्य के लिए प्रभावहीन हैं। कृपया इस पुस्तक का उपयोग आत्मा की सामर्थ में और आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरणों में परमेश्वर के लोगों को प्रशिक्षित करने और सुसज्जित करने के लिए करें।

उस स्थानीय कलीसियाई समुदाय की कल्पना करें जहां पर प्रत्येक विश्वासी को पवित्र आत्मा के वरदानों को प्रगट करने हेतु प्रशिक्षित और सुसज्जित किया जा रहा है ताकि जीवनों को प्रभावित करें। विश्वासियों के ऐसे समुदाय में और उसके माध्यम से सचमुच मसीह की महिमा होगी और उसे गौरव प्राप्त होगा! प्रत्येक स्थानीय कलीसिया ऐसा समुदाय बनने पाए! आईये हम यह सफर एक साथ तय करें!

विषयसूचि

	परिचय	01
1.	अलौकिक सेवकाई	04
2.	पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व का परिचय	24
3.	पवित्र आत्मा में बपतिस्मा	35
4.	आत्मिक वरदानों के विषय में	71
5.	परमेश्वर का प्रेम, हमारी प्रेरणा	110
6.	पवित्र आत्मा वरदानों को प्रगट करना कैसे आरम्भ करता है	119
7.	नाना प्रकार की भाषाएं	138
8.	भाषाओं का अर्थ बताना	150
9.	भविष्यद्वाणी	154
10.	बुद्धि का वचन	174
11.	ज्ञान का वचन	183
12.	आत्माओं की परख	195
13.	चंगाई के वरदान	206
14.	सामर्थ के काम	216
15.	विश्वास का वरदान	223
16.	आत्मा के वरदानों में बढ़ते जाना	227
17.	वरदानों को प्रगट करने हेतु उचित नींव	235

परिचय

यह पुस्तक सरल और आसान बनाई गई है ताकि विश्वासियों को यह समझने और सीखने हेतु प्रशिक्षण पुस्तिका के रूप में इसका उपयोग किया जाए कि आत्मा के वरदानों को प्रगट करने हेतु पवित्र आत्मा के साथ कैसे आगे बढ़ें। लक्ष्य विश्वासियों को आगे बढ़ते हुए और नियमित रूप से, किसी भी स्थान में और किसी भी समय आत्मा के वरदानों को प्रगट करते हुए देखना है, उस समय जब प्रभु का आत्मा उनके द्वारा कार्य करता है।

लम्बे समय तक, सम्भवतः उचित सुसज्जिकरण के अभाव में, आत्मा के वरदानों के विषय में विश्वासियों का गलत दृष्टिकोण रहा है। हमने कलीसियाई स्वभाव में इस अपेक्षा के साथ भाग लिया कि परमेश्वर के स्त्री और पुरुष जो मंच पर हैं आत्मा के एक या दो वरदानों को प्रगट करें, और हम प्राप्त कर्ता या दर्शकों और होने वाली बातों के प्रशंसकों के रूप में खड़े रहे। हमने पवित्र आत्मा के वरदानों की अभिव्यक्ति को विशेष कलीसियाई सभाओं के लिए और विशेष अभिषिक्त लोगों के द्वारा होने के लिए छोड़ दिया। अर्थात यह परमेश्वर का उद्देश्य नहीं है।

प्रभु की इच्छा सभी विश्वासियों के लिए है कि वे जो वह है उसकी गवाही देने हेतु पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण हों और उस सामर्थ को प्रगट करें। हमें हर स्थान में और हर समय उसके गवाह बनना है। चाहे विद्यार्थी हो, ग्रहणी, उद्यमी, खिलाड़ी, डॉक्टर, इंजिनियर, वैज्ञानिक, वकील, सरकारी अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, जो भी हो – हमारा पेशा चाहे जो हो – हम जहां पर हैं वहीं यीशु मसीह की गवाही देने हेतु आत्मा के वरदानों को प्रगट कर सकते हैं। आत्मा के वरदान हमारे "औजारों की संदूक" के समान हैं, जिनमें हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्रगट करने हेतु साधन दिए गए हैं, ताकि जहां कहीं हम जाएं, प्रभु

यीशु की महिमा हो, लोगों के जीवन छू लिए जाएं, उनमें सेवा प्राप्त हो और उनमें बदलाव आए।

पवित्र आत्मा अपनी इच्छा के अनुसार इन वरदानों को बांटता है और प्रगट करता है। परंतु उसके सहकर्मी होने के नाते, हमें इन वरदानों की तीव्र लालसा करना है और सीखना है कि हम इन वरदानों के प्रति कैसे समर्पित हों, कैसे सहकार्य करें, और उन्हें उचित रीति से कैसे प्रगट करें, ताकि लोग अपनी इच्छा के अनुसार सेवा प्राप्त कर सकें और यीशु की महिमा हो। अक्सर, क्योंकि हम नहीं जानते कि पवित्र आत्मा के साथ कैसे सहयोग करना है, हमारे द्वारा होने वाली उसकी अभिव्यक्तियों को हम या तो बुझा देते हैं, उसे दुखी करते हैं, या उसका विरोध करते हैं।

इस प्रशिक्षण पुस्तिका का उपयोग हमारी सप्ताह अंत की पाठशालाओं, मसीही अगुवों की सभाओ, और हमारे बाइबल कॉलेज के व्याख्यानों में भाग लेने वालों को सुसज्जित करने हेतु किया जाता है। **सुसज्जित करना शिक्षा, प्रत्याक्षिक, उत्प्रेरण और प्रतिदान (इम्पार्टेशन) के सहयोग से होता है।** प्रशिक्षण के दौरान, हमारी टीमें पवित्र आत्मा के वरदानों के कार्य की वास्तविक जीवन की कहानियां बताते हैं और ये वरदान कैसे प्रगट होते हैं इसका प्रत्याक्षिक बताने हेतु पवित्र आत्मा के वरदानों में कार्य करते हैं। हमारे पास व्यक्तिगत और सामुहिक उत्प्रेरण भी हैं ताकि लोग आत्मा के वरदानों में कार्य करना आरम्भ करें। हम प्रतिदान के लिए प्रार्थना करते हैं ताकि उसमें भाग लेने वालों को आत्मा की सामर्थ अधिकाई से प्राप्त हो सके और वे आत्मा के प्रकटीकरणों में और आत्मा की सामर्थ के प्रदर्शनों में ऊंचे स्तरों तक जाएं। हम विश्वास करते हैं कि आप इस प्रशिक्षण पुस्तिका का उपयोग न केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए करेंगे, परंतु अन्य कई लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए भी करेंगे, चाहे छोटे समूहों

में, स्थानीय कलीसियाओं में हों, सम्मेलनों, बाइबल कॉलेजों, सेमिनरियों मे हो या दूसरों को तैयार करने के अन्य अवसरों में।

पवित्र आत्मा अनंत है और उसकी अभिव्यक्तियों की विविधताएं भी असीमित हैं। पवित्र आत्मा कई तरह से कार्य करेगा और उसकी अभिव्यक्तियां परिभाषाओं के परे है और उसके परिचालनों को कोई किसी पुस्तक या प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीमित नहीं कर सकता। हम उसे बिल्कुल पूरा नहीं जानते। हम निरंतर सीख रहे हैं, बढ़ते जा रहे हैं और आत्मा की बातों के उच्च क्षेत्रों में उन्नति करते जा रहे हैं। **इस पुस्तक में जो कुछ प्रस्तुत किया गया है, वह कार्य जारी है।** परमेश्वर के वचन से जैसे जैसे हम प्रकाशन प्राप्त करते हैं, आत्मा से अंतर्दृष्टियां पाते हैं, आत्मा के द्वारा सेवा करते समय जो व्यवहारिक सबक हम सीखते हैं और एक दूसरे के माध्यम से आत्मा कैसे कार्य करता है इसका जब हम अवलोकन करते हैं, तब हम सीखते जाते हैं।

हम आत्मा की बातों के उच्च क्षेत्रों में बढ़ते रहें, जीवनों को प्रभावित करते रहें और यीशु मसीह को महिमा देते रहें।

परमेश्वर की आशीष आप पर हो!

आशीष रायचूर

1

अलौकिक सेवकाई

आत्मा के वरदान विश्वासी के द्वारा पवित्र आत्मा का अलौकिक कार्य हैं। वे अलौकिक कार्यों के माध्यम से पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व, उपस्थिति और सामर्थ के प्रकटीकरण या प्रगट करना है। लोग परमेश्वर को "देखना" चाहते हैं। वे परमेश्वर की सच्चाई, सामर्थ और प्रेम को जानने हेतु उसके साथ भेंट करना चाहते हैं। परमेश्वर अपने आपको प्रगट करने की इच्छा रखता है। वह अपने आपको 'प्रकाशित करने' की इच्छा रखता है। ऐसा करने की वह इच्छा रखता है इसका एक तरीका है विश्वासी के द्वारा 'आत्मा के प्रकटीकरणों के माध्यम से।

विश्वासियों के नाते, हमें प्रभु के कार्य को देखने हेतु पारदर्शी रहना है, अध्ययन करना और उत्सुकता के साथ उसकी इच्छा रखना है, जो कि अर्थात, अलौकिक कार्य हैं। कभी–कभी हम धार्मिकता के भाव से यह कहने की प्रवृत्ति रखते हैं कि हम "प्रभु को खोज रहे हैं" परंतु हम उसके "हाथ के खोजी" नहीं हैं। ज़रूरी नहीं है कि यह बाइबल का दृष्टिकोण हो। बाइबल हमें प्रोत्साहन देती है कि हम प्रभु की खोज करें और उसके बल को भी खोजें। पवित्र शास्त्र हमें प्रोत्साहन देता है कि हम उसके अद्‌भुत कामों का अध्ययन करें। भजन की पुस्तक से इन अनुच्छेदों पर विचार करें :

भजन 105:1–4

1 यहोवा का धन्यवाद करो, उससे प्रार्थना करो, देश देश के लोगों में उसके कामों का प्रचार करो!
2 उसके लिये गीत गाओ, उसके लिये भजन गाओ, उसके सब आश्चर्यकर्मों पर ध्यान करो!
3 उसके पवित्र नाम की बड़ाई करो; यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो!

4 यहोवा और उसकी सामर्थ को खोजो, उसके दर्शन के लगातर खोजी बने रहो!

हमारे धन्यवाद देने के अलावा और प्रभु के लिए गाने के अलावा, हमें उसके कार्यों के विषय में बताना है और उसके अद्‌भुत कार्यों का बखान करना है। प्रभु की हमारी खोज में, हमें प्रोत्साहन दिया गया है कि हम उसके मुख अर्थात दर्शन और बल के खोजी बनें।

भजन 111:1–3
1 याह की स्तुति करो। मैं सीधे लोगों की गोष्ठी में और मण्डली में भी सम्पूर्ण मन से यहोवा का धन्यवाद करूंगा।
2 यहोवा के काम बड़े हैं, जितने उनसे प्रसन्न रहते हैं, वे उन पर ध्यान लगाते हैं।
3 उसके काम विभवमय और ऐश्वर्यमय होते हैं, और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा।

प्रभु के कार्य – वह सब और प्रत्येक कार्य जो वह करता है – महान हैं, जिनमें आश्चर्चकर्म, आत्मा के वरदान, चंगाइयां, चिन्ह और सामर्थ के काम आदि का समावेश है। जो परमेश्वर के सामर्थी कामों का आनंद उठाते हैं, वे उनका अध्ययन करते हैं। भजनसंहिता 111:2 में "ध्यान लगाते हैं" यह शब्द न केवल तलाशने, खोजने, और पूछताछ करने की कल्पना रखता है, बल्कि मांगने, अनुसरण करने, पीछा करने और बार–बार मांगने का अर्थ भी रखता है। जो परमेश्वर के कामों का आनंद उठाते हैं, वे उसके कामों का अध्ययन करते हैं और उसके कामों का अनुसरण भी करते हैं। वे और पाना चाहते हैं! भजन 111:2–3 के अनुसार, उसके कार्य, उसकी महानता, प्रताप, आदर और गौरव को प्रगट करते हैं!

दाऊद ने परमेश्वर के लिए अपनी लालसा और प्यास व्यक्त की, तथा परमेश्वर की सामर्थ और महिमा देखने की अपनी इच्छा भी प्रगट की। *"हे परमेश्वर, तू मेरा ईश्वर है, मैं तुझे यत्न से ढूंढूंगा; सूखी और*

निर्जल ऊसर भूमि पर, मेरा मन तेरा प्यासा है, मेरा शरीर तेरा अति अभिलाषी है। इस प्रकार से मैंने पवित्रस्थान में तुझ पर दृष्टि की, कि तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं" (भजनसंहिता 63:1–2)। हमें और अधिकाई से उसे चाहना है तथा हमारे जीवन में उसकी सामर्थ के कार्य की अधिकाई की चाह रखना है।

इस अध्याय में हम कुछ सच्चाइयों का अन्वेषण करते हैं ताकि अलौकिक के लिए हमारी इच्छा को प्रोत्साहन प्राप्त हो।

यीशु की सेवकाई

पवित्र शास्त्र से हम समझते हैं कि प्रभु यीशु मसीह यद्यपि परमेश्वर था, फिर भी वह मनुष्य के रूप में पृथ्वी पर चला, उसने अपने आपको मनुष्य की सीमाओं से सीमित कर दिया। जब उसने अपनी सेवकाई आरम्भ की, तब उसने घोषणा की कि प्रभु का आत्मा उस पर है और उसे प्रचार करने, चंगाई देने और छुटकारा प्रदान करने के लिए अभिषेक किया गया है (लूका 4:18–19)। अपनी सेवकाई करते समय उसने यह कबूल किया कि जो कुछ भी वह कर रहा था, पवित्र आत्मा की सामर्थ से था (मत्ती 12:28)। पवित्र शास्त्र भी कई स्थानों में इस बात को प्रमाणित करता है कि प्रभु यीशु पवित्र आत्मा की सामर्थ से सेवा करता था :

लूका 4:14
फिर यीशु आत्मा की सामर्थ से भरा हुआ गलील को लौटा, और उसकी चर्चा आसपास के सारे देश में फैल गई।

प्रेरितों के काम 10:38
कि परमेश्वर ने किस रीति से यीशु नासरी को पवित्र आत्मा और सामर्थ से अभिषेक किया। वह भलाई करता, और सब को जो शैतान के सताए हुए थे, अच्छा करता फिरा; क्योंकि परमेश्वर उसके साथ था।

इब्रानियों 2:3–4

3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ?

4 और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

उद्धार का यह बड़ा संदेश, जिसकी घोषणा प्रभु यीशु ने करना आरम्भ किया, उसके साथ चिन्ह, चमत्कार, आश्चर्यकर्म, और पवित्र आत्मा के वरदानों का प्रदर्शन था। स्वयं प्रभ यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा की सामर्थ से सेवा की और आत्मा के वरदानों को प्रगट किया।

आप सामर्थ पाओगे

प्रभु यीशु ने वचन दिया कि जो उस पर विश्वास करते हैं, वे सामर्थ पाएंगे। उसने कहा कि उनमें से जीवन जल की नदियां बह निकलेगी, जो पवित्र आत्मा के कार्य का उल्लेख करता था (यूहन्ना 7:37–39)। उसने कहा कि वे उन कामों को करेंगे जो उसने किए थे और उनसे भी बड़े काम क्योंकि वह पिता के पास जाने वाला था (यूहन्ना 14:12)। पिता के पास जाने के बाद, जो महत्वपूर्ण काम उसने किया वह था पवित्र आत्मा को भेजना (प्रेरितों के काम 2:33)। उसने कहा कि वह अपने अनुयायियों को पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा देगा, ताकि वे उसके गवाह बनने हेतु स्वर्ग से सामर्थ पा सकें (प्रेरितों के काम 15:, 8; लूका 24:49)।

उसे दूसरों को दें

प्रभु यीशु ने अपने पहले चेलों को आज्ञा दी थी कि वे उन बातों को दूसरों तक पहुंचाएं, वह सबकुछ जो उसने उन्हें सिखाया था (मत्ती 28:18–20) जिसमें अलौकिक सेवकाई शामिल होगी (मत्ती 10:7–8)।

अतः हम यह आश्वासन पा सकते हैं कि बारह चेलों ने और पहले चेलों ने प्रारम्भिक कलीसिया के नए चेलों को उन सारी बातों को सिखाया, प्रशिक्षण दिया और उन्हें लोगों तक पहुंचाया जिनका उन्होंने पालन किया था और चंगाइयों, छुटकारे के कामों, चिन्हों, अद्‌भुत कार्यों और सामर्थ के कामों में व्यक्तिगत रीति से कार्य किया था।

प्रारम्भिक कलीसिया

प्रेरितों के कामों की पुस्तक को पढ़ने के द्वारा, हम देखते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन से आरम्भ कर उसके बाद भी प्रारम्भिक कलीसिया पवित्र आत्मा की सामर्थ में चलती रही। उन्होंने अलौकिक बातों को प्रगट किया और उनका अनुभव पाया। मात्र बारह प्रेरितों ने ही नहीं, परंतु अन्य चेलों ने भी अपने जीवनों के द्वारा चिन्ह, चमत्कार और सामर्थ के काम प्रगट किए।

प्रेरित

प्रेरितों के काम 4:33
और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।

स्तिफनुस, यरूशलेम की कलीसिया में सहायक

प्रेरितों के काम 6:8
स्तिफनुस अनुग्रह और सामर्थ से परिपूर्ण होकर लोगों में बड़े बड़े अद्‌भुत काम और चिन्ह दिखाया करता था।

फिलिप्पुस, यरूशलेम की कलीसिया में सहायक

प्रेरितों के काम 8:5–8
5 और फिलिप्पुस सामरिया नगर में जाकर लोगों में मसीह का प्रचार करने लगा।
6 और जो बातें फिलिप्पुस ने कहीं उन्हें लोगों ने सुनकर, और जो चिन्ह वह दिखाता था उन्हें देख देखकर, एक चित्त होकर मन लगाया।

7 क्योंकि बहुतों में से अशुद्ध आत्माएं बड़े शब्द से चिल्लाती हुई निकल गईं, और बहुत से लकवे के मारे हुए और लंगड़े भी अच्छे किए गए।
8 और उस नगर में बड़ा आनंद हुआ।

अज्ञात शिष्य

प्रेरितों के काम 8:3–4
3 शाऊल कलीसिया को उजाड़ रहा था; और घर घर घुसकर पुरुषों और स्त्रियों को घसीट घसीटकर बन्दीगृह में डालता था।
4 जो तित्तर बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।

प्रेरितों के काम 11:19–21
19 इसलिए जो लोग उस क्लेश के मारे जो स्तिफनुस के कारण पड़ा था, तित्तर बित्तर हो गए थे, वे फिरते फिरते फीनीके और कुप्रुस और अन्ताकिया में पहुंचे; परंतु वे यहूदियों को छोड़ किसी और को वचन न सुनाते थे।
20 परंतु उनमें से कई कुप्रुसी और कुरेनी थे, जो अन्ताकिया में आकर यूनानियों को भी प्रभु यीशु के सुसमाचार की बातें सुनाने लगे।
21 और प्रभु का हाथ उन पर था, और बहुत लोग विश्वास करके प्रभु की ओर फिरे।

पहले तीस वर्षों तक या उससे अधिक समय तक, प्रारम्भिक कलीसिया के पास केवल पुराने नियम का पवित्र शास्त्र और मौखिक स्वरूप में सुसमाचार की पुस्तकें (जैसा कि हम जानते हैं) थीं जो उन्हें उन प्रेरितों द्वारा सिखाई गई थीं जो यीशु के साथ चलते थे। धीरे–धीरे सुसमाचार की पुस्तकें और पत्रियां लिखी गईं और विभिन्न कलीसियाओं को सौंप दी गईं। उनके पास वे सारे संसाधन, प्रशिक्षण, और सामग्रियां नहीं थीं जो आज हमारे पास उपलब्ध हैं। और फिर भी अलौकिक सेवकाई सामान्य थी – प्रत्येक विश्वासी आत्मा की सामर्थ में कार्य करने हेतु योग्य प्रतीत होता था।

आज के विश्वासी

वह प्रत्येक बात जो प्रभु यीशु ने विश्वासियों के विषय में कही, कलीसियाई युग के सभी विश्वासियों के लिए थी। उसने अपनी प्रतिज्ञाओं के लिए सौ वर्षों की अंतिम तिथी निर्धारित नहीं की।

प्रभु के गवाह बनने हेतु पवित्र आत्मा की प्रतिज्ञा आज हमारे लिए है (प्रेरितों के काम 1:8, प्रेरितों के काम 2:38–39)।

यह प्रतिज्ञा कि जो उसमें विश्वास करते हैं, उन कामों को करेंगे जो उसने किए और उनसे भी बड़े काम करेंगे, आज भी सत्य है (यूहन्ना 14:12)। उस पर विश्वास करने वालों में जो चिन्ह होने वाले थे – दुष्टात्माओं को निकालना, नई भाषाओं में बोलना, विषैले जीवजंतुओं के काटने से सुरक्षा, गलती से घातक पदार्थों को खा लेने से सुरक्षा, बीमारों को चंगा करने हेतु उन पर हाथ रखना – ये सारी बातें आज उचित हैं और घटित हो रही है (मरकुस 16:17–18)।

आत्मा के अलौकिक प्रकटीकरण (1 कुरिन्थियों 12:7–11 में आत्मा के वरदान) आज की कलीसिया में भी हैं। यदि कोई बीमार हो तो वह प्राचीन को बुलाए ताकि वह उसके सिर पर तेल लगाकर प्रभु के नाम में उसे अभिषेक करे और उसके लिए प्रार्थना करे यह आज्ञा आज भी कलीसिया में है (याकूब 5:14–15)।

हम ऐसा कोई चिन्ह नहीं देख पाते जिसमें यीशु ने या उसके प्रेरितों में से किसी ने कहा हो कि ये अलौकिक कार्य वापस ले लिए गए हैं। इसलिए आज विश्वासी, प्रभु यीशु मसीह के नाम में और पवित्र आत्मा की सामर्थ के द्वारा अलौकिक कामों को पाने और उन्हें प्रगट करने की अपेक्षा कर सकता है।

जब सर्वसिद्ध आएगा

एक अनुच्छेद जिसका उपयोग कभी–कभी अलौकिक बातों की समाप्ति तिथी की कल्पना को समर्थन देने के लिए किया जाता है 1 कुरिन्थियों 13 में पाया जाता है।

हम उसे देखें :

1 कुरिन्थियों 13:9–13
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी।
10 परंतु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परंतु जब सियाना हो गया, तो बालकों की बातें छोड़ दीं।
12 अब हमें दर्पण में धुंधला सा दिखाई देता है; परंतु उस समय हम आमने सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परंतु उस समय ऐसी पूरी रीति से पहचानूंगा, जैसा मैं पहचाना गया हूं।
13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सब से बड़ा प्रेम है।

1 कुरिन्थियों के वचन 9 में, पौलुस हमें बताता है कि हम मात्र "अधुरी" भविष्यद्वाणी करते हैं। परमेश्वर हम पर हर एक बात प्रगट नहीं करता। हम आंशिक रूप से भविष्यद्वाणी करते हैं या परमेश्वर द्वारा हम पर प्रगट की गई जानकारी का एक भाग। यह प्रकाशन के सभी वरदानों और आत्मा के सभी वरदानों के कार्य के विषय में सच है। आत्मा का प्रत्येक वरदान यह प्रकटीकरण हमारे असीमित परमेश्वर के और जो कुछ वह है उसके अंश या भाग की मात्र एक अभिव्यक्ति है।

उसके बाद 1 कुरिन्थियों 13:10 में, पौलुस हमें बताता है कि जो अधूरा है, अर्थात आत्मा के वरदान, वे तब समाप्त हो जाएंगे जब "सर्वसिद्ध आ जाएगा।" कुछ लोगों ने "जो सर्वसिद्ध है" का उपयोग

बाइबल का, सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र का उल्लेख करने हेतु किया है। पवित्र शास्त्र सिद्ध है इस अर्थ से कि पवित्र शास्त्र (बाइबल) अचूक, परमेश्वर का ईश्वरप्रेरित वचन है। परंतु, 1 कुरिन्थियों 13 में, पौलुस स्पष्ट रूप से बताता है कि वह किस बात का उल्लेख कर रहा है। 1 कुरिन्थियों 13:10 में, जो सर्वसिद्ध है उसका हमारे लिए 1 कुरिन्थियों 13:12 में स्पष्टीकरण किया गया है, जब हम उसे आमने–सामने देखेंगे और उसे वैसे ही जानेंगे जैसा हम जाने गए हैं। प्रेरित यूहन्ना भी लिखता है "हम जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा, तब हम भी उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है" (1 यूहन्ना 3:2)। अतः "जो सर्वसिद्ध है" वह इस कारण बाइबल के संकलन का उल्लेख नहीं करता, परंतु निश्चित रूप से हमारा उल्लेख करता है जो उसे आमने–सामने देखेंगे।

इस विषय में विचार करें **कि वचन जो देहधारी हुआ, अर्थात प्रभु यीशु मसीह, उसने अपनी संसारिक सेवकाई में आत्मा के अभिषेक में सेवकाई की** (लूका 4:17–18, प्रेरितों के काम 10:38)। तो हमें लिखित वचन की सेवा करते समय, कितना अधिक अभिषेक पर और आत्मा के अलौकिक प्रकटीकरणों पर निर्भर रहना चाहिए।

प्रेरित पौलुस पुराने नियम के वचनों को जानता था। उसके पास वे प्रकाशन भी थे जो उसने हमारे लिए अपनी पत्रियों में लिखे हैं, और फिर भी वह पवित्र आत्मा की सामर्थ पर निर्भर होकर सेवा करता था और उस पर पूर्ण रूप से निर्भर था (1 कुरिन्थियों 2:4–5)।

इसलिए आत्मा के कार्य के साथ वचन समाप्त नहीं होता। बल्कि **वचन और आत्मा एक साथ मिलकर** परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु मसीह की गवाही देते हैं। "गवाही देनेवाले तीन हैं– आत्मा, और पानी, और लोहू; और तीनों एक ही बात पर सम्मत हैं" (1 यूहन्ना 5:7,8)।

असली बनाम नकली

अलौकिक अभिव्यक्तियों, विशेषकर पवित्र आत्मा के प्रकटीकरणों के विषय में कुछ लोगों द्वारा दूसरा आक्षेप यह लिया जाता है कि नकली अभिव्यक्तियां भी होती हैं, 'शैतान भी इन बातों को करता है।' वे विवाद करते हैं कि शैतान भी ऐसे अलौकिक कार्य करता है, अतः हमें आत्मा के वास्तविक प्रकटीकरणों में सहभागी नहीं होना है।

बाइबल बताती है कि शैतान भी झूठे या छलपूर्ण चिन्ह और चमत्कार करता है।

2 थिस्सलुनीकियों 2:9
उस अधर्मी का आना शैतान के कार्य के अनुसार सब प्रकार की झूठी सामर्थ, और चिन्ह, और अद्‌भुत काम के साथ,

2 कुरिन्थियों 11:13–15
13 क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित, और छल से काम करनेवाले, और मसीह के प्रेरितों का रूप धरनेवाले हैं।
14 और यह कुछ अचम्भे की बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है।
15 इसलिए यदि उसके सेवक भी धर्म के सेवकों का सा रूप धरें, तो कुछ बड़ी बात नहीं, परंतु उन का अन्त उनके कामों के अनुसार होगा।

जिस प्रकार विश्वासी आश्चर्यकर्मों को होते हुए देखने के लिए परमेश्वर के राज्य की सामर्थ और पवित्र आत्मा के अभिषेक को प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार, लोग झूठे चिन्ह और चमत्कारों को करने के लिए दुष्टात्मा की शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। परंतु, यह कारण नहीं है कि हम चिन्ह और चमत्कारों को करना बंद कर दें। वास्तव में, यह हमे परमेश्वर की और सामर्थ को प्रगट होते हुए देखने हेतु आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने पाए।

नकली चलन

हमारे प्रतिदिन के जीवन में जो कुछ होता है उसका उपयोग करते हुए हम इसकी ओर वस्तुपरक दृष्टि से देखें। लोग नकली का निर्माण करते हैं इसका कारण असली का मूल्य है। उदाहरण के तौर पर, नकली चलन के विषय में सोचें, यह विश्व के हमारे भाग मे काफी प्रचलित है। लोग नकली पैसा बनाते हैं क्योंकि असली का मूल्य है।

नकली को ऐसे बनाया जाता है कि वह यथासम्भव असली ही दिखाई दे, ताकि वह आसानी से पकड़ा न जाए। वस्तुतः, जितना अधिक मूल्य होगा, उतना अधिक प्रयास नकली को असली के बिल्कुल समान बनाने के लिए किया जाएगा। नकली असली का मूल्य कम नहीं करता; बल्कि वह असली के मूल्य को और बढ़ाता है। नकली चलन है इसलिए हम सारे असली सिक्कों को फेंक नहीं देते! हम असली को सुरक्षित रखते हैं और हम नकली पर नज़र रखते हैं और उनसे बचते हैं। वस्तुतः नकली नोटों का निर्माण करने वाले पकड़े जाते हैं और दण्ड पाते हैं। उसी तरह, हमें परमेश्वर के सच्चे कार्य को जो अलौकिक का प्रदर्शन करते हैं, केवल इसलिए हटाना नहीं है क्योंकि अंधकार की शक्तियों द्वारा नकली का निर्माण किया जा रहा है। नकली को पहचानने का उत्तम मार्ग है असली में पूर्ण से डूब जाना। जब हम जान लेते हैं कि असली विस्तृत रूप से कैसे दिखाई देता है, तब हम नकली को बड़ी आसानी से पहचान सकते हैं। धोखा खाने वाले वे लोग होते हैं जो विस्तृत रूप से नहीं जानते कि असली कैसे दिखाई देता है।

सम्पूर्ण बाइबल में हम देखते हैं कि परमेश्वर के सेवक भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर की सच्ची सामर्थ प्रगट करना पड़ता था, ऐसे वातावरणों में जहां पर दूसरे भी शैतानी शक्तियों की सामर्थ से वैसे ही चिन्ह और चमत्कार करते थे। जादूई शक्तियां वैसे ही कार्य कर रही हैं केवल इस

कारण से परमेश्वर ने अपने सेवकों को अलौकिक चिन्ह और चमत्कार करने से रुक जाने के लिए नहीं कहा। बल्कि, परमेश्वर ने बार–बार यह दिखा दिया कि उसके सेवकों के द्वारा कार्य करने वाली उसकी सामर्थ अंधकार की सामर्थ से अधिक बढ़कर है।

मूसा और मिस्र के जादूगर

मूसा, जिसकी परवरिश फिरौन के राजदरबार में हुई थी, उन शक्तियों से परिचित होगा जो मिस्र के टोना करने वाले और जादूगर प्रगट करते थे। जब परमेश्वर ने मूसा को फिरौन के सामने जाने की आज्ञा दी, तब प्रभु ने मूसा को तैयार किया कि वह उसके हाथ की लाठी से अलौकिक कार्यों को प्रगट करे।

निर्गमन 7:8–12

8 फिर यहोवा ने, मूसा और हारून से इस प्रकार कहा,
9 कि जब फ़िरौन तुमसे कहे, कि अपने प्रमाण का कोई चमत्कार दिखाओ, तब तू हारून से कहना, कि अपनी लाठी को लेकर फ़िरौन के सामने डाल दे, कि वह अजगर बन जाए।
10 तब मूसा और हारून ने फ़िरौन के पास जाकर यहोवा की आज्ञा के अनुसार किया; और जब हारून ने अपनी लाठी को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों के सामने डाल दिया तब वह अजगर बन गई।
11 तब फ़िरौन ने पण्डितों और टोनहा करनेवालों को बुलवाया; और मिस्र के जादूगरों ने आकर अपने अपने तंत्र मंत्र से वैसा ही किया।
12 उन्होंने भी अपनी अपनी लाठी को डाल दिया, और वे भी अजगर बन गए। परंतु हारून की लाठी उनकी लाठियों को निगल गई।

सबसे पहला आश्चर्यकर्म जो मूसा ने किया, उसकी नकल मिस्र के जादूगर उनकी शैतानी शक्तियों की सहायता से कर पाए। जबकि मूसा इस बात के लिए तैयार नहीं था, परंतु परमेश्वर अचम्भित नहीं हुआ। परमेश्वर के पास यह दिखाने की योजना पहले ही थी कि मूसा की सामर्थ जादूगरों द्वारा कार्यरत सामर्थ से श्रेष्ठ थी। मूसा की लाठी ने अन्य लाठियों को निगल लिया।

मिस्र के जादूगर अगले दो आश्चर्यकर्म कर पाए जो मूसा ने किए थे – नदी को लहू में बदल देना (निर्गमन 7:22) और नदी से मेंढ़कों को निकालकर भूमि को भर देना (निर्गमन 8:7)। ध्यान दें, परमेश्वर भयभीत नहीं हुआ कि जादूगर भी वही चमत्कार कर रहे थे। परमेश्वर ने मूसा को उसकी कार्यविधि बदलने के लिए या दूसरा कोई तरीका या तकनीक अपनाने का प्रयास करने के लिए नहीं कहा। परमेश्वर ने अगले आश्चर्यकर्म की ओर मूसा की अगुवाई की। जादूगर मूसा द्वारा किए गए पहले तीन आश्चर्यकर्मों की नकल कर पाए, परंतु अपनी शैतानी शक्ति की सहायता से वे उतना ही कर पाए। इससे परे वे मात्र दर्शक बने रहे और उन्हें यह कबूल करना पड़ा कि परमेश्वर का हाथ मूसा पर है। परमेश्वर की सामर्थ शैतान के कार्यों से कहीं अधिक श्रेष्ठ थी।

निर्गमन 8:18–19

18 तब जादूगरों ने चाहा कि अपने तंत्र मंत्रों के बल से हम भी कुटकियां ले आएं, परंतु यह उनसे न हो सका। और मनुष्यों और पशुओं दोनों पर कुटकियां बनी ही रही।

19 तब जादूगरों ने फ़िरौन से कहा, यह तो परमेश्वर के हाथ का काम है। तौभी यहोवा के कहने के अनुसार फ़िरौन का मन कठोर होता गया, और उसने मूसा और हारून की बात न मानी।

हमारे लिए यहां पर एक सबक है। केवल इसलिए कि नकली काम किए जा रहे हैं, हम यीशु के नाम में चंगाइयां, छुटकारा, चिन्ह और चमत्कार करना बंद नहीं करते। हमें संसार को यह दिखाने की ज़रूरत है कि परमेश्वर की सामर्थ अंधकार की शक्तियों से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

एलिय्याह और बाल के भविष्यद्वक्ता

एलिय्याह ऐसे समय में जी रहा था जब बाल के भविष्यद्वक्ता और अश्शेरा के भविष्यद्वक्ताओं को राजा आहाब और उसकी पत्नी ईज़बेल का समर्थन था। रानी ईज़बेल ने बढ़ावा देने के कारण पूरा देश

मूर्तिपूजा और जादूटोने से व्याप्त था। एलिय्याह ने प्रभु की अगुवाई में, कर्मेल पर्वत पर इन भविष्यद्वक्ताओं को चुनौती दी (1 राजा 18)। दिन ढलने पर, एलिय्याह की सादगीपूर्ण प्रार्थना के प्रतिउत्तर स्वरूप, स्वर्ग से आग उतर आई और उसने बलिदान और वेदी दोनों को भस्म कर दिया। झूठे भविष्यद्वक्ता ऐसा नहीं कर पाए थे। अब लोगों ने दण्डवत किया और अंगीकार किया कि प्रभु ही सचमुच परमेश्वर है!

1 राजा 18:37–39
37 हे यहोवा! मेरी सुन, मेरी सुन, कि ये लोग जान लें कि हे यहोवा, तू ही परमेश्वर है, और तू ही उनका मन लौटा लेता है।
38 तब यहोवा की आग आकाश से प्रगट हुई और होमबलि को लकड़ी और पत्थरों और धूलि समेत भस्म कर दिया, और गड़हे में का जल भी सूखा दिया।
39 यह देख सब लोग मुंह के बल गिरकर बोल उठे, यहोवा ही परमेश्वर है, यहोवा ही परमेश्वर है।

हम सचमुच ऐसे समय में जी रहे हैं जब परमेश्वर कलीसिया पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेल रहा है। यह सच है कि कई झूठे मसीही, झूठे भविष्यद्वक्ता हैं और दुष्टात्माओं की शिक्षाएं देश में प्रचलित हैं, उसी समय यह भी सच है कि परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करने की आवश्यकता इस समय पहले से अधिक है। लोगों को यह देखने की ज़रूरत है कि प्रभु और उसकी महिमा प्रगट हो, ताकि वे निःसंदेह रूप से जानें कि जिस प्रभु यीशु मसीह का हम प्रचार करते हैं, वह सचमुच परमेश्वर है!

यीशु की सेवकाई

यीशु पर भी झूठा आरोप लगाया जाता था कि वह दुष्टात्माओं के अधिकारी बेलज़बूब की सहायता से अपने कामों को करता है। इससे हमें यह दिखाई देता है कि यीशु के समय के दौरान भी टोना करने वाले, जादूगर और तंत्रमंत्र करने वाले देश में थे और चंगाइयां और

चमत्कार करते थे। परंतु, प्रभु यीशु मसीह ने अपनी सेवकाई का तरीका नहीं बदला और चमत्कार, चिन्ह और आश्चर्यकर्म करना नहीं छोड़ा। वह दुष्टात्माओं को निकालता है यह कहते हुए वह परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट करता रहा जिससे यह दिखाई देता है कि आत्मा की सामर्थ शैतान की सामर्थ से अधिक श्रेष्ठ थी। वह मसीह है इस बात के प्रमाण के रूप में उसने उसके द्वारा किए गए अलौकिक कामों की ओर संकेत किया।

मत्ती 12:24–29

24 परंतु फरीसियों ने यह सुनकर कहा, "यह तो दुष्टात्माओं के सरदार शैतान की सहायता के बिना दुष्टात्माओं को नहीं निकालता।"
25 उसने उनके मन की बात जानकर उनसे कहा, "जिस राज्य में फूट होती है, वह उजड़ जाता है, और कोई नगर या घराना जिस में फूट होती है, बना न रहेगा।
26 "और यदि शैतान ही शैतान को निकाले, तो वह अपना ही विरोधी हो गया है; फिर उसका राज्य कैसे बना रहेगा?
27 "भला, यदि मैं शैतान की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो तुम्हारे वंश किस की सहायता से निकालते हैं? इसलिए वे ही तुम्हारा न्याय चुकाएंगे।
28 "परंतु यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।
29 "या कोई मनुष्य किसी बलवन्त के घर में घुसकर उसका माल कैसे लूट सकता है जब तक कि पहले उस बलवन्त को न बान्ध ले? और तब वह उसका घर लूट लेगा।

अन्य कई उदाहरण

जब हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक का समीक्षण करते हैं, तब हम कई उदाहरण देखते हैं जहां प्रभु यीशु मसीह के सेवकों को ऐसे लोगों का सामना करना पड़ा जो शैतान की सामर्थ से अलौकिक कार्य करते थेः

- फिलिप्पुस और शिमोन जादूगर (प्रेरितों के काम 8:5–24)

- पाफुस टापू पर पौलुस और एलिमास जादूगर (प्रेरितों के काम 13:6–12)
- फिलिप्पी में पौलुस और भावी कहने वाली आत्मा से ग्रसित लड़की (प्रेरितों के काम 16:12–18)
- इफिसुस में पौलुस (प्रेरितों के काम 19:11–21)

इन सभी घटनाओं में, प्रभु यीशु मसीह के सेवकों ने यह दिखा दिया कि प्रभु यीशु मसीह की सामर्थ शैतान की सामर्थ से कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं। आज हमें भी ऐसा ही करना है। हमारा परमेश्वर महान है! उसकी सामर्थ अंधकार की शक्तियों से अधिक महान है।

काश मैं विश्वास न करूं?

मरकुस 16:17–18
17 और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, 18 और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।"

यूहन्ना 14:12
"मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो मुझ पर विश्वास रखता है, ये काम जो मैं करता हूं वह भी करेगा, वरन् इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं पिता के पास जाता हूं।

कभी–कभी, हम कुछ विश्वासियों को यह कहते हुए सुनते हैं कि वे प्रभु यीशु में विश्वास करते हैं, वे पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व और कार्य में विश्वास करते हैं, वे बाइबल पर भी विश्वास करते हैं – परंतु वे यह विश्वास नहीं करते कि चिन्ह, चमत्कार और पवित्र आत्मा के वरदान आज हमारे लिए नहीं हैं। कभी–कभी वे यह भी कहते हैं कि "हम इन बातों पर उस तरह विश्वास नहीं करते जैसे आप करते हैं।" यह ठीक है। हम एक दूसरे के मतों का आदर करते हैं और किसी पर जबरदस्ती नहीं करते कि वे पवित्र आत्मा के वरदानों में या आश्चर्यकर्मों में

विश्वास करें। हम यह भी समझते हैं कि यीशु के कामों में शिक्षा, प्रचार, तथा चंगाइयां, आश्चर्यकर्म, चिन्ह और चमत्कार भी शामिल थे। इसलिए यदि कोई अलौकिक पहलू में विश्वास नहीं करना चाहता, तो यह पूर्ण रूप से उनका चुनाव होगा। पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने मन में पूरा पूरा विश्वास कर लेना चाहिए। चिन्ह उन लोगों का अनुसरण करेंगे जो विश्वास करते हैं, और यदि आप विश्वास नहीं करते, तो चिन्ह आपका अनुसरण नहीं करेंगे। यदि आप विश्वास नहीं करते, तो आप चंगाइयों, सामर्थ के कामों, चिन्ह और चमत्कारों के क्षेत्र में यीशु के कामों और उससे बड़े कामों को नहीं करेंगे। यीशु मसीह के विश्वासी होने के नाते, भले ही हम आत्मा के अलौकिक कामों के विषय में सहमत नहीं होते, फिर भी हम एक दूसरे से प्रेम कर सकते हैं। अर्थात, यह पुस्तक उन लोगों के लिए लिखी गई है जो पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण के सम्बंध में आत्मा के और कार्य के लिए उत्सुक हैं।

गहरे में उतर चलें!

यहेजकेल 47:1–9

1 फिर वह मुझे भवन के द्वार पर लौटा ले गया; और भवन की डेवढ़ी के नीचे से एक सोता निकलकर पूर्व की ओर बह रहा था। भवन का द्वार तो पूर्वमुखी था, और सोता भवन के पूर्व और वेदी के दक्षिण, नीचे से निकलता था।

2 तब वह मुझे उत्तर के फाटक से होकर बाहर ले गया, और बाहर बाहर से घुमाकर बाहरी अर्थात् पूर्वमुखी फाटक के पास पहुंचा दिया; और दक्षिण अलंग से जल पसीजकर बह रहा था।

3 जब वह पुरुष हाथ में मापने की डोरी लिए हुए पूर्व ओर निकला, तब उसने भवन से लेकर, हज़ार हाथ तक उस सोते को मापा, और मुझे जल में से चलाया, और जल टखनों तक था।

4 उसने फिर हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल घुटनों तक था, फिर और हजार हाथ मापकर मुझे जल में से चलाया, और जल कमर तक था।

5 तब फिर उसने एक हजार हाथ मापे, और ऐसी नदी हो गई जिसके पार मैं न जा सका, क्योंकि जल बढ़कर तैरने के योग्य था; अर्थात् ऐसी नदी थी जिसके पार कोई न जा सकता था।
6 तब उसने मुझ से पूछा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू ने यह देखा है? फिर उसने मुझे नदी के तीर लौटाकर पहुंचा दिया।
7 लौटकर मैंने क्या देखा, कि नदी के दोनों तीरों पर बहुत से वृक्ष हैं।
8 तब उसने मुझ से कहा, यह सोता पूर्वी देश की ओर बह रहा है, और अराबा में उतरकर ताल की ओर बहेगा; और यह भवन से निकला हुआ सीधा ताल में मिल जाएगा; और उसका जल मीठा हो जाएगा।
9 और जहां जहां यह नदी बहे, वहां वहां सब प्रकार के बहुत अण्डे देनेवाले जीवजन्तु जीएंगे और मछलियां भी बहुत हो जाएंगी; क्योंकि इस सोते का जल वहां पहुंचा है, और ताल का जल मीठा हो जाएगा; और जहां कहीं यह नदी पहुंचेगी वहां सब जन्तु जीएंगे।

यहेजकेल 47 सहस्त्राब्दी के मंदिर की ओर और इस मंदिर से बह निकलने वाली नदी की ओर संकेत करता है। हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 21–22 में भी नए यरूशलेम में देखते हैं, *"बिल्लौर की सी झलकती हुई जीवन के जल की एक नदी जो परमेश्वर और मेम्ने के सिंहासन से निकलकर, उस नगर की सड़क के बीचोबीच बहती है"* (प्रकाशितवाक्य 22:1)। हम यह भी जानते हैं कि वर्तमान समय में, विश्वासी व्यक्तिगत तौर पर, परमेश्वर का मंदिर है, और विश्वासियों को सामूहिक रूप से परमेश्वर का निवासस्थान (या मंदिर) कहा गया है। और विश्वासी के अंदर से जीवन जल की नदियां बहती हैं (यूहन्ना 7:37–39) जो पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ है जो विश्वासी के द्वारा प्रगट होती है। इस प्रकार यहां पर अभी और आने वाली सहस्त्राब्दी में और नए यरूशलेम से परे जो होने वाला है उसके बीच एक समानता है।

यहेजकेल को, उसके दर्शन में निमंत्रित किया गया कि वह टखनो इतने जल से घुटनों तक गहरे जल में प्रवेश करे, फिर कमर

तक और उसके बाद इतनी गहराई में प्रवेश करे जहां पर उसे नदी में तैरना पड़ा। जब हम टखनों इतनी, घुटनों इतनी, या कमर इतनी नदी की गहराई में उतरते हैं, तब हमारे पैरों पर हमारा नियंत्रण होता है जो मज़बूती से ज़मीन पर (नदी के तल में) जमे होते हैं। जब हम और गहराई में जाते हैं, तब हम अपने आपको नदी के हाथों में सौंप देते हैं और अब नदी हमें ले चलती है। जी हां, जब हम तैरते हैं, तब हमें अपनी भूमिका निभाना है, परंतु नदी हमें आगे ले चलती है। इसका उपयोग हम यह दर्शाने के लिए करते हैं कि परमश्वर चाहता है कि हम आत्मा के कार्य की और गहराई में जाएं, ऐसे स्थान में आएं जहां हम अपने आपको छोड़ दें और परमेश्वर के आत्मा को अनुमति दें कि वह हमें और अधिक गहराई के क्षेत्रों में आगे ले चले। हम में से किसी ने पवित्र आत्मा की सारी गहराइयों को और क्षेत्रों को नहीं देखा है। जैसे जैसे हम उसे अनुमति देते हैं कि वह हमें और ऊंचे क्षेत्रों में ले जाए, हम सब प्रतिदिन और बातों को सीखते जाते हैं। जब हम उसके मार्गों और कार्यों को और सीखते हैं, अंतर्दृष्टियां और अनुभव पाते हैं, तब हम उसके विषय में दूसरों को बताते हैं, एक दूसरे से सीखते हैं और आगे बढ़ते जाते हैं।

परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है

यिर्मयाह 32:17,27

17 हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तेरे लिये कोई काम कठिन नहीं है।
27 क्या मेरे लिये कोई भी काम कठिन है?

हमें सम्पूर्ण हृदय से एक सत्य को अपनाना है, वह यह है कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। परमेश्वर कुछ भी कर सकता है। परमेश्वर इस तरह कार्य कर सकता है और करेगा जिसे हमने उसे पहले कभी करते नहीं देखा। उसके पिछले आश्चर्यकर्मों और सामर्थ के कामों ने कभी वह जो कुछ कर सकता है ,उस पर सीमा

निर्धारित नहीं की। पिछले दिनों में उसने जो कुछ किया है उससे वह "और भी अधिक" कर सकता है। इसलिए पवित्र आत्मा के वरदानों के परिचालन और प्रकटीकरण में, हमें परमेश्वर को "सीमित कर" नहीं रखना है। हमें इस विषय के निकट इस समझ के साथ जाना है कि परमेश्वर तो परमेश्वर है और वह अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करेगा, नई रीति से और तरीकों से। हमें इस विषय के निकट यह जानते हुए आना है कि परमेश्वर के लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। आत्मा के प्रकटीकरणों के द्वारा, वह असम्भव बातों को सम्भव बना सकता है। हम सारी सीमाओं को हटाकर रख दें जो हमने परमेश्वर क्या कर सकता है इस पर निर्धारित की हैं।

2

पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व का परिचय

हम एक परमेश्वर जो त्रिएक, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है, उसमें विश्वास करते हैं। **जैसे पिता परमेश्वर है, और पुत्र परमेश्वर है, वैसे ही पवित्र आत्मा परमेश्वर है।** पवित्र आत्मा एक तिहाई परमेश्वर नहीं है, परंतु पूर्ण परमेश्वर है। वह परमेश्वर का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है, जैसे परमेश्वर पिता और परमेश्वर पुत्र करता है। पिता जो कुछ है, और पुत्र जो कुछ है, वह पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व द्वारा प्रगट होता है। इसीलिए पवित्र आत्मा का उल्लेख भी उसके आत्मा, पिता के आत्मा (रोमियों 8:11), मसीह के आत्मा (रोमियों 8:9) और उसके पुत्र के आत्मा (गलातियों 4:6), आदि के रूप में किया गया है।

पवित्र आत्मा ठीक उसी प्रकार व्यक्ति है जैसे पिता परमेश्वर और परमेश्वर पुत्र है। पवित्र आत्मा भावना नहीं है, यद्यपि उसके कार्य का वर्णन करने हेतु बाइबल में उपयोग किए गए कुछ निरूपक ऐसे प्रकटीकरणों को सूचित करते हैं। हम पढ़ते हैं कि आत्मा उस हवा के समान आता है जो बहती है, उस नदी के समान जो बहती है, उस आग के समान जो जलती है, और उस कबूतर के समान जो उतरता है, उस तेल के समान जो चुपड़ा गया है, उस हाथ के समान जो आप पर आता है, आदि।

यूहन्ना 14:16–18
16 "और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे;
17 "अर्थात् सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है। तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुममें होगा।

18 "मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूं।

पवित्र आत्मा का उल्लेख 'वह' के रूप में किया गया है जो दर्शाता है कि वह एक व्यक्ति है।

पवित्र आत्मा आपके साथ है, सर्वत्र, हर समय। वह आपके साथ रहता है। वह आपके घर में आपके साथ है। वह आपके स्कूल, कॉलेज या कार्यस्थल में आपके साथ है। वह मुश्किल परिस्थितियों के मध्य आपके साथ है। जब आप लोगों की सेवा करते हैं तब वह आपके साथ रहता है। जब आप लोगों की सेवा करते हैं तब वह आपके साथ रहता है। वह प्रत्येक दिन के प्रत्येक क्षण आपके साथ रहता है। पवित्र आत्मा इन सारी परिस्थितियों में आपको बदल सकता है और आपको सामर्थ दे सकता है!

पवित्र आत्मा का हमारे साथ रहना वैसा ही है जैसे प्रभु यीशु मसीह का हमारे साथ रहना है।

ॲलॉस पॅराक्लेटॉस (Allos Parakletos)

यूहन्ना 14:16
और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और सहायक देगा कि वह सर्वदा तुम्हारे साथ रहे।

16वें वचन में, "और सहायक" के लिए दिया गया शब्द है "*allos Parakletos*"।

यीशु ने "और" ग्रीक "अलॉस" "*allos*" शब्द का उपयोग किया जिसका अर्थ है "उसी के जैसा दूसरा"। उसने "*heteros*" का उपयोग नहीं किया जिसका अर्थ है "भिन्न।" यीशु उसके चेलों के लिए जो कुछ था, वही पवित्र आत्मा उसके अनुपस्थिति में उसके चेलों के लिए होगा।

उसी के समान दूसरा सहायक। दूसरा व्यक्ति जो आपके लिए वैसा ही सहायक होगा जैसा मैं था। पवित्र आत्मा निरंतर हमारे साथ और हम में होगा। पवित्र आत्मा हमारे साथ और हम में, का अर्थ है जिस प्रकार स्वयं यीशु मसीह हमारे साथ व्यक्तिगत तौर पर था।

प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा का उल्लेख करने हेतु ग्रीक शब्द "*Parakletos*" का उपयोग किया। एम्प्लिफाईड बाइबल "*Parakletos*" शब्द के साथ अर्थ व्यक्त करती है :

यूहन्ना 14:16 एम्प्लिफाईड बाइबल
और मैं पिता से बिनती करूंगा, और वह तुम्हें दूसरा सहायक (सांत्वनाकर्ता, वकील, मध्यस्थ – परामर्शदाता, बल देने वाला, पक्ष में खड़ा रहने वाला) देगा, ताकि वह सर्वदा तुम्हारे साथ हो।

हम संक्षिप्त में "*Parakletos*", पवित्र आत्मा इस शब्द के सात पहलुओं को वह हमारे लिए कौन है यह वर्णन करते हुए स्पष्ट करेंगे। निम्नलिखित कुछ परिभाषाएं थायर की ग्रीक परिभाषाओं से रूपांतरित की गई हैं।

1. सहायक

सहायक ऐसा व्यक्ति है जिसे हमारे पास बुलाया जाता है। सहायक के रूप में पवित्र आत्मा हमारा साझेदार – वास्तव में हमारा वरिष्ठ साझेदार है। हम पवित्र आत्मा के सहकर्मी हैं। हम साझीदारी में हैं। उसने हमें जो करने के लिए बुलाया है उसमें हम उसके साथ मिलकर काम करते हैं।

प्रेरितों के काम 5:32
और हम इन बातों के गवाह हैं और पवित्र आत्मा भी, जिसे परमेश्वर ने उन्हें दिया है, जो उसकी आज्ञा मानते हैं।"

पवित्र आत्मा अनुग्रह का आत्मा है (जकर्याह 12:10; इब्रानियों 10:29)। वह परमेश्वर का अनुग्रह प्रदान करता है – हम जो करते हैं उस पर अलौकिक सामर्थ प्रदान करता है।

पवित्र आत्मा से संवाद स्थापित करना सीखें उसे सहायता के लिए बिनती करें।

2. सांत्वनादाता

सांत्वनादाता के रूप में, वह हमारे जीवनों में प्रोत्साहन, सांत्वना, नवीनीकरण, संजीवन, और चंगाई ले आता है।

ऐसा समय आता है जब पवित्र आत्मा वचन जो कुछ कहता है उसका हमें स्मरण दिलाता है और जो वचन वह हमसे कहता है, वह हमें प्रोत्साहन दिलाता है। वह हमारी आत्मा को उभारता है।

यूहन्ना 14:26
परंतु सहायक अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।

कभी–कभी ऐसा समय होता है जब हम जीवन की परिस्थितियों में से होकर गुज़रते हैं, जो प्राकृतिक जीवन में देखी गई बातों से बड़ी और विशाल होती हैं, ऐसे समय पवित्र आत्मा हम पर परमेश्वर के महत्वपूर्ण उद्देश्यों को प्रगट करता है। वह हमें बताता है कि परमेश्वर अभी क्या कह रहा है और वह भविष्य के विषय में क्या प्रगट कर रहा है (यूहन्ना 16:13–15)। यह हमें विपत्ति के मध्य या जिस परिस्थिति से होकर गुज़रते हैं उसमें आश्वासन देता है और दृढ़ विश्वास प्रदान करता है।

कभी–कभी ऐसा समय होता है जब पवित्र आत्मा किसी और के द्वारा या स्वप्न में हमसे बातें करता है। हम भविष्यवाणी का वचन पाते हैं जो हमें उन्नति, प्रोत्साहन और सांत्वना प्रदान करता है (1 कुरिन्थियों 14:3)।

3. वकील

वास्तविक अर्थ ऐसे व्यक्ति का है जो न्यायाधीश के सामने दूसरे की ओर से अभियाचना करता है, अभियाचक, बचाव के लिए परामर्श, कानूनी सहायक, समर्थक। वकील न केवल आपके मुकद्मे को बचाता है, बल्कि आश्वासन भी देता है कि आप उन लाभों को प्राप्त करेंगे जो कानूनी तौर पर आपके हैं।

नया नियम एक "न्यायिक प्रणाली" प्रस्तुत करता है जो आत्मिक क्षेत्र में विद्यमान प्रतीत होती है, जिसमें परमेश्वर पिता परमश्रेष्ठ न्यायाधीश है। स्वर्ग में प्रभु यीशु विश्वासी के लिए पिता के समक्ष वकील के रूप में खड़ा रहता है। उसी तरह, पवित्र आत्मा जो पृथ्वी पर है, वह भी पिता के समक्ष वकील या मध्यस्थ के रूप में विश्वासी का प्रतिनिधित्व करता है। शैतान को "भाइयों पर दोष लगाने वाला" कहा गया है (प्रकाशितवाक्य 12:10)।

जब हम पाप करते हैं तब पिता के साथ प्रभु यीशु हमारा वकील या सहायक है (1 यूहन्ना 2:1–2, वही ग्रीक शब्द *"parakletos"* उपयोग किया गया है), जो अपने आपको हमेशा हमारे पापों के लिए, हमेशा के लिए किया गया पूर्ण भुगतान (प्रायश्चित) घोषित करता है। परंतु, मसीह ने हमारे लिए जो कुछ दिया है उसे हमें विश्वास के साथ कबूल करना है और ग्रहण करना है (1 यूहन्ना 1:9)।

पवित्र आत्मा पिता के साथ हमारा सहायक या वकील है, जो यह सुनिश्चित करता है कि हम पृथ्वी पर वह सबकुछ प्राप्त करें जो यीशु ने हमारे लिए पिता की ओर से प्राप्त किया है (यूहन्ना 16:13–15)।

"चोरी करने, घात करने और नाश करने" के लिए आने वाली अंधकार की शक्तियों के विरोध में हम यहां पृथ्वी पर आत्मिक संघर्ष करते हैं, तब पवित्र आत्मा पिता के सामने जो कुछ अधिकार (वाचा का अधिकार) से हमारा है उसके लिए खड़ा रहता है, हमारे हृदयों मे हमें आश्वासन देता है (2 कुरिन्थियों 1:20–22), और शत्रु के विरोध में झंडा (मानदंड) खड़ा करता है (यशायाह 59:19), इस प्रकार पृथ्वी पर हमारे वाचा के अधिकारों को, हमारे विशेषाधिकारों को, हमारी आशीषों को और हमारी आत्मिक मिरास को अमल में लाता है और हमें देता है।

4. मध्यस्थ या बिचवई

मध्यस्थ वह होता है जो किसी दूसरे के निमित्त किसी और के सामने ऐसे अभियाचना करता है, जैसे कोई मनुष्य अपने मित्र के लिए बिनती करता है। वकील के समान, प्रभु यीशु और पवित्र आत्मा दोनों विश्वासी के लिए मध्यस्थ की भूमिका में शामिल होते हैं। फर्क यह है कि मध्यस्थ उस व्यक्ति की ओर से बिनती करता है जो निर्बल है और अपने आपके लिए कुछ कर पाने असमर्थ है। वकील दोष लगाने वाले के विरोध में बचाव करता है और अधिकारों का दावा करता है।

प्रभु यीशु पिता के समक्ष हमारा महायाजक है (इब्रानियों 2:17; इब्रानियों 3:1; इब्रानियों 4:14; इब्रानियों 8:1; इब्रानियों 10521; आदि।)। वह पिता के दाहिने हाथ पर विराजमान है और हमारे लिए मध्यस्थी करता है (रोमियों 8:34)। वह हमारे लिए निरंतर मध्यस्थी करने के लिए जीवित है (इब्रानियों 7:25)।

यह महायाजकीय मध्यस्थता हमारे लिए है कि हम पाप, परीक्षा, निर्बलताओं पर जय पाएं (इब्रानियों 2517–18) और अनुग्रह और दया प्राप्त करें ताकि ज़रूरत के समय हमें सहायता मिले (इब्रानियों 4:14–16)। अतः हमारा कर्तव्य है कि हम यह जानते हुए हियाव के साथ उसके सिंहासन के निकट आएं कि हमें अनुग्रह के सिंहासन के सामने सहायता मिलेगी।

उसी तरह, हमारे हृदयों में वास करने वाला पवित्र आत्मा हमारा मध्यस्थ है। वह निवेदन करने वाला आत्मा है (जकर्याह 12:10)। मध्यस्थ के रूप में पवित्र आत्मा :

- हमारी निर्बलताओं में हमारी सहायता करता है (रोमियों 8:26)
- जब हम नहीं जानते कि क्या प्रार्थना करना चाहिए, तब वह मध्यस्थी करने में हमारी सहायता करता है (रोमियों 8:26)
- वह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार मध्यस्थी करने में हमारी सहायता करता है (रोमियों 8:27)
- वह गूढ़ बातों के लिए, ऐसी बातें जिनके विषय में हमारी बुद्धि जानती भी नहीं, प्रार्थना करने में हमारी सहायता करता है (1 कुरिन्थियों 14:2)
- दृढ़ता के साथ सब प्रकार की प्रार्थनाएं और निवेदन करने में हमारी सहायता करता है, आत्मिक संघर्ष में हमें बल देता है (इफिसियों 6:18)

सो हमारा कर्तव्य यह है कि हम मध्यस्थी में पवित्र आत्मा के साथ सहभागी हों। वह हमारे द्वारा, हमारे लिए और दूसरों के लिए मध्यस्थी करने हेतु हमें उभारता है।

5. परामर्शदाता

हमारे परामर्शदाता के रूप में, पवित्र आत्मा हमारा सलाहकार, हमारा मार्गदर्शक, हमारा शिक्षक, और हमें सम्पूर्ण सत्य की ओर ले जाने वाला है (यूहन्ना 14:26; यूहन्ना 16:13–15)। पवित्र आत्मा युक्ति का आत्मा है (यशायाह 11:2)। वह बुद्धि का आत्मा, ज्ञान का आत्मा, और समझ का आत्मा भी है (यशायाह 11:2)। वह सारी बातें जानता है। अतः, हमारे परामर्शदाता के रूप में, उसका परामर्श हमेशा सिद्ध होता है।

वह हमारे अंदर विद्यमान अभिषेक है, जिसके विषय में यूहन्ना लिखता है (1 यूहन्ना 2:20,26,27) ताकि विश्वासी भूल से बच सकें।

उसे परामर्श मांगें। पवित्र आत्मा जब आपको सलाह देता है, तब उसकी सुनना सीखें।

6. बल देने वाला

सामान्य तौर पर, इस शब्द का अर्थ है सहायक, मदद देने वाला, सहायता करने वाला। जिन बातों का हम में अभाव है उसे देकर पवित्र आत्मा हमें बल प्रदान करता है और बल और क्षमता में हमारी वृद्धी करता है।

हम अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवंत होते जाते हैं (इफिसियों 3:16)।

जो सामर्थ वह हमें देता है उसके द्वारा हम शरीर पर जय पाते हैं (रोमियों 8:13), हम भय पर जय पाते हैं (2 तीमथियुस 1:7) और शत्रु पर जय पाते हैं (1 यूहन्ना 4:4)।

वह हमें बल देता है कि हम बलिदान करें और पिता की इच्छा पूरी करें। यीशु ने भी सनातन आत्मा के द्वारा सामर्थ पाकर अपने आपको क्रूस पर बलिदान कर दिया (इब्रानियों 9:14)।

वह हमें सामर्थ प्रदान करता है और सामर्थ के कामों को करने हेतु हमें अभिषेक देता है (लूका 24:49)।

7. पक्ष में खड़े रहने वाला

वह सारी बातों में और सारी बातों के द्वारा हमारे साथ और हम में खड़ा रहता है। जब हम राज्य के लिए चुनौतियों, सताव और कठिनाइयों का सामना करते हैं, तब वह हमें ईश्वरीय बल देता है।

जब हमें यीशु की गवाही देने के लिए अधिकारियों के सामने लाया जाता है, तब वह हमें बोलने के लिए शब्द देता है (मत्ती 10:18–20)।

परमेश्वर का आत्मा यहां पर हमारे ॲलॉस पैराक्लेटॉस के रूप में है। हमारे लिए वह जो कुछ बनने के लिए आया उन सारी बातों का हम स्वागत करें, उन्हें ग्रहण करें।

पवित्र आत्मा के साथ अपना रिश्ता स्थापित करें

2 कुरिन्थियों 13:14
प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे। आमेन।

सहभागिता ग्रीक *koinonia* = साझेदारी, संगति, सहभाग, समागम, दान, वितरण, साझे में वस्तुएं होना, आदि।

सहभागिता में **मित्रता** (घनिष्ठता), **संगति** (एक दूसरे के साथ वस्तुओं को बांटना), ओर **साझेदारी** (एक साथ काम करना) शामिल है।

हमें पवित्र आत्मा के साथ हमारी सहभागिता में बढ़ना है। हम में और हमारे द्वारा मिलकर उसके साथ हम यह निकट मित्रता स्थापित करते हैं। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है और इस कारण यह सम्भव है कि हम एक सदा बढ़ने वाला, सदा गहरा होते जाने वाला, बढ़ता हुआ रिश्ता उसके साथ कायम करें।

पवित्र आत्मा के साथ हमारी सहभागिता पर कुछ अंतर्दृष्टियां :

- उसके साथ **बातें** करें।
- उसकी उपस्थिति का **आनंद** लें। उससे प्रेम करें। उसकी आराधना करें।

- यीशु को **महिमा** दें – पवित्र आत्मा यहां पर यीशु को महिमा देने के लिए है। जब हम यीशु को महिमा देते हैं, तब वह सहभागी होता है।

- पवित्र आत्मा को शोकित न करें (दुख देना, दुखी करना) (इफिसियों 4:30)। जो बातें उसे अप्रसन्न करती हैं उन्हें जब हम करते हैं, तब हम उसे दुखी करते हैं।

- पवित्र आत्मा को न बुझाएं (1 थिस्सलुनीकियों 5:19)। हम उसे तब बुझाते हैं जब हम उसके प्रबोधनों का दमन करते हैं या उनकी उपेक्षा करते हैं, या जैसा वह चाहता है कि हम आगे बढ़ें उस तरह हम आगे नहीं बढ़ते और इस प्रकार उसके काम करने पर हम प्रतिबंध लगाते हैं। सामान्य तौर पर हम आत्मा को इसलिए बुझाते हैं क्योंकि हम उसके साथ कदम बढ़ाने से डरते हैं।

- हम पवित्र आत्मा का सामना न करें (प्रेरितों के काम 7:51)। सामना करने का अर्थ पवित्र आत्मा जो कह रहा है, कर रहा है, या हमें करने हेतु प्रेरित कर रहा है उसका विरोध करना, उसके विरोध में होना या उसके विरोध में लड़ना।

- उसके प्रति संवेदनशील बनें। जब वह आपके जीवन में कार्य करता है, तब उसे उत्तर दें।

- अपने विचारों को शुद्ध रखें। स्वप्न और दर्शन पवित्र आत्मा की भाषा का भाग हैं। यह एक महत्वपूर्ण मार्ग है जिसके द्वारा पवित्र आत्मा बोलता है।

- सौम्यता में चलें (दीनता, नम्रता, शांतता, सभ्यता, प्रेम, पवित्र हियाव)। पवित्र आत्मा कबूतर के समान सौम्य है। वह उन लोगों पर उतर आता है जो सौम्यता में चलते हैं।

- उसके प्रति आज्ञाकारी रहें। उसकी प्रेरणाओं को मानें और आपके जीवन में आप उसके मार्गदर्शन को और अधिकाई से प्राप्त करेंगे।

अधिनिवासी कार्य और सामर्थ देने वाला कार्य

आत्मा का अधिनिवासी कार्य (हममें वास करने वाला) भी है और आत्मा का सामर्थ देने वाला कार्य भी है। अधिनिवासी कार्य हममें उसका कार्य है जो हमें अधिकाधिक यीशु के समान बनने हेतु बदलने में सहायता करता है। उसका सामर्थकारी कार्य हमारे द्वारा उसका कार्य है जो यीशु को महिमा देता है और हमारे आसपास के लोगों की सेवा करता है।

विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा का कार्य स्थायी उपस्थिति और प्रवाहित होते रहने वाली उपस्थिति दोनों है। वह आपके सहायक या सांत्वनादाता, शिक्षक, परामर्शदाता, मार्गदर्शक, मध्यस्थ आदि के रूप में आपके साथ रहता है। आपके सामर्थदाता, सहयोगी, बल देने वाले के रूप में वह आपमें से प्रवाहित होता है।

हमें आरामदायक महसूस कराने के लिए नहीं, परंतु हमारे सांत्वना देने वाले के रूप में वह हममें वास करता है। कभी–कभी हम गलती से शरीर में 'अच्छा और आरामदायक' महसूस करने को या भावनाओं को पवित्र आत्मा की उपस्थिति का दर्शक मान बैठते हैं। ऐसा होना ज़रूरी नहीं है। ऐसा समय भी आएगा, जब परमेश्वर का आत्मा आपको उन कामों को करने हेतु प्रेरित करेगा जो शरीर के लिए कठिन होंगे या भावनात्मक तौर पर अधिक दबाव डालने वाले होंगे, परंतु वह अवश्य ही आपके सांत्वना देने वाले के रूप में और उससे भी अधिक सहायक के रूप में आपके साथ है।

3

पवित्र आत्मा में बपतिस्मा

अंत के दिनों में आत्मा की वर्षा

कलीसिया का जन्म पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा की सामर्थी वर्षा के साथ हुआ, जैसा कि हमारे लिए प्रेरितों के काम 2 में लिखा गया है। जैसा कि प्रेरितों के कामों की पुस्तक में देखा जाता है, प्रारम्भिक कलीसिया ने पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर सेवा की। सभी विश्वासी पवित्र आत्मा से भर गए और उन्होंने परमेश्वर के कार्य को प्रगट किया। जिन नई कलीसियाओं का रोपन किया गया उनका जन्म और परिपोषण पवित्र आत्मा की सामर्थ में हुआ, जैसा कि पत्रियों में देखा जाता है। प**हले 400 वर्षों** तक कलीसिया मज़बूत, जोशीली और सामर्थी थी। परंतु इसके बाद, जैसा कि कलीसिया के इतिहास में देखा जाता है, **सन 400 – सन 1400** तक अंधकार युगों के दौरान कलीसिया आत्मिक रीति से निर्बल हो गई। सामर्थ के काम और प्रदर्शन संस्था का स्वरूप प्राप्त कलीसिया के अधिकतर भाग में अनुपस्थित था। उसके बाद कलीसिया में बेदारी और पुनर्स्थापन का आरम्भ हुआ। संक्षिप्त रूप से, हम **1500** के दौरान देखते हैं, प्रोटेस्टंट आंदोलन विश्वास के माध्यम से अनुग्रह द्वारा उद्धार का प्रकाशन ले आया। उसके बाद **1600** में, प्यूरिटन आंदोलन जल के बपतिस्मे और राज्य से कलीसिया के अलगाव की समझ ले आया। **1700** में, पवित्रता आंदोलन कलीसिया के पवित्रीकरण की, संसार से कलीसिया के अलग होने की समझ ले आया। **1800** में, ईश्वरीय चंगाई आंदोलन भौतिक देह के लिए परमेश्वर की चंगाई की सामर्थ का प्रकाशन और प्रमाण ले आया। सन **1900** में, पेन्टिकॉस्टल आंदोलन पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का और अन्य अन्य भाषाओं में बोलने का प्रकाशन ले आया।

उसके बाद, पेन्टिकॉस्टल आंदोलन के बाद, सन **2000** में कई अभिज्ञेय कार्य हुए जिन्होंने मसीह की देह को परमेश्वर में ऊंचे क्षेत्रों की ओर उठाया। सुसमाचार प्रचारक, शिक्षक, पासबान, भविष्यद्वक्ता और प्रेरित के पांच प्रकार के सेवा दान भी मसीह की देह में पुनः स्थापित किए गए।

सेवा दान भी मसीह की देह में पुनः स्थापित किए गए। अब हम परमेश्वर के पंचांग के उस समय में हैं जहां पर पवित्र जनों को वचन में और आत्मा में सामर्थी रूप से सुसज्जित किया जा रहा है और सेवा के कार्य के लिए भेजा जा रहा है (इफिसियों 4:11,12)। हम ऐसे समय में हैं जब परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा बढ़ते हुए पैमाने में मुक्त की जा रही है और भेजी जा रही है।

हमें उस विश्वास के लिए लड़ना है जो नए नियम के प्रारम्भिक संतों को सौंपा गया था (यहूदा 1:3)। उन्होंने जो विश्वास किया और जिस विश्वास में वे चले, उसे 'वर्तमान सत्य' कहा गया (2 पतरस 1:12)। परमेश्वर कलीसिया में इस "वर्तमान सत्य" को पुनःस्थापित कर रहा है जो कि नए नियम के सत्य की पूरी समझ और अनुभव है जैसा कि प्रारम्भिक कलीसिया में देखा गया है।

मत्ती 3:11–12

11 "मैं तो पानी से तुम्हें मन फिराव का बपतिस्मा देता हूं, परंतु जो मेरे बाद आनेवाला है, वह मुझ से सामर्थी है; मैं उसकी जूती उठाने के योग्य नहीं हूं, वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा।
12 "उसका सूप उसके हाथ में है, और वह अपना खलिहान अच्छी रीति से साफ करेगा, और अपने गेहूं को तो खत्ते में इकट्ठा करेगा, परंतु भूसी को उस आग में जलाएगा जो बुझने की नहीं।"

कृपया ध्यान दें कि "से" के लिए दिया गया ग्रीक शब्द '*en*' है जो मूल सम्बंधसूचक अव्यय है जिसका अनुवाद "में, द्वारा, से, का, के लिए, आदि" किया जा सकता है। इसलिए हम "पवित्र आत्मा के साथ"

और "पवित्र आत्मा में बपतिस्मा" इन वाक्प्रयोगों को अदल–बदलकर प्रयोग करते हैं।

यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने घोषणा की कि प्रभु यीशु पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। यूहन्ना ने जिस प्रकार 'आग' का वर्णन किया है, वह 'भूसी को जलाने' के लिए है। भूसी का उपयोग जो अधर्म का काम है (भजनसंहिता 1:4; भजनसंहिता 35:5), और जो शरीर का है (यिर्मयाह 23:28) उसे दर्शाने के लिए किया गया है। विश्वासी के जीवन में, आग भूसी को, जो परमेश्वर का नहीं है उसे, जो अधर्म का है उस जला देती है। यूहन्ना बपतिस्मा करने वाला जिसकी ओर संकेत करता है, वह अधर्मी के अंतिम, सनातन न्याय का भी उल्लेख करता है (प्रकाशितवाक्य 20:10,15)। इस प्रकार "आग" के दो उल्लेख हैं, विश्वासी के जीवन में किया जाने वाला शुद्धीकरण का कार्य और अधर्मी का सनातन न्याय।

अब पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के विषय में, हम जानते है कि उसकी संसारिक सेवकाई के दौरान प्रभु यीशु ने पवित्र आत्मा की सामर्थ से सेवा की (लूका 4:14,18,19; मत्ती 12:28; प्रेरितों के काम 10:38)। उसने पवित्र आत्मा के विषय में भी सिखाया और उन्हीं कामों को करने हेतु जो उसने किए विश्वासियों को सामर्थ देने हेतु "पिता की प्रतिज्ञा" को भेजने का वचन दिया (यूहन्ना 14:12,26; यूहन्ना 15:26; यूहन्ना 16:7–13)। फिर भी उसकी संसारिक सेवकाई के दौरान, हम उसे किसी को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देते हुए नहीं देखते हैं।

उसके पुनरूत्थान के बाद, उसने चेलों से भेंट की और पवित्र आत्मा पाने हेतु उन पर सांस फूंकी।

यूहन्ना 20:21–22
21 यीशु ने फिर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले! जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूं।" 22 यह कहकर उसने उन पर फूंका और उनसे कहा, "पवित्र आत्मा लो।"

यही समय था जब चेलों ने नया जन्म पाया। हम ऐसा कहते हैं क्योंकि जब परमेश्वर ने सांस फूंकी, तब उसने जीवन दिया, उसमें से कुछ मनुष्य को दिया (उत्पत्तिं 2:7)। इसलिए, इस उदाहरण में, उन्होंने आत्मा से जन्म पाया। उनकी आत्माओं ने जीवन पाया और वे नई सृष्टि के लोग बन गए।

जिस प्रकार पिता ने प्रभु यीशु को भेजा था उस प्रकार उसने अपने चेलों को आज्ञा दी कि वे जाएं, और यद्यपि उनका नया जन्म हुआ था, फिर भी प्रभु यीशु ने उन्हें आज्ञा दी कि वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु स्वर्ग से सामर्थ पाने हेतु यरूशलेम में रुके रहें।

लूका 24:48–49

48 "तुम इन सब बातों के गवाह हो।
49 और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उण्डेलूंगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।"

प्रेरितों के काम 1:4–5,8

4 और उसने उनसे मिलकर उन्हें आज्ञा दी, कि यरूशलेम को न छोड़ो, परंतु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो, जिसकी चर्चा तुम मुझ से सुन चुके हो।
5 क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है, परंतु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।
8 "परंतु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।"

उसने उनसे कहा कि वे यरूशलेम में रुके रहें ताकि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पा सकें। "बपतिस्मा" इस शब्द का अर्थ है डुबाना, डुबोना, और अभिभूत करना। उसमें पूरी रीति से व्याप्त होने की, घेरे जाने की और डूबने की कल्पना है।

पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का उद्देश्य था विश्वासियों को अपनी सामर्थ देना (पहनाना) ताकि वे पृथ्वी के छोर तक यीशु के गवाह बन सकें।

पवित्र आत्मा के वरदान को ग्रहण करना

हम प्रेरितों के कामों की पुस्तक में लिखित **पांच घटनाओं का समीक्षण** करते हैं, यहां उन व्यक्तियों या लोगों के समूहों के विषय में लिखा गया है जिन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। हम समझते हैं कि ऐसे कई लोग रहे होंगे, परंतु हमारी शिक्षा और अध्ययन के लिए इनके विषय में विशिष्ट तौर पर लिखा गया है। परंतु आत्मा ने जो लिखा है उसका समीक्षण करें और इनसे अंतर्दृष्टियां प्राप्त करें।

1. पिन्तेकुस्त का दिन

प्रेरितों के काम 2:1–4

1 जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।
2 और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे, गूंज गया।
3 और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दी; और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं।
4 और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

जब पिन्तेकुस्त के दिन 120 चेलों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, तब असामान्य घटनाएं हुईं : स्वर्ग से आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, आग की जीभें उनमें से प्रत्येक पर उतरी और वे सभी अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे।

यहां पर कुछ और बातें देखें :

- जब उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया (प्रेरितों के काम 1:5), तब वे पवित्र आत्मा से भर भी गए (प्रेरितों के काम 2:4)। उन्होंने पवित्र आत्मा को पहन लिया और वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए।

- ध्यान दें कि उन्होंने अन्य अन्य भाषाएं बोली, अर्थात वह उनके अपने वाचिक अंगों से आने वाले उनके अपने स्वर थे। बोलने का काम उन्होंने किया, पवित्र आत्मा ने नहीं। आत्मा द्वारा केवल उन्हें भाषा दी गई।

वह कटनी का पर्व था। पिन्तेकुस्त का पर्व प्रथम फसह के पर्व के पचास दिनों बाद आता था। यरूशलेम में इन पर्वों को मनाने के लिए आए हुए लोगों की भीड़ थी। ऊपरी कोठरी में जो कुछ हो रहा था उसे सुनने वाले लोगों की भीड़ की विभिन्न प्रतिक्रियाएं थीं। कुछ लोग पूर्णतया उलझन में पड़े हुए थे। कुछ अचम्भित और चकित थे। कुछ लोग अचम्भित थे और उलझन में पड़ गए थे। अन्य लोग उपहास कर रहे थे और कह रहे थे कि इन चेलों ने मद्य पिया है।

प्रेरितों के काम 2:14–18

14 पतरस उन ग्यारह के साथ खड़ा हुआ और ऊंचे शब्द से कहने लगा, "हे यहूदियो, और हे यरूशलेम के सब रहनेवालो, यह जान लो और कान लगाकर मेरी बातें सुनो।

15 "जैसा तुम समझ रहे हो, ये नशे में नहीं, क्योंकि अभी तो पहर ही दिन चढ़ा है।

16 "परंतु यह वह बात है, जो योएल भविष्यद्वक्ता के द्वारा कही गई है,

17 "कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे।

18 "वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे।

पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर प्रेरित पतरस पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता योएल की पुस्तक से वचन लेता है (योएल 2:28–32) और समझाता है कि जो कुछ हो रहा था वह उस भविष्यद्वाणी की परिपूर्णता थी।

एक टिप्पणी के तौर पर, हम देखते हैं कि योएल ने भविष्यद्वाणी की थी कि आत्मा की वर्षा के साथ **भविष्यद्वाणी, स्वप्न, दर्शन** होंगे। पिन्तेकुस्त के दिन, इनमें से कुछ भी नहीं हुआ, बल्कि वहां **आवाज़, आग, और भाषाएं** थीं। फिर भी, पवित्र आत्मा पतरस के द्वारा कहता है कि "यह वह बात है" (प्रेरितों के काम 2:16) या यह वही बात है जो पूरी हो रही है! यहां सबक यह है कि जब पवित्र आत्मा कार्य करता है, तब प्रकटीकरण हमेशा समान नहीं हो सकते। परंतु फिर भी उसे आत्मा की वर्षा कहा गया है, क्योंकि वही पवित्र आत्मा कार्य कर रहा है!

पतरस के उस संदेश को प्रचार करने के बाद, उस दिन तीन हज़ार लोगों का उद्धार हुआ। जब हम पवित्र आत्मा के अभिषेक के अधीन होकर प्रचार करते हैं, तब हम आत्माओं की ऐसी बड़ी फसल की अपेक्षा कर सकते हैं! ऐसा बार–बार और बार–बार हो सकता है।

प्रेरितों के काम 2:38–39
38 पतरस ने उनसे कहा, "मन फिराओ, और तुममें से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।
39 "क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी सन्तानों, और उन सब दूर दूर के लोगों के लिए भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।"

पश्चाताप की उसकी बुलाहट के भाग के रूप में, पतरस भीड़ को बताता है कि न केवल उनके पापों की क्षमा प्राप्त होगी, बल्कि वे "पवित्र आत्मा का दान भी पाएंगे।" वे भी वही पा सकते हैं जो हाल ही में 120 चेलों ने पाया था – दान के रूप में। पवित्र आत्मा की वर्षा हमें दान के रूप में दी गई है। हमें केवल उसे विश्वास से ग्रहण करना है। हम पवित्र आत्मा का वरदान कमा नहीं सकते।

दूसरा महत्वपूर्ण सत्य जिसका पतरस उल्लेख करता है, वह यह है कि यह "प्रतिज्ञा" या यह संदेश आपके बच्चों के लिए (पीढ़ी दर पीढ़ी), जो दूर हैं उन सभों के लिए (समस्त राष्ट्रों), और उन लोगों के लिए है जिन्हें हमारा परमेश्वर बुलाएगा (समस्त जनजातियों, और सब समय के लोगों को)।

पतरस ने कहा कि यह प्रतिज्ञा उन लोगों के लिए है जिन्हें प्रभु हमारा परमेश्वर बुलाएगा। **परमेश्वर आज लोगों को बुला रहा है, अतः उद्धार और पवित्र आत्मा के दान की "प्रतिज्ञा" जिसके विषय में प्रेरितों के काम 2:38 में कहा गया है आज भी हमारे लिए है।** पवित्र आत्मा की वर्षा या पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा कलीसियाई युग के सम्पूर्ण समय के सभी विश्वासियों के लिए है।

2. सामरिया के विश्वासी

प्रेरितों के काम के 8वें अध्याय में, सताव की वजह से विश्वासी यरूशलेम से निकलकर कई पड़ोसी गांवों, नगरों, और शहरों में तितर–बितर हो गए थे। फिलिप्पुस, जो यरूशलेम की कलीसिया में सेवा कर रहा था, सामरिया नगर को गया और वहां जाकर उसने मसीह का प्रचार किया। कइयों ने प्रभु यीशु में विश्वास किया, जिनमें शिमोन नाम का एक व्यक्ति था, जो जादूगर था और जिसने कई लोगों को जादूटोने के माध्यम से अपने नियंत्रण में रखा था। इन नए विश्वासियों ने जल का बपतिस्मा पाया।

प्रेरितों के काम 8:12–19

12 परंतु जब उन्होंने फिलिप्पुस की प्रतीति की जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था, तो लोग क्या पुरुष, क्या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।

13 तब शमौन ने स्वयं भी प्रतीति की और बपतिस्मा लेकर फिलिप्पुस के साथ रहने लगा और चिन्ह और बड़े बड़े सामर्थ के काम होते देखकर चकित होता था।

14 जब प्रेरितों ने जो यरूशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा।
15 और उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं।
16 क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था।
17 तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।
18 जब शमौन ने देखा कि प्रेरितों के हाथ रखने से पवित्र आत्मा दिया जाता है, तो उनके पास रुपये लाकर कहा,
19 कि यह अधिकार मुझे भी दो, ताकि जिस किसी पर हाथ रखूं, वह पवित्र आत्मा पाए।

यरूशलेम के प्रेरितों ने जब सुना कि सामरिया के लोगों ने प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास किया, तब उन्होंने जो कुछ किया वह देखना दिलचस्प है। पतरस और यूहन्ना विशेष रूप से उनके लिए प्रार्थना करने के लिए आए कि उन्हें पवित्र आत्मा प्राप्त हो।

यहां पर यह अनुमान लगाना सुरक्षित है कि **नए विश्वासियों के लिए पवित्र आत्मा पाने हेतु (पवित्र आत्मा में बपतिस्मा) पाने हेतु प्रार्थना करना प्रारम्भिक कलीसिया में एक 'आम प्रथा' बन गई।** हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि जब प्रेरितों ने सामरिया के नए विश्वासियों के लिए प्रार्थना की तब कुछ अलौकिक घटित हुआ, क्योंकि शिमोन जो अलौकिक के अंधकारमय पक्ष में सहभागी था, अब उन्हें वह सामर्थ खरीदने के लिए पैसा देने की बात कहने लगा। यद्यपि पवित्र शास्त्र के वचन में यह नहीं बताया गया है, परंतु पहले पिन्तेकुस्त के दिन पर हुई घटनाओं के आधार पर, हमारा यह अनुमान लगाना सुरक्षित है कि जब सामरिया के विश्वासियों ने पवित्र आत्मा का दान पाया, तब वे भी अन्य अन्य भाषाएं बोलने लगे। इस अलौकिक घटना ने पूर्व जादूगर, शिमोन को अचम्भित कर दिया।

3. शाऊल जो प्रेरित पौलुस बन गया

इसके बाद जिस घटना के विषय में प्रेरितों के कामों की पुस्तक में लिखा गया है, जहां किसी व्यक्ति के लिए पवित्र आत्मा पाने हेतु प्रार्थना की जा रही है, वह व्यक्ति है शाऊल, जो बाद में महान प्रेरित पौलुस बन गया। दमिश्क के मार्ग पर शाऊल की प्रभु यीशु मसीह के साथ एक सामर्थी मुठभेड़ हुई। वह अंधा को गया, और तीन दिनों तक वह उसी स्थिति में रहा, और उपवास, प्रार्थना करता हुआ प्रभु यीशु मसीह की बाट जोहता रहा। प्रभु यीशु मसीह ने हनन्याह नाम के एक चेले को आज्ञा दी कि वह जाकर शाऊल के लिए प्रार्थना करे ताकि उसे दृष्टि प्राप्त हो।

प्रेरितों के काम 9:10–18

10 दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, "हे हनन्याह!" उसने कहा, "हां, प्रभु।"

11 तब प्रभु ने उससे कहा, "उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है।"

12 और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए।

13 हनन्याह ने उत्तर दिया, "हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है कि इसने यरूशलेम में तेरे पवित्र लोगों के साथ बड़ी बड़ी बुराइयां की हैं।

14 "और यहां भी इसको महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बान्ध ले।"

15 परंतु प्रभु ने उससे कहा, "तू चला जा; क्योंकि यह, तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र है।

16 "और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा कैसा दुख उठाना पड़ेगा।"

17 तब हनन्याह उठकर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर कहा, "हे भाई शाऊल, प्रभु अर्थात् यीशु, जो उस रास्ते में जिससे तू आया, तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए।"

18 और तुरंत उसकी आंखों से छिलके से गिरे, और वह देखने लगा और उसने उठकर बपतिस्मा लिया; फिर भोजन करके बल पाया।

प्रारम्भ में थोड़ी अनिच्छा के बाद हनन्याह गया और उसने शाऊल के लिए प्रार्थना की, न केवल इसलिए कि उसे दृष्टि प्राप्त हो, बल्कि इसलिए भी कि वह पवित्र आत्मा से भर जाए। शाऊल यीशु मसीह में विश्वासी था, प्रभु में तीन दिन बड़ा था। प्रभु यीशु मसीह ने हनन्याह को जो बताया उससे हम यह देख सकते हैं कि उसके जीवन पर परमेश्वर की बड़ी बुलाहट थी। और फिर भी, हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा पाने हेतु उसके लिए प्रार्थना की गई।

फिर से एक बार, इससे हमें यह समझ मिलती है कि प्रारम्भिक कलीसिया में, नए विश्वासियों के लिए पवित्र आत्मा पाने के लिए प्रार्थना करना एक सामान्य बात थी।

यद्यपि प्रेरितों के काम 9 में शाऊल ने कभी अन्य अन्य भाषाओं में बातें की या कोई अलौकिक प्रकटीकरण के सम्बंध में बताया इस विषय में कोई उल्लेख नहीं है, परंतु हम जानते हैं कि शाऊल (बाद में पौलुस) ने अन्य अन्य भाषाओं में बहुत बातें की। उसने कुरिन्थुस की कलीसिया को लिखा, *"मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं"* (1 कुरिन्थियों 14:18)। हम भी जानते हैं कि पौलुस ने पवित्र आत्मा के सभी वरदानों को प्रगट किया और इनके विषय में अन्य विश्वासियों को सिखाया क्योंकि उसी ने 1 कुरिन्थियों 12–14 ये अध्याय लिखे।

4. कुरनेलियुस और उसका घराना

प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखी गई चौथी घटना जो किसी व्यक्ति के पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के विषय में बताती है, वह है कुरनेलियुस और उसका घराना। प्रेरित पतरस को परमेश्वर ने यह निर्देश दिया कि वह जाकर कुरनेलियुस से भेंट करे, जहां पर उसने

यीशु मसीह का प्रचार किया। यह पहली बार था जब अन्यजातियों को सुसमाचार का प्रचार किया गया था।

प्रेरितों के काम 10:44–48
44 पतरस ये बातें कह ही रहा था कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुननेवालों पर उतर आया।
45 और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्यजातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है,
46 क्योंकि उन्होंने उन्हें भांति भांति की भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना।
47 इस पर पतरस ने कहा, "क्या कोई जल की रोक कर सकता है कि ये बपतिस्मा न पाएं जिन्होंने हमारे समान पवित्र आत्मा पाया है?"
48 और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए। तब उन्होंने उससे बिनती की कि वह उनके साथ कुछ दिन रहे।

जब पतरस ने इन लोगों को मसीह का प्रचार किया, तब उन्होंने उस संदेश पर विश्वास किया, और परमेश्वर ने तुरंत उन पर अपना पवित्र आत्मा उण्डेल दिया। इन लोगों ने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की और परमेश्वर की बढ़ाई की।

प्रेरितों के काम 11:15–18
15 "जब मैं बातें करने लगा, तो पवित्र आत्मा उन पर उसी रीति से उतरा, जिस रीति से आरम्भ में हम पर उतरा था।
16 "तब मुझे प्रभु का वह वचन स्मरण आया, जो उसने कहा कि यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परंतु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।
17 "इसलिए जबकि परमेश्वर ने उन्हें भी वही दान दिया, जो हमें प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने से मिला था, तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?"
18 यह सुनकर वे चुप रहे, और परमेश्वर की बढ़ाई करके कहने लगे, "तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है।"

यरूशलेम में वापस आने के बाद, कुरनेलियुस के घर में हुई घटनाओं के विषय में पतरस ने पुनर्मूल्यांकन किया, और उसने स्पष्ट बताया कि यह पवित्र आत्मा के उस बपतिस्मे के समान ही था जो 120 चेलों ने पिन्तेकुस्त के दिन पाया था।

अतः, हमारे पास दूसरा उदाहरण है जहां प्रभु यीशु मसीह पर विश्वास करने के बाद लोगों ने वैसे ही पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, जैसे पिन्तेकुस्त के दिन हुआ था। फिर से यहां पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के बाद उन्होंने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की और परमेश्वर की बढ़ाई की।

5. इफिसुस के विश्वासी

पवित्र आत्मा में लोगों के बपतिस्मा पाने के सम्बंध में जिस अंतिम घटना के विषय में लिखा गया है वह है प्रेरितों के काम 19 में, जो इफिसुस में घटित हुई। यहां पर प्रेरित पौलुस की मुलाकात कुछ लोगों से हुई जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले के द्वारा जल का बपतिस्मा पाया था। यीशु मसीह की सेवकाई के बाद से क्या हुआ इस विषय में ये लोग नहीं जानते थे।

प्रेरितों के काम 19:1–7

1 और जब अपुल्लोस कुरिन्थुस में था, तो पौलुस ऊपर के सारे देश से होकर इफिसुस में आया, और कई चेलों को देखकर,
2 उनसे कहा, "क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?" उन्होंने उससे कहा, "हमने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी।"
3 उसने उनसे कहा, "तो फिर तुमने किसका बपतिस्मा लिया?" उन्होंने कहा, "यूहन्ना का बपतिस्मा।"
4 पौलुस ने कहा, "यूहन्ना ने यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आनेवाला है, उस पर अर्थात् यीशु पर विश्वास करना।"
5 यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया।
6 और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न–भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे।
7 ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

पौलुस के प्रारम्भिक प्रश्नों पर विचार करना दिलचस्प होगा : "*क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?*" यह फिर एक बार दर्शाता है कि नए विश्वासियों के यीशु मसीह में विश्वास करने के बाद उनसे यह अपेक्षा करना कि पवित्र आत्मा के लिए बपतिस्मा पाने हेतु उनके लिए प्रार्थना की जाए, जिस प्रकार प्रेरितों के काम 19 में इन लोगों के लिए पौलुस ने किया, सामान्य बात थी। पौलुस ने यीशु मसीह के विषय में उन्हें प्रचार किया, उन्हें जल का बपतिस्मा दिया, और उसके बाद पवित्र आत्मा पाने हेतु उनके लिए उसने प्रार्थना की, अर्थात पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने हेतु। फिर से एक बार, हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा की वर्षा या पवित्र आत्मा में बपतिस्मा के साथ अलौकिक प्रकटीकरण होते हैं – अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना, और जैसा कि इस उदाहरण में है, उन्होंने भविष्यद्वाणी भी की।

पांच लिखित घटनाओं का सारांश

पांच लिखित घटनाओं में से तीन में, यह स्पष्ट है कि जिन लोगों ने पवित्र आत्मा का **बपतिस्मा पाया**, उन्होंने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की। अन्य दो घटनाओं में, सामरिया में, हम अनुमान लगाते हैं कि कुछ अलौकिक घटित हुआ था, और उसके बाद शाऊल (बाद में पौलुस) के उदाहरण में हम जानते हैं कि उसने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की। अतः यह कहना सुरक्षित है कि पांचों लिखित घटनाओं में कुछ अलौकिक घटित हुआ था, और पांच में से चार में हम यह कह सकते हैं कि जब उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, तब उन्होंने निश्चित रूप से अन्य अन्य भाषाओं में बातें की।

पांच में से तीन घटनाओं में उन्होंने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की और बाद में जल में बपतिस्मा लिया। पांच में से दो घटनाओं में, अर्थात सामरिया और इफिसुस में, उन्होंने जल का बपतिस्मा लिया था और उसके बाद उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। इसलिए यह कहना सुरक्षित है कि परमेश्वर दोनों तरह से कार्य करेगा, और इस

प्रक्रिया में कोई 'निर्धारित' चरण नहीं हैं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का उद्देश्य गवाह बनने हेतु सामर्थ प्राप्त करना है। सामर्थ पाना अलौकिक प्रकटीकरणों के माध्यम से, अर्थात अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के माध्यम से अभिव्यक्त होता है, जो कि हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा का वरदान या आत्मा का प्रकटीकरण है (1 कुरिन्थियों 12:7–11)। अतः हम यहां पर यह अनुमान लगाते हैं :

- जब पवित्र आत्मा से हमारा बपतिस्मा होता है, तब हम **वरदान और सामर्थ दोनों पाते हैं।** परमेश्वर का आत्मा विश्वासी को सामर्थ से भर देता है या सामर्थ का पहरावा पहनाता है और इस क्षण से आगे सभी नौ वरदान सम्भवनीय रूप से विश्वासी के लिए उपलब्ध कराता है। यह ध्यान में रखें कि ये "आत्मा के वरदान" हैं, व्यक्ति के अपने वरदान नहीं। इसलिए पवित्र आत्मा इन वरदानों का स्वामित्व रखता है और विश्वासी के द्वारा उनमें कार्य करता है। इन वरदानों को उचित रीति से प्रगट करने हेतु विश्वासी को पवित्र आत्मा के साथ सहकारिता मे कार्य करना है।
- जो सामर्थ हम पाते हैं, **वह पवित्र आत्मा के वरदानों के प्रदर्शन के माध्यम** से व्यक्त होती है, जिसका फल होता है चिन्ह, चमत्कार, आश्चर्यकर्म, चंगाइयां, और परमेश्वर के अलौकिक कार्य।
- **पहला वरदान** जो आम तौर पर देखा जाता है वह है अन्य अन्य भाषाओं में बातें करना। परमेश्वर उद्देश्यपूर्ण रूप से कुछ बातें करता है, इसलिए हम यह अनुमान लगाते हैं कि अज्ञात भाषाओं में बोलने का यह वरदान एक कुंजी है जो अन्य सभी वरदानों में आगे बढ़ने में हमारी सहायता करता है।

हमारे अंदर आत्मा का वास और बपतिस्मा – अंतर क्या है?

जब व्यक्ति प्रभु यीशु मसीह में विश्वास करता है, तब उसका नया जन्म होता है। हम आत्मा से जन्मे हैं। जैसा कि गलातियों 4:6 में बताया

गया है : *"और तुम जो पुत्र हो, इसलिए परमेश्वर ने अपने पुत्र की आत्मा को, जो हे अब्बा, हे पिता कहकर पुकारता है हमारे हृदय में भेजा है!"* हम पहले ही पवित्र आत्मा का मंदिर हैं और परमेश्वर का आत्मा हम में वास करता है (हमारे अंदर रहता है)। इसलिए, विश्वासी को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु प्रार्थना करवाने की आवश्यकता क्यों है? कुछ लोग इस विवाद को इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं : 'पवित्र आत्मा अंश अंश करके नहीं आता, क्योंकि वह एक व्यक्ति है। इसलिए यदि आपके पास पवित्र आत्मा है, तो आपके पास उसका सर्वस्व है।'

आत्मिक और स्वाभाविक के मध्य अंतर भी है। जिस तरह से हम प्राकृतिक विश्व में बातों को देखते हैं, उससे आत्मिक बातें अक्सर भिन्न होती हैं। स्वाभाविक क्षेत्र में यह सच है कि जब आप व्यक्ति को भौतिक रूप से देखते हैं, तब आप उस व्यक्ति को पूर्ण रूप से देखते हैं। ऐसा नहीं है कि उस व्यक्ति ने अपना हिस्सा भौतिक तौर पर किसी और स्थान में रख छोड़ा है। परंतु, जब हम पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के विषय में विचार करते हैं तब वहां एक बड़ा अंतर होता है। पवित्र आत्मा एक व्यक्ति है, परंतु उसके विपरीत, वह असीम है। **वह आ सकता है और आते रहता है, क्योंकि वह असीम है।** हम उसकी "अधिकाई" को पा सकते हैं, क्योंकि वह असीम है और हम हमारे जीवनों में उसे कितना अनुभव करते हैं इसका कोई अंत नहीं।

पवित्र शास्त्र में, हम देखते हैं कि पवित्र आत्मा के भिन्न पैमाने हैं। हम देखते हैं कि मूसा पर जो आत्मा था वह अन्य 70 प्राचीनों को बांट दिया गया था (गिनती 11:16–30)। हम यहोशू में देखते हैं कि मूसा के पास जो था उसका एक अंश उसमें है – बुद्धि का आत्मा (व्यवस्थाविवरण 34:9)। एलिय्याह के स्वर्ग उठा लिए जाने के बाद हम एलिशा पर आत्मा का दुगुना हिस्सा उतरते हुए देखते हैं (2 राजा 2:9–10)। यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले ने घोषणा की कि यीशु पर आत्मा बेपरिमाण था (यूहन्ना 3:34)।

विश्वासी के जीवन में आत्मा के अधिनिवासी कार्य और आत्मा का बपतिस्मा के मध्य अंतर इन दो संदर्भों का अवलोकन करने पर समझा जा सकता है :

यूहन्ना 4:13–14

13 यीशु ने उसको उत्तर दिया, "जो कोई यह जल पीएगा, वह फिर प्यासा होगा।

14 "परंतु जो कोई उस जल में से पीएगा जो मैं उसे दूंगा, वह फिर अनन्तकाल तक प्यासा न होगा; वरन जो जल मैं उसे दूंगा, वह उसमें एक सोता बन जाएगा जो अनन्त जीवन के लिए उमड़ता रहेगा।"

यूहन्ना 7:37–39

37 फिर पर्व के अंतिम दिन, जो मुख्य दिन है, यीशु खड़ा हुआ और उसने पुकार कर कहा, "यदि कोई प्यासा हो तो मेरे पास आकर पीए।

38 "जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है, उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी।"

39 उसने यह वचन उस आत्मा के विषय में कहा, जिसे उस पर विश्वास करनेवाले पाने पर थे; क्योंकि आत्मा अब तक न उतरा था, क्योंकि यीशु अब तक अपनी महिमा को न पहुंचा था।

यूहन्ना 4 में, प्रभु यीशु ने एक **सोते के** विषय में कहा, यूहन्ना 7 में, उसने **नदी** के विषय में कहा। सोता विश्वासी के अंदर है, नदी विश्वासी में से बाहर बहती है। अंदर का सोता विश्वासी के लिए सनातन जीवन ले आता है। विश्वासी में से बाहर बहने वाली नदी पवित्र आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ है जो विश्वासी के द्वारा दूसरों के लिए उपलब्ध की जाती है। जल वही है (पवित्र आत्मा का प्रतीक), परंतु **भिन्न पैमाने** और **भिन्न उद्देश्य**। अतः वही आत्मा कार्य करता है, परंतु पैमाने और उद्देश्य में अंतर है।

1 कुरिन्थियों 12:13 का क्या?

1 कुरिन्थियों 12:13
क्योंकि हम सब ने क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वंतत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिए बपतिस्मा लिया, और हम सब को एक ही आत्मा पिलाया गया।

कभी–कभी लोग यह बताने के लिए कि हम सबने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया है 1 कुरिन्थियों 12:13 का उपयोग करते हैं। उद्धार देने वाला **एक ही बपतिस्मा** है (इफिसियों 4:5), परंतु विश्वासी के पास जो **कई बपतिस्मे** हैं जिनके विषय में उसे सिखाने की ज़रूरत है और जिनका विश्वासी अनुभव करता है (इब्रानियों 6:2)।

एक बपतिस्मा जो उद्धार देता है, वह **बपतिस्मा एक देह** में बपतिस्मा है, जिसका उल्लेख 1 कुरिन्थियों 12:13 में किया गया है। **हमने पवित्र आत्मा के द्वारा मसीह की देह में बपतिस्मा पाया है।** यह उद्धार के समय होता है।

उसके बाद **जल का बपतिस्मा** है, जहां हमारा बपतिस्मा पानी में होता है। **दूसरे विश्वासी द्वारा जल में हमें बपतिस्मा दिया जाता है।** विश्वासी यीशु के नाम में (यीशु के अधिकार के द्वारा), पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में (मत्ती 28:18–20) पानी का बपतिस्मा लेता है। जल का बपतिस्मा मुख्य रूप से यीशु मसीह का चेला होने का चुनाव करने की और उसके नाम के साथ हमारी समानता की घोषणा है। जल का बपतिस्मा उद्धार के बाद किसी भी समय होता है। पवित्र आत्मा का भी बपतिस्मा है।

हमें **यीशु मसीह ने पवित्र आत्मा में बपतिस्मा** दिया (मत्ती 3:11; प्रेरितों के काम 1:5,8)। यह बपतिस्मा सामर्थ और शुद्धीकरण के लिए है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा जो कि इस अध्याय का विषय है, उद्धार के बाद किसी भी समय होता है या उद्धार के समय भी हो

सकता है, जैसा कि प्रेरितों के काम 10 में कुरनेलियुस के घराने में हुआ।

अतः तीन बपतिस्मों में (एक देह में बपतिस्ता, जल का बपतिस्मा, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा), हम अंतर देखते हैं कि बपतिस्मा **कौन देता** है, हम **किसमें** बपतिस्मा पाते हैं और बपतिस्मा **का उद्देश्य** क्या है। इस कारण 1 कुरिन्थियों 12:13 मसीह की देह में बपतिस्मा पाने का उल्लेख करता है और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने से भिन्न है।

अन्य अन्य भाषाएं क्यों?

यह सोचना अत्यंत दिलचस्प है कि परमेश्वर अज्ञात भाषाओं में बोलने जैसे आत्मा के वरदान को बनाता है, जहां पर हम आत्मा के द्वारा मनुष्यों की और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलते हैं (1 कुरिन्थियों 13:1) और यह भी सोचना दिलचस्प है कि परमेश्वर इसका उपयोग पहले वरदान के रूप में करता है जो पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते समय विश्वासी के द्वारा व्यक्त होता है। परमेश्वर ऐसा क्यों करेगा? कइयों के लिए, "दूसरी भाषाओं में बोलना" बौद्धिक मन को आपत्तिजनक प्रतीत होता है।

परंतु इसी कारण हमें दूसरी भाषाओं में बोलना स्वीकार करने की ज़रूरत है। हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हैं। हम उसकी बुद्धि में भरोसा रखते हैं। हम अपनी समझ से परे उसमें भरोसा रखते हैं। इसलिए हम जिस तरह वह कार्य करता है उसे स्वीकार करते हैं और उसके साथ आगे बढ़ते हैं। अन्य सभी वरदानों को प्रगट करने हेतु समान विश्वास की और उस पर भरोसा रखते हुए हमारी अपनी समझ से बाहर कदम बढ़ाने हेतु इच्छा की आवश्यकता होती है। इसी समय उसकी सामर्थ वरदानों के द्वारा प्रगट होती है।

हम इस पुस्तक के सातवें अध्याय में नाना प्रकार की भाषाओं के वरदान के विषय मे और विचार करेंगे। आप उस अध्याय में अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के कुछ लाभों का जल्दी से अवलोकन कर सकते हैं। उसी तरह, अधिक जानकारी के लिए कृपया "अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अद्‌भुत लाभ" नामक एपीसी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित विनामूल्य पुस्तक देखें, यह पुस्तक निम्नलिखित वेवसाईट पर डाऊनलोड के लिए विनामूल्य उपलब्ध है : apcwo.org/publications

क्या क्या अन्य अन्य भाषाओं मे बोलना पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का प्रमाण है?

इस प्रश्न की पिछले कई दशकों से, शायद सदियों से काफी चर्चा की जा रही है।

प्रेरितों के कामों की पुस्तक में लिखे गए पांच उदाहरणों से इस प्रश्न का उत्तर है 'हां।' जब लोगों ने पवित्र आत्मा के साथ बपतिस्मा पाया तब वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे। यह सामान्य बात थी और यही अपेक्षित था।

दूसरी ओर, हम जानते हैं कि आत्मा के नौ वरदान हैं। अतः सामान्य प्रश्न जो सुझाया जाता है वह है काश जब विश्वासी पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाता है, तब अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अलावा पवित्र आत्मा अन्य किसी वरदान को प्रगट करने का चुनाव करे। हमें इस बात के लिए पूरी रीति से तैयार रहें और समझें कि यह निश्चित रूप से सम्भव है।

विश्वासी के लिए पवित्र आत्मा मे बपतिस्मा पाना और अन्य अन्य भाषाओं में न बोलते हुए आत्मा के अन्य वरदानों को प्रगट करना क्या सम्भव है? अवश्य ही, हां।

परंतु, क्योंकि हमारा लक्ष्य विश्वासी को आत्मा के सभी नौ वरदानों में सक्रिय होते और कार्य करते हुए देखना है, इसलिए हम निरंतर विश्वासियों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे जब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु प्रार्थना करते हैं, तब अन्य अन्य भाषाओं में बोलने की इच्छा रखें और अपेक्षा करें। और जल्द ही, वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलना आरम्भ करते हैं। और हम वहीं नहीं रूक जाते। हम उन्हें प्रोत्साहन देते हैं कि वे आत्मा के सभी नौ वरदानों में आगे बढ़ने की आग्रहपूर्ण इच्छा रखें।

हम सभी विश्वासियों को प्रोत्साहन देते हैं कि वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलें क्योंकि प्रभु यीशु ने मरकुस रचित सुसमाचार में कहा कि सभी विश्वासी ऐसा करेंगे। मरकुस 16:17–18: *"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।"*

कुछ अन्य प्रश्न

क्या मुझे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु "रुकना" चाहिए?

नहीं, हमें रुकने की आवश्यकता नहीं है। जी हां, हमें विश्वास और अपेक्षा के साथ प्रार्थना करना है। परंतु हमें कई दिनों तक 'रुकने' की आवश्यकता नहीं है। पहले 120 चेलों को यरूशलेम में रुकना पड़ा इसका एकमात्र कारण यह था कि उन्हें पिन्तेकुस्त के दिन के लिए रुकना था क्योंकि परमेश्वर ने उस दिन उसका आत्मा उण्डेलने का निर्णय लिया था। बाद वाले उदाहरणों में, लोगों के लिए प्रार्थना की गई और उन्होंने प्रार्थना सभा के दौरान पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया।

क्या पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु मुझ पर हाथ रखे जाने की ज़रूरत है?

यह आवश्यक नहीं है। यह स्मरण रखें कि पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देने वाला प्रभु यीशु है। इसलिए वह आपके साथ प्रार्थना करने हेतु किसी और का उपयोग कर सकता है या किसी और के आप पर हाथ रखे बगैर और आपके साथ प्रार्थना किए बगैर वह ऐसा कर सकता है। आप व्यक्तिगत तौर पर प्रार्थना कर सकते हैं और पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने हेतु बिना किसी के आप पर हाथ रखे आप विश्वास से प्राप्त कर सकते हैं। पिन्तेकुस्त के दिन और कुरनेलियुस के घर में बिना किसी के हाथ रखे पवित्र आत्मा लोगों पर उतर आया।

क्या पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के लिए प्रार्थना करने से पहले मुझे जल का बपतिस्मा लेने की ज़रूरत है?

यह आवश्यक नहीं है। जैसा कि हमने पहले ही शाऊल और कुरनेलियुस के घराने में देखा, लोगों ने पहले पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया और बाद में उन्होंने जल का बपतिस्मा लिया। सामरिया और इफिसुस के विश्वासियों के उदाहरण में, उन्होंने पहले जल का बपतिस्मा लिया, और उसके बाद उन्होंने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया। अतः परमेश्वर दोनों तरह से काम कर सकता है।

क्या अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ हमेशा ही समझा जाना चाहिए?

पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों के काम 2 में, हम जानते हैं कि लोगों ने उन भाषाओं में जिससे वे परिचित थे लोगों को बोलते हुए और परमेश्वर के अद्‌भुत कामों का बखान करते हुए सुना। इसमें उन 120 विश्वासियों की सम्भावना को हटाया नहीं जा सकता जिन्होंने उस दिन पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था, उनमें से कुछ लोगों ने अन्य भाषाओं में बोला होगा जिसे समझा नहीं जा सकता था, जिसमें संसारिक और स्वर्गीय भाषाओं का समावेश हो सकता है। यह कहना गलत है कि

सभी 120 लोगों ने केवल उन लोगों की भाषाओं में बातें की जो वहां पर उपस्थित थे। पवित्र शास्त्र बताता है कि वहां उपस्थित लोगों में से प्रत्येक ने अपनी भाषा में कुछ बातें सुनीं। इसलिए इसमें अन्य अज्ञात भाषाओं के उपयोग की सम्भावना को हटाया नहीं जा सकता, जब 120 लोगों ने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की।

प्रेरितों के काम 2:7–11

7 और वे सब चकित और अचम्भित होकर कहने लगे, "देखो, ये जो बोल रहे हैं, क्या सब गलीली नहीं?
8 "तो फिर क्यों हममें से हर एक अपनी अपनी जन्मभूमि की भाषा सुनता है?
9 "हम जो पारथी और मेदी और एलामी लोग और मिसुपुतामिया और यहूदिया और कप्पदूकिया और पुन्तुस और आसिया,
10 "और फ्रूगिया और पमफूलिया और मिसर और लिबूआ देश जो कुरेने के आस पास है, इन सब देशों के रहनेवाले और रोमी प्रवासी, क्या यहूदी, क्या यहूदी मत धारण करनेवाले, क्रेती और अरबी भी हैं।
11 "परंतु अपनी अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं।"

पवित्र शास्त्र निश्चयात्मक तौर पर यह नहीं बताता कि प्रेरितों के काम 10 और 19 में, जब लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था, तब उन सभी लोगों ने ऐसी भाषाओं में बातें की जिन्हें वहां उपस्थित लोग समझ पाए।

दूसरी ओर, पवित्र शास्त्र स्पष्ट रूप से सिखाता है कि जब हम अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तब हम मनुष्यों की भाषाओं में और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोल सकते हैं (1 कुरिन्थियों 13:1)। इससे निश्चित रूप से यह सूचित होगा कि हम अन्य अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं जिसे कोई नहीं समझेगा। इसलिए, प्रेरित पौलुस स्पष्ट रूप से बताता है कि जब हम अन्य अन्य भाषा में बोलते हैं तब "उसे कोई नहीं समझता।"

1 कुरिन्थियों 13:1
यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं, तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं।

1 कुरिन्थियों 14:2
क्योंकि जो अन्य भाषा में बातें करता है, वह मनुष्यों से नहीं, परंतु परमेश्वर से बातें करता है; इसलिए कि उसकी कोई नहीं समझता; क्योंकि वह भेद की बातें आत्मा में होकर बोलता है।

हमें यह समझना चाहिए कि अन्य अन्य भाषाओं में बोलने/प्रार्थना करने के कई उपयोग हैं जैसा कि पवित्र शास्त्र में देखा जाता है। इनमें इन बातों का समावेश है :

(अ) व्यक्तिगत प्रार्थना, मध्यस्थी, और उन्नति के लिए अन्य अन्य भाषा : अन्य अन्य भाषाओं में बोलने का यह अत्यंत सामान्य उपयोग है, जहां विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में बोलता/प्रार्थना करता है जिसके परिणामस्वरूप आंतरिक मनुष्यत्व की उन्नति होती है, वह प्रत्यक्ष परमेश्वर के साथ बातें करता है, और दूसरों के लिए मध्यस्थी करता है (1 कुरिन्थियों 14:2,4; रोमियों 8:26–27)।

(ब) अर्थ बताने हेतु अन्य अन्य भाषाएं : यह तब होता है जब किसी सभा में विश्वासी को अन्य अन्य भाषाओं में संदेश देने की प्रेरणा प्राप्त होती है जिसके बाद उस भाषा का अर्थ बताना होता है, ताकि सभी उपस्थित समझ सकें और उन्नति पा सकें (1 कुरिन्थियों 14:5,13)

(क) अविश्वासियों के लिए चिन्ह के रूप में अन्य अन्य भाषाएं : यहां पर आत्मा विश्वासी को योग्यता देता है कि वह ऐसी भाषा में बोले जिसे उपस्थित अविश्वासी समझ सकें, जिसके परिणामस्वरूप वे प्रभु के विषय में सत्य सुनते हैं (1 कुरिन्थियों 14:22; प्रेरितों के काम 2:7–11)।

इसएिल इस प्रश्न का उत्तर है, 'नहीं, अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ हमेशा ही समझना ज़रूरी नहीं है।'

क्या यीशु ने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की?

हम नहीं जानते। पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई स्थान नहीं है जो बताता है कि यीशु ने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की। उसी तरह पवित्र शास्त्र में ऐसा कोई स्थान नहीं है जो ऐसा बताता है कि उसने अन्य अन्य भाषाओं में बातें नहीं की। इसलिए, हम नहीं जानते कि क्या प्रभु यीशु ने आत्मा के इन दो वरदानों का उपयोग किया – अन्य अन्य भाषाएं और उनका अर्थ बताना। हम अवश्य ही जानते हैं कि उसने आत्मा के अन्य सात वरदानों को प्रगट किया, क्योंकि उसके प्रचार और शिक्ष के साथ आश्चर्यकर्म हुआ करते थे।

इब्रानियों 2:3–4

3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्िंचत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ?

4 और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

जब हम अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं, क्या तब शैतान समझ सकता है?

बाइबल स्पष्ट रूप से नहीं बताती कि शैतान और उसकी दुष्टात्माएं हमारा अन्य अन्य भाषाओं में बोलना समझते हैं या नहीं। परंतु, यहां पर हम कुछ अनुमान लगा सकते हैं। जब हम अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तब हम 1 कुरिन्थियों 13:1 के अनुसार मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलते हैं। हम जानते हैं कि शैतान और उसकी दुष्टात्माएं मनुष्यों की भाषाएं समझ सकती हैं क्योंकि जब हम दुष्टात्माओं का विरोध करते हैं, उन्हें डांटते हैं या दुष्टात्माएं निकालते हैं, तब हम अपनी ज्ञात भाषाओं को शब्दों में बोलते हैं और तब ये दुष्टात्माएं उत्तर देती हैं और आज्ञा मानती हैं। हम पवित्र शास्त्र में यह भी देखते हैं कि ज्योति के स्वर्गदूत और शैतान तथा उसकी दुष्टात्माओं

के मध्य संघर्ष चलता है (दानिय्येल 10:13,20,21; यहूदा 1:9)। ज्योति के स्वर्गदूत भी शैतान और उसकी दुष्टात्माओं को स्वर्गदूतों की भाषा का उपयोग कर डांटते हैं (यहूदा 1:9)। इसलिए हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि शैतान और उसकी दुष्टात्माएं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की भाषाएं समझ सकते हैं। इसलिए इसका अर्थ यह होगा कि जो हम अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं उसे वे समझेंगे। परंतु हम अन्य अन्य भाषाओं में जो बोलते हैं उसे दुष्टात्माएं समझती हैं इस बात से हमें किसी तरह से परेशान होने की ज़रूरत नहीं।

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु निर्देश और प्रार्थना

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाना पूर्णतया परमेश्वर का कार्य है। हम उसका निर्माण नहीं कर सकते या लोगों को जबरन इसके लिए विवश नहीं कर सकते। हम लोगों को यह सिखा सकते हैं कि परमेश्वर का वचन क्या कहना चाहता है, हम कुछ व्यवहारिक निर्देश दे सकते हैं और उसके बाद प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर अपने वचन के प्रति निरंतर विश्वासयोग्य रहता है और वह अपने लोगों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा देगा। वह उन लोगों पर अपना आत्मा उण्डेलता है जो प्यासे हैं (यशायाह 44:3)।

यीशु पवित्र आत्मा में बपतिस्मा देने वाला है, अतः उसकी ओर देखें।

बाइबल कहती है कि यीशु हमें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11)। इसलिए, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने हेतु व्यक्ति को पासबान की या परमेश्वर के जन की आवश्यकता नहीं है! इसलिए हम यीशु से बिनती कर सकते हैं कि वह हमें बपतिस्मा दे – अपना आत्मा हम पर उण्डेल दे। जब वह अपना आत्मा उण्डेलता है, तब स्वर्गीय भाषांए प्रगट होगी। प्रेरितों के कामों की पुस्तक में यही हुआ – जितनी बार लोगों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, उतनी बार कुछ अलौकिक घटित हुआ। वे अन्य अन्य भाषाओं में आराधना करने लगे।

आप विश्वासी हैं और आप अन्य भाषाओं में बातें कर सकते हैं

याद रखें कि विश्वासी होने के नाते आप अन्य भाषाओं में बातें कर सकते हैं। मरकुस 16:17–18 में प्रभु यीशु ने कहा कि आप ऐसा कर सकते हैं : *"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।"*

विश्वास का कदम बढ़ाएं

हम विश्वास से आत्मा की प्रतिज्ञा पाते हैं। यह पवित्र आत्मा का वरदान है और प्रतिज्ञा पाने हेतु आपके लिए सरल विश्वास की ज़रूरत है।

गलातियों 3:13–14

13 मसीह ने जो हमारे लिए श्रापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के श्राप से छुड़ाया क्योंकि लिखा है, जो कोई काठ पर लटकाया जाता है वह श्रापित है।

14 यह इसलिए हुआ, कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।

सब प्रकार के भय को त्याग दें

किसी प्रकार का भय न रखें कि आपको कोई "अन्य" प्रकार का आत्मा मिलेगा। जब आप प्रार्थना करेंगे और प्रभु यीशु से बिनती करेंगे कि वह आपको पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा, तब बिल्कुल यही होगा। प्रभु यीशु ने लूका 11:11–13 में कहा : *"तुममें से ऐसा कौन पिता होगा कि जब उसका पुत्र उसे रोटी मांगे, तो उसे पत्थर दे; या मछली मांगे, तो मछली के बदले उसे सांप दे? या अण्डा मांगे तो उसे बिच्छू दे? इसलिए जब तुम बुरे होकर अपने लड़केबालों को अच्छी वस्तुएं देना*

जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगनेवालों को पवित्र आत्मा क्यों न देगा?"

निश्चिंत रहें, आप परमेश्वर को कुछ करने हेतु नहीं मनवा रहे हैं

आपको पवित्र आत्मा का वरदान पाने हेतु, परमेश्वर से याचना करने की ज़रूरत नहीं है, उसका हाथ मरोड़ने की, लम्बे समयों तक इंतज़ार करने की, अभियाचना करने की, पुकारने की, बहुत आंसू बहाने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर आपके जीवन में उसकी प्रतिज्ञा पूरी करने हेतु तैयार है। केवल मांगें और विश्वास से ग्रहण करें! आपके पास केवल एक प्रामाणिक इच्छा है, जैसा कि यीशु ने मरकुस 11:24 में कहा : *"इसलिए मैं तुमसे कहता हूं कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो, तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया, और तुम्हारे लिए हो जाएगा।"*

अब से कुछ मिनटों में, जब आप प्रार्थना करते हैं, तब विश्वास करें कि आपके मांगने के क्षण में आपने जो मांगा, वह आपने पा लिया।

पवित्र आत्मा भाषा देता है, परंतु बोलते आप हैं

प्रेरितों के काम 2:4
और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।

नीचे दी गई प्रार्थना करने के बाद, अपने मुंह को खोलें और जो कुछ मुंह से निकलता है, बोलें। आवाज़ आपकी होगी और आपके स्वर तन्त्र कार्य करेंगे। पवित्र आत्मा नहीं बोलेगा। बोलना आपको है। वह केवल भाषा देता है।

भाषा ध्वनियों से मिलकर बनती है

याद रखें भाषा बोलने में मात्र ध्वनि उत्पन्न करना शामिल है। जब ये ध्वनि समझने योग्य होते हैं और निश्चित क्रम का अनुसरण करते हैं,

तब उस भाषा में आप क्या कह रहे हैं इसका अर्थ दूसरे समझ सकते हैं। अन्य अन्य भाषाओं में, हम मनुष्यों या स्वर्गदूतों की भाषा बोलते हैं। इसलिए, पवित्र आत्मा भाषा देता है (ध्वनियों को प्रेरित या प्रोत्साहित करता है) और आपको आपके स्वततंत्रों का उपयोग कर उन ध्वनियों को व्यक्त करना है। ये ध्वनि ऐसी भाषा में हैं जिन्हें आपने सीखा नहीं है, इसलिए ये ध्वनि आपके मन को नहीं समझ पाएंगे। आपको आरम्भ में ऐसा प्रतीत होगा कि आप कुछ अजीब ध्वनि निकाल रहे हैं। ये अज्ञात भाषा में शब्द (स्वर) हैं। उसे आवाज़ दें। जब आप विश्वास का कदम बढ़ाएंगे, तब और शब्द प्रवाहित होने लगेंगे।

एक समय में एक भाषा

स्मरण रखें कि एक ही समय में आप दो भाषाएं नहीं बोल सकते। इसलिए आपकी अपनी ज्ञात भाषा (भाषाओं) में कुछ भी बोलने का प्रयास न करें। जल्दी जल्दी "परमेश्वर की स्तुति हो" या "हालेलुय्याह" बोलने का प्रयास न करें। ऐसा करने की ज़रूरत नहीं है। इससे उस भाषा के प्रवाह में बाधा आएगी जो आत्मा देना चाहता है। उसके बजाए, प्रार्थना करने के बाद, विश्वास का कदम बढ़ाएं और नई भाषा में बोलें। यीशु ने कहा कि आप ऐसा करेंगे, अतः आप ऐसा कर सकते हैं!

परमेश्वर आत्मा का मन जानता है (सभी भाषाओं में)

परमेश्वर आपके हृदय में जो देखता है, जानता है कि पवित्र आत्मा आपके द्वारा क्या कह रहा है।

रोमियों 8:27
और मनों का जांचनेवाला जानता है कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है।

इस बात से चिंतित न हो कि आप जो कह रहे हैं उसे आप समझ नहीं पा रहे हैं। प्रेरित पौलुस ने हमें बताया कि जब हम आत्मा में

प्रार्थना करते हैं, तब पवित्र आत्मा से सामर्थ पाकर हमारा आत्मा प्रार्थना करता है, और हमारी समझ काम नहीं करती : "इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परंतु मेरी बुद्धि काम नहीं देती" (1 कुरिन्थियों 14:14)। पवित्र आत्मा आपके द्वारा क्या कह रहा है इस बात को परमेश्वर समझता है और यही महत्वपूर्ण है।

प्रार्थना

पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के लिए बिनती करने और उसे प्राप्त करने में सहायता करने हेतु यहां एक सरल प्रार्थना दी गई है। उसके बाद विश्वास में कदम बढ़ाएं और उस भाषा में बोलें जो पवित्र आत्मा आपको देता है।

प्रिय प्रभु यीशु, मैं विश्वासी हूं मैं आपसे बिनती करता हूं कि मुझे पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दीजिए ताकि मैं आपकी गवाही देने हेतु सामर्थ पा सकूं। स्वर्गीय पिता, मैं यीशु के नाम में बिनती करता हूं, कृपया मुझ पर अपना आत्मा उण्डेलिए जैसा कि आपने प्रतिज्ञा की है कि आप अंत के दिनों में करेंगे। विश्वास के द्वारा अब मैं पवित्र आत्मा के समस्त वरदानों के साथ पवित्र आत्मा की वर्षा को ग्रहण करता हूं। पवित्र आत्मा अब मुझ पर है और उसके सारे वरदान मुझमें उसके साथ वास करते हैं। प्रभु यीशु धन्यवाद। मैं विश्वासी हूं, इसलिए अब मैं जैसे आत्मा मुझे योग्यता देता है उसके अनुसार नई भाषाएं बोलता हूं। मेरे जीवन के द्वारा मैं अन्य सभी वरदानों के प्रवाह की अपेक्षा करता हूं। धन्यवाद प्रभु यीशु। पवित्र आत्मा आपका स्वागत है!

अन्य अन्य भाषाओं में बोलना आरम्भ करने के बाद, अक्सर अन्य अन्य भाषाओं में बोलना जारी रखें, यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन। लम्बे समय तक अन्य अन्य भाषाओं में समय व्यतीत करने का प्रयास करें।

अन्य अन्य भाषओं में प्रार्थना करने के कई अद्भुत लाभ हैं। अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के लाभों के विषय में अधिक जानकारी पाने हेतु, एपीसी प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक "अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अद्भुत लाभ" नामक पुस्तक पढ़ें जो इस पते पर विनामूल्य डाऊनलोड के लिए उपलब्ध है : at apcwo.org/publications.

जब आप इस पुस्तक में आगे बढ़ते जाएंगे, तब आप पवित्र आत्मा के वरदानों के विषय में और सीखेंगे, ताकि आप सीख सकें कि उसके सभी वरदानों को प्रगट करने हेतु आप आत्मा के अधीन कैसे हो सकते हैं। इन वरदानों के द्वारा आप लोगों की सेवा और सहायता कर सकते हैं। आप सामर्थी गवाह बनेंगे। यीशु मसीह को महिमा मिलेगी!

आत्मा से भरपूर, अभिषिक्त और आत्मा में चलते हुए

विश्वासी के जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के सम्बंध में नए नियम में हम विभिन्न शब्द या वाक्प्रयोग देखते हैं। हमारे द्वारा उपयोग किए जाने वाले शब्दों की स्पष्टता बनाए रखने में सहायता करने हेतु इनमें से कुछ पर हम संक्षिप्त टिप्पणी प्रस्तुत करेंगे। कृपया ध्यान दें कि ऐसी संज्ञाओं का यह सम्पूर्ण स्पष्टीकरण नहीं है। हमें यह दूसरी पुस्तक के लिए छोड़ना होगा।

ऊपरी कोठरी में 120 चेलों ने जो अनुभव पाया था उसका उल्लेख पवित्र आत्मा के **बपतिस्मे** के रूप में किया गया था (प्रेरितों के काम 1:5)। हम देखते हैं कि वे पवित्र आत्मा से **परिपूर्ण** भी हो गए थे (प्रेरितों के काम 2:4)। उसके बाद सामरिया में, प्रेरितों ने प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा विश्वासियों पर **"उतर आए"** और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया (प्रेरितों के काम 8:16–17)। उसी तरह, हम जानते हैं कि जब पतरस प्रचार कर रहा था, तब कुरनेलियुस के घर में एकत्रित हुए लोगों ने भी पवित्र आत्मा का **बपतिस्मा पाया** (प्रेरितों के काम 11:15–17)। पवित्र आत्मा उन पर **"उतर आया"** और **"उण्डेला गया"**, (प्रेरितों के

काम 10:44–45)। इसलिए जब विश्वासी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं, उस समय वे पवित्र आत्मा से परिपूर्ण भी होते हैं, पवित्र आत्मा उन पर उतर आता है और उन पर उण्डेला जाता है। विश्वासी जब पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाता है तब क्या होता है इसका उल्लेख करते समय ये सभी वाक्यांश उचित सिद्ध होते हैं।

एक बपतिस्मा, कई भरपूरियां

प्रेरितों के कामों की पुस्तक से हम यह देखते हैं कि जिन विश्वासियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया था उनके विषय में लिखा गया है कि वे बार–बार आत्मा से भरते गए या पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गए:

प्रेरितों के काम 4:8
तब पतरस ने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर उनसे कहा, "हे लोगों के सरदारों और पुरनियों:"

प्रेरितों के काम 4:31
जब वे प्रार्थना कर चुके, तो वह स्थान जहां वे इकट्ठे थे हिल गया, और वे सब पवित्र आत्मा में परिपूर्ण हो गए, और परमेश्वर का वचन हियाव से सुनाते रहे।

प्रेरितों के काम 6:3
इसलिए हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें।

प्रेरितों के काम 6:5
यह बात सारी मण्डली को अच्छी लगी, और उन्होंने स्तिफनुस नामक एक पुरुष को जो विश्वास और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण था, फिलिप्पुस और प्रुखुरुस और नीकानोर और तीमोन और परमिनास और अन्ताकीवाला नीकुलाउस को जो यहूदी मत में आ गया था, चुन लिया।
प्रेरितों के काम 7:55
परंतु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर की दाहिनी ओर खड़ा देखकर कहा,

प्रेरितों के काम 11:24
क्योंकि वह एक भला मनुष्य था, और पवित्र आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था। और और बहुत से लोग प्रभु में आ मिले।

प्रेरितों के काम 13:9
तब शाऊल ने जिसका नाम पौलुस भी है, पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो उसकी ओर टकटकी लगाकर कहा,

प्रेरितों के काम 13:52
और चेले आनन्द से ओर पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होते रहे।

प्रेरित पौलुस पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए हुए (पवित्र आत्मा से परिपूर्ण) लिखते हुए अपनी पत्रियों में उन्हें निर्देश देता है कि वे आत्मा में परिपूर्ण हों, आत्मा में चलें और आत्मा में जीएं :

इफिसियों 5:18–21
18 और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण होते जाओ।
19 और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।
20 और सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो।
21 और मसीह के भय से एक दूसरे के आधीन रहो।

गलातियों 5:16,22–25
16 परंतु मैं कहता हूं, आत्मा के अनुसार चलो, तो तुम शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे।
22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज,
23 कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।
24 और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है।
25 यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

जब हम पवित्र आत्मा का **बपतिस्मा** पाते हैं, उस क्षण हम आत्मा से **परिपूर्ण** हो जाते हैं और अभिषेक पाते हैं। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होना विश्वासी के अंदर पवित्र आत्मा के उस कार्य के विषय में बोलता है जो इस बात को प्रभावित करता है कि हम कैसे जीवन बिताते हैं। उसका सम्बंध हमारे चालचलन से, हमारे आचरण से है। अभिषेक पाने का सम्बंध पवित्र आत्मा के उस कार्य से है जिसमें वह हमें सेवकाई के लिए सामर्थ प्रदान करता है, हमारे कार्य को प्रभावित करता है। अतः पवित्र आत्मा के बपतिस्मे का परिणाम परिपूर्ण होने और अभिषेक पाने में है। बपतिस्मा पाना भर जाना और अभिषेक पाना है, और फिर भी हम देखते हैं कि एक अर्थ से इन दोनों बातों को **"सक्रिय"** रखना है।

आत्मा से परिपूर्ण होना और आत्मा में चलना और आत्मा में जीवन बिताना

जैसा कि हम उपर्युक्त पवित्र शास्त्र के वचनों से देखते हैं, यद्यपि जब हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं जब हम परिपूर्ण हो जाते हैं, फिर भी हमें परिपूर्ण बने रहने की या आत्मा से भरपूर रहने की आवश्यकता होती है। हमें निरंतर, बारम्बार और बारम्बार और बारम्बार भरते जाने की ज़रूरत होती है। इसका कारण देह और आत्मा के बीच निरंतर संघर्ष होता है (गलातियों 5:17)। यदि मैं शरीर को प्रभुता करने की अनुमति देता हूं, तो मैं आत्मा से "कम परिपूर्ण" होता हूं, अर्थात मुझे पर आत्मा का प्रभाव कम हो गया है या उस हद तक घट गया है। परंतु यदि मैं आत्मा से परिपूर्ण रहता हूं, तो देह अधीन रखी जाती है। जब हम आत्मा से परिपूर्ण जीवन बिताते हैं, तब हम वही करते हैं जिसके विषय में प्रेरित पौलुस हमें सिखाते हुए कहता है कि "आत्मा के अनुसार चलें" (गलातियों 5:16) या "आत्मा के द्वारा जीवित रहे" (गलातियों 5:25)। आत्मा से परिपूर्ण व्यक्ति बुद्धि, विश्वास, धन्यवाद के साथ चलेगा, वह परमेश्वर के लिए गीत गाएगा, अधीनता में चलेगा, **आत्मा के फलों को प्रगट करेगा** (गलातियों 5:22–23), और देह की पापमय वासनाओं पर जय पाएगा (गलातियों 5:16,24)। आत्मा से

परिपूर्ण होने के लिए, हमें अपने हृदय साफ और स्वतंत्र रखने की ज़रूरत है। 1 यूहन्ना 1:7,9 के अनुसार अपने पाप का अंगीकार करें और तुरंत उसकी शुद्धता प्राप्त करें। जैसे ही आप किसी के द्वारा आहत महसूस करते हैं, वैसे ही क्षमा करें। परमेश्वर के आत्मा को निमंत्रण दें कि वह आपको भर दे। अपने सर्वस्व को उसके वश में कर दें। उसका स्वागत करें। उसके साथ सहभागिता में रहें। इससे आपको **"सक्रिय"** रूप से आत्मा से परिपूर्ण रहने, आत्मा में जीने और आत्मा में चलने में सहायता प्राप्त होती है।

अभिषिक्त

जब हम पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं, तब हम आत्मा से अभिषेक भी पाते हैं। अभिषेक पाने का अर्थ आत्मा हम पर है, जो हमें वह सब करने की सामर्थ प्रदान करता है जो परमेश्वर हमारे द्वारा करना चाहता है (लूका 4:17–19, प्रेरितों के काम 10:38)। हम हर समय मसीह में अभिषिक्त रहते हैं (2 कुरिन्थियों 1:21)। फिर भी, क्योंकि हम हर समय काम नहीं करते, अतः अभिषेक हर समय "सक्रिय" नहीं होता। जब कभी पवित्र आत्मा हम पर मण्डराता है और उस कार्य को करने हेतु अपनी सामर्थ को भेजता है जो वह हमसे हर समय करवाना चाहता है (उस प्रत्येक कार्य के लिए अभिषेक की ज़रूरत होती है जो परमेश्वर चाहता है कि आप करें), तब हम कहते हैं कि हम पर अभिषेक आया हैं (अभिषेक "सक्रिय" है)। अभिषेक विश्वासी के द्वारा आत्मा की सामर्थ का प्रगट होना है। ऐसा समय होता है जब पवित्र आत्मा इसे आरम्भ करता है। वह हम पर मण्डराता है ओर फिर हम उस कार्य को करने लगते हैं। ऐसा समय होता है जब हम कार्य आरम्भ करते हैं और अभिषेक बहने लगता है या कार्य करता है। आत्मा के वरदान वे माध्यम होते हैं (या साधन) जिनके द्वारा पवित्र आत्मा का अभिषेक (सामर्थ) प्रगट होती है ताकि लोगों की सेवा करे। अभिषेक के विभिन्न स्तर हैं। ऐसा समय हो सकता है जब हम अन्य समयों की तुलना में "अधिक अभिषिक्त" होते हैं। सामर्थ का वह अंश जो प्रगट होता है वह उस

अभिषेक के अनुपात में होता है जो उस क्षण उपस्थित और सक्रिय होता है।

हमें आत्मा से निरंतर परिपूर्ण रहना है। इसलिए, जितनी बार हम सेवा करते हैं (उस कार्य को करते हैं जिसे करने के लिए परमेश्वर ने हमें बुलाया है), उतनी बार हमें अभिषेक के अंतर्गत कार्य करना है। इसलिए, इस अर्थ से, पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्रारम्भिक भी होता है और उसे दोहराया भी जा सकता है। हम एक बार पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाते हैं, परंतु बार–बार भरते जाते हैं और अभिषेक पाते हैं, अनगिनत बार, बारम्बार।

अभिषेक हम पर और अभिषेक हमारे अंदर

गौर करें, हमें "अभिषेक हम पर" और "अभिषेक हमारे अंदर" में उलझना नहीं है। हम पर अभिषेक का अर्थ है आत्मा हम पर है और हमें सेवा के लिए सामर्थ प्रदान करता है। अभिषेक हमारे अंदर है, अर्थात हमारे अंदर आत्मा उसके अधिनिवास के कार्य को पूरा करता है और हमें मसीह की समानता में बदल देता है। अतः, 1 यूहन्ना 2:20, 27 विश्वासी के अंदर आत्मा के कार्य का उल्लेख करता है (अर्थात अभिषेक अंदर)।

1 यूहन्ना 2:20,27
20 और तुम्हारा तो उस पवित्र से अभिषेक हुआ है, और तुम सब कुछ जानते हो।
27 और तुम्हारा वह अभिषेक, जो उसकी ओर से किया गया, तुममें बना रहता है; और तुम्हें इसका प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखाए, वरन् जैसे वह अभिषेक जो उसकी ओर से किया गया, तुम्हें सब बातें सिखाता है; और यह सच्चा है, और झूठा नहीं। और जैसा उसने तुम्हें सिखाया है, वैसे ही तुम उसमें बने रहते हो।

4

आत्मिक वरदानों के विषय में

हम 1 कुरिन्थियों 12 में पवित्र आत्मा के वरदानों का परिचयात्मक अवलोकन करते हैं, और हम कुरिन्थियों को लिखे गए पौलुस के पत्र की पृष्ठभूमि की थोड़ी समझ पाने लगते हैं।

उसकी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान (सन 49 – सन 52), प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस में करीब 18 महीने बिताए (प्रेरितों के काम 18:11), जो कि बंदरगाह वाला नगर था, जिसमें दो बंदरगाह थे और वह एक समृद्ध व्यापार केन्द्र था जिसे "ग्रीस के अलंकार" के रूप में जाना जाता था, उसकी अंदाजन जनसंख्या 200,000 लोग इतनी थी। कुरिन्थुस में एफ्रोडिट का मंदिर था जो प्रेम की देवता था और उसमें 1,000 पुरुष और स्त्रियां वेश्याएं थीं। अनैतिकता और सुखविलास के लिए कुरिन्थुस कुख्यात था। अक्विला और प्रिस्किला यहूदी विश्वासी थे जो सन 49 में क्लॉडियस द्वारा निकाले गए इस फरमान के कारण कि समस्त यहूदी रोम छोड़कर चले जाएं, रोम से कुरिन्थुस आए थे (प्रेरितों के काम 18:1–3)। वे पौलुस के साथ तम्बु बनाने का काम करते थे और कुरिन्थुस में उसके साथ मिलकर सेवा करते थे। पौलुस को फिलिप्पी से कुछ सहायता भी भेजी गई थी (2 कुरिन्थियों 9:1–10, 2 कुरिन्थियों 11:6–10, फिलिप्पियों 4:15–16)। **सिलास** और **तीमुथियुस** मकिदुनिया से थे और वे कुरिन्थुस में **पौलुस, अक्विला, प्रिसिल्ला** और **लूका** से जा मिले (प्रेरितों के काम 18:5)।

पवित्र आत्मा से परिपूर्ण उन्नति प्राप्त कलीसिया की स्थापना कुरिन्थुस में मात्र 18 महीनों में हुई। पौलुस ने उन्हें कई बातें सिखाई थी जिनमें यीशु मसीह के क्रूस, प्रभु भोज में भाग लेना, पवित्र आत्मा

की सामर्थ के विषय में सच्चाइयां बताई थीं और उन सभों को पवित्र आत्मा के वरदानों का उपयोग करना और अन्य सच्चाइयां सिखाई थी।

इन 18 महीनों के अंत में, पौलुस, अक्विला और प्रिसिल्ला कुरिन्थुस छोड़ गए, और कुछ समय के लिए किन्खिया में रुक गए और उसके बाद वहां से इफिसुस को चले गए (प्रेरितों के काम 18:18–19)। पौलुस ने अक्विला और प्रिसिल्ला को पीछे छोड़ दिया और वह यरूशलेम को चला गया। इफिसुस में अक्विला और प्रिसिल्ला की भेंट अप्पुलोस से हुई और उसने उन्हें प्रभु यीशु के विषय में कई बातें सिखाई। बाद में उन्होंने अप्पुलोस को कुरिन्थुस को भेजा और वहां के विश्वासियों के पास उसकी सिफारिश की। अप्पुलोस कुरिन्थुस के विश्वासियों के लिए बड़ी आशीष का कारण सिद्ध हुआ (प्रेरितों के काम 18:24–28)।

प्रेरित पौलुस ने उसकी तीसरी मिशनरी यात्रा के दौरान (सन 53 – सन 58) इफिसुस में 3 वर्ष बिताए। इस समय के दौरान, कुरिन्थुस के कुछ लोगों ने इफिसुस को भेंट दी, जिनमें "खलोय" का घराना शामिल था (1 कुरिन्थियों 1:11) और उन्हें कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्याओं क विषय में बताया। "स्तिफनुस, और फूरतूनातुस और अखइकुस" (1 कुरिन्थियों 16:17) उन कुछ लोगों में से होंगे जो कुरिन्थुस से आए होंगे। इफिसुस से, पौलुस ने कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्याओं को सम्बोधित करने हेतु कुरिन्थियों की पहली पत्री लिखी। कुरिन्थुस से आए लोग या तीतुस यह पहली पत्री वापस कुरिन्थुस को ले आए। पौलुस ने वहां की कलीसिया का हालचाल देखने के लिए तीतुस को कुरिन्थुस को भेजा।

कुरिन्थियों की पहली पत्री में सम्बोधित की गई कुरिन्थुस की कलीसिया की समस्याएं :

- विभाजन, लड़ाई–झगड़े – लोग पौलुस, पतरस और अप्पुलोस का पक्ष लेने लगे (अध्याय 1–4)

- यौन अनैतिकता (अध्याय 5–6)
- आंतरिक संघर्ष (अध्याय 6)
- विवाह (अध्याय 7)
- मूर्तियों को चढ़ाया गया भोजन (अध्याय 8,10)

उसके बाद पौलुस 11–14 अध्यायों में सभा में अपेक्षित उचित आचरण से सम्बंधित विषयों को सम्बोधित करता है :

- सिर ढांकना (अध्याय 11:1–16)
- प्रभु भोज में सहभागी होना (अध्याय 11:17–34)
- आत्मिक वरदानों का उपयोग (अध्याय 12–14)

पौलुस उसके बाद सुसमाचार और पुनरूत्थान से सम्बंधित सच्चाइयों की फिर पुष्टि करता है (अध्याय 15)।

अंत में, वह पवित्र जनों के लिए भेंट इकट्ठा करने हेतु बिनती करता है (अध्याय 16, यह भी उनकी आम सभा के दौरान होगा।

इसलिए 1 कुरिन्थियों के 12 से 14 अध्याय, जो आत्मा के वरदानों के उपयोग को सम्बोधित करते हैं उन्हें इन बातों के निर्देश के रूप में पढ़ा और समझा जाना चाहिए कि स्थानीय कलीसिया की सभाओं के संदर्भ में आत्मा के वरदानों का कैसे उपयोग किया जाता है। परंतु, इससे यह सूचित नहीं होता कि आत्मा के वरदान केवल स्थानीय कलीसियाओं की सभाओं में प्रगट हो सकते हैं, क्योंकि पवित्र आत्मा हमेशा उपस्थित होता है और किसी भी समय, किसी भी स्थान में उसकी इच्छा के अनुसार अपने आपको प्रगट करता है।

कुरिन्थुस की कलीसिया की सभाएं

कुरिन्थुस की कलीसिया के आत्मिक जीवन का मूल्यांकन करना अत्यंत दिलचस्प है जैसा कि हम पौलुस की पत्रियों में देखते हैं। उनके दोषों के बावजूद, उनमें स्पष्ट रूप से समस्याएं थी, और फिर भी आत्मा के कार्य के सम्बंध में वे काफी कुछ अनुभव कर रहे थे। यहां पर कुछ महत्वपूर्ण बातें हैं :

- पौलुस बताता है *"कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए"* (1 कुरिन्थियों 1:5) जो यह सूचित करता है कि उनके पास वाचा के वरदान (अन्य अन्य भाषाएं, और अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ बताना, और भविष्यद्वाणी का वरदान) और प्रकटीकरण के वरदान (ज्ञान का वचन, बुद्धि का वचन, आत्माओं की परख) बहुतायत से उपयोग में थे।
- पोलुस बताता है "यहां तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो" (1 कुरिन्थियों 1:7) जिसका अर्थ यह है कि उनके मध्य आत्मा के वरदान मुक्त रूप से कार्य कर रहे थे।
- पौलुस बताता है कि प्रभु की सामर्थ उनकी सभाओं में उपस्थिति थी (1 कुरिन्थियों 5:5) जो यह सूचित करता है कि जब कभी वे इकट्ठा होते थे, तब उनमें परमेश्वर की सामर्थ प्रगट होती थी।
- कुरिन्थुस के विश्वासी "आत्मिक वरदानों की धुन" में थे (1 कुरिन्थियों 14:12)। स्थानीय मण्डली की कल्पना करें जहां पर प्रत्येक विश्वासी आत्मिक वरदानों के विषय में आवेशी था!
- पौलुस जानता है कि वे अन्य अन्य भाषाएं बोलने के लिए अत्यंत उत्सुक थे, और वह उन्हें बताना चाहता था कि "मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं" (1 कुरिन्थियों 14:18)
- "जब वे इकट्ठा होते थे, तब प्रत्येक सेवा करने हेतु और उनके आत्मा के वरदानों के द्वारा कुछ देने के लिए आता था। "इसलिए

हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है; सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए" (1 कुरिन्थियों 14:26)। ऐसी कलीसियाई सभा की कल्पना करें जहां लोग किसी और को आशीष देने के अवसर का इंतज़ार करते हुए आते थे!

केवल 18 महीनों में!

कुरिन्थुस की कलीसिया इतनी आत्मिक रूप से आवेशी कलीसिया कैसे बन गई, उनके पास आत्मा के वरदान ऐसे बड़े पैमाने में कार्य कर रहे थे, वे परमेश्वर की सामर्थ को अनुभव कर रहे थे और ऐसा समाज बन रहे थे जो मात्र 18 महीनों में आत्मिक प्रकटीकरणों के विषय में उत्साही था? हम दो महत्वपूर्ण कारणों की ओर संकेत कर सकते हैं जिन्होंने इसमें योगदान दिया :

1. पौलुस का प्रचार और प्रेरित के रूप में सेवकाई जो परमेश्वर की सामर्थ प्रगट करती थी।

1 कुरिन्थियों 2:4–5
4 और मेरे वचन, और मेरे प्रचार में ज्ञान की लुभावनी वाली बातें नहीं, परंतु आत्मा और सामर्थ का प्रमाण था।
5 इसलिए कि तुम्हारा विश्वास मनुष्यों के ज्ञान पर नहीं, परंतु परमेश्वर की सामर्थ पर निर्भर है।

2 कुरिन्थियों 12:12
प्रेरित के लक्षण भी तुम्हारे बीच में सब प्रकार के धीरज सहीत, चिन्हों, और अद्भुत कामों, और सामर्थ के कामों से दिखाए गए।

उन्होंने परमेश्वर की सामर्थ को प्रगट होते हुए देखा। पौलुस ने उन्हें प्रचार करते हुए और आत्मा के कामों के विषय में सिखाते हुए देखा। कुरिन्थुस के विश्वासी, हाल ही में मूर्तिपूजा और पापमय जीवनों से बाहर निकले थे, और उन्होंने जो कुछ देखा उसमें उन्होंने कदम

बढ़ाया और कार्य करने लगे। परमेश्वर ने उनके मध्य जो कुछ किया था उसका उल्लेख पौलुस ने "परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ" (1 कुरिन्थियों 1:4) के रूप में किया। यदि हम ऐसी सामर्थी पवित्र आत्मा से परिपूर्ण स्थानीय कलीसियाई समुदायों को तैयार करना चाहते हैं, तो हमें इसी प्रकार सेवा करना चाहिए।

2. परमेश्वर के आत्मा का मण्डराना – आत्मा की वर्षा की ऋतु

कुरिन्थुस की कलीसिया की स्थापना करीब सन 49 – 52 के समय में हुई, जो पिन्तेकुस्त के दिन के 20 वर्षों बाद होगा (यदि हम सोचते हैं कि पिन्तेकुस्त की घटना सन 30 में हुई)। यह समय परमेश्वर के आत्मा की असामान्य वर्षा का था। प्रेरित पौलुस स्वयं परमेश्वर के आत्मा की इस सामर्थी बेदारी का वाहक था।

अब हम 1 कुरिन्थियों 12 में आत्मा के वरदानों से सम्बंधित पवित्र शास्त्र के हमारे मुख्य वचनों का परीक्षण करेंगे।

1 कुरिन्थियों 12:1–11

1 हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अज्ञात रहो।
2 तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे, वैसे चलते थे।
3 इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु श्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।
4 वरदान तो कोई प्रकार के हैं, परंतु आत्मा एक ही है।
5 और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परंतु प्रभु एक ही है।
6 और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परंतु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।
7 किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।
8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें,

9 और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।
10 फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।
11 परंतु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।

1 कुरिन्थियों 12:1
हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम आत्मिक वरदानों के विषय में अज्ञात रहो।

'आत्मिक' इस शब्द का (ग्रीक 'न्यूमॅटिकॉस') का अर्थ है 'अशारीरिक', 'अलौकिक'। सो हम अलौकिक वरदानों के विषय में बोल रहे हैं। ये ऐसे वरदान नहीं हैं जिन्हें स्वाभाविक रीति से प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर, चंगाइयों के वरदान मेडिकल डॉक्टर की योग्यता नहीं। ज्ञान का वचन पीएचडी की पदवी हासिल कर पाया हुआ बहुत सा ज्ञान नहीं है। अन्य अन्य भाषाओं का वरदान अनेक भाषाएं सीखने और बोलने की योग्यता नहीं है। पौलुस उन अलौकिक वरदानों का उल्लेख कर रहा है जो हमें पवित्र आत्मा के द्वारा दिए गए हैं।

पौलुस चाहता है कि हम इन आत्मिक वरदानों को जानें और समझें।

1 कुरिन्थियों 12:2
तुम जानते हो कि जब तुम अन्यजाति थे, तो गूंगी मूरतों के पीछे जैसे चलाए जाते थे, वैसे चलते थे।
पौलुस कुरिन्थुस के विश्वासियों को उनकी पृष्ठभूमि का स्मरण दिलाता है कि वे मूर्तिपूजा के जीवन से निकल आए हैं। यहां पर ज़ोर 'गूंगी' शब्द पर है (अर्थात 'स्वररहित')। ये मूर्तियां बोलती नहीं थी और न खुद को व्यक्त करती थी। इसके विपरीत हम जीवित परमेश्वर की

आराधना करते हैं जो आत्मा के वरदानों के द्वारा अपने आपको प्रगट करता है, प्रदर्शित करता है और व्यक्त करता है।

1 कुरिन्थियों 12:3
इसलिए मैं तुम्हें चेतावनी देता हूं कि जो कोई परमेश्वर की आत्मा की अगुवाई से बोलता है, वह नहीं कहता कि यीशु श्रापित है; और न कोई पवित्र आत्मा के बिना कह सकता है कि यीशु प्रभु है।

पवित्र आत्मा अपने आपको लोगों (विश्वासियों) के द्वारा व्यक्त करता है। हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा कार्य कर रहा है, क्योकि जब व्यक्ति पवित्र आत्मा के द्वारा बोलता है, तब वे प्रभु की महिमा कहेंगे और उसे धन्य कहेंगे और प्रभु यीशु मसीह के प्रभुत्व को अंगीाकार करेंगे। पवित्र आत्मा की अभिव्यक्ति को पहचानने में यह पहला मार्गदर्शन है।

1 कुरिन्थियों 12:4
वरदान तो कोई प्रकार के हैं, परंतु आत्मा एक ही है।

'वरदान' यह शब्द ग्रीक भाषा में 'कॅरिस्मा' है और इसका अर्थ है 'अनुग्रह का वरदान।' 'चॅरिस' इस शब्द का अर्थ है 'अनुग्रह।'

उसी आत्मा के द्वारा विविधताएं या भिन्न वरदान दिए गए हैं। आत्मा अनुग्रह के वरदानों की विविधता देता है (कई, विविध, और भिन्न)।

आत्मा के वरदान उसके द्वारा विनामूल्य और उसके अनुग्रह के कारण दिए जाते हैं। यह हमारे द्वारा किए गए कार्य पर आधारित नहीं है। हम आत्मा के वरदानों को कमाते नहीं।

1 कुरिन्थियों 12:5
और सेवाएं भी कई प्रकार की हैं, परंतु प्रभु एक ही है।

'सेवाएं' यह शब्द ग्रीक भाषा में 'डायकोनिया' है जिसका अर्थ है 'सेवाएं,' 'पद'।'

प्रभु यीशु मसीह द्वारा विविध, कई, और भिन्न–भिन्न सेवाएं या पद दिए गए हैं।

उदाहरण : शिक्षक, पासबान, डिकन, प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, मध्यस्थ, आदि की सेवकाई (सेवा या पद)।

1 कुरिन्थियों 12:6
और प्रभावशाली कार्य कई प्रकार के हैं, परंतु परमेश्वर एक ही है जो सब में हर प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करता है।

'कार्य' यह शब्द ग्रीक भाषा में है 'एनर्जिमा' जिसका अर्थ है 'कार्य,' 'बाहरी प्रकटीकरण,' 'प्रभाव।' नए नियम में, इस शब्द का उपयोग हमेशा अलौकिक कार्य के संदर्भ में किया जाता है। विश्वासी के द्वारा ईश्वरीय बल की कई, विविध, विभिन्न और भिन्न–भिन्न अभिव्यक्तियां हैं जिसके परिणामस्वरूप विभिन्न कार्य या बाहरी प्रकटीकरण होते हैं।

हम 4–6 इन वचनों को दो तरह से समझ सकते हैं, दोनों सही हैं : वही आत्मा इन सभी अनुग्रह के विभिन्न वरदानों का स्रोत है। वह प्रभु यीशु लोगों को विभिन्न सेवकाइयां (सेवा, पद) देता है। वही पिता परमेश्वर लोगों के द्वारा विभिन्न कार्यों के द्वारा काम करता है (या अभिव्यक्तियों, बाहरी प्रकटीकरणों)। या, हम इन तीन वचनों की ओर इस प्रकार भी देख सकते हैं, एक ही आत्मा विभिन्न प्रकार के वरदान देता है, विभिन्न प्रकार की सेवकाइयों की सामर्थ देता है और विभिन्न प्रकार के कार्यों को या प्रकटीकरणों को लोगों के द्वारा प्रकट करता है।

वरदान, सेवकाइयां, कार्य : इलेक्ट्रीशियन, नल सुधारने वाला, बढ़ई, ऑटो–मैकेनिक

बिजली कर्मी या इलेक्ट्रीशियन, नल सुधारने वाले, बढ़ई, और ऑटो–मैकेनिक के विषय में सोचें। वे विभिन्न प्रकार के कार्य हैं (सेवाएं या सेवकाइयां)। उनमें से प्रत्येक के पास साधनों की एक संदूक होती है जिसमें स्क्रू ड्रायवर, हथोड़ा, आदि होता है। हम इस साधनों के संदूक की तुलना पवित्र आत्मा के वरदानों से कर सकते हैं जिसका हम इस समय अध्ययन कर रहे हैं। परंतु, प्रत्येक कर्मी उसी औजार से (स्क्रू–ड्रायवर) से जो काम करेगा, उसमें भिन्नता होगी। बढ़ई लकड़ी में स्क्रू फसाने के लिए स्क्रू–ड्रायवर का उपयोग करता है। इलेक्ट्रीशियन स्क्रू–ड्रायवर की सहायता से बिजली के विभिन्न भागों को एक साथ जोड़कर मज़बूत करता है, आदि। एक ही आत्मा के द्वारा इन विभिन्न सेवकाइयों के माध्यम से ईश्वरीय सेवकाई के विभिन्न कार्य, परिचालन या अभिव्यक्तियां होती हैं। इसलिए आत्मा के इन्हीं वरदानों को मसीह की देह में विभिन्न सेवकाइयों के द्वारा भिन्न तरह से व्यक्त किया जा सकता है। परंतु वही परमेश्वर है जो स्रोत है, जिसकी सेवा की जा रही है और जिसकी सामर्थ देह में इन सभी सेवकाइयों द्वारा प्रगट हो रही है।

1 कुरिन्थियों 12:7
किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

वचन 4 में जिन अनुग्रह के वरदानों के विषय में बताया गया है, उनका उल्लेख आत्मा के प्रकाशन के रूप में भी किया गया है, जिसका अर्थ है आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ को दृश्यमान बनाना या प्रगट करना। ये "हर एक" को दिए जाते हैं, अर्थात सबके लाभ के लिए प्रत्येक विश्वासी को दिए जाते हैं। प्रत्येक विश्वासी आत्मा के सभी वरदानों को (या आत्मा के प्रकटीकरणों) पा सकता है जो उसके द्वारा प्रगट होते हैं।

1 कुरिन्थियों 12:8–10

8 क्योंकि एक को आत्मा के द्वारा बुद्धि की बातें दी जाती हैं; और दूसरे को उसी आत्मा के अनुसार ज्ञान की बातें,

9 और किसी को उसी आत्मा से विश्वास; और किसी को उसी एक आत्मा से चंगा करने का वरदान दिया जाता है।

10 फिर किसी को सामर्थ के काम करने की शक्ति; और किसी को भविष्यद्वाणी की; और किसी को आत्माओं की परख; और किसी को अनेक प्रकार की भाषा; और किसी को भाषाओं का अर्थ बताना।

स्थानीय कलीसिया की सभा में, जब विश्वासी सहभागिता के लिए इकट्ठा आते हैं, तब परमेश्वर का आत्मा उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के द्वारा भिन्न–भिन्न रीति से अपने आपको प्रगट करता है। आत्मा के नौ वरदानों को सूचीबद्ध किया गया है और बाद में हम प्रत्येक का विस्तृत परीक्षण करेंगे।

1 कुरिन्थियों 12:11

परंतु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।

'परंतु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है', सूचित करता है कि आत्मा के सभी वरदान एक ही पवित्र आत्मा द्वारा प्रगट किए जाते हैं। इसलिए, ये वरदान विश्वासी के नहीं, परंतु पवित्र आत्मा के वरदान हैं। इसका अर्थ यह भी है कि सभी नौ वरदानों को विश्वासी के द्वारा संचालित किया जा सकता है, क्योंकि पवित्र आत्मा है जिसके पास सभी नौ वरदान हैं और विश्वासी के द्वारा सभी नौ वरदानों को प्रगट करता है।

'जिसे जो चाहता है वह बांट देता है', सूचित करता है कि इन वरदानों में से किसी भी वरदान को (एक या अधिक या सभी) प्रत्येक के द्वारा प्रगट किया जा सकता है, अर्थात, प्रत्येक विश्वासी के द्वारा किसी विशिष्ट सभा में।

'जिसे वह चाहता है,' पवित्र आत्मा इन वरदानों को अपनी इच्छा के अनुसार प्रगट करता है। परंतु, जैसा कि पौलुस बाद में सम्बोधित करता है, हमें 'इच्छा रखने' की अपनी भूमिका निभाना है और जानना है कि इन वरदानों को सही रीति से कैसे प्रगट करें। इस प्रकार आत्मा के प्रकटीकरण (आत्मा के वरदान) सहकारिता के कार्य हैं। हम वरदानों को प्रगट करने हेतु पवित्र आत्मा के साथ कार्य करते हैं। वह इच्छा रखता है, परंतु हमें भी इच्छा रखना है, सहकार्य करना है, विश्वास रखना है, और वरदानों को उचित रीति से प्रगट करना है।

1 कुरिन्थियों 12:12–27 में, उसके बाद पौलुस व्यक्तिगत भूमिका, स्थान, और कार्य को सम्बोधित करता है जो प्रत्येक व्यक्ति को मसीह की देह में प्राप्त है।

1 कुरिन्थियों 12:28–30 को स्पष्ट करने से पहले, हम संक्षिप्त रूप से आत्मिक वरदानों की तीन श्रेणियों को समझेंगे जो हम नए नियम में देखते हैं।

आत्मा के वरदान, सदस्यता वरदान और सेवा के वरदान

नए नियम में, हम आत्मिक वरदानों की तीन श्रेणियां या वर्ग देखते हैं:

आत्मिक वरदानों की श्रेणियां

आत्मा के वरदान
1 कुरिन्थियों 12:7–11
आत्मा के सभी नौ वरदान सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं।
प्रत्येक विश्वासी को आत्मा के वरदानों को प्रगट करने की इच्छा रखना चाहिए।

सदस्यता के वरदान
रोमियों 12:6–8
1 कुरिन्थियों 12:12–27
इफिसियों 4:7
1 पतरस 4:10–11
मसीह के वरदान प्रत्येक विश्वासी को मसीह की देह में उनकी भूमिका और कर्तव्य के सम्बंध में दिए गए हैं।
प्रत्येक विश्वासी के पास एक या उससे अधिक सदस्यता वरदान हैं। उदाहरण :
भविष्यद्वाणी, सेवकाई (सेवा), सिखाना, उपदेश देना (प्रोत्साहन), दान, नेतृत्व, दया (करूणा) और अन्य कई (सहायता, प्रशासन, भाषाएं)।
प्रत्येक विश्वासी को उनके विशिष्ट सदस्यता वरदान और कर्तव्य पहचानना है, उनका परिपोषण करना है और उनका उपयोग करना है।

<u>सेवा के वरदान</u>
<u>इफिसियों 4:11</u>
मसीह के वरदान विशिष्ट व्यक्तियों को दिए जाते हैं।
पांच प्रकार के सेवा वरदान :
प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, पासबान (रखवाला), शिक्षक (उपदेशक), सुसमाचार प्रचारक।
ये सेवा वरदान विश्वासियों को सेवा के कार्य के लिए सुसज्जित करते हैं।

1 कुरिन्थियों 12:28–30
1 कुरिन्थियों 12:28–30 में, प्रेरित पौलुस सेवा वरदानों (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, शिक्षक, सामर्थ के काम करने वाले, चंगाइयों के वरदान) और सदस्यता वरदानों (सहायता, प्रशासन, नाना प्रकार की भाषाएं) के वर्गीकरण को सूचीबद्ध करता है, और इस कारण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि सभी सदस्यों के पास एक ही प्रकार की सेवकाई या सदस्यता के वरदान नहीं

उपर्युक्त वर्गीकरण मात्र निर्देश के उद्देश्य से है। व्यवहारिक तौर पर, ये वरदान महत्वपूर्ण रूप से परस्पर व्याप्त होते है और इस कारण अत्यंत कठिन रूप से उनका कोष्टीकरण **नहीं** किया जाना चाहिए। **आत्मा के वरदान** प्रत्येक विश्वासी को उसके **सदस्यता कर्तव्य** में सामर्थ प्रदान करते हैं और उन्हें भी जो सेवकाई का कार्य करते हैं। आत्मा के वरदान विश्वासी को उनकी भूमिका (या ज़िम्मेदारी) पूरी करने हेतु, **सदस्यता के कर्तव्य** पूरा करने हेतु, उसी तरह अपने पदों में होकर कार्य करने हेतु (जिन्हें किसी पद पर नियुक्त किया गया है) सामर्थ देते हैं। अतः, हम इन तीन श्रेणियों को बहुत अधिक पृथक नहीं कर सकते और हमें यह समझना है कि उनमें परस्पर व्यापनं या महत्वपूर्ण अन्योन्य क्रिया है।

उदाहरण के तौर पर, **'भविष्यद्वाणी के वरदान'** (1 कुरिन्थियों 12:10), सदस्यता वरदान/'**भविष्यद्वाणी'** के कार्य (रोमियों 12:6), और '**भविष्यद्वक्ता**' के सेवा वरदान पर विचार करें (इफिसियों 4:11)। प्रत्येक विश्वासी भविष्यद्वाणी के वरदान को प्रगट कर सकता है और दूसरों को उन्नति, प्रोत्साहन और सांत्वना प्रदान कर सकता है (1 कुरिन्थियों 14:1,3)। कुछ विश्वासियों के पास सदस्यता वरदान/भविष्यद्वाणी का कार्य होता है जहां पर वे मुख्य रूप से, निरंतर और सुसंगत तरीके से भविष्यद्वाणी के द्वारा दूसरों को सेवा प्रदान करते हैं। हम उन्हें भविष्यद्वाणी करने वाले विश्वासी कह सकते हैं और यह भी कह सकते हैं कि उनके पास भविष्यद्वक्ता की सेवकाई है। कुछ लोगों को भविष्यद्वक्ता के सेवा वरदान के लिए नियुक्त किया जा सकता है, जिसमें भविष्यात्मक सेवकाई के अतिरिक्त मसीह की देह में प्रभाव के अन्य क्षेत्र भी शामिल होंगे (प्रशासनीक अधिकार, प्रभाव का और बड़ा क्षेत्र, परमेश्वर की बेदारियों की घोषणा करना, आदि)। भविष्यद्वाणी का वरदान सदस्यता कार्य और सेवा वरदान कार्य दोनों के द्वारा प्रगट होता है।

अतः 1 कुरिन्थियों 12:28–30 का अर्थ क्या है?

1 कुरिन्थियों 12:28–30

28 और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार (सहायता) करनेवाले, और प्रधान (प्रशासक), और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।

29 क्या सब प्रेरित हैं? क्या सब भविष्यद्वक्ता हैं? क्या सब उपदेशक हैं? क्या सब सामर्थ के काम करनेवाले हैं?

30 क्या सब को चंगा करने का वरदान मिला है? क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं?

और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार (सहायता) करनेवाले, और प्रधान (प्रशासक), और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले 'नियुक्त किए' का अर्थ है, अपने स्वयं के उपयोग के लिए स्थान में रखना। 'ये' केजेवी में 'कुछ', विशिष्ट लोगों को, सूचित करता है, प्रत्येक को नहीं। 'प्रथम' (Greek *'proton'*) का अर्थ है समय या स्थान में पहले, या पद, प्रभाव, सम्मान में पहले। परमेश्वर ने कुछ लोगों को इन स्थानों में (भूमिकाओं या कर्तव्यों) रखा है और उन्हें उनका स्थान, पद, प्रभाव, और सम्मान दिया है।

'उपकार करने वाले' उन लोगों का उल्लेख करता है जो किसी प्रकार की सहायता, मदद, सेवा करते हैं; सहायक।

केजेवी में 'प्रधान' के लिए 'शासक' दिया गया है, जिसका अर्थ है 'शासन करना' या 'सत्ता चलाना' और सामान्य तौर पर जहाज चलाने को लागू होता है।

प्रेरित पौलुस सेवा वरदानों (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, उपदेशक, या शिक्षक, सामर्थ के काम करने वाले, चंगाइयों के वरदान) और सदस्यता वरदानों (उपकार या सहायता, प्रधान या प्रशासन, नाना प्रकार की भाषाएं) के वर्गीकरण की सूची प्रस्तुत करता है, और इस कारण स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि सभी सदस्यों की एक सी सेवकाई या सदस्यता वरदान नहीं हैं।

सदस्यता वरदान (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता, उपदेशक, या शिक्षक, सामर्थ के काम करने वाले, चंगाइयों के वरदान)। हम 'सामर्थ के कामों' और 'चंगाइयों के वरदानों' को सुसमाचार प्रचारक के प्रतिनिधि के रूप में देखते हैं।

सदस्यता वरदान (उपकार या सहायता, प्रधान या प्रशासन, नाना प्रकार की भाषाएं)। 'नाना प्रकार की भाषाएं' उन विश्वासियों का प्रतिक हैं जिनके पास सदस्यता के कार्य हैं जो नियमित रूप से 'नाना प्रकार की भाषाओं' को व्यक्त करते हैं। उदाहरण के तौर पर, मध्यस्थ, जो अन्य अन्य भाषाओं में सार्वजनिक तौर पर संदेश प्रस्तुत करते हैं।

इसलिए, वचन 29 और 30 में पूछे गए अलंकारिक प्रश्नों में से प्रत्येक का उत्तर 'नहीं' है, क्योंकि पौलुस सेवा वरदानों और सदस्यता कार्य के वरदानों को सम्बोधित करता है, और न कि विशिष्ट तौर पर पवित्र आत्मा के वरदानों को।

आत्मा के वरदान और सेवा (सेवकाई) वरदानों के बीच अंतर

1. आत्मा के वरदान आत्मा द्वारा दिए जाते हैं। सेवा के वरदान प्रभु यीशु मसीह द्वारा दिए जाते हैं।
2. आत्मा के वरदान सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध हैं। सेवा वरदान या सेवकाई के वरदान कुछ ही लोगों को दिए जाते हैं।

3. आत्मा के वरदान मुख्य रूप से परमेश्वर के लोगों की आत्मिक उन्नति के लिए होते हैं। सेवा वरदान परमेश्वर के लोगों को सेवा के कार्य के लिए सुसज्जित करने हेतु होते हैं।

4. आत्मा के वरदान सामान्य तौर स्थानीक मण्डली के सेवा करते हैं। सेवा के वरदान यह भी कर सकते हैं और इसके अलावा विशाल संदर्भ में मसीह की देह (राष्ट्र, राष्ट्रों आदि) को सेवा प्रदान करते हैं।

क्या प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के सेवा वरदान आज भी विद्यमान हैं?

एक आम प्रश्न जो पूछा जाता है वह यह है कि क्या प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के सेवा वरदान आज भी विद्यमान हैं? अधिकतर लोगों को पासबान, शिक्षक और सुसमाचार प्रचारक के सेवा वरदानों को स्वीकार करने में कोई समस्या नहीं होती, परंतु वे इस बात को स्वीकार करने से हिचकते हैं कि प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के सेवा वरदान आज भी विद्यमान हैं।

निम्नलिखित बातों पर विचार करें जो आज प्रेरित और भविष्यद्वक्ता के सेवा वरदानों की पुष्टि करते हैं :

इफिसियों 4:11–13

11 और उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनानेवाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दे दिया,

12 जिससे पवित्र लोग सिद्ध हो जाएं, और सेवा का काम किया जाए, और मसीह की देह उन्नति पाए,

13 जब तक कि हम सब के सब विश्वास, और परमेश्वर के पुत्र की पहचान में एक न हो जाएं, और एक सिद्ध मनुष्य न बन जाएं और मसीह के पूरे डील डौल तक न बढ़ जाएं।

1 कुरिन्थियों 12:28
और परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं; प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक...

इफिसियों 4:11 पांचों सेवा वरदानों को सूचीबद्ध करता है। यदि हम तीन (सुसमाचार प्रचारक, शिक्षक, पासबान) को स्वीकार करते हैं, तो हमें अन्य दो को भी स्वीकार करना चाहिए (प्रेरित, भविष्यद्वक्ता)।

ये सभी सेवा वरदान पवित्र जनों को सेवा के लिए सुसज्जित करने हेतु दिए गए थे और जब तक हम सब विश्वास की एकता में न आ जाएं और परिपक्व मनुष्य न बन जाएं, तब तक वे जारी रहेंगे। मसीह महिमामय कलीसिया के लिए आ रहा है। यह प्रक्रिया निरंतर चलने वाली है, अतः हमें आज भी पांचों सेवा वरदानों की आवश्यकता है।

1 कुरिन्थियों 12:28 कहता है कि परमेश्वर ने इन सेवा वरदानों को कलीसिया में ठहराया है। पवित्र शास्त्र में कहीं भी इन सेवा वरदानों को कलीसिया से हटाया नहीं गया है। कलीसिया पृथ्वी पर है, इसलिए हम यह सही कह रहे हैं कि ये नियुक्तियां आज भी मान्य हैं।

हम समझते हैं कि प्रेरितों के तीन भिन्न वर्ग हैं। (1) मेम्ने के बारह प्रेरित हैं (प्रेरितों के काम 1:25–26; प्रकाशितवाक्य 21:14)। ये विशिष्ट मानदंड रखने वाले बारह पुरुषों का सीमित समूह है। (2) बुनियादी प्रेरित हैं जो कलीसिया की नींव के लिए ज़िम्मेदारी थे, जिन्होंने नए नियम के प्रकाशन प्राप्त किए और लिखे (इफिसियों 2:20)। प्रेरित पौलुस इस वर्ग में था। यह वर्ग भी सीमित वर्ग है, क्योंकि आधुनिक समय का कोई भी प्रेरित पवित्र शास्त्र के प्रकाशन में जोड़ नहीं सकता। (3) और अंत में सेवा वरदान प्राप्त प्रेरित हैं जो आज भी सेवारत हैं।

इन 'प्रासंगिक विषयों' को सम्बोधित करने के बाद, हम वापस आत्मा के वरदानों की समझ की ओर लौटें।

आत्मा के वरदानों को समझना

अब हम आत्मा के वरदानों से सम्बंधित मुख्य सत्यों को प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं। इनमें से कुछ का पहले उल्लेख किया गया होगा, परंतु हम सम्यक समीक्षा के लिए उन्हें पुनः प्रस्तुत करते हैं।

1. आत्मा के वरदान सभी विश्वासियों को दिए गए हैं।

आत्मा के प्रकटीकरण "हर एक" को दिए गए हैं (1 कुरिन्थियों 12:7)। पवित्र आत्मा अपने वरदानों को "हर एक को" बांट देता है (1 कुरिन्थियों 12:11)। सभी विश्वासियों को प्रेम के और उत्तम मार्ग पर चलना है और उत्तम वरदानों की इच्छा रखना है (1 कुरिन्थियों 12:31)। सभी विश्वासियों को प्रेम का अनुसरण करना है, आत्मिक वरदानों की लालसा करना है और विशेषकर भविष्यद्वाणी करने की (1 कुरिन्थियों 14:1)। सभी विश्वासियों को प्रोत्साहन दिया गया है कि वे भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहें और अन्य अन्य भाषाओं में बोलने से मना न करें (1 कुरिन्थियों 14:39)।

अतः, सभी विश्वासियों को यह सिखाना और यह सीखने हेतु सुसज्जित करना महत्वपूर्ण है कि पवित्र आत्मा को सहयोग कैसे दें और आत्मा के वरदानों में कैसे आगे बढ़ें।

2. आत्मा के वरदान आत्मा का अलौकिक "प्रकटीकरण" है

1 कुरिन्थियों 12:7
किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है :

आत्मा के वरदान का कार्य पवित्र आत्मा का अपने आपको व्यक्त करना, अपनी उपस्थिति और सामर्थ प्रगट करना है। "प्रकटीकरण" के

लिए दिए गए ग्रीक शब्द का अर्थ है "प्रदर्शन" और "अभिव्यक्ति।" इस प्रकार आत्मा के वरदान वे माध्यम हैं जिनके द्वारा पवित्र आत्मा अपने आपको प्रगट करता है, अपनी उपस्थिति और सामर्थ को प्रदर्शित और अभिव्यक्त करता है।

कई लोग परमेश्वर को 'देखना' चाहते हैं या वास्तव में, व्यक्तिगत और जीवन परिवर्तक तरीकों से परमेश्वर से 'भेंट करना' चाहते हैं। आत्मा के वरदान परमेश्वर को प्रगट होते हुए, प्रदर्शित होते हुए और अभिव्यक्त होते हुए देखने में लोगों की सहायता करते हैं। जब लोगों को आत्मा के वरदानों के द्वारा सेवा प्राप्त होती है, तब वे परमेश्वर को "देखते हैं" और वास्तविक व्यक्तिगत तरीके से परमेश्वर से "भेंट करते हैं।"

3. आत्मा के वरदान अनुग्रह के वरदान हैं।

1 कुरिन्थियों 12:4
वरदान तो कोई प्रकार के हैं, परंतु आत्मा एक ही है।

पवित्र आत्मा प्रत्येक विश्वासी को ये वरदान (Greek *'charisma'*) देता है। *'कॅरिस्मा'* यह शब्द अनुग्रह के वरदानों का उल्लेख करता है या उन वरदानों का जो अनुग्रह द्वारा दिए जाते हैं। इसलिए, हम इन वरदानों को अर्जित नहीं करते। आत्मा के वरदान अनुग्रह के वरदान हैं जो विनामूल्य और परमेश्वर के अनुग्रह के कारण दिए जाते हैं। ये वरदान बड़ी आत्मिक परिपक्वता का चिन्ह या विश्वासी द्वारा पहने जाने वाले व्यक्तिगत उपलब्धि के पदक नहीं हैं। बल्कि, ये अनुग्रह के कार्य हैं जो विश्वासी के द्वारा व्यक्त हो रहे हैं। इसलिए, वह सबकुछ जो हम करते हैं, वह अपने आपको तैयार और उपलब्ध करने के लिए और यह सीखने के लिए है कि इन वरदानों को प्रगट करने हेतु पवित्र आत्मा के साथ सहकार्य कैसे करें।

4. आत्मा के वरदान लोगों की उन्नति के लिए और मसीह की महिमा के लिए दिए जाते हैं।

1 कुरिन्थियों 12:7
किन्तु सब के लाभ पहुंचाने के लिए हर एक को आत्मा का प्रकाश दिया जाता है।

1 कुरिन्थियों 14:12
इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

आत्मा के वरदानों की इच्छा रखने और उन्हें प्रगट करने में हमारा सही उद्देश्य होना चाहिए लोगों की सेवा करना और मसीह को महिमा देना। ये वरदान "सबके लाभ" और "कलीसिया की उन्नति" के लिए हैं। आत्मा के वरदान हमें अच्छा दिखाने के लिए नहीं या किसी प्रकार की आत्मोन्नति के लिए नहीं हैं। हमें एक दूसरे के साथ प्रतियोगिता करने हेतु इन वरदानों में कार्य करने का प्रयास नहीं करना है।

जब हम इन वरदानों को प्रगट करने हेतु पवित्र आत्मा के साथ सहयोग देते हैं, तब हमें सुनिश्चित होना चाहिए कि उससे लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं और उनकी उन्नति हो रही है। 1 कुरिन्थियों 14:18–19 में प्रेरित पौलुस ने क्या कहा इस पर विचार करें, *"मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं। परंतु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिए बुद्धि से पांच ही बातें कहूं।"* हम पौलुस को अपने अन्य अन्य भाषा के उपयोग पर नियंत्रण रखते हुए देखते हैं ताकि वह लोगों को सिखाने के द्वारा उनकी उन्नति करने हेतु समझ के साथ बोल सके।

प्रेरित पौलुस मण्डली को निर्देश देता है कि सबकुछ लोगों की उन्नति के लिए करें। वह 1 कुरिन्थियों 14:26 में कहता है, *"इसलिए हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है; सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए।"*

रोमियों 1:11–12 में हम देखते हैं कि जब एक या उससे अधिक आत्मिक वरदान बांटें जाते हैं या दिए जाते हैं, तब विश्वासी स्थिर होते हैं, दृढ़ होते हैं और मज़बूत होते हैं। *क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान* ('pneumatikos charisma') *दूं, जिससे तुम स्थिर हो जाओ। अर्थात् यह कि मैं तुम्हारे बीच में होकर तुम्हारे साथ उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में, और तुममें है, शान्ति पाऊं।* "देना" इस शब्द के लिए ग्रीक भाषा में दिया गया शब्द है "metadidomi" जिसका अर्थ है "का हिस्सा देना, देना;" उमजंश त्र के साथ, *'didomi'* = देना। यही शब्द रोमियों 12:8, इफिसियों 4:28 और लूका 3:11 में भी दिया गया है, जहां लिखा है कि यदि व्यक्ति के पास दो कुरते हैं, तो वह एक उस व्यक्ति को दे जिसके पास नहीं है। इसलिए जहां आत्मा के वरदानों में भाग लेना है, वहां देने वाला और पाने वाला दोनों दृढ़ होते हैं और एक साथ प्रोत्साहन पाते हैं।

हमें यह स्मरण रखना है कि पवित्र आत्मा हमेशा यीशु मसीह को महिमा देगा। प्रभु यीशु मसीह ने यूहन्ना 16:14 में पवित्र आत्मा के विषय में कहा, *"वह मेरी महिमा करेगा।"*

5. आत्मा के वरदान तब प्रगट होते हैं जब हम प्रेम में चलते हैं, आत्मिक वरदानों की धुन में रहते हैं, और विश्वास में कदम बढ़ाते हैं।

जब हम पवित्र शास्त्र के वचन पढ़ते हैं, तब हम आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण के विषय में तीन आवश्यक बातें देखते हैं। हमें (1) प्रेम में

चलना है, (2) वरदानों की धुन में रहना है, और (3) विश्वास में कदम बढ़ाना है। विश्वासी को यह करने की आज्ञा दी गई है।

1 कुरिन्थियों 12:11
परंतु ये सब प्रभावशाली कार्य वही एक आत्मा करवाता है, और जिसे जो चाहता है वह बांट देता है।

कभी–कभी लोग 1 कुरिन्थियों 12:11 में दिया गया वचन पढ़ते हैं और सारी बातें "जिसे जो चाहता है" पर छोड़ देते हैं और अपने बचने का पूरा कारण बना लेते हैं। परंतु, हमें आत्मा के वरदानों से सम्बंधित अन्य सभी निर्देशों को देखना है और सभी निर्देशों में चलना है। जी हां, यह सच है कि पवित्र आत्मा के वरदान पवित्र आत्मा द्वारा चलाए जाते हैं और उसकी इच्छा के अनुसार प्रगट किए जाते हैं। दूसरी ओर, हमें दो बातों पर विचार करना है : पहला, पवित्र आत्मा अत्यंत इच्छुक है क्योंकि वह जीवनों को आशीषित करने एवं मसीह को महिमा देने की इच्छा रखता है। वास्तविक विवाद यह है कि पवित्र आत्मा इच्छा रखता है, परंतु क्या विश्वासी भी इच्छा रखता है? कई विश्वासी वास्तव में अनिच्छुक होते हैं क्योंकि उन्हें आत्मिक वरदानों के विषय में परमेश्वर के वचन में सिखाया और प्रशिक्षित नहीं किया गया है। दूसरी बात, आत्मा के वरदानों को प्रगट करने हेतु क्या करना चाहिए इस विषय में विश्वासी को निर्देश दिए गए हैं। यदि हम आत्मा के वरदानों के प्रकाशनों को देखना चाहते हैं, तो हमारी ज़िम्मेदारी है इन निर्देशों के अनुसार चलना।

1 कुरिन्थियों 12:31
क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो! परंतु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

प्रेम में चलें

आत्मा के वरदानों के सम्बंध में पवित्र शास्त्र में स्पष्ट रूप से यह निर्देश दिया गया है कि हम प्रेम के और उत्तम मार्ग पर चलें और प्रेम का अनुसरण करें। हमें लोगों के लिए प्रेम से प्रेरित होना है और लोगों के प्रति आत्मा के वरदानों की हमारी अभिव्यक्ति प्रेम से दृढ़ हो। अतः आत्मा के वरदानों को प्रगट करते समय हमें वही करना है जो प्रेम करेगा। इस विषय में हम बाद वाले अध्याय में और देखेंगे।

आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो

पवित्र शास्त्र की दूसरी महत्वपूर्ण आज्ञा जो प्रेम में चलने के साथ है, वह है आत्मिक वरदानों की धुन में रहें। समान ग्रीक शब्द "मसवव" का अनुवाद 1 कुरिन्थियों 12:31 में "धुन में रहो" में किया गया है और 1 कुरिन्थियों 14:1 में भी "धुन में रहो" में किया गया है। स्ट्रॉंग के इब्रानी और ग्रीक शब्दकोषों के अनुसार "मसवव" का अर्थ है के लिए या के विरोध में भावना की गरमाहट महसूस करना, इसका अर्थ आग्रहपूर्ण लालसा करना, इच्छा रखना, ईर्ष्या से प्रेरित होना, के लिए जलन रखना, आवेश के साथ प्रवाहित होना।

थायर की ग्रीक परिभाषाओं के अनुसार "zeloo" एक क्रिया है, और इसका अर्थ है आवेश से जल उठना, ईर्ष्या, नफरत, क्रोध से गर्म होना या उबल पड़ना; अच्छे अर्थ से, भलाई के अनुसरण में अति उत्साही होना; आग्रह के साथ इच्छा रखना, पीछा करना; किसी के लिए अत्यंत इच्छा रखना, यत्न के साथ पीछा करना, अपने आपको व्यस्त करना, किसी के लिए परिश्रम के साथ प्रयास करना (कि वह मुझसे दूर न किया जाए); दूसरों के आवेश का विषय होना, जोश के साथ खोज करना; ईर्ष्या करना।

अतः आत्मिक वरदानों के लिए विश्वासी का प्रयास अनौपचारिक, सतही या लापरवाह होना नहीं है। बल्कि सभी विश्वासियों को उस

विषय की धुन में रहना है, प्रज्वलित आवेश के साथ अनुसरण करना है, पीछा करना है, उसकी ओर निरंतर परिश्रमपूर्ण प्रयास करना है और उसके लिए व्यस्त रहना है। किसी भी परिस्थिति में वरदानों की धुन में रहें।

विश्वास में कदम बढ़ाएं

गलातियों 3:2,5,14

2 मैं तुमसे केवल यह जानना चाहता हूं, कि तुमने आत्मा को, क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से पाया?

5 इसलिए जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है?

14 यह इसलिए हुआ, कि इब्राहीम की आशीष मसीह यीशु में अन्यजातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा उस आत्मा को प्राप्त करें, जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।

परमेश्वर हमें आत्मा देता है और विश्वास के प्रतिउत्तर के रूप में वह हमारे मध्य सामर्थ के काम करता है। हम विश्वास के द्वारा आत्मा का कार्य पाते हैं।

रोमियों 12:6

और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

आत्मिक वरदानों और अनुग्रह के वरदानों के उपयोग में विश्वास का भाग है और हम ऐसा उस विश्वास के अनुपात में करते हैं जो हमारे पास है। हमारा विश्वास बढ़ सकता है (2 थिस्सलुनीकियों 1:3) और इस कारण हम अधिक प्रमाण में और अधिक अभिव्यक्तियों में, जैसे जैसे हमारे विश्वास का अनुपात बढ़ता जाता है, उसके अनुसार भविष्यद्वाणी कर पाते हैं।

गलातियों 5:6
और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परंतु केवल विश्वास जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।

विश्वास प्रेम के माध्यम से कार्य करता है। और जब हम प्रेम का अनुसरण करते हैं तो हम वास्तव में विश्वास का उपयोग करने हेतु अपना स्थान ग्रहण करते हैं।

सारांश रूप में, विश्वासी होने के नाते, हम निष्क्रिय रहकर पवित्र आत्मा से अपेक्षा नहीं कर सकते कि वह हमारे बिना उसके वरदानों को प्रगट करे। वह चाहता है कि हम उसमें सहभागी हों। हमें हर बार आत्मिक वरदानों का प्रकटीकरण देखने हेतु प्रेम में चलना है, आत्मिक वरदानों की धुन में रहना है और विश्वास में कदम बढ़ाना है। हमारा प्रेम में चलना, हमारा आत्मिक वरदानों की धुन में रहना, और विश्वास में कदम बढ़ाना आदि बातें पवित्र आत्मा जो कि इच्छा रखता है और वरदानों को संचालित करता है, उसके साथ सहयोग करते हुए कार्य करती हैं। पवित्र आत्मा इच्छिुक है, क्या आप इच्छुक हैं? क्या आप प्रेम में चलने, वरदानों की धुन में रहने और विश्वास का कदम बढ़ाने तैयार हैं?

6. प्रत्येक विश्वासी आत्मा के सभी नौ वरदानों को प्रगट कर सकता है।

1 कुरिन्थियों 12:31
तुम बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो! परंतु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

सभी विश्वासियों को निर्देश दिया गया है कि वे बड़े से बड़े वरदानों की धुन में रहें और आत्मिक वरदानों की लालसा करें। स्पष्ट रूप से, आत्मा के वरदानों की संख्या में या वरदानों में से कौन सा के विषय में कोई प्रतिबंध नहीं है – जिससे यह सूचित होता है कि कोई भी विश्वासी नौ वरदानों में से किसी भी वरदान की इच्छा रख सकता है। अतः, हम यह कहते हैं कि प्रत्येक विश्वासी आत्मा के सभी नौ वरदानों को प्रगट कर सकता है। आत्मा के वरदान पवित्र आत्मा के हैं और इसलिए वह किसी भी विश्वासी के द्वारा, जो उसके वरदानों को प्रगट करने हेतु उसके साथ सहयोग करने के लिए तत्पर है, इनमें कार्य कर सकता है, उन्हें बांट सकता है, और उनका परिचालन कर सकता है।

"क्योंकि एक को ...दी जाती हैं..." (1 कुरिन्थियों 12:8) इस भाग को समय के विशिष्ट क्षण के सम्बंध में समझा जाना चाहिए, वरदानों को प्रगट करने की योग्यता के संदर्भ में नहीं। 1 कुरिन्थियों 12, 13 और 14, सभी एक ही विचार का प्रवाह रखते हैं। विशिष्ट सभा में, जब विश्वासी इकट्ठा होते हैं (1 कुरिन्थियों 14:26), तब आत्मा द्वारा विभिन्न लोगों को विभिन्न वरदान बांटे जाते हैं। उसके बाद वाली सभा में यह वितरण भिन्न हो सकता है, अर्थात एक सभा में जिसे ज्ञान के वचन प्राप्त हुए, वह दूसरी सभा में चंगाइयों के वरदान प्रगट कर सकता है।

7. "बड़े से बड़े वरदान" वे वरदान हैं जिनकी किसी अवसर के लिए ज़रूरत है और विशिष्ट ज़रूरतों को जो विद्यमान हैं पूरा करने हेतु आपके कार्य के अनुरूप हैं और यीशु की महिमा के लिए हैं।

1 कुरिन्थियों 12:31
तुम बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो! परंतु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

हमें उत्तम वरदानों की धुन में रहना है। "उत्तम" यह शब्द ग्रीक भाषा में "अधिक उपयुक्त, अधिक फायदेमंद, अधिक लाभदायक, अधिक

उत्कृष्ट" का उल्लेख करता है (थायर की ग्रीक परिभाषाएं)। "उत्तम वरदान" वह वरदान है जो उस परिस्थिति में उत्तम रीति से लागू होता है और आपके कार्य के लिए उत्तम रीति से लागू है।

इसलिए, उदाहरण के तौर पर, यदि कोई व्यक्ति बीमार है, जिसे चंगाई की ज़रूरत है, तो उत्तम वरदान होगा चंगाइयों का वरदान, और कुछ परिस्थितियों में हमें चंगाइयों के वरदानों, सामर्थ के कामों के वरदान, विश्वास के वरदान और आत्माओं की परख के वरदान के संयोग की ज़रूरत होगी ताकि व्यक्ति को चंगाई और स्वास्थ्य प्रदान किया जा सके। भविष्यद्वाणी का वरदान बीमार व्यक्ति को प्रोत्साहन दे सकता है, परंतु वास्तव में उस क्षण उस ज़रूरत को पूरा करने हेतु यह "उत्तम वरदान" नहीं है।

इसलिए, हमें आत्मा के वरदानों की धुन में रहना है जो उन लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु अत्यंत उपयुक्त होगा जिनकी हम प्रत्येक उदाहरण में सेवा कर रहे हैं।

8. क्योंकि आत्मिक बातों को सिखाया जा सकता है, इसलिए विश्वासियों को सिखाया जा सकता है और सीखने हेतु प्रशिक्षित किया जा सकता है कि आत्मा के वरदानों को प्रगट करने हेतु पवित्र आत्मा के साथ कैसे सहयोग करें।

कभी–कभी लोग यह सवाल करते हैं कि क्या विश्वासियों को आत्मिक वरदानों के सम्बंध में सिखाया जा सकता है और प्रशिक्षित किया जा सकता है, विशेषकर इस प्रकार की पुस्तक में प्रस्तुत की गई सामुग्री और प्रशिक्षण के साथ। उनका यह मत होता है कि सभी आत्मिक वरदान पूर्णतया पवित्र आत्मा का परम अधिकार हैं और हम लोगों को ऐसी बातों का प्रशिक्षण नहीं दे सकते।

परंतु, आत्मिक बातों में लोगों को प्रशिक्षित करने के बाइबल के कई और व्यवहारिक उदाहरणों पर विचार करेः

शिष्य बनाना आत्मिक अनुशासन या आत्मिक प्रशिक्षण के द्वारा होता है,

हम आत्मिक बातों को अनुभव करने हेतु लोगों को सीखा सकते हैं और उनकी अगुवाई कर सकते हैं। प्रेरितों को आज्ञा दी गई थी कि वे लोगों को वे सारी बातें सिखाएं जो यीशु ने उन्हें सिखाई थी – यह सूचना का मात्र एक बौद्धिक स्थानांतरण नहीं था – परंतु "शिष्य बनाने" की प्रक्रिया थी, जिसके परिणामस्वरूप नए चेले भी उन्हीं कामों को कर रहे थे जिन्हें प्रेरितों ने किया और वे अपने स्वामी का अनुकरण कर रहे थे।

उदाहरण के तौर पर, हम उद्धार का विनामूल्य वरदान प्राप्त करने में लोगों की अगुवाई कर सकते हैं (2 कुरिन्थियों 6:1–2)। जब हम सुसमाचार बांटते हैं, तब हम यह जानने में लोगों की अगुवाई करते हैं कि वे यीशु मसीह में विश्वास करने के द्वारा अभी उद्धार पा सकते हैं। और उसके बाद हम "पापियों की प्रार्थना" या "उद्धार की प्रार्थना" में उनकी अगुवाई करने हेतु कदम बढ़ा सकते हैं। उसके बाद हम आनंद से यह घोषणा करते हैं कि उनका उद्धार हुआ है! हमने हाल ही में सर्वोत्तम आत्मिक अनुभव में एक व्यक्ति की अगुवाई की – नए जन्म के अनुभव में, हमने उसे सुसमाचार सुनाया और प्रभु के नाम को पुकारने और यीशु मसीह में अपने विश्वास को व्यक्त करने में उसकी सहायता की। वस्तुतः, हम दूसरों को सुसमाचार सुनाने और आत्माओं को जीतने का प्रशिक्षण देते हैं। हम उन्हें प्रशिक्षण देते हैं कि सुसमाचार को कैसे बांटें और नए जन्म के अनुभव में लोगों की अगुवाई कैसे करें। इसलिए, यदि हम उद्धार के लिए यह कर सके, तो हम निश्चय ही लोगों को यह सिखा सकेंगे कि अन्य आत्मिक बातों को अनुभव करने हेतु कैसे कदम बढ़ाएं, जैसे पवित्र आत्मा के वरदानों को प्रगट करने हेतु उसके साथ सहयोग कैसे करें।

उसके बाद हम लोगों को परमेश्वर का वचन सिखाते हैं जो उन्हें उन्नति प्रदान करेगा और उनकी आत्मिक मिरास प्राप्त करने और उसमें चलने हेतु उन्हें सामर्थ देगा (प्रेरितों के काम 20:32)।

तीमुथियुस को पौलुस द्वारा आत्मिक बातों का प्रशिक्षण दिया गया था

1 कुरिन्थियों 16:10
यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना कि वह तुम्हारे यहां निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।

2 तीमुथियुस 2:2
और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के सामने मुझ से सुनी हैं, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे, जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों।

तीमुथियुस एक जवान व्यक्ति था जिसे प्रेरित पौलुस ने सिखाया और प्रशिक्षण दिया और सेवकाई में ऐसे स्थान पर ले आया, जहां पर पौलुस तीमुथियुस के विषय में कह सका, "वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।" बाद में, प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस को शिक्षा दी कि जो कुछ उसके पास था उसे वह दूसरों तक पहुंचाए और सौंप दे (अर्थात, संचय करना), ताकि बदले में वे दूसरों को सिखाएं। इन सारी बातों का सम्बंध आत्मिक बातों से है – न केवल शिक्षा से, परंतु सेवकाई के कार्य से भी।

आत्मिक वरदानों को चमकाने हेतु पौलुस का उपदेश

जितना अधिक आप निश्चित वरदानों का उपयोग करेंगे और उनमें आगे बढ़ेंगे, उतना ही आत्मा के उन प्रकटीकरणों को और अधिकाई से पाना आसान हो जाता है। वरदानों को चमकाने की ज़रूरत है, अन्यथा, लापरवाही या भय के कारण वे अपनी अभिव्यक्ति में कमज़ोर हो जाते हैं। आत्मिक वरदानों को दिया जा सकता है, चमकाने के अर्थ से सक्रिय बनाया जा सकता है या उन्नत किया जा सकता है, यह तब होता है जब हम दूसरों के साथ सहभागी होते हैं, उनसे प्राप्त करते हैं, उनके साथ व्यवहार करते हैं और कार्य करते हैं जो आत्मिक वरदानों के उपयोग और प्रकटीकरणों में हमसे आगे हैं।

1 तीमुथियुस 4:14
उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

2 तीमुथियुस 1:6–7
6 इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे।
7 क्योंकि परमश्वेर ने हमें भय की नहीं, परंतु सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

रोमियों 1:11
क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं, जिससे तुम स्थिर हो जाओ।

पौलुस कुरिन्थुस के विश्वासियों को लिखता है

प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया की स्थापना करने हेतु लगभग अठारह महीने बिता दिए थे (प्रेरितों के काम 18:11,18)। जैसा कि हमने पहले देखा है, कुरिन्थुस की कलीसिया के पास आत्मा के सभी वरदानों का प्रकटीकरण था। पौलुस बाद में कुरिन्थुस की कलीसिया को लिखकर उन्हें पवित्र आत्मा के वरदानों के उचित उपयोग के विषय सिखाता है (1 कुरिन्थियों 12–14)। इसलिए सारांश रूप में वह उन्हें यह निर्देश दे रहा है (प्रशिक्षण दे रहा है, मार्गदर्शन कर रहा है, सिखा रहा है) कि आत्मा के वरदानों का सही उपयोग कैसे करें। आज के विश्वासियों को यह निर्देश, प्रशिक्षण और मार्गदर्शन करने की ज़रूरत है कि आत्मा के वरदानों को प्रगट करने हेतु पवित्र आत्मा के साथ कैसे सहयोग करें।

पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं की पाठशालाएं

दिलचस्प बात यह है कि पुराने नियम में भी भविष्यद्वक्ताओ की पाठशालाएं थीं जहां पर भविष्यद्वक्ताओं को भविष्यद्वक्ता की सेवा के लिए शिक्षा प्रदान की जाती थी। यदि यह पुराने नियम के अंतर्गत

सम्भव था, जो हमें नए नियम में आत्मिक बातों के विषय में प्रशिक्षण की सम्भावना को मिटाना नहीं चाहिए। परमेश्वर ने भविष्यद्वक्ता के रूप में शमुएल को परिपक्व और प्रशिक्षित किया (1 शमूएल 3:1,7,19–21, 4:1)। उसके बाद शमुएल ने उसके प्रारम्भिक दिनों में जिस बात को ज़रूरत के रूप में देखा होगा, उसे वह दूसरों के लिए करता रहा। शमुएल ने "भविष्यद्वक्ताओं की पाठशालाओं" की स्थापना की जहां उसने भविष्यद्वक्ता की सेवकाई में अन्य पुरुषों को प्रशिक्षित किया। हम इसका प्रारम्भिक उल्लेख देखते हैं, जहां शौल जब वापस गिबा शहर को लौटा, "तब नबियों का एक दल ऊंचे स्थान से उतरता हुआ मिला और उनके आगे सितार, डफ, बांसुली, और वीणा होंगे; और वे नबूवत करते होंगे" (1 शमूएल 10:5)। बाद में हम 1 शमूएल 19:20 में "नबियों के दल" के विषय में पढ़ते हैं, "जो नबूवत करते थे और शमुएल को उनकी प्रधानता करते" देखा गया। भविष्यद्वक्ताओं के इस दल से, हमें भविष्यद्वक्ताओं की पाठशालाओं की कल्पना मिलती है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन लोगों को भविष्यद्वक्ता की सेवकाई में कार्य करने हेतु बुलाया जाता था, वे किसी दृढ़ भविष्यद्वक्ता के पास इकट्ठा होते थे ताकि उससे शिक्षा प्राप्त करें। एलियाह और एलिशा के समय में भविष्यद्वक्ताओं के दल को "भविष्यद्वक्ताओं के पुत्र" (चेले) कहा जाता था। हम विभिन्न स्थानों में स्थित भविष्यद्वक्ताओं के चेलों (या भविष्यद्वक्ताओं की पाठशालाओं) के विषय में पढ़ते हैं जैसे गिलगाल, (2 राजा 2:1; 4:38), बेतेल (2 राजा 2:3) और यरीहो (2 राजा 2:5) जो सम्भवतः मुख्यालय थे। गिलगाल में भविष्यद्वक्ता के चेले भविष्यद्वक्ता के साथ रहते थे (2 राजा 6:1)। ये "प्रशिक्षार्थी" सेवक की भूमिका निभाते थे और उन्हें भविष्यद्वक्ता का सेवक भी कहा जाता था (2 राजा 9:1,4)। हम यह समझ सकते हैं कि जिन्हें भविष्यद्वक्ता की सेवकाई में बुलाया गया है उन्हें अधिक अनुभवी भविष्यद्वक्ता के द्वारा प्रशिक्षित किया जा सकता है और उस सेवकाई में कार्य करने हेतु सुसज्जित किया जा सकता है।

9. अक्सर, जिस विशिष्ट कार्य को परमेश्वर पूरा करना चाहता है उसे करने हेतु कई वरदान एक दूसरे के साथ मिलकर प्रगट होते हैं।

आत्मिक वरदानों के वर्गीकरण के विषय में हमें अधिक कठोरता का पालन नहीं करना है। हम इनका उल्लेख गिफ्ट पैक या उपहारों के पुलिंदे के रूप में कर सकते हैं, जहां पर कई वरदान एक साथ मिलकर प्रगट होते हैं। उदाहरण के तौर पर, ज्ञान का वचन और चंगाइयों के वरदान अक्सर एक साथ मिलकर प्रगट होते हैं, वे उस विशिष्ट दशा को प्रगट करते हैं जिसे परमेश्वर चंगा करता है, उस चंगाई के साथ जो होती है।

10. वरदान सदस्यता वरदानों और सेवा वरदानों को सक्षम बनाते हैं।

रोमियों 12:4–8

4 क्योंकि जैसे हमारी एक देह में बहुत से अंग हैं, और सब अंगों का एक ही सा काम नहीं,
5 वैसा ही हम जो बहुत हैं, मसीह में एक देह होकर आपस में एक दूसरे के अंग हैं।
6 और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।
7 यदि सेवा करने का दान मिला हो, तो सेवा में लगा रहे, यदि कोई सिखानेवाला हो, तो सिखाने में लगा रहे।
8 जो उपदेशक हो, वह उपदेश देने में लगा रहे; दान देनेवाला उदारता से दे; जो अगुवाई करे, वह उत्साह से करे; जो दया करे, वह हर्ष से करे।

आत्मा के नौ वरदानों से मिलकर विश्वासियों के "औज़ारों की संदूक" बनती है। आपके सदस्यता वरदान, भूमिका और कार्य जो भी हों, आपको आत्मा के वरदानों की ज़रूरत है। उसी तरह, यदि आप सेवा वरदानों की सेवकाई में हैं, तो आपको प्रभावी रूप से लोगों की सेवा करने हेतु आत्मा के वरदानों की ज़रूरत है।

11. आत्मा के वरदान आत्मिक परिपक्वता के दर्शक नहीं हैं। जैसा कि हम कुरिन्थुस की कलीसिया में देखते हैं, वे आत्मा के कार्य के प्रति अत्यंत तत्पर थे और उनके पास आत्मा का बहुत प्रकाशन था।

उनमें किसी भी आत्मिक वरदान का अभाव नहीं था। फिर भी प्रेरित पौलुस उन्हें मसीह में आत्मिक बालक कहता है।

1 कुरिन्थियों 1:4–7
4 मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूं, इसलिए कि परमेश्वर का यह अनुग्रह तुम पर मसीह यीशु में हुआ,
5 कि उसमें होकर तुम हर बात में अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए,
6 कि मसीह की गवाही तुममें पक्की निकली,
7 यहां तक कि किसी वरदान में तुम्हें घटी नहीं, और तुम हमारे प्रभु यीशु मसीह के प्रगट होने की बाट जोहते रहते हो।

1 कुरिन्थियों 3:1
हे भाइयो, मैं तुमसे इस रीति से बातें न कर सका, जैसे आत्मिक लोगों से, परंतु जैसे शारीरिक लोगों से, और उनसे जो मसीह में बालक हैं।

आत्मिक संवेदनशीलता और आत्मिक परिपक्वता के मध्य अंतर है। हम आत्मा की बातों के प्रति संवेदनशील और उत्सुक हो सकते हैं। हम आत्मा के कार्य के प्रति और उसके वरदानों को प्रगट करने हेतु उत्सुक और प्रतिक्रियाशील हैं। यह हमें अलौकिक बातों के विषय उत्सुक, आवेशी और विश्वास से परिपूर्ण बनाता है। आत्मिक परिपक्वता का सम्बंध हमारे चरित्र, आत्मिक समझ में बढ़ौतरी और मसीह की समानता में बढ़ने से है। हमें दोनों में बढ़ने की आवश्यकता है।

परंतु खतरा यह है कि विश्वासी आत्मिक रीति से अत्यंत संवेदनशील हो सकता है और आत्मिक रीति से अत्यंत अपरिपक्व। इसीलिए हमें दोनों क्षेत्रों में बढ़ने हेतु एक दूसरे की सहायता करने के लिए एक दूसरे की ज़रूरत होती है।

12. आत्मा के वरदान कहीं भी, किसी भी समय प्रगट किए जा सकते हैं।

आत्मा के वरदान विश्वासी के द्वारा और किसी भी समय प्रगट किए जा सकते है। इसलिए हमें हर समय वरदानों की लालसा करना है, परमेश्वर के आत्मा के साथ कार्य करने हेतु तत्पर रहना है। आत्मा के वरदान प्रतिदिन के जीवन में प्रगट किए जा सकते हैं, आपके घर में, आपकी पाठशाला/कॉलेज/कार्यस्थल में, और जहां कहीं आप लोगों की सेवा कर रहे हैं। इस शिक्षा के विषय में हमारा लक्ष्य है विश्वासियों को आत्मा के वरदानों में किसी भी समय, किसी भी स्थान में कार्य करने हेतु प्रशिक्षित करना और भेजना।

13. आत्मा के वरदानों का उपयोग सभी प्रकार के लोगों की सेवा करने हेतु किया जा सकता है।

1 कुरिन्थियों 14:22–25

22 इसलिए अन्यान्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं, परंतु अविश्वासियों के लिए चिन्ह हैं, और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिए नहीं, परंतु विश्वासियों के लिए चिन्ह है।

23 इसलिए यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्यान्य भाषा बोलें, और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं, तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे?

24 परंतु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे।

25 और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।

परमेश्वर का आत्मा विश्वासी के द्वारा कार्य कर सकता है और सब प्रकार के लोगों को स्पर्श करने हेतु इन वरदानों के माध्यम से कार्य कर सकता है : विश्वासियों, अविश्वासियों, नास्तिकों, विरोधियों, आदि। इसलिए हमें अपने आपको सीमित नहीं करना है और सब प्रकार के

लोगों को सेवा प्रदान करने से अपने आपको रोकना नहीं है, और यह इच्छा करना है कि पवित्र आत्मा इन वरदानों के माध्यम से उन पर अपने आपको प्रगट करेगा।

14. आत्मा के प्रकटीकरण विशिष्ट व्यक्ति के लिए हो सकते हैं या अन्य समयों में वे एक से अधिक व्यक्ति के लिए उपयुक्त हो सकते हैं।

उदाहरण के तौर पर, ऐसा समय होगा जब पवित्र आत्मा आपको विशिष्ट व्यक्ति को देने के लिए भविष्यद्वाणी का वचन देता है। ऐसा समय भी होगा जब भविष्यद्वाणी का वचन एक समूह के लिए हो या कई व्यक्तियों के लिए। उसी तरह, अन्य सभी वरदानों के साथ, पवित्र आत्मा विशिष्ट रूप से एक व्यक्ति को सेवा प्रदान कर रहा होगा और अन्य समयों में एक ही साथ कई लोगों को छू रहा होगा। फिर यहां पर, हमें परमेश्वर के आत्मा के साथ आगे बढ़ना है, वह किसे सेवा देने का चुनाव करता है या हमारे द्वारा वह अपने आपको प्रगट करने का वह किस प्रकार चुनाव करता है।

15. सामुहिक अपेक्षा और इच्छा सभा में आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण को बढ़ा सकती है।

जैसा कि हमने पहले बताया है, कुरिन्थुस की कलीसिया ऐसे लोगों का समूह थी जो आत्मिक वरदानों के विषय मे अत्यंत उत्साही थे और उनकी स्थानिक कलीसियाई सभाओं में बड़ी उत्सुकता के साथ आते थे, ताकि आत्मा के वरदानों से एक दूसरे को आशीष दे सकें। और इसी बात का उन्होंने अनुभव किया।

1 कुरिन्थियों 14:12
इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

1 कुरिन्थियों 14:26

इसलिए हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है; सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए।

सभा में लोगों की अपेक्षा, इच्छा और विश्वास को बढ़ाने हेतु हम सेवकों के रूप में क्या कर सकते हैं :

- **कहानियां बताएं** : जहां कहीं और जब कभी सम्भव हो, वास्तविक जीवन की कहानियां बताएं। परंतु ऐसा करते समय हमेशा परमेश्वर की ओर संकेत करें और लोगों का ध्यान किसी भी व्यक्ति की ओर आकर्षित न करें।
- **वचन का प्रचार करें/शिक्षा दें** : परमेश्वर के वचन का प्रचार करना और सिखाना जारी रखें जो लोगों के हृदयों में विश्वास को बढ़ाता है, और उन पर यह प्रगट करता है कि परमेश्वर उनके द्वारा और उनके मध्य कार्य कर सकता है। उन्हें मात्र दर्शक बने रहने से और उनके लिए सबकुछ करने हेतु परमेश्वर के स्त्री और पुरुषों पर निर्भर रहने से दूर करें।
- **प्रत्यक्ष कर दिखाएं** : उदाहरण प्रस्तुत करें। जैसे जैसे आत्मा मण्डराता है, परमेश्वर की सामर्थ प्रगट करें, और आत्मा का कार्य क्या है यह लोगों को सुनने और देखने दें। उसके बाद स्वयं वह करने हेतु हियाव प्राप्त करेंगे।

16. आत्मा के वरदानों को "परखा जाना चाहिए।"

1 थिस्सलुनीकियों 5:19–21

19 आत्मा को न बुझाओ।

20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।

21 सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

पवित्र आत्मा के कार्य के सम्बंध में, हमें उसके कार्य को नहीं बुझाना है, हमें भविष्यद्वाणियों का स्वागत करना है, और फिर भी हमें आत्मा के इन प्रकटीकरणों को परखना है और जो अच्छा है उसे लेना है। "परखने" का अर्थ है पहचानना, परीक्षण करना, मान्य करना या अनुमति देना। "उत्तम" यह शब्द जो बहुमूल्य, ईमानदार, और योग्य है उसका उल्लेख करता है। इसलिए भविष्यद्वाणी अथवा अन्य प्रकटीकरणों को स्वीकार या ग्रहण करने से पहले, उन्हें परखकर देखना है कि क्या वे सचमुच परमेश्वर की ओर से हैं और जो अच्छा है उसे हम थाम लेते हैं और जिसके विषय में हम जानते हैं कि वह परमेश्वर की ओर से नहीं है, उसे हटाकर रखते हैं।

फिर से कुरिन्थियों में, प्रेरित पौलुस सभा में दी जाने वाली भविष्यद्वाणी के सम्बंध में समान आज्ञा देता है :

1 कुरिन्थियों 14:29
भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें।

परखना इस शब्द का अर्थ है पहचानना, पूर्ण रूप से अलग करना, भेद करना।

वरदानों को क्यों परखें? गलतियां क्यों हो सकती हैं?

परमेश्वर सिद्ध है। पवित्र आत्मा सिद्ध है। उसके वरदान सिद्ध हैं। परंतु उसके वरदान असिद्ध मानव पात्रों के द्वारा प्रगट किए जाते हैं। इसलिए यह सम्भव है कि हमारे प्राण से निकलने वाली बातें आत्मा की बातों के साथ मिल जाएं। सम्भव है कि जब व्यक्ति प्रकाशन या प्रकटीकरण देता है, तो उसके साथ भूल भी हो।

उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर के वचन का प्रचार लें। दो व्यक्ति परमेश्वर के वचन के एक ही अनुच्छेद को ले सकते हैं, और सम्भवतः

एक व्यक्ति वचन का गलत अर्थ प्रस्तुत करता है। परमेश्वर का वचन सिद्ध है, परंतु जो व्यक्ति वचन का अर्थ बताता है और प्रचार करता है वह भूल कर सकता है। इसलिए, हमें निर्देश दिया गया है कि "अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करनेवाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो" (2 तीमुथियुस 2:15)।

उसी तरह आत्मा के वरदानों का उपयोग करते समय, पवित्र शास्त्र हमें सिखाता है कि आत्मा के प्रकटीकरणों को परखें और जो अच्छा है उसे स्वीकार करें।

आत्मा के अधीन कार्य करते समय, यदि कोई भूल हुई तो भविष्यद्वक्ता को पत्थरवाह कर मार दिया जाता था। अनुग्रह के दिन कार्य करते समय, वरदानों को परखना है और जो गलत है उसे केवल हटा देना है, और विश्वासी सीखना जारी रख सकता है और सिद्धता की ओर बढ़ सकता है। इसलिए हमारे लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि जब हम आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण में बढ़ते जाते हैं, वैसे वैसे हम विनम्र बनें, सीखने के लिए तैयार रहें और सुधारना प्राप्त करने की इच्छा रखें।

5

परमेश्वर का प्रेम, हमारी प्रेरणा

1 कुरिन्थियों 12:31

तुम बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो! परंतु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

1 कुरिन्थियों 13:1–13

1 यदि मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतों की बोलियां बोलूं, और प्रेम न रखूं,
तो मैं ठनठनाता हुआ पीतल, और झंझनाती हुई झांझ हूं।
2 और यदि मैं भविष्यद्वाणी कर सकूं, और सब भेदों और सब प्रकार
के ज्ञान को समझूं, और मुझे यहां तक पूरा विश्वास हो कि मैं पहाड़ों
को हटा दूं, परंतु प्रेम न रखूं, तो मैं कुछ भी नहीं।
3 और यदि मैं अपनी सम्पूर्ण संपत्ति कंगालों को खिला दूं, या अपनी
देह जलाने के लिए दे दूं, और प्रेम न रखूं, तो मुझे कुछ भी लाभ नहीं।
4 प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी
बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।
5 वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुंझलाता
नहीं, बुरा नहीं मानता।
6 कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परंतु सत्य से आनन्दित होता है।
7 वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों
की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।
8 प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएंगी;
भाषाएं हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।
9 क्योंकि हमारा ज्ञान अधूरा है, और हमारी भविष्यद्वाणी अधूरी है।
10 परंतु जब सर्वसिद्ध आएगा, तो अधूरा मिट जाएगा।
11 जब मैं बालक था, तो मैं बालकों के समान बोलता था, बालकों का
सा मन था, बालकों की सी समझ थी; परंतु जब सियाना हो गया, तो
बालकों की बातें छोड़ दीं।
12 अब हमें दर्पण में धुंधला–सा दिखाई देता है; परंतु उस समय हम
आमने सामने देखेंगे, इस समय मेरा ज्ञान अधूरा है; परंतु उस समय ऐसी
पूरी रीति से पहचानूंगा, जैसा मैं पहचाना गया हूं।

13 पर अब विश्वास, आशा, प्रेम ये तीनों स्थाई हैं, पर इनमें सब से बड़ा प्रेम है।

मण्डली में या मसीह की देह में आत्मा के वरदानों और सदस्यता वरदानों के कार्यों (अगुवाई करना, सिखाना, प्रशासन, आदि) के विषय में 1 कुरिन्थियों 12 में समझाने के बाद, पौलुस हमें प्रोत्साहन देता है कि हम इन वरदानों की धुन में रहें, परंतु वह यह भी बताता है कि वह "और उत्तम मार्ग" बताना चाहेगा या ऐसा मार्ग जो बेहतर या अधिक श्रेष्ठ है। यहां पर अर्थ यह है कि लोगों की सेवा करने और मसीह की देह की सेवा करने का एक और भी बेहतर तरीका है – ऐसा मार्ग जो आत्मा के वरदानों से और सदस्यता के कार्यों का संचालन करने से अधिक बेहतर है। वह हमें लोगों के प्रति परमेश्वर सदृश्य प्रेम में चलने के विषय में बताता है।

1 कुरिन्थियों 13 के पहले भाग में पौलुस हमें समझाता है कि यदि हम ईश्वर सदृश्य प्रेम से प्रेरित न होकर और मार्गदर्शन न पाकर, आत्मा के वरदानों, सदस्यता के कार्यों का उपयोग करते हैं और दया के बड़े बड़े काम करते हैं, यहां तक कि अपने शरीरों को जलाने को भी दे दें – तो यह सबकुछ व्यर्थ है, कुछ भी नहीं और उससे कोई लाभ नहीं! यह सेवा करते समय प्रेम में बने रहने के महत्व को दिखाता है।

जब कभी हम ऐसा करते हैं, तो हमें ईश्वर सदृश्य प्रेम से चलना है, मार्गदर्शन और प्रेरणा पाना है। ऐसा प्रेम के खातिर और लोगों के प्रति प्रेम के कारण करें। जैसा कि पौलुस वचन 4–8 में समझाता है, यदि हम अधीर, निर्दयी, आत्म–केन्द्री, चीढ़ दिलाने वाले, क्रोधित हैं, हमारे विचार या उद्देश्य बुरे हैं, हम अनैतिकता या असत्य को बढ़ावा देते हैं, तो हम प्रेम से नहीं चल रहे, प्रेम से मार्गदर्शन और प्रेरणा नहीं पा रहे हैं। अनुचित उद्देश्य से आत्मा के वरदानों का उपयोग व्यर्थ है और कोई लाभ प्रदान नहीं करता।

आत्मा के वरदानों, सेवा के कार्यों, धर्म के कामों के उपयोग से और विश्वास और आशा से प्रेम अधिक श्रेष्ठ है। इसका कारण यह है कि प्रेम स्थायी है। ऐसा समय आएगा जब केवल एक ही विषय सक्रिय रहेगा, वह है प्रेम – अन्य सभी बातें मिट जाएगी, उनका कोई उपयोग न होगा। खटिप्पणी : वचन 8 में, भविष्यद्वाणियों के संदर्भ में, ("भविष्यद्वाणियां हों, तो समाप्त हो जाएगी;") और ज्ञान के संदर्भ में ("ज्ञान हो, तो मिट जाएगा) समान ग्रीक शब्द "ंजंतहमवव" का उपयोग किया गया है जिसका अनुवाद "समाप्त हो जाएगी" और "मिट जाएगी" किया गया है। अर्थ यह है कि इन वरदानों का और उपयोग न होगा, वे निष्क्रिय हो जाएंगे।, इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें आत्मा के वरदानों का या सदस्यता के कार्यों का उपयोग नहीं करना है। प्रेम में चलने के विषय में अपनी प्राथमिकता को सही स्थान देने के बाद, हम आगे आत्मा के वरदानों और सदस्यता के कार्यों के उपयोग का अनुसरण करते हैं जिसका सारांश पौलुस 1 कुरिन्थियों 14:1 में प्रस्तुत करता है "प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।"

याद रखें, विश्वास प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलातियों 5:6)। प्रेम के बिना विश्वास टूट जाता है। हम विश्वास का उपयोग करने की तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं, परंतु जब प्रेम नहीं होता तब विश्वास निर्माण नहीं कर सकता।

लोगों के लिए सच्चे प्रेम का हृदय बनाए रखें। पवित्र आत्मा हमारे हृदयों को परमेश्वर के प्रति प्रेम से ओतप्रोत करता है (रोमियों 5:5)। इसलिए उसकी शरण में आएं। जिन लोगों की आप सेवा करते हैं उनके प्रति मसीह का प्रेम आपको प्रेरित, प्रोत्साहित और कार्य करने हेतु विवश करने पाए (2 कुरिन्थियों 5:14)।

आत्मा के वरदानों का प्रेम के साथ उपयोग करना

1 कुरिन्थियों 13 के मुख्य संदर्भ को जिसे उस मार्ग के रूप में प्रस्तुत किया गया है जिसके द्वारा आत्मा के वरदानों का उपयोग करना है, समझने के बाद हम संक्षिप्त रूप से यह विचार करते हैं कि परमेश्वर का प्रेम आत्मा के वरदानों के उपयोग को प्रेरित करेगा, मार्गदर्शन देगा और संचालन करेगा, ताकि उसके परिणामस्वरूप लोगों की वास्तविक उन्नति हो और यीशु मसीह को महिमा मिले। नीचे प्रेम आत्मा के वरदानों के उपयोग को कैसे प्रेरित करेगा, मार्गदर्शन देगा और संचालन करेगा इस विषय में विस्तृत चर्चा नहीं है, परंतु यह मात्र आरम्भबिंदू है और पवित्र आत्मा की सहायता से, इसे हम आगे बढ़ा सकते हैं।

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपाल है

लोगों की सेवा करते समय उनके साथ धीरजवंत रहें। लोगों की आत्मिक समझ का स्तर भिन्न होता है और आत्मा के वास्तविक प्रकटीकरण के प्रति उनकी प्रतिक्रिया के विषय में आप जो अपेक्षा करते हैं, उस तरह उनकी प्रतिक्रिया हमेशा हो ऐसा नहीं होता।

हियाव रखें, दृढ़ रहें, विश्वास रखें, परंतु बोलते और सेवा करते समय दयालू और सौम्य रहें। ऐसा समय आएगा जब परमेश्वर का आत्मा आपको ऐसा कुछ करने हेतु निर्देश देगा या प्रोत्साहन देगा जो बाहरी तौर पर साहसपूर्ण, अशिष्ट या कठोर हो – परंतु जब परमेश्वर के आत्मा ने आपको निर्देश दिया है – तो परिणाम अपने आप ही प्रगट होगा और अशिष्टता या कठोरता के अस्थायी विषयों को शांत कर देगा।

प्रेम डाह नहीं करता

डाह या ईर्ष्या के विरोध अपने हृदय की रक्षा करें और निश्चय ही आत्मा के वरदानों की इसलिए इच्छा न रखें क्योंकि आप किसी और

के विषय में डाह करते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर कार्य कर रहा है। जब परमेश्वर का आत्मा किसी और के द्वारा अद्‌भुत रीति से अपने कामों को प्रगट करता है, तब परमेश्वर की स्तुति करें और जो कुछ हो रहा है उस विषय में आनंद मनाएं। परमेश्वर दूसरों के द्वारा किस प्रकार कार्य को कर रहा है और क्या कर रहा है इसका निरीक्षण कर जो कुछ आप देख सकते हैं और सीख सकते हैं, उसे देखें और सीखें। परंतु अपने हृदय में ईर्ष्या या डाह को लेश मात्र भी आने न दें। डाह अस्वस्थ प्रतियोगिता, दुर्भावना, कलह और अन्य गलत बातों की ओर प्रेरित करती है।

प्रेम घमंड नहीं करता, अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं।

जब पवित्र आत्मा आपके द्वारा सामर्थ के साथ प्रगट होता है, तब प्रभु को सारी महिमा दें। अपने आप के विषय में जितना सोचना है उससे अधिक अपने आपको ऊंचा न समझें। हमें हमेशा दृढ़ बने रहना है और मसीह में अपनी पहचान में भरोसा रखना है, परंतु निरंतर विनम्र हृदय के साथ चलना है जो उस पर पूर्णतया निर्भर होता है और शरीर में घमंड नहीं करना है। अपने शब्दों का ध्यान रखें कि जब आपके द्वारा किए गए कार्यों के विषय में आप कहते हैं तब लोगों का ध्यान अपनी ओर न खींचें।

प्रेम अनरीति नहीं चलता या अशिष्ट नहीं है

जैसा कि हमने पहले कहा, आत्मा के अभिषेक के अंतर्गत लोगों की सेवा करते समय अशिष्ट या असभ्य न बनें। यथासम्भव सौम्य, सभ्य और प्रेमी स्वभाव को प्रगट करें। जैसा कि हमने पहले कहा है, कुछ अपवाद हो सकते हैं। ऐसा समय आएगा जब पवित्र आत्मा आपको ऐसे कामों को करने हेतु प्रेरित करेगा जो अजीब, असहज, असामान्य या अनपेक्षित हों। परंतु निश्चित रहें कि परमेश्वर का आत्मा आपकी अगुवाई कर रहा है। उसके बाद आगे बढ़ें और जैसे वह अगुवाई करता

है उसके अनुसार करें। परिणाम (फल) स्वयं ही अपनी गवाही देंगे और प्रश्न करने वालों को खामोश कर देंगे।

प्रेम स्वार्थी, अपनी ही भलाई देखने वाला, अपने ही को आगे करने वाला नहीं होता

याद रखें, आत्मा के वरदान हमें अच्छा दिखाई देने के लिए नहीं हैं, परंतु लोगों की सेवा करने के लिए, लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए, लोगों की उन्नति करने के लिए और यीशु मसीह को महिमा देने के लिए हैं। आत्मा के वरदानों का उपयोग अपने आपको आगे बढ़ाने के लिए, लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए, अपने लिए मेहरबानी (पैसा, ख्याति, भौतिक लाभ आदि) पाने के लिए न करें।

दूसरों को प्रोत्साहन दें कि वे कदम बढ़ाएं और आत्मा के वरदानों में बढ़ते जाएं। यह मात्र आपके लिए नहीं है। परमेश्वर के द्वारा जितने अधिक लोग इस्तेमाल किए जाएंगे, उतना अधिक प्रभाव हम प्राप्त करेंगे तथा हम और लोग पाएंगे जिनकी हम सेवा कर सकें।

प्रेम झुंझलाता नहीं, वह जल्दी क्रोधित नहीं होता

जब आप लोगों के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर कार्य करेंगे, तब आप छोटी–छोटी बातों के ऊपर उठेंगे जो 'गलत होती' हैं और पवित्र आत्मा की सामर्थ के साथ लोगों की सेवा करने के मूल उद्देश्य पर अपना ध्यान लगाए रखेंगे। उदाहरण के तौर पर, यदि आपको किसी स्थान में सेवा करने हेतु बुलाया गया है, वहां कई बातें गलत हो रही होगी – वहां आपकी अपेक्षा से कम लोग उपस्थित होंगे, साऊण्ड सिस्टीम से सम्बंधित समस्याएं हो सकती हैं, सभा में विलंब हो सकता है, बिजली गुल हो सकती है और अन्य कई बातें हो सकती हैं जो 'बिगड़' सकती हैं। अपने आपको परमेश्वर के प्रेम में बनाए रखें। लोगों से सम्बंधित परिस्थिति के विषय में अस्वस्थ, क्रोधित और व्याकुल होने

से इन्कार करें। (अवश्य ही, यदि शैतान हस्तक्षेप करने की कोशिश करता है, तो उस बात का सामना आत्मा में करें)। लोगों के प्रति आपके हृदय प्रेम से परिपूर्ण रखें। पवित्र आत्मा में प्रार्थना करें (यहूदा 1:20)। जो लोग सेवा पाने के लिए आए हैं उनके लिए परमेश्वर की ओर देखें।

प्रेम बुरा उद्देश्य नहीं रखता

जब आप आत्मा के वरदानों में सेवकाई करते हैं, तब अपने हृदय को किसी भी प्रकार के बुरे उद्देश्य से मुक्त रखें। अपने हृदय को दूसरों पर नियंत्रण करने, गलत चाल चलने, बदला लेने आदि बातों की इच्छा से मुक्त रखें। उदाहरण के तौर पर, यदि कोई है जिसके विषय में आप जानते हैं कि उसने आपके विषय में बुरा कहा है या आपको किसी तरह से चोट पहुंचाई, और वह वहां श्रोताओं में बैठा है जहां आप सेवा कर रहे हैं, या आपके पास व्यक्तिगत रीति से सेवकाई के लिए आया है – तो परमेश्वर को उस व्यक्ति के प्रति आपके हृदय को प्रेम से भरने दें। उस व्यक्ति के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर सेवा करें। उस व्यक्ति का बदला लेने के लिए 'भविष्यद्वाणी के वरदान' या अन्य किसी भी वरदान का उपयोग न करें। हमेशा अपने उद्देश्यों को साफ, शुद्ध, खरा रखें और केवल प्रभु की महिमा की तलाश करें।

प्रेम सच्चा, ईमानदार और पवित्र होता है

आत्मा के वरदानों का ईमानदारी, शुद्धता और पवित्रता के साथ उपयोग करें। ये पवित्र आत्मा के प्रकटीकरण हैं। ईश्वरीय भय और पवित्रता का एक बोध है जिसके साथ इन वरदानों को व्यक्त किया जाना चाहिए। यदि परमेश्वर कुछ बोलता है या करता है, तो उसके साथ आगे बढ़ें। यदि परमेश्वर खामोश है, तो कुछ प्रगट करके उसे झूठा रूप न दें। आत्मा के वरदानों की झूठी प्रति तैयार करने के दबाव में न रहें। परमेश्वर नकली बातों को अभिषेक नहीं करता। जिसे वह विश्वासयोग्यता के साथ प्रगट करता है, वही बोलें (यिर्मयाह 23:28)।

प्रेम थामे रहता है, विश्वास करता है, आशा करता है, धीरज धरता है

प्रेम आशा को उत्पन्न करता है, प्रत्येक व्यक्ति के लिए परमेश्वर के उत्तम में विश्वास करता है, परिस्थितियां बिगड़ती हुई दिखाई देने पर भी वह विश्वास को थामे रहता है और जब सब कुछ अपेक्षा के अनुसार शीघ्रता से नहीं होता तब वह मज़बूती से धीरज धरता है। आत्मा के वरदानों की सेवा करते समय, मुश्किल बातों का सामना करते समय (उदाहरण, पाप, असफलता, गलत उद्देश्य, आदि), व्यक्ति को परमेश्वर की उत्तम से उत्तम आशीष देने हेतु प्रेरित करें और उस व्यक्ति को उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के उत्तम की ओर प्रोत्साहित करें। जब प्रभु यीशु ने सामरी स्त्री के पाप और समस्या को प्रगट किया, तब वह निराश, परित्यक्त और तिरस्कृत होकर वहां से नहीं लौटी। अंतिम परिणाम ऐसी स्त्री थी जो मसीह के विस्मय में वहां खड़ी थी और उसके सम्पूर्ण नगर को भी यीशु से भेंट करने का अवसर प्राप्त हुआ (यूहन्ना 4)।

प्रेम कभी मिटता नहीं

प्रेम के सम्बंध में प्रयुक्त ग्रीक शब्द जिसका अनुवाद "मिटता" किया गया है, वह है "माचपचजव", और स्ट्रॉंग के इब्रानी और ग्रीक शब्दकोष के अनुसार इसका अर्थ है, "मार्ग से हटा दिया जाना; अलंकारिक तौर पर, खोना, प्रभावहीन होना" है और थायर की ग्रीक परिभाषा के अनुसार इसका अर्थ है, "उस स्थान से गिरना जिसे व्यक्ति रख नहीं सकता, किसी पद से गिरना, गिरकर निर्बल होना, भूमि पर गिरना, प्रभावरहित होना।"

यदि हम इन सारी बातों को एक साथ रखते हैं, तो हमें यह समझ प्राप्त होती है कि जब हम प्रेम में चलेंगे, तब हम मार्ग से दूर नहीं होंगे। प्रेम में चलना सही मार्ग, सही राह पर चलना है। उसी तरह, जब हम प्रेम में चलेंगे, तब हम निर्बल होकर गिरेंगे नहीं, हमारा अनादर नहीं होगा, न ही हम निरूपयोगी होंगे। बल्कि हमारा प्रभाव पड़ेगा।

जब हम प्रेम में चलते हैं, तब हम ऐसा मार्ग लेते हैं जिस पर हम असफल नहीं होंगे। परमेश्वर सदृश प्रेम से प्रेरित होकर, उसका मार्गदर्शन और संचालन पाकर जो कुछ आप करेंगे, उसका प्रभाव पड़ेगा। प्रेम से प्रेरित होकर, उसका मार्गदर्शन और संचालन पाकर आत्मा के वरदानों के साथ सेवा करना आपको सही मार्ग पर बनाए रखेगा, हमेशा।

6

पवित्र आत्मा वरदानों को प्रगट करना कैसे आरम्भ करता है

इस अध्याय में, हम पवित्र आत्मा की ओर से वास्तव में कैसे सुनते हैं इस विषय में कुछ व्यवहारिक अंतर्दृष्टियों के सम्बंध में अध्ययन करेंगे। हमें निम्नलिखित पद्धति सरल और आसान लगी जिससे लोगों को यह सीखने में सहायता की जा सके कि परमेश्वर उनसे जो बोल रहा है उसे कैसे ग्रहण करें।

आत्मा, प्राण और शरीर

1 थिस्सलुनीकियों 5:23
शान्ति का परमेश्वर आप ही तुम्हें पूरी रीति से पवित्र करे; और तुम्हारी आत्मा और प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु मसीह के आने तक पूरे पूरे और निर्दोष सुरक्षित रहें।

हम यह समझते हैं कि हम में से प्रत्येक व्यक्ति आत्मा है, हमारे पास प्राण है और वह देह में वास करता है। आत्मा हमारा सनातन भाग है। वह कभी मरेगा नहीं और न ही नाश होगा। यह हमारा वह हिस्सा भी है जो आत्मिक संसार से व्यवहार करता है। जब हम नया जन्म पाते हैं, तब हमारा मानव आत्मा परमेश्वर का जीवन और स्वभाव पाता है। परमेश्वर का पवित्र आत्मा आकर हमारी आत्माओं में वास करने लगता है। कई बार 'हृदय' इस शब्द का उपयोग बाइबल में आत्मा का उल्लेख करने के लिए किया जाता है। अन्य समयों में मनुष्य की आत्मा का उल्लेख करने हेतु 'उदर' (belly) या "अंतरात्मा" (inner-most being) इन शब्दों का उपयोग किया जाता है। 'भीतरी मनुष्यत्व' इस शब्द का प्रयोग भी हमारी आत्माओं का उल्लेख करने हेतु किया जाता है। प्राण हमारा मनोवैज्ञानिक भाग है। यह मन, इच्छा,

और भावनाएं हैं। प्राण से हम महसूस करते, सोचते और तर्क आदि करते हैं। प्राण शारीरिक (दैहिक) हो सकता है या प्राण का परिवर्तन हो सकता है या वह नया बनाया जा सकता है। प्राण प्रक्रमक अथवा संसाधक (प्रोसेसर) के समान होता है। वह आत्मा से प्राप्त जानकारी, उसी तरह हमारे शरीर से प्राप्त सूचना संसाधित करता है। शरीर हमारा दैहिक भाग है जिसके द्वारा हम भौतिक, प्राकृतिक जगत से सम्बंध बनाते हैं। शरीर के पांच ज्ञानेन्द्रिय या माध्यम होते हैं जिनके द्वारा वह भौतिक जगत से सूचना एकत्रित करता है और उसे संसाधित करने हेतु हमारे प्राण में भर देता है। शरीर को कभी–कभी हमारा बाहरी मनुष्यत्व कहा जाता है। देह और प्राण की स्वाभाविक बुरी इच्छाएं एक साथ मिलकर उस भाग को बनाती है जिसे बाइबल 'शारीरिक स्वभाव' कहती है।

आत्मा का आत्मा के साथ व्यवहार

यूहन्ना 16:13–15

13 "परंतु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा; क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परंतु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आनेवाली बातें तुम्हें बताएगा।

14 "वह मेरी महिमा करेगा, क्योंकि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

15 "जो कुछ पिता का है, वह सब मेरा है; इसलिए मैंने कहा कि वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।

रोमियों 8:14,16

14 इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं,

16 आत्मा आप ही हमारी आत्मा के साथ गवाही देता है, कि हम परमेश्वर की सन्तान हैं।

परमेश्वर की संतान होने के नाते, हमें परमेश्वर के आत्मा की अगुवाई में चलने का अद्‌भुत अधिकार है। पवित्र आत्मा हमारी

आत्माओं में वास करता है और यहीं पर वह हमारे साथ संवाद स्थापित करता है। यीशु ने कहा कि पवित्र आत्मा हमसे बातें करेगा, हमारा मार्गदर्शन करेगा, समय से पहले बातों को हम पर प्रगट करेगा और परमेश्वर की मनसा हम पर प्रगट करेगा। मुख्य क्षेत्र जिसमें परमेश्वर का आत्मा हमसे व्यवहार करता है, वह होता है, हमारी आत्माओं में। पुराना नियम आत्मिक मनुष्य या आत्मा का उल्लेख करने हेतु 'दीपक' संज्ञा का उपयोग करता है। नीतिवचन 20:27, "मनुष्य की आत्मा यहोवा का दीपक है; वह मन की सब बातों की खोज करता है।" हमारी सही दशा को निर्धारित करने हेतु परमेश्वर हमारी आत्माओं का उल्लेख करता है। हमारे आत्मिक मनुष्य में परमेश्वर हमें प्रकाशित करता है और हमें उसकी सलाह और दिशा–निर्देश देता है। दाऊद ने कहा, *"हां, तू ही मेरे दीपक को जलाता है; मेरा परमेश्वर यहोवा मेरे अन्धियारे को उजियाला कर देता है"* (भजनसंहिता 18:28)। जल जल को पुकारता है (भजनसंहिता 42:7) या परमेश्वर का आत्मा मेरी आत्मा के साथ वार्तालाप करता है। परमेश्वर की ओर से वार्तालाप सामान्य तौर पर आत्मा का आत्मा के साथ होता है।

पांच आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय

व्यवस्थाविवरण 29:2–4

2 फिर मूसा ने सब इस्राएलियों को बुलाकर कहा, जो कुछ यहोवा ने मिस्र देश में तुम्हारे देखते फिरौन और उसके सब कर्मचारियों, और उसके सारे देश से किया वह तुमने देखा है;

3 वे बड़े बड़े परीक्षा के काम, और चिन्ह, और बड़े बड़े चमत्कार तेरी आंखो के सामने हुए;

4 परंतु यहोवा ने आज तक तुमको न तो समझने की बुद्धि, और न देखने की आंखें, और न सुनने के कान दिए हैं।

यशायाह 6:9–10

9 उसने कहा, जा, और इन लोगों से कह, सुनते ही रहो, परंतु न समझो; देखते ही रहो, परंतु न बूझो।

10 तू इन लोगों के मन को मोटे और उनके कानों को भारी कर, और उनकी आंखों को बन्द कर; ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें, और मन से बूझें, और मन फिरावें और चंगे हो जाएं।

(प्रभु यीशु ने इन वचनों का उद्धरण मत्ती 13:14–14 में दिया है। उसी तरह प्रेरितों के काम 28:27 में भी इसका संदर्भ आया है)

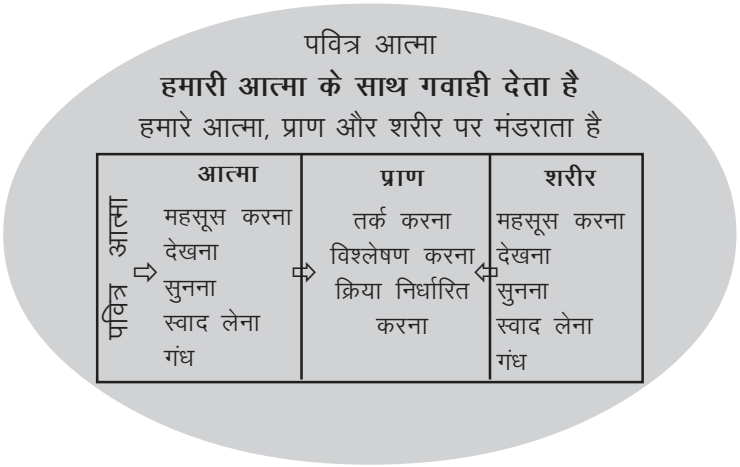

पवित्र शास्त्र से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि मनुष्य की आत्मा के पास ज्ञानेन्द्रिय होते हैं, मानव देह के भौतिक ज्ञानेन्द्रियों के समान। हम स्पष्ट रूप से पांच भौतिक ज्ञानेन्द्रियों की पांच आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों से समानता स्थापित कर सकते हैं जिसकी मनुष्य की आत्मा योग्यता रखती है। यह सम्भव है कि जब अनदेखे आत्मिक संसार से व्यवहार करने की बात आती है तब जिस प्रकार भौतिक शरीर भौतिक जगत से व्यवहार करने की योग्यता रखता है, उससे कहीं अधिक योग्यता आत्मा भी रखता है। अब हम पांच आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों के विषय चर्चा करेंगे और पवित्र शास्त्र से यह दिखाएंगे कि इन पांच माध्यमों के द्वारा पवित्र आत्मा हमसे कैसे संवाद स्थापित करता है। अंग्रेजी में मनुष्य की आत्मा (चपतपज) का उल्लेख करने हेतु छोटे` का उपयोग करते हैं;

और पवित्र आत्मा का उल्लेख करने हेतु कैपिटल ˝ ˝(चपतपज)का उपयोग करते हैं।

स्पर्श का आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय

स्पर्श/एहसास के भौतिक बोध के समान ही हमारी आत्माएं भी महसूस करती हैं। हम अपनी आत्माओं में आनंद, निश्चलता और शांति की भावनाओं को महसूस कर सकते हैं। हम बैचेनी, अस्वस्थता, प्रोत्साहन या कार्य करने की प्रेरणा, जकड़न कटुता या क्रोध की भावना, या भारीपन आदि को महसूस कर सकते हैं। एक चमक की तरह ये भावनाएं आ सकती हैं और जा सकती हैं। प्रत्येक एहसास या भावना के साथ एक संदेश होता है जो पवित्र आत्मा हमें बताता है।

यहां पर पवित्र शास्त्र से कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

- शांति (कुलुस्सियों 3:15) : शांति की भावना दर्शाती है कि सबकुछ कुशल है।
- प्रोत्साहित या उत्तेजित (प्रेरितों के काम 17:16,17) : आत्मा में उत्तेजना कार्य करने की बुलाहट है, परिस्थिति के विषय में कुछ करने की बुलाहट।
- विवश (प्रेरितों के काम 18:5) : विवश होने की भावना सामान्य तौर पर, कार्य करने की बुलाहट है, परिस्थिति के विषय में कुछ करने की बुलाहट है।
- बंधा हुआ (प्रेरितों के काम 20:22–23) : जकड़न या अस्वस्थता की भावना या एहसास चेतावनी है कि न जाएं, या किसी कार्य को न करें और पास में कुछ खतरा है।
- बैचेनी (2 कुरिन्थियों 2:13) : कार्य करने हेतु प्रेरित होना, कुछ करना, एक सूचना कि किसी बात पर ध्यान देने की ज़रूरत है।

- कटुता, गर्माहट (यहेजकेल 3:14) : क्रोध की भावना सामान्य तौर पर फिर से कार्य करने की बुलाहट है।
- मुझ पर आत्मा उतर आया (यहेजकेल 11:5) : भारीपन का एहसास सामान्य तौर पर इस बात का दर्शक है कि उसकी उपस्थिति आप पर है, आप पर अभिषेक आ रहा है आदि।

हमें अपनी आत्माओं में इन भावनाओं को पहचानने की योग्यता का विकास करना है और उसके बाद समझना है कि उस एहसास के द्वारा, पवित्र आत्मा क्या गवाही दे रहा है या हमें बता रहा है। उदाहरण के तौर पर, पौलुस को 'आत्मा में बंधा हुआ' महसूस हुआ, अर्थात उसके अंदर जकड़न महसूस हो रही थी। परंतु वह इस संदेश को समझ गया कि पवित्र आत्मा उसे बता रहा था कि यरूशलेम में आगे समस्याएं आने वाली हैं।

यूहन्ना 3:8
हवा जिधर चाहती है उधर चलती है और तू उसका शब्द सुनता है, परंतु नहीं जानता कि वह कहां से आती है और किधर जाती है। जो कोई आत्मा से जन्मा है वह ऐसा ही है।

आप हमेशा ही सबकुछ नहीं समझा सकते, परंतु आप जानते हैं कि पवित्र आत्मा कार्य कर रहा है।

दृष्टि का आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय

हम जानते हैं कि आत्मिक मनुष्य की 'आंखें' हैं या उसके पास 'देखने' की सामर्थ है और 'कान' या 'सुनने' की योग्यता है। उदाहरण के तौर पर, जब यीशु के शिष्यों ने उससे पूछा कि वह दृष्टांतों में क्यों बातें करता है तब यीशु ने उत्तर किया: *"मैं उनसे दृष्टान्तों में इसलिए बातें करता हूं कि वे देखते हुए नहीं देखते, और सुनते हुए नहीं सुनते, और नहीं समझते। और उनके विषय में यशायाह की यह भविष्यद्वाणी पूरी होती है कि तुम कानों से तो सुनोगे, परंतु समझोगे नहीं, और आंखों*

से तो देखोगे, पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगों का मन मोटा हो गया है, और वे कानों से ऊंचा सुनते हैं; और उन्होंने अपनी आंखों मूंद ली हैं, कहीं ऐसा न हो कि वे आंखों से देखें, और कानों से सुनें और मन से समझें, और फिर जाएं, ताकि मैं उन्हें चंगा करूं। परंतु धन्य हैं तुम्हारी आंखें कि वे देखती हैं, और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं" (मत्ती 13:13–16)। प्रभु स्पष्ट रूप से 'आंखों' और 'कानों' के विषय में कह रहा था और देखने तथा सुनने के स्वाभाविक अंगों के विषय में नहीं। हम चित्र देखते और शब्द सुनते हैं।

अक्सर हमें चित्र और प्रतिमाएं दिखाई देंगी जो हमारी आत्माओं में और उसके बाद हमारे मस्तिष्क में प्रगट होंगी। ये सचमुच पवित्र आत्मा की ओर से संदेश हैं। एक चित्र हज़ारों शब्दों का मूल्य रखता है, अतः वे आदान प्रदान का एक बड़ा स्वरूप हैं। जो चित्र हम देखते हैं वे मुख्य रूप से आत्मिक दर्शनों का मूल रूप हैं। कभी–कभी हम चित्र देखते हैं, जैसे किसी सिनेमा में, जो कि चित्रों का सिलसिला या क्रम हैं जहां घटनाएं घटती हैं। हम समाधी अवस्था (trance) में भी चित्र या तस्वीरें देख सकते हैं, या जब नींद में होते हैं तब स्वप्नों या रात के दर्शनों के माध्यम से। ऐसा समय होता है जब हमारी आत्मिक आंखें आत्मिक जगत में कुछ देखती हैं – दूसरे व्यक्ति की आत्मा के अंदर क्या हो रहा है या आत्मिक संसार में क्या हो रहा है और उसके बाद ऐसा भी कुछ है जो हो सकता था, देह से बाहर का अनुभव जहां पर हमारी आत्माएं दृश्य देखने हेतु पर्यटन पर निकल पड़ती हैं, जैसा कि भविष्यद्वक्ता यहेजकेल अक्सर अनुभव करता था।

हम में से अधिकतर लोगों के लिए तस्वीरें और प्रतिमाएं आम अनुभव होते हैं। हमें इन चित्रों का यथार्थ रूप से अर्थ लगाने की ज़रूरत होती है और वह संदेश प्राप्त करना है जो उनके द्वारा परमेश्वर हमें बताता है।

यहां पर पवित्र शास्त्र से उदाहरण हैं :

स्वप्न (अय्यूब 33:14–17)
दर्शन (दानिय्येल 8:1–3, दानिय्येल 10:4–9)
चित्र या तस्वीरें (यिर्मयाह 1:11–14, आमोस 8:1–2)
घटनाओं को/होने वाली बातों को देखना (यूहन्ना 1:46–48)
समाधी अवस्था या ट्रैन्स की स्थिति (प्रेरितों के काम 10:9–17)
आत्मिक संसार में देखना (गिनती 22:31, 2 राजा 6:15–17, यशायाह 6:1–8)
आत्मा में यात्रा करना और दर्शन देखना (यहेजकेल 8:1–3; यहेजकेल 11:1,24–25; 2 राजा 5:25–26)

शरीर से बाहर निकलने के अनुभव हो सकते हैं स्थानांतरण, दूसरे स्थान में पहुंच जाना और एक ही समय में अनेक स्थानों में रहना (bi-location) (2 राजा 2:16; यहेजकेल 37:1–2, यहेजकेल 43:5–6; प्रेरितों के काम 8:39–40; 2 कुरिन्थियों 12:1–4)। स्थानांतरण तब होता है जब आपका आत्मा आपके शरीर से बाहर यात्रा करता है। दूसरे स्थान पहुंचना तब होता है जब पवित्र आत्मा आपको पूर्ण रूप से (आत्मा, प्राण और शरीर) दूसरे स्थान में स्थानांतरित करता है। बाय–लोकेशन तब होता है जब आप एक ही समय में पृथ्वी पर दो स्थानों में पाए जाते हैं। बाय–लोकेशन कैसे होता है यह समझ पाने में हम असमर्थ हैं।

आप जो देखते हैं उसका अर्थ बताना और उसे निवेदन करना

आत्मा में हम जो कुछ देखते हैं और निवेदन करते हैं उसके विषय में हमें दो सरल निर्देशिकाओं का पालन करना है :

(अ) यदि वह यथाशब्द है, तो उसका वर्णन करें – परमेश्वर का आत्मा आपको जो कुछ दिखा रहा है वह यदि वास्तविक चित्र, दृश्य, लोगों की घटनाओं का वास्तविक क्रम, वास्तविक स्थान और

वस्तुएं हैं, तो उसका बिल्कुल वैसा ही वर्णन करें जैसा वह आपको दिखा रहा है। वह आपको नाम, संख्या, तारीख आदि दिखा सकता है, जिसे वैसा ही बोलना है जैसा दिखाया गया है।

(ब) यदि वह दृष्टांतरूपी या प्रतीकात्मक है, तो उसका अर्थ बताएं – यदि परमेश्वर का आत्मा आपको जो बता रहा है वह प्रतीकात्मक या दृष्टांत स्वरूप है, तब जो कुछ दिखाया जा रहा है उसका अर्थ बताएं और उसे निवेदन करें।

हमेशा बाइबल की कल्पना या अलंकृत भाषा का उपयोग करें

आप जो कुछ देखते हैं उसका अर्थ सर्वप्रथम बाइबल की कल्पना का उपयोग कर प्रगट करें, अर्थात इन प्रतीकों से पवित्र शास्त्र में क्या अर्थ सूचित किया गया है। यह सच है कि कई बार आप ऐसी वस्तुओं के चित्र देखेंगे जो बाइबल में नहीं हैं। ऐसी परिस्थितियों में पवित्र आत्मा की सुनें, उसके अर्थ और परिभाषा को प्राप्त करें, और संदेश दें।

बाइबल के किरदारों, घटनाओं या वचनों का अर्थ बताना

ऐसा भी समय होगा जब पवित्र आत्मा संदेश देने हेतु बाइबल के किरदारों, घटनाओं या अनुच्छेदों को रेखांकित करेगा। केवल उसी बात पर ज़ोर दें और पवित्र आत्मा जो बताने की इच्छा रखता है वहीं तक ज़ोर दें। उदाहरण के तौर पर, किसी व्यक्ति को सेवा प्रदान करते समय, यदि पवित्र आत्मा दाऊद द्वारा गोलियत की हत्या को रेखांकित करता है, तो उस व्यक्ति के लिए मात्र उसी बात को कहें। आप कुछ इस प्रकार कहेंगे "जिस प्रकार दाऊद ने गोलियत की हत्या की, उसी प्रकार परमेश्वर आपको उस गोलियत पर विजय देगा जिसका आप इस समय सामना कर रहे हैं।" यदि पवित्र आत्मा पांच चिकने पत्थरों पर और उस गोफण ज़ोर नहीं देता जिसका उपयोग दाऊद ने किया था, तो उसे भविष्यद्वाणी के संदेश के साथ न जोड़ें। आत्मा जिस बात पर ज़ोर दे रहा है उसी के साथ बने रहें। प्रतीकों और आकृतियों के

और अर्थबोध के लिए, कृपया कृपया एपीसी प्रकाशन द्वारा प्रकाशित विनामूल्य पुस्तक पढ़ें : भन्दकमतेजंदकपदह जेम च्तवचीमजपब ण

आत्मा का श्रवणेन्द्रिय (आत्मिक रीति से सुनना)

हम जानते हैं कि आत्मिक मनुष्य के कान होते हैं। बाइबल में हम इस प्रकार के वचन पढ़ते हैं, "जिसके सुनने के कान हो वह सुन ले कि आत्मा कलीसिया से क्या कहता है।" उल्लेख आत्मिक कानों का है।

मत्ती 11:15
जिसके सुनने के कान हों, वह सुन ले!
प्रकाशितवाक्य 2:7
जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है: जो जय पाए, मैं उसे उस जीवन के पेड़ में से जो परमेश्वर के स्वर्गलोक में है, फल खाने को दूंगा।

यशायाह 30:20–21
20 और चाहे प्रभु तुम्हें विपत्ति की रोटी और दुःख का जल भी दे, तौभी तुम्हारे उपदेशक फिर न छिपें, और तुम अपनी आंखों से अपने उपदेशकों को देखते रहोगे।
21 और जब कभी तुम दाहिनी वा बायीं ओर मुड़ने लगो, तब तुम्हारे पीछे से यह वचन तुम्हारे कानों में पड़ेगा, मार्ग यही है, इसी पर चलो।

यशायाह 50:4–5
4 प्रभु यहोवा ने मुझे सीखनेवालों की जीभ दी है कि मैं थके हुए को अपने वचन के द्वारा संभालना जानूं। भोर को वह नित मुझे जगाता और मेरा कान खोलता है कि मैं शिष्य के समान सुनूं।
5 प्रभु यहोवा ने मेरा कान खोला है, और मैंने विरोध न किया, न पीछे हटा।

जब हम आत्मा में 'सुनते' हैं, तब हम सामान्य तौर पर आवाज़ों को नहीं सुनते, बल्कि शब्द, वचन, वाक्य या अनुच्छेद प्राप्त करते हैं जो अलौकिक रीति से आत्मिक मनुष्य को दिए जाते हैं। कभी–कभी ये

सूचना की एक चमक के रूप में आते हैं, और हमारी आत्माओं में प्रवेश करते हैं। कभी–कभी जो हम 'सुनते' हैं वह अलौकिक समझ के रूप में आता है जहां पर हम केवल जानते हैं। हमें काफी सारी जानकारी दी जाती है और वह हमारी आत्माओं में आती है।

ये सूचना आंतरिक ज्ञान, आंतरिक गवाही, अंदरूनी आवाज़, और कभी–कभी वास्तविक श्रवणीय आवाज़ के रूप में (यद्यपि ऐसा शायद ही होता है) हमारी आत्माओं में आती है, जैसे शमुएल के साथ हुआ जिसने परमेश्वर की आवाज़ सुनी। केवल वही व्यक्ति या श्रोता परमेश्वर की श्रवणीय आवाज़ सुन सकता है जिसके लिए वह होती है, और उनके आसपास खड़े हुए लोग सामान्य तौर पर उसे सुन नहीं सकते।

परमेश्वर अपने निर्णय के अनुसार बोलेगा। कभी–कभी आप मात्र एक शब्द प्राप्त करेंगे, परंतु वह किसी के जीवन को बदलने वाला साबित हो सकता है। कभी–कभी यह मात्र एक सरल वाक्य या बयान होता है। और ऐसा समय होता है जब काफी सारी सूचना होती है। परमेश्वर चाहे कितनी ही जानकारी क्यों न दें, जो कुछ भी वह बोलता है उसे हम गम्भीरतापूर्वक स्वीकार करते हैं और उसे विश्वासयोग्यता के साथ दूसरों तक पहुंचाने का प्रयास करते हैं।

कई बार बाइबल में, हम "प्रभु का वचन मेरे पास आया" इस प्रकार का वाक्यांश पढ़ते हैं। कुछ उदाहरणों में, बाइबल यह भी दर्शाती है कि यह श्रवणीय आवाज़, दर्शन, या स्वप्न आदि था। परंतु कई उदाहरणों में ऐसा नहीं होता। मेरा विश्वास है कि अधिकतर मामलों में जब हम "प्रभु का वचन मेरे पास आया" इस वाक्यांश को पढ़ते हैं, तब वह भविष्यद्वक्ता को दिया गया ऐसा संदेश था जो शारीरिक कानों से सुनाई नहीं दिया और भविष्यद्वक्ता ने उस संदेश को उसके आत्मिक कानों से सुना और उसके बाद उसे कहा।

सुनना सूचना का आदान–प्रदान है। स्वाभाविक क्षेत्र में, यह आदान–प्रदान या शब्दों का स्थानांतरण सामान्य तौर पर ध्वनि के माध्यम से होता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में, सामान्य तौर पर ध्वनि के माध्यम का उपयोग नहीं किया जाता, यद्यपि कुछ उदाहरण होते हैं जब आप उसके आवाज़ का स्वर या स्वर्गीय आराधना का स्वर आदि सुन सकते हैं। विशिष्ट तौर पर, आप उसकी आवाज़ सुनते हैं, उस शब्द या संदेश को प्राप्त करते हैं जो वह बिना किसी स्वर के हमें निवेदन करता है। ऐसा समय होता है जब यह ज्ञान आपकी आत्मा में दिया जाता है और आप आपकी आत्मा में 'जानते हैं। इसे हम 'जानना' या बोध कहते हैं, जो केवल आत्मा में जानने या पहचानने की योग्यता है। यीशु के विषय में लिखा गया है कि एक से अधिक अवसरों पर उसने मनुष्यों के विचारों को जाना। *यीशु ने तुरंत अपनी आत्मा में जान लिया कि वे अपने अपने मन में ऐसा विचार कर रहे हैं, और उनसे कहा, "तुम अपने अपने मन में यह विचार क्यों कर रहे हो?"* (मरकुस 2:8)।

यहां पर पवित्र शास्त्र से कुछ उदाहरण दिए गए हैं :
एक अकेला वाक्य (प्रेरितों के काम 8:29)
कुछ वाक्य (प्रेरितों के काम 10:19–20)
व्यक्तिगत विवरण (2 राजा 6:8–12; यूहन्ना 4:16–18)
संख्याएं (प्रेरितों के काम 5:1–10)
नाम, संख्याएं, पते, (घर या आपर्टमेंट का अंक, जन्मतिथि, आदि) (प्रेरितों के काम 9:10–12; 10:1–6, 19–20)

स्वाद और गंध के आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय

हम जानते हैं कि आत्मिक मनुष्य स्वाद और गंध को भी महसूस करने की योग्यता रखता है। बाइबल हमें बताती है कि "चखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है..." (भजनसंहिता 34:8)। यहेजकेल अपने आत्मिक अनुभव का वर्णन करता है कि किस प्रकार उसने पुस्तक खाई और उसको चखा। *"सो मैंने मुंह खोला और उसने वह पुस्तक मुझे खिला*

दी। तब उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के सन्तान, यह पुस्तक जो मैं तुझे देता हूं उसे पचा ले, और अपनी अन्तड़ियां इस से भर ले। सो मैंने उसे खा लिया; और मेरे मुंह में वह मधु के तुल्य मीठी लगी" (यहेजकेल 3:2,3)। यह वास्तव में एक आत्मिक अनुभव था जहां पर आत्मा में वह किसी चीज का स्वाद ले रहा था या उसे चख रहा था। प्रकाशितवाक्य 10:8–10 भी देखें।

कई बार परमेश्वर गंध के द्वारा अपनी उपस्थिति प्रगट करता है। स्वाद के समान, यह गंध भी "आत्मा में" होती है। आप किसी विशिष्ट गंध को पहचानते हैं और परमेश्वर उस गंध का उपयोग आपको यह दर्शाने के लिए करता है कि वह क्या चाहता है कि करें, या आप करें। आपके आसपास के अन्य लोग भले ही इस गंध को महसूस न करें, क्योंकि परमेश्वर आपके गंध वाले आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय का उपयोग कर आपको बताता है। परमेश्वर के सामने हमारे कार्य कैसे हैं इसके वर्णन के रूप में गंध या सुगंध का उपयोग करने वाले कुछ वचनों को देखें (भजनसंहिता 141:2; 2 कुरिन्थियों 2:14–16; इफिसियों 5:2; फिलिप्पियों 4:18; प्रकाशितवाक्य 5:8; प्रकाशितवाक्य 8:3–4)।

परमेश्वर विशिष्ट स्वाद/गंध को पहचानने हेतु आपको योग्यता देगा और उसके बाद आपको विशिष्ट समझ देगा कि वह क्या बता रहा है। मधुर स्वाद/गंध का उपयोग जो कुछ हम कर रहे हैं उसमें परमेश्वर की प्रसन्नता को दर्शाने के लिए किया जा सकता है, यह दर्शाने के लिए कि परमेश्वर उपस्थित है; परमेश्वर का अभिषेक कार्य कर रहा है; परमेश्वर चंगाई देने के लिए मण्डरा रहा है; परमेश्वर सांत्वना देने के लिए मण्डरा रहा है; परमेश्वर किसी विशिष्ट प्रकार की ज़रूरत आदि को पूरा करने के लिए मण्डरा रहा है या कार्य कर रहा है। अप्रिय स्वाद/गंध इस बात की चेतावनी होती है कि जो कुछ हो रहा है उससे आप सावधान रहें (उदाहरण के तौर पर, झूठी शिक्षा का प्रचार, झूठा भविष्यद्वक्ता जो लोगों को धोखा देता है, दुष्टात्मा की

शक्ति, भरमाने वाली आत्माएं, अशुद्ध आत्मा का कार्य, आदि), ताकि आप उस स्थान से निकल जाएं (अभी निकलें, आपको यहां रहने की ज़रूरत नहीं है, इन लोगों के साथ बातचीत न करें, आदि)।

सुगंधी इत्र, डियोड्रंट, हवा मे ताज़गी लाने वाली औषधियों गंध को इस प्रकार की गंध मानकर न बैठें। हम उस स्वाद/गंध का उल्लेख कर रहे हैं जिनका आत्मिक उगम है और जिन्हें हमारी आत्मा में उसी तरह पहचाना जा सकता है जिस तरह स्वाभाविक स्वाद और गंध को पहचाना जाता है।

अपने आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करना

हमने ऊपर मानवीय आत्मा के अंगों का वर्णन किया है जो हमारे पांच स्वाभाविक ज्ञानेन्द्रियों के बिल्कुल समान हैं। हमें यह याद रखना है कि ये पांच आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय एक दूसरे से अलग होकर काम नहीं करते। उन्हें वर्गीकृत नहीं किया जाता। कई बार जब परमेश्वर बातें करता है, तब ऐसी बातें होंगी जिन्हें आप छू सकते हैं, सुन सकते हैं और देख सकते हैं। ये सभी माध्यम कुछ अंश में जानकारी प्राप्त करेंगे और आपको उन्हें संकलित करना है और उसके बाद उन्हें प्रस्तुत करना है या उन पर कार्य करना है।

दूसरा महत्वपूर्ण पहलू जो जानना है, वह यह है कि परमेश्वर उन माध्यमों के द्वारा जो बता रहा है उसे ग्रहण करने हेतु हमारे आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों को प्रशिक्षित करने की ज़रूरत है। जितना अधिक हम सुनना और परमेश्वर से प्राप्त करना सीखेंगे, उतना अधिक हम संवेदनशील बनेंगे और परमेश्वर जो कुछ कह रहा है उसे ग्रहण करना हमारे लिए आसान होगा। यह मानो किसी की आवाज़ सुनने के समान है। जब आप उनकी आवाज़ कई बार सुन लेते हैं, तब आप उस आवाज़ को पहचान लेते हैं और यह भी जान लेते हैं कि वह व्यक्ति कौन है। यही बात परमेश्वर की सुनना सीखने से है।

इब्रानियों 5:13,14

13 क्योंकि दूध पीनेवाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है।

14 परंतु अन्न सयानों के लिए है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते करते, भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गए हैं।

हमारे ज्ञानेंद्रियों को प्रशिक्षित करने का एक महत्वपूर्ण मार्ग है परमेश्वर के वचन में रहने के द्वारा। 'ज्ञानेंद्रिय' इस शब्द का अर्थ है 'बोध या समझ के अंग।' समझ के आत्मिक और भावनात्मक दोनों प्रकार के अंगों को परमेश्वर के वचन के निरंतर उपयोग से प्रशिक्षित करने की ज़रूरत होती है। इससे हमारे ज्ञानेन्द्रियों को परमेश्वर की ओर से क्या दिया गया है और उसकी ओर से क्या नहीं है यह पहचानने की योग्यता प्राप्त होती है।

जब हम अपनी आत्मा में बातों को प्राप्त कर लेते हैं, तब हम सामान्य तौर पर हमारे प्राण (मन, इच्छा, भावनाएं) में इसे संसाधित करते हैं ताकि यह प्रमाणित करें कि यह सचमुच प्रभु की ओर से है और उसके बाद यह निर्धारित करते हैं कि उसके साथ क्या करना है, कब और कैसे करना है, आदि। हमें अपने मनों को उस बात को संसाधित करने हेतु भी प्रशिक्षित करना है जो हम आत्मा के द्वारा प्राप्त करते हैं। हमें परमेश्वर के वचन से और परमेश्वर की पूर्ण मनसा से अपने मन को नवीनीकृत करना है ताकि जो कुछ हम आत्मा में प्राप्त कर रहे हैं उसे यथार्थ रूप से संसाधित कर सकें। यह प्रशिक्षण पुस्तिका एक उपकरण है जिसकी सहायता से हम परमेश्वर की ओर से सुनने और जो कुछ हम सुनते हैं उसे संसाधित करने हेतु अपनी आत्माओं और मनों को प्रशिक्षित करें।

आत्मा की आवाज़ और प्राण की आवाज़ के बीच अंतर पहचानना

इस प्रशिक्षण प्रक्रिया में सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक यह सीखना है कि **आत्मा की ओर से क्या है और हमारी कल्पना से क्या**

निकला है इसके बीच फर्क पहचानना। मनन करें और आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण के आपके प्रत्येक अनुभव से सीखें। क्या सही हुआ और क्या गलत हुआ इसके विषय में आपका अपना संग्रह तैयार करें। यह एक निरंतर अध्ययन प्रक्रिया है जिसे आपको बनाए रखने की ज़रूरत है, ताकि समय के साथ आप आत्मा की आवाज़ और आपके प्राण की आवाज़ पहचानना सीख पाएंगे।

जब व्यक्ति तैराकी सीखना चाहता है, तब हम कम गहरे पानी वाले स्थान से शुरू करते हैं, गहरे पानी से नहीं। हम उन्हें पानी में रहने की आदत बनाने का मौका देते हैं, कुछ मौलिक बातों से शुरूवात करते हैं और बाद में धीरे धीरे अधिक चुनौतिपूर्ण शैलियों की ओर बढ़ते जाते हैं। उसी तरह, जब पवित्र आत्मा की सुनना सीखने लगते हैं, तब सरल तरीके से शुरूवात करें। छोटी–छोटी बातों में सुनना और आज्ञा मानना सीखें। उदाहरण के तौर पर : भविष्यद्वाणी के सरल शब्दों को बोलना सीखें जिनसे उन्नति, उपदेश और सांत्वना का कार्य होता है। तुरंत ही भविष्यात्मक, सुधारात्मक, और निदेशात्मक भविष्यद्वाणियों की गहराई में कूद न पड़ें। जब आपको भविष्यद्वाणी के द्वारा सेवा करने के मौलिक स्तर की आदत हो जाती है, उसके बाद आप निश्चित ही भविष्यद्वाणी के गहरे क्षेत्रों में परमेश्वर के साथ यात्रा कर सकते हैं।

यहां पर कुछ अंतर्दृष्टियां दी गई हैं। पवित्र आत्मा की सुनना सीखते समय वे आपके लिए उपयोगी साबित हो सकती हैं :

अपने प्राण को शांत करें और उसके बाद पवित्र आत्मा की सुनें

अक्सर जब हमारा मन और भावनाओं का ध्यान बंटा होता है, संसारिक बातों से त्रस्त, व्याकुल और परेशान होता है, तब परमेश्वर का आत्मा जो कहता है उसे स्वीकार करना अत्यंत मुश्किल होता है (भले ही असम्भव न हो)। इसलिए कुंजी है "शांत रहना" सीखना, ताकि आप "जान" सकें कि परमेश्वर क्या कह रहा है।

पहली आवाज़ परमेश्वर की आवाज़

दूसरी उपयोगी अंतर्दृष्टि है, पहली आवाज़ को लेकर उसके साथ बने रहें। इससे हमारा आशय है, कि अक्सर, जब हम परमेश्वर की ओर से वास्तविक आवाज़ सुनते हैं, तब हमारा मन, तर्क, विश्लेषण करने की क्षमता हस्तक्षेप करती है, और हम संदेह करने लगते हैं, सवाल करते हैं, भयभीत हो जाते हैं। उसके बाद परमेश्वर ने जो कुछ कहा है उस विषय में बुद्धियुक्त तर्क करके उसमें से बाहर निकल पड़ते हैं। उसके बाद जो कुछ हमने पहले सुना था, जो परमेश्वर का सच्चा वचन था, उसके अनुसार हम कार्य नहीं करते या बोलते नहीं। हमारे तर्क ने हमें हरा दिया और आत्मा हमसे जो कुछ कह रहा था उससे हमें वंचित कर दिया।

आत्मा के साथ आगे बढ़ने हेतु अपने "मन से बाहर निकलें"

कृपया इस बात को सही रीति से समझें। हम अपने मन या बुद्धि का परित्याग करने के विषय में नहीं कह रहे। परमेश्वर ने हमें मन और बुद्धि दी और उसका हमें सही उपयोग करना है। परंतु परमेश्वर हमारे मन और बुद्धि से बड़ा है। अक्सर, परमेश्वर के आत्मा की ओर से निर्देश और प्रकाशन आएंगे जो हमारे विचार, तर्क या विश्लेषण की पद्धति के अनुसार या अनुरूप नहीं होंगे। परमेश्वर ऐसी बातों को प्रगट करता है जो हमारे जानने या समझने की योग्यता से परे होती हैं। यहीं पर हम परमेश्वर पर भरोसा रखते हुए आगे बढते हैं और पवित्र आत्मा का अनुसरण करते समय एक अर्थ से पूर्णतया "अपने मन से बाहर" होते हैं। परमेश्वर की बातों में आगे बढ़ने का दूसरा कोई तरीका नहीं है। अपने सीमित मन या बुद्धि या तर्क के स्तर पर अनंत परमेश्वर को सीमित नहीं कर सकते। वह अत्यंत महान (बड़ा) है और आत्मा में उसके साथ बढ़ने हेतु हमें बालक के समान भरोसा रखना है।

जब अनिश्चित होते हैं, तब दूसरों को बताएं और सत्यापन करें

विशेष तौर पर पवित्र आत्मा की कैसे सुनें यह सीखने की प्रारम्भिक अवस्थाओं में, आप जो सोचते हैं कि आप परमेश्वर से पा रहे हैं उसे दूसरों को बताना और किसी से यह कहना कि वह सही है या गलत इसे प्रमाणित करें, पूर्णतया उचित होता है। आप पाएंगे कि कभी–कभी आप सही हैं और अन्य समयों में आप गलत हो सकते हैं। सीखने की प्रक्रिया के रूप में इसका उपयोग करें। गलतियां करना उचित है। गलतियों से सीखें ताकि आप यह जान पाएं कि आप वास्तव में परमेश्वर के आत्मा की ओर से सुन रहे हैं, और कब आपका अपना मन और अन्य ध्यान बटाने वाली बातें होती हैं।

परमेश्वर हमारे प्राण और शरीर को छू सकता है

यद्यपि हमने इस बात के महत्व पर ज़ोर दिया कि जो कुछ हम परमेश्वर की ओर से सीखते हैं और जो हम अपने प्राण में महसूस करते हैं उसे अलग करें, फिर भी हमें यह स्मरण रखना है कि परमेश्वर हमारे प्राण (भावनाओं) और हमारे शरीर को छू सकता है। इसलिए ऐसा समय हो सकता है जब हमें अपनी आत्मा या शरीर में गहरी संवेदना और एहसास महसूस होगा, जो वास्तव में परमेश्वर की ओर से होगा। यहां पर भी यह पहचानना सीखने की एक प्रक्रिया है जब जो कुछ हम अपने प्राण या शरीर में महसूस करते हैं वह प्रभु की ओर से है या प्रभु की ओर से नहीं है। उदाहरण के तौर पर, परमेश्वर पल भर के लिए आपको अनुमति देगा कि आप अपनी भावनाओं में या आपके भौतिक शरीर में ऐसा कुछ महसूस करें जिसे वह सम्बोधित कर रहा है या जिसके साथ वह व्यवहार कर रहा है। आपको आपके शरीर के किसी अंग में जलने, झुनझुनाहट, दर्द की क्षणिक संवेदना प्राप्त हो सकती है, और परमेश्वर उसके द्वारा दिखा सकता है कि यह चंगाई है जो वह लोगों को उनके शरीर के उस अंग में प्रदान कर रहा है।

अध्ययन पद्धती

शिक्षात्मक उद्देश्यों से, आत्मा के वरदानों का सामान्य तौर पर तीन समूहों में वर्गीकरण किया जाता है :

आत्मा के वरदान		
वाचिक या मौखिक	**प्रकाशन के वरदान**	**सामर्थ के वरदान**
(वरदान जो कुछ कहते हैं)	(वरदान जो कुछ प्रगट करते हैं)	(वरदान जो कुछ करते हैं)
अन्य अन्य भाषाएं	बुद्धि का वचन	चंगाइयों के वरदान
अन्य अन्य भाषाओं का	ज्ञान का वचन	सामर्थ के काम
	आत्माओं की परख	विश्वास

उपर्युक्त वर्गीकरण मात्र शिक्षा/प्रशिक्षण के उद्देश्यों से है। वास्तव में, हम कई वरदानों को लोगों की सेवा करने हेतु एक साथ कार्य करते हुए देखेंगे। प्रत्येक वरदान के लिए हम एक परिभाषा, पवित्र शास्त्र से उचित उदाहरणों का संदर्भ, उसके कुछ कार्यों की सूची (आज उन्हें कहां और कैसे उपयोग किया जा सकता है), प्रस्तुत करेंगे, और यह भी बताएंगे कि वरदान को कैसे प्राप्त किया जाता है और उस वरदान को कैसे उचित रीति से प्रगट करना है। **व्यवहार में, पवित्र आत्मा कई तरह से मंडराएगा और उसकी अभिव्यक्तियां परिभाषाओं और परिचालनों से परे हैं जिसे कोई भी किसी पुस्तक या प्रशिक्षण कार्य में कैद नहीं कर सकता। पवित्र आत्मा असीम या अनंत है और उसकी अभिव्यक्तियों की विविधताएं भी अनंत हैं।**

7

नाना प्रकार की भाषाएं

नाना प्रकार की भाषाओं का वरदान मनुष्यों या स्वर्गदूतों की भाषाओं में बोलने की अलौकिक योग्यता है। नाना प्रकार की भाषाओं के कई उपयोग हैं : (अ) परमेश्वर के साथ वार्तालाप करने हेतु व्यक्तिगत प्रार्थना की भाषा, (ब) दूसरों के लिए गहरी मध्यस्थी, (क) कलीसिया की मण्डली को अर्थ के साथ संदेश के रूप में, (ड) उद्धार न पाए हुए लोगों को मसीह के लिए सुसमाचार सुनाने का माध्यम, आदि।

आत्माओं का वरदान अलौकिक कार्य है, अतः वह सीखी हुई भाषाओं का प्राप्त कौशल (उदाहरण के तौर पर, भाषाविद् के रूप में) नहीं है।

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

नाना प्रकार की भाषाओं का वरदान पुराने नियम में कार्यरूप में नहीं देखा जाता, परंतु हम उत्पत्ति 11:1–9 में देखते हैं कि पहली बार कब "नाना प्रकार की भाषाएं" पृथ्वी पर प्रगट हुई थीं। उसी तरह यशायाह भविष्यद्वक्ता ने नए नियम के विश्वासियों के अन्य भाषाओं में बोलने के विषय में भविष्यद्वाणी की थी (यशायाह 28:11–12; 1 कुरिन्थियों 14:21)।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

प्रभु यीशु ने इस चिन्ह के विषय में भविष्यद्वाणी की

प्रभु यीशु ने पूर्वकथन किया था कि जो उसमें विश्वास करेंगे वे अन्य भाषाओं में बोलेंगे *"और विश्वास करनेवालों में ये चिन्ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, सांपों को उठा*

लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौभी उनकी कुछ हानि न होगी। वे बीमारों पर हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जाएंगे।" (मरकुस 16:17–18)।

सम्पूर्ण प्रारम्भिक कलीसिया में

पिन्तेकुस्त के दिन से आरम्भ कर, हम प्रारम्भिक कलीसिया में अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के विषय में कई स्थानों में लिखा हुआ पाते हैं:

1) पिन्तेकुस्त के दिन (प्रेरितों के काम 2:1–4

2) सामरिया की कलीसिया (प्रेरितों के काम 8:14–18)। यह स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया गया है कि उन्होंने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की, परंतु हम यह समझ सकते हैं कि जब पवित्र आत्मा दिया गया तब कुछ अलौकिक घटित हुआ (शिमौन ने उन्हें पैसा देना चाहा!)। हम सुरक्षित रूप से यह कह सकते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन के समान उन्होंने अन्य अन्य भाषाएं बोली, जो उस समय का मानक था, जैसा कि प्रेरितों के काम 10 में, कुरनेलियुस के घर में प्रेरितों की प्रतिक्रिया से देखा जा सकता है।

3) उद्धार पाने के बाद शाऊल (प्रेरितों के काम 9:17; 1 कुरिन्थियों 14:18)। जब हनन्याह ने शाऊल पर हाथ रखे, तब उसने अन्य अन्य भाषाओं में बातें की। हम जानते हैं कि शाऊल अन्य अन्य भाषाओं में बहुत बातें करता था।

4) कुरनेलियुस और उसका घराना (प्रेरितों के काम 10:44–46)

5) इफिसुस के विश्वासी (प्रेरितों के काम 19:1–6)

6) कुरिन्थियों की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 12:7–11,28:; 1 कुरिन्थियों 14:1–40)

7) इफिसुस की कलीसिया (इफिसियों 6:18)। पौलुस के लेखन के अनुसार, आत्मा में प्रार्थना करना (या आत्मा के साथ प्रार्थना

करना) (1 कुरिन्थियों 14:14–15), अन्य अन्य भाषाओं में बोलना है।

8) हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा की सामर्थ से सुसमाचार का प्रचार करने के द्वारा अन्य कलीसियाएं भी स्थापित हुई थीं, इसलिए हम पूर्ण विश्वास के साथ बता सकते हैं कि पौलुस ने कुरिन्थियों को जो सिखाया था, वही बात वह समस्त कलीसियाओं के सारे विश्वासियों को दे सकता था।

9) सभी विश्वासियों को लिखते समय यहूदा (यहूदा 1:20)।

कार्य या परिचालन

भिन्न भिन्न प्रकार की भाषाएं, या अलौकिक तौर पर पवित्र आत्मा द्वारा दी गई भाषाओं के अनेक उपयोग हो सकते हैं। व्यापक तौर पर, हम देखते हैं कि अन्य अन्य भाषाओं का **उपयोग व्यक्तिगत जीवन में या सार्वजनिक सेवकाई में होता है।** सार्वजनिक सेवकाई विश्वासियों के लिए मण्डली के परिवेश में हो सकती है या उद्धार न पाए हुओं के प्रति (अविश्वासी)।

1) सभी विश्वासी अन्य अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं (मरकुस 16:17)।

2) जब आप अन्य अन्य भाषाओं मे बोलते हैं, तब आप परमेश्वर के अद्‌भुत कामों की घोषणा कर सकते हैं (प्रेरितों के काम 2:11)।

3) जब आप अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तब आप परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं, उसकी बढ़ाई, प्रशंसा और महिमा कर सकते हैं (प्रेरितों के काम 10:46)।

4) अन्य अन्य भाषा आत्मा के प्रकाशनों में से एक है, जहां आत्मा की उपस्थिति और सामर्थ स्पष्ट की जाती है (1 कुरिन्थियों 12:7–11)।

5) जब आप अन्य अन्य भाषाओं में बोलते हैं, तब आप पृथ्वी की या स्वर्गीय भाषाओं में बोल सकते हैं (1 कुरिन्थियों 13:1)।

6) अन्य अन्य भाषाएं भेद की बातें प्रार्थना में कहने में सहायता करती हैं, उन बातों से परे जिन्हें आप व्यक्तिगत तौर पर जानते हैं (1 कुरिन्थियों 14:2)।

7) अन्य अन्य भाषाएं व्यक्तिगत उन्नति लाती हैं – उन्नति, दृढ़ता, विकास – जैसे किसी भवन का निर्माण करना (1 कुरिन्थियों 14:4)।

8) मण्डली को अर्थ बताने के साथ अन्य अन्य भाषाएं सभा में उन्नति ला सकती है (1 कुरिन्थियों 14:5)।

9) जब आप अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब आपका आत्मा प्रार्थना करता है। आपका मन उसमें सहभागी नहीं होता। *"इसलिए यदि मैं अन्य ख्अज्ञात, भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा ख्मेरे अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा,प्रार्थना करती है, परंतु मेरी बुद्धि काम नहीं देती ख्वह कोई फल नहीं लाती और किसी की सहायता नहीं करती,"* (1 कुरिन्थियों 14:14, AMPC)

10) अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करना और गीत गाना आपकी अपनी "इच्छा" से हो सकता है, अर्थात आप जब चाहते हैं तब आरम्भ कर सकते हैं और रोक सकते हैं, जिस प्रकार ज्ञात भाषा में आप समझ के साथ प्रार्थना करते हैं और गाते हैं। *"इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा"* (1 कुरिन्थियों 14:15)।

11) अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने को आत्मा में प्रार्थना करना भी कहते हैं। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सामर्थ पाकर मेरी आत्मा प्रार्थना करती है। *"इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी ख्मेरे अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा, प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी ख्समझते हुए, प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से ख्मेरे*

अंदर वास करने वाले पवित्र आत्मा के द्वारा, गाऊंगा, और बुद्धि से भी ख्समझते हुए, गाऊंगा" (1 कुरिन्थियों 14:15, AMPC)।

12) आप पवित्र आत्मा से बिनती कर सकते हैं कि आत्मा के साथ आपकी प्रार्थना को विशिष्ट व्यक्ति या विषय की ओर निर्देशित करे। उदाहरण, प्रेरित पौलुस कहता है कि आप आत्मा के साथ भोजन के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और धन्यवाद दे सकते हैं। *"नहीं तो यदि तू आत्मा ही से धन्यवाद करेगा, तो फिर अज्ञानी तेरे धन्यवाद पर आमीन क्यों कहेगा? इसलिए कि वह तो नहीं जानता कि तू क्या कहता है? तू तो भली भांति से धन्यवाद करता है, परंतु दूसरे की उन्नति नहीं होती"* (1 कुरिन्थियों 14:16–17)।

13) भविष्यद्वक्ता यशायाह ने अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के विषय में भविष्यद्वाणी की और यह बताया कि परमेश्वर के लोगों को विश्राम और ताज़गी प्राप्त होगी। *"वह तो इन लोगों से परदेशी होंठों और विदेशी भाषावालों के द्वारा बातें करेगा; जिन से उसने कहा, विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो; परंतु उन्होंने सुनना न चाहा"* (यशायाह 28:11–12, 1 कुरिन्थियों 14:21)। इब्रानी भाषा में "विश्राम" इस शब्द के लिए "दनंबी" शब्द दिया गया है और उस शब्द का अर्थ है विश्राम का स्थान, निःशब्दता, शांति, निश्चलता, और सांत्वना का स्थान।

14) अन्य अन्य भाषाएं अविश्वासियों के चिन्ह हो सकती हैं जो परमेश्वर की ओर उन्हें निर्देशित करती हैं (1 कुरिन्थियों 14:22)।

15) आत्मा में प्रार्थना करना शरीर की निर्बलताओं पर विजय पाने में आपकी सहायता कर सकता है (रोमियों 8:26)।

16) जब आप अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब आप पवित्र जनों के लिए – परमेश्वर के लोगों के लिए मध्यस्थी करते हैं (रोमियों 8:26–27)।

17) जब आप आत्मा में प्रार्थना करते हैं, तब आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करते हैं (रोमियों 8:27)।

18) जब आप आत्मा में प्रार्थना करते हैं, तब आप विश्वास में उन्नति करते हैं (यहूदा 1:20)।

19) आत्मा में प्रार्थना करना आपको परमेश्र के प्रेम में बने रहने की सामर्थ प्रदान करता है (यहूदा 1:20–21)।

20) आत्मा में प्रार्थना करना आपके आत्मिक हथियार का भाग है (इफिसियों 6:18)।

21) कुछ लोगों के लिए, आत्मा में प्रार्थना करना (उदाहरण : मध्यस्थता की प्रार्थना सेवकाई, अन्य अन्य भाषा और उनका अर्थ बताने की सार्वजनिक सेवकाई) उनका सदस्यता कार्य है (1 कुरिन्थियों 12:28)।

अधिक जानकारी के लिए, कृपया एपीसी प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक "अन्य अन्य भाषा में प्रार्थना करने के अद्भुत लाभ", विनामूल्य डाऊनलोड के लिए इस पते पर उपलब्ध है : apcwo.org/publications

व्यक्तिगत उपयोग के लिए अन्य अन्य भाषा का उपयोग करना

हम नए नियम में देखते हैं कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होने के लिए (या पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाने के लिए) विश्वासियों के लिए प्रार्थना करना एक आम प्रथा थी। यहां पर, वे अन्य अन्य भाषाओं में बोलने लगे और पवित्र आत्मा के वरदानों में आगे बढ़ने लगे। उस समय से, विश्वासी के नाते आपकी व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन के भाग के रूप में आप जब चाहें और जितनी बार चाहें अन्य अन्य अन्य भाषाओं में बोल सकते हैं (या गा सकते हैं)।

1 कुरिन्थियों 14:14–15

14 इसलिए यदि मैं अन्य भाषा में प्रार्थना करूं, तो मेरी आत्मा प्रार्थना करती है, परंतु मेरी बुद्धि काम नहीं देती।

15 इसलिए क्या करना चाहिए? मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा, और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा; मैं आत्मा से गाऊंगा, और बुद्धि से भी गाऊंगा।

व्यक्तिगत जीवन में अन्य अन्य भाषाओं के विभिन्न उपयोग

जब नवीनीकरण पाने की, फिर उत्साह और ताज़गी प्राप्त करने की ज़रूरत होती है।

जब व्यक्तिगत रूप से उन्नति पाने की इच्छा होती है।

जब प्रभु का मन जानना चाहते हैं (उदाहरण, जब निर्णय लेना चाहते हो)।

जब दूसरों के लिए मध्यस्थी करते हैं।

जब आत्मा के वरदानों मे बढ़ने हेतु अपने आपको प्रोत्साहित या प्रेरित करते हैं।

जब आप मात्र प्रभु की बाट जोहते हैं और उसकी उपस्थिति में समय बिताते हैं।

हमेशा अर्थ बताने की ज़रूरत नहीं होती

जब निजी या व्यक्तिगत प्रार्थना में अन्य अन्य भाषा का उपयोग करते हैं, तब हमेशा अर्थ बताने की ज़रूरत नहीं होती। आप जब कभी चाहते हैं, और जितने समय तक चाहते हैं उतने समय तक अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं, और आप क्या प्रार्थना करते है इसका अर्थ बताने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि क्या प्रार्थना की जा रही है यह परमेश्वर समझता है। आप कुछ समय तक अनेक प्रकार की भिन्न भिन्न भाषाओं में बोल सकते हैं या आपके प्रार्थना समय के मात्र एक सत्र के अंतर्गत भी।

भेदों को समझना

1 कुरिन्थियों 2:9–16

9 परंतु जैसा लिखा है कि जो आंख ने नहीं देखी, और कान ने नहीं सुनी, और जो बातें मनुष्य के चित्त में नहीं चढ़ी, वे ही हैं जो परमेश्वर ने अपने प्रेम रखनेवालों के लिए तैयार की हैं।

10 परंतु परमेश्वर ने उनको अपने आत्मा के द्वारा हम पर प्रगट किया; क्योंकि आत्मा सब बातें, वरन् परमेश्वर की गूढ़ बातें भी जांचता है।

11 मनुष्यों में से कौन किसी मनुष्य की बातें जानता है, केवल मनुष्य की आत्मा जो उसमें है। वैसी ही परमेश्वर की बातें भी कोई नहीं जानता, केवल परमेश्वर का आत्मा।

12 परंतु हमने संसार का आत्मा नहीं, परंतु वह आत्मा पाया है, जो परमेश्वर की ओर से है, कि हम उन बातों को जानें जो परमेश्वर ने हमें दी हैं,

13 जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परंतु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं।

14 परंतु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता, क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बातें हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।

15 आत्मिक जन सब कुछ जांचता है, परंतु वह आप किसी से जांचा नहीं जाता।

16 क्योंकि प्रभु का मन किसने जाना है कि उसे सिखलाए? परंतु हममें मसीह का मन है।

आत्मा के कार्यों में से एक यह है कि वह परमेश्वर के भेदों को हम पर प्रगट करता है। पवित्र शास्त्र में भेद उस सत्य का उल्लेख करते हैं जो एक समय मनुष्य से छिपा था, मनुष्य की बुद्धि को ज्ञात नहीं था, परंतु अब उद्घाटित या प्रगट किया गया है। कुछ भेद ऐसे हैं जिनका सम्बंध मानवजाति के लिए, कलीसिया आदि के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों से है, परंतु कुछ भेद ऐसे हैं जिनका सम्बंध हमारे लिए व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर के उद्देश्यों से है। हम में से प्रत्येक

के लिए परमेश्वर ने समय से पहले भले कामों को तैयार किया है कि उनमें चलें (इफिसियों 2:10)। हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि हम व्यक्तिगत तौर पर हमारे लिए परमेश्वर की योजनाओं ओर उद्देश्यों की तलाश करें और उसके बाद परमेश्वर से सामर्थ पाकर उनकी परिपूर्णता का प्रयास करें। दिलचस्प सच्चाई यह है कि जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते और बोलते हैं, तब हम पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर भेद की बातें कहते हैं (1 कुरिन्थियों 14:2)। इसलिए, यह अर्थ लगाना सुरक्षित है कि अन्य अन्य भाषा में बोलना हमें ऐसे स्थान में लाकर रखता है जहां पर हम हमारे अपने जीवनों से सम्बंधित बातों के लिए परमेश्वर के भेदों को कहते हैं। जब हम आत्मा में प्रार्थना करते हैं तब हमारा आत्मिक मनुष्य पवित्र आत्मा की ओर से परमेश्वर के उद्देश्यों की समझ पाता है। जब हम अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं, तब हम उन बातों को समझने लगते हैं जो हमें परमेश्वर के द्वारा विनामूल्य दी गई हैं, जिनकी योजना परमेश्वर द्वारा हमारे जीवनों के लिए की गई है और ठहराई गई है। अतः, व्यक्तिगत जीवन और परमेश्वर के साथ संगति में अन्य अन्य भाषाओं का यह सामर्थी उपयोग है।

सार्वजनिक सेवकाई में उपयोग करने हेतु अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग प्राप्त करना

पवित्र आत्मा कलीसिया की सभाओं में या अविश्वासी को चिन्ह के रूप में अन्य अन्य भाषाओं के उपयोग को निर्देशित करता है।

कलीसिया की सभाओं में

सभाओं में अन्य अन्य भाषाओं के उचित उपयोग पर बाइबल के निर्देशों का अनुसरण करें।

1 कुरिन्थियों 14:5,12,13

5 मैं चाहता हूं कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परंतु अधिकतर यह चाहता हूं कि भविष्यद्वाणी करो। क्योंकि यदि अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे, तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है।

12 इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।

13 इस कारण जो अन्य भाषा बोले, तो वह प्रार्थना करे कि उसका अनुवाद भी कर सके।

जो मण्डली के साथ अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते हैं उन्हें अर्थ बताने के लिए प्रार्थना करना चाहिए। अर्थ बताना उसी व्यक्ति के द्वारा हो जिसने अन्य अन्य भाषा में संदेश दिया या किसी और के द्वारा।

1 कुरिन्थियों 14:18–19

18 मैं अपने परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि मैं तुम सब से अधिक अन्यान्य भाषा में बोलता हूं।

19 परंतु कलीसिया में अन्य भाषा में दस हजार बातें कहने से यह मुझे और भी अच्छा जान पड़ता है, कि औरों के सिखाने के लिए बुद्धि से पांच ही बातें कहूं।

व्यक्तिगत प्रार्थना में अन्य अन्य भाषा में बहुत प्रार्थना करें। परंतु मण्डली के साथ बोलते समय वही बोलें जो प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है।

1 कुरिन्थियों 14:23–28

23 इसलिए यदि कलीसिया एक जगह इकट्ठी हो, और सब के सब अन्यान्य भाषा बोलें, और अनपढ़े या अविश्वासी लोग भीतर आ जाएं, तो क्या वे तुम्हें पागल न कहेंगे?

24 परंतु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे।
25 और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।
26 इसलिए हे भाइयो, क्या करना चाहिए? जब तुम इकट्ठे होते हो, तो हर एक के हृदय में भजन, या उपदेश, या अन्य भाषा, या प्रकाश, या अन्य भाषा का अर्थ बताना रहता है; सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए।
27 यदि अन्य भाषा में बातें करनी हो, तो दो दो, या बहुत हो तो तीन तीन जन बारी बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे।
28 परंतु यदि अनुवाद करनेवाला न हो, तो अन्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया में शान्त रहे, और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे।

जब कलीसिया मण्डली के रूप में इकट्ठा होती है और वहां पर अविश्वासी/अज्ञान लोग होते हैं, तो बेहतर है कि हर कोई एक ही समय में ऊंची आवाज़ में अन्य अन्य भाषाओं में न बोले (वचन 23)। उत्तम यह होगा कि ऐसे परिवेश में दो या तीन सार्वजनिक संदेश दिए जाएं और कोई उसका अर्थ बताए (वचन 27)। परंतु, ऐसे परिवेश में व्यक्तिगत विश्वासी शांति के साथ अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं (वचन 28)।

अविश्वासी के लिए चिन्ह के रूप में

1 कुरिन्थियों 14:22
इसलिए अन्यान्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं, परंतु अविश्वासियों के लिए चिन्ह हैं, और भविष्यद्वाणी अविश्वासियों के लिए नहीं, परंतु विश्वासियों के लिए चिन्ह है।

पवित्र आत्मा अविश्वासी को चिन्ह के रूप में अन्य अन्य भाषाओं का उपयोग करने की प्रेरणा दे सकता है। पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर अन्य अन्य भाषाओं में बोलने वाला व्यक्ति ऐसी भाषा में बोल सकता है

जिसे उद्धार न पाया हुआ व्यक्ति समझता और प्रभु की ओर से संदेश देता है जो यीशु मसीह की ओर संकेत करता है। पिन्तेकुस्त के दिन जो कुछ हुआ वह इस बात का उदाहरण था।

नाना प्रकार की भाषाओं का वरदान सरल, परंतु आत्मा का अद्‌भुत वरदान है और सभी विश्वासियों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए कि वे अपने जीवनों में इसका उपयोग करें।

1 कुरिन्थियों 14:39–40
39 इसलिए हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो।
40 पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।

8

भाषाओं का अर्थ बताना

अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ बताने का वरदान अन्य अन्य भाषाओं में दिए गए संदेश की व्याख्या करना (अर्थ बताना) है। अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ बताने का उपयोग व्यक्तिगत प्रार्थना जीवन में किया जा सकता है, परंतु विशेष तौर पर इसका उपयोग मण्डली को अन्य अन्य भाषाओं में दिए गए संदेश का अर्थ बताने के लिए किया जाता है। परंतु, यह सम्भव है कि इसी अलौकिक वरदान का उपयोग पवित्र आत्मा द्वारा व्यक्ति को उस कही गई भाषा का अर्थ समझने में सहायता करने हेतु किया जाता है जो उस व्यक्ति ने उस समय सीखी न हो।

आत्मा का यह वरदान एक अलौकिक कार्य है और इस कारण सीखी हुई भाषा के प्राप्त कौशल्य के समान नहीं है (उदाहरण, भाषाविद् के रूप में)।

कृपया ध्यान रखें कि यह अर्थ बताना है और अनुवाद नहीं। जब आप अर्थ बताते हैं, तब आप प्रत्येक शब्द का अनुवाद नहीं करते, परंतु उस अर्थ का सारांश बताते या जो कुछ कहा गया है उसका सार प्रस्तुत करते हैं। इसलिए यह सम्भव है कि अन्य अन्य भाषाओं में दिए गए संदेश की अवधि और संदेश के अर्थ की अवधि आपस में मेल न रखती हो। भयभीत न हों या इसके आधार पर अर्थ बताने के वरदान को न परखें।

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

पुराने नियम में अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ बताने की अनेक अभिव्यक्तियां नहीं हैं, परंतु दानिय्येल 5:1–29 में हमारे पास उस घटना का वर्णन है, जो बेलशस्सर नामक उस समय के कस्दी राजा के दरबार में घटित

हुई। उसने एक हाथ को दीवार पर लिखते हुए देखा। उसके दरबार के बुद्धिमान लोग और ज्योतिषी उस लिखाण को पढ़ न सके और न उसका अर्थ बता सके। परंतु दानिय्येल ने उस लेख को पढ़ लिया और उसका अर्थ बताया।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

नए नियम में, हम अन्य अन्य भाषाओं के अर्थ के विषय में पढ़ते हैं जिसे 1 कुरिन्थियों 12:7–11 में आत्मा के नौ वरदानों में सूचीबद्ध किया गया है, और 1 कुरिन्थियों 14 में उसके उपयोग के विषय में मण्डली के परिवेश में पौलुस निर्देश देता है।

परिचालन या कार्य

व्यक्तिगत उपयोग के लिए अन्य अन्य भाषाएं और उनका अर्थ बताना

जैसा कि पिछले अध्याय में उल्लेख किया गया है, आपके व्यक्तिगत प्रार्थना समय में, अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करते समय हर एक बात का अर्थ बताना आवश्यक नहीं है। आप अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने में कई घण्टे बिता सकते हैं, और बिना अर्थ बताए, आत्मिक रूप से उन्नति और प्रोत्साहन पा सकते हैं। अन्य अन्य भाषाएं और उनका अर्थ बताना आपके व्यक्तिगत जीवन में सहायक हो सकता है ताकि आप जो प्रार्थना कर रहे हैं उसका अर्थ समझने में आपको सहायता मिल सके। आप जो प्रार्थना कर रहे हैं उसका अर्थ कहकर आप अर्थ प्राप्त कर सकते हैं, या मात्र आपकी आत्मा में उस अर्थ को ग्रहण कर सकते हैं, ताकि आप समझें कि परमेश्वर का आत्मा क्या कह रहा है।

अनेक क्षेत्र हैं जहां पर व्यक्तिगत उपयोग में अन्य अन्य भाषाएं और उनका अर्थ बताना लाभदायक हो सकता है :

अ) व्यक्तिगत मार्गदर्शन और दिनशा–निर्देश के लिए, आपके व्यक्तिगत जीवन के लिए परमेश्वर की योजनाओं और उद्देश्यों को समझने के लिए।

ब) जिन बातों के लिए आप ज़िम्मेदार हैं उनमें निर्णय लेने हेतु (उदाहरण, कार्यस्थल, व्यवसाय, सेवकाई, आदि।)

क) परमेश्वर की बातों में प्रकाशन और अंतर्दृष्टि अर्थात वचन में, वर्तमान समय में पृथ्वी पर परमेश्वर के मार्गों में।

ड) परमेश्वर की ओर से रचनात्मक कल्पनाओं, ईश्वर प्रेरित पूर्वदृष्टि, कार्यनीतियों आदि को प्राप्त करने हेतु।

मण्डली की सेवा करते समय अन्य अन्य भाषाएं और उनका अर्थ बताना

इसे पहले ही पिछले अध्याय में समझाया गया है और यहां पर पूर्णता के लिए दोहराया गया है।

मण्डली के लिए अर्थ के साथ अन्य अन्य भाषाएं सभा में उन्नति ला सकती हैं (1 कुरिन्थियों 14:5) और वही लाभ प्रदान कर सकती हैं जो भविष्यद्वाणी प्रदान करती है जिसके द्वारा उन्नति, प्रोत्साहन और सांत्वना प्राप्त होती है (1 कुरिन्थियों 14:3)।

मंडली के साथ अन्य अन्य भाषाओं में बोलने वालों को उसके अर्थ के लिए प्रार्थना करना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:5,12–13)।

व्यक्तिगत प्रार्थना में अन्य अन्य भाषाओं में बहुत प्रार्थना करें। परंतु जब मण्डली से बात करने की बारी आती है, तब वही बोलें जो प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है (1 कुरिन्थियों 14:18–19)।

जब कलीसिया मण्डली के रूप में इकट्ठा होती है और वहां पर अविश्वासी/अज्ञान लोग होते हैं, तो बेहतर है कि हर कोई एक ही समय में ऊंची आवाज़ में अन्य अन्य भाषाओं में न बोले (1 कुरिन्थियों 14:23)। उत्तम यह होगा कि ऐसे परिवेश में दो या तीन सार्वजनिक संदेश दिए जाएं और कोई उसका अर्थ बताए ((1 कुरिन्थियों 14:27)। परंतु, ऐसे परिवेश में व्यक्तिगत विश्वासी शांति के साथ अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना कर सकते हैं ((1 कुरिन्थियों 14:28)।

अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ कैसे प्राप्त होता है

अन्य अन्य भाषाओं का अर्थ प्राप्त करना बिल्कुल वैसा ही होता है जैसे प्रकटीकरण के अन्य वरदान या भविष्यद्वाणियों के वरदान को ग्रहण किया जाता है। अन्य अन्य भाषाओं `पर आप उस पहले शब्द/विचार/कल्पना को बोलने से आरम्भ करते हैं जिसे पवित्र आत्मा प्रेरित करता है और और उसके बाद बाकी शब्द या विचार आते हैं। इसके विषय में अगले अध्याय में स्पष्ट किया गया है।

9

भविष्यद्वाणी (Word of Wisdom)

परिभाषा

भविष्यद्वाणी के द्वारा परमेश्वर मनुष्य से मनुष्य के द्वारा बातें करता है। यह परमेश्वर की ओर से अलौकिक रीति से प्रेरित संदेश होता है जो व्यक्ति प्राप्त करता है और या तो दूसरे व्यक्ति को अथवा लोगों के समूह को बताता है।

भविष्यद्वाणी उत्तम प्रचार नहीं है। उत्तम प्रचार अध्ययन, तैयारी, कौशल तथा उत्तम भाषण से किया जा सकता है। भविष्यद्वाणी पवित्र आत्मा की ओर से अलौकिक रीति से प्रेरित होती और तैयारी या उत्तम वक्तृत्व कला पर निर्भर नहीं होती।

1 कुरिन्थियों 14:3
परंतु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है।

भविष्यद्वाणी का साधारण वरदान **उन्नति** (वृद्धि), **उपदेश** (प्रोत्साहन) और **शान्ति वा सांत्वना** के लिए होता है। इसके अतिरिक्त, भविष्यद्वाणी की परिपक्व और सुसंगत सेवकाई में सेवारत व्यक्ति **सुधार, निर्देशन, प्रकाशन** और **भविष्यद्वाणी** (पूर्वकथन) में आगे बढ़ेगा।

समग्र पवित्र शास्त्र भविष्यद्वाणी है, क्योंकि वह परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया (रोमियों 16:26; 2 तीमुथियुस 3:16; 2 पतरस 1:16–21)। पवित्र शास्त्र हमें आधार प्रदान करता है जिसके द्वारा हम अन्य सभी भविष्यद्वाणियों को परखते हैं।

2 पतरस 1:20–21

20 परंतु पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती।
21 क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, परंतु भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।

भविष्यद्वाणी के वरदान का उपयोग करते समय, जैसे पवित्र आत्मा प्रेरित करता है वैसे वैसे हम बोलते हैं। इसलिए कोई भी सच्ची भविष्यद्वाणी पवित्र शास्त्र का खंडन नहीं करेगी। पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र का लेखक है (2 तीमुथियुस 3:16) और इस कारण जो कुछ उसने अपने लिखित वचन में पहले ही दृढ़ किया है, उसका वह कभी खंडन या विरोध नहीं करेगा। आत्मा और वचन परस्पर सहमत हैं (1 यूहन्ना 5:7)।

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

पुराने नियम में, परमेश्वर ने कई स्त्री और पुरुषों को भविष्यद्वाणी करने हेतु उभारा और उपयोग किया। इनमें हनोक, अब्राहम, मूसा, मरियम, मूसा के सहायकों, दबोरा आणि कई न्यायियों, शमुएल, एलिय्याह, एलीशा, और कई गुमनाम भविष्यद्वक्ताओं, यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, दानिय्येल और अन्य कइयों का समावेश है।

पुराने नियम के कई भविष्यद्वक्ताओं ने उस अनुग्रह के विषय में भविष्यद्वाणी की थी जो हमें प्राप्त होने वाला था (1 पतरस 1:10)।

पुराने नियम में केवल कुछ ही व्यक्तियों के द्वारा पवित्र आत्मा कार्य कर रहा था और इसलिए कुछ ही लोग भविष्यद्वाणी कर सकते थे। अतः जो लोग परमेश्वर से सुनना चाहते थे, वे भविष्यद्वक्ताओं या नबियों पर निर्भर थे। राजाओं को भी परमेश्वर से सुनने के लिए याजक या भविष्यद्वक्ता के पास जाना पड़ता था। परंतु नए नियम में सबकुछ

बदल गया है। नई वाचा में, प्रत्येक विश्वासी के पास परमेश्वर का आत्मा उनमें और उनके द्वारा कार्य करता है और इसलिए परमेश्वर की प्रत्येक संतान परमेश्वर के आत्मा से अगुवाई पा सकती है, परमेश्वर की ओर से सुन सकती है, आत्मा द्वारा ही व्यक्तिगत तौर पर उनके हृदयों में शिक्षा और प्रकाशन लाया जाता है।

स्मरण रहे कि पवित्र आत्मा नहीं बदला है। इसलिए भविष्यात्मक अनुभव, भविष्यद्वाणी के सामर्थ के प्रकाशन और भविष्यात्मक अभिव्यक्तियों को जिन्हें पुराने नियम के अंतर्गत देखा जाता था, आज भी अनुभव किया जा सकता है। वस्तुतः, हमें उन प्रकाशनों की और उससे अधिक बातों की अपेक्षा करना चाहिए, क्योंकि हम आत्मा की और महिमामय सेवकाई के साथ और महिमामय वाचा में हैं (2 कुरिन्थियों 3:5–11)।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

नए नियम में, प्रेरितों के काम के 2 रे अध्याय में कलीसिया के जन्म से पहले, हम स्त्री और पुरुषों के उदाहरण देखते हैं जिन्होंने भविष्यद्वाणी की।

1) अलीशिबा पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गई और उसने मरियम के विषय में भविष्यद्वाणी की (लूका 1:41)।

2) जकर्याह पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो गया और उसने अपने पुत्र यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले के विषय में भविष्यद्वाणी की (लूका 1:67–80)।

3) शिमोन ने बालक यीशु और मरियम के विषय में भविष्यद्वाणी की (लूका 2:25–35)।

4) हन्ना ने भी करीब उसी समय भविष्यद्वाणी की जब शिमोन ने की और *"उन सभों से, जो यरूशलेम के छुटकारे की बाट जोहते थे, उसके विषय में बातें करने लगी"* (लूका 2:36–38)।

5) यूहन्ना बपतिस्मा करने वाले को प्रभु यीशु द्वारा परमप्रधान परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता (लूका 1:76), पुरानी वाचा के भविष्यद्वक्ताओं में सर्वश्रेष्ठ कहा गया (लूका 7:26–28)। वह एलिय्याह की आत्मा और सामर्थ में आया, उसने पश्चाताप का संदेश सुनाया, परमेश्वर के राज्य की घोषणा की, मसीह के लिए मार्ग तैयार किया और परमेश्वर के मेम्ने यीशु की ओर संकेत किया।

6) स्वयं प्रभु यीशु मसीह वह भविष्यद्वक्ता या नबी था जिसके विषय में मूसा ने कहा था। लोग उसे *"यीशु नासरी"* के रूप में जानते थे *"जो परमेश्वर और सब लोगों के बीच काम और वचन में सामर्थी भविष्यद्वक्ता था"* (लूका 24:19)। भविष्यद्वक्ता के रूप में, प्रभु यीशु ने वही सुना जो पिता ने कहा, वह देखा जो पिता ने किया और पिता के अनुसार कार्य किया। उसने लोगों के विचार जान लिए। उसने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को प्रगट किया। उसने पवित्र आत्मा के आगमन के विषय में पूर्वकथन किया, प्रभु के दिन के आने से पहले अंत समय की घटनाओं की भविष्यद्वाणी की, पवित्र शास्त्र के वचनों को समझाया और बहुत कुछ किया। उसके स्वर्गारोहण के पश्चात, उसने अपनी कलीसिया को वरदान दिए जिनमें भविष्यद्वक्ता का पद शामिल था।

प्रारम्भिक कलीसिया

हम प्रारम्भिक कलीसिया में बहुत सारी भविष्यद्वक्ता की गतिविधि देखते हैं जिसके विषय में प्रेरितों के कामों की पुस्तक और पत्रियों में लिख गया है।

1) पिन्तेकुस्त के दिन ने परमेश्वर के कार्य के नए युग का आरम्भ किया जहां आत्मा सभी लोगों पर उण्डेला जाने वाला था और अन्य बातों के साथ ही साथ उन्हें भविष्यद्वाणी करने की सामर्थ देने वाला था। ***"कि परमेश्वर कहता है, कि अन्त के दिनों में ऐसा होगा, कि मैं अपना आत्मा सब मनुष्यों पर उंडेलूंगा और तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियां भविष्यद्वाणी***

***करेंगी और तुम्हारे जवान दर्शन देखेंगे, और तुम्हारे पुरनिए स्वप्न देखेंगे। वरन् मैं अपने दासों और अपनी दासियों पर भी उन दिनों में अपने आत्मा में से उंडेलूंगा, और वे भविष्यद्वाणी करेंगे"* (प्रेरितों के काम 2:17–18)**

2) 12 प्रेरित प्रेरितों की सेवकाई भी रखते थे और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई भी। उनमें से कुछ का उपयोग परमेश्वर ने, प्रेरित पौलुस के साथ कलीसिया को दृढ़ बनाने हेतु प्रकाशन लाने और पवित्र शास्त्र लिखने के लिए किया। *"और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नेव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है, बनाए गए हो"* (इफिसियों 2:20)। *"जो और अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है"* (इफिसियों 3:5)।

3) यरूशलेम की कलीसिया ने, 12 प्रेरितों/भविष्यद्वक्ताओं के अलावा अन्य भविष्यद्वक्ताओं को उठते और उन्नति पाते देखा। अगबुस, यहूदा, सिलास यरूशलेम के इन भविष्यद्वक्ताओं में से थे। हमारे पास इस विषय में लिखा हुआ है : *"उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा"* (प्रेरितों के काम 11:27–28; अगबुस ने बाद में पौलुस के लिए भविष्यद्वाणी की। देखें प्रेरितों के काम 21:10)। यहूदा और सिलास जो यरूशलेम की कलीसिया का हिस्सा थे, उन्हें भविष्यद्वक्ता के रूप में माने गए थे :*"और यहूदा और सीलास ने जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे, बहुत बातों से भाइयों को उपदेश देकर स्थिर किया"* (प्रेरितों के काम 15:32)।

4) अन्ताकिया की कलीसिया में भी भविष्यद्वक्ता थे जो वहां के अगुवों के दल का भाग थे।*"अन्ताकिया की कलीसिया में कितने भविष्यद्वक्ता और उपदेशक थे, अर्थात् बरनबास और शमौन जो*

नीगर कहलाता है, और लूकियुस कुरेनी, और देश की चौथाई के राजा हेरोदेस का दूधभाई मनाहेम और शाऊल" (प्रेरितों के काम 13:1)।

5) स्थानीय कलीसिया के विश्वासियों को प्रोत्साहन दिया जाता था कि वे भविष्यद्वाणी करें। कुरिन्थियों की कलीसिया को पौलुस द्वारा लिखी गई पत्री से यह समझा जा सकता है (1 कुरिन्थियों 12–14)। जब इफिसुस के विश्वासियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाया, तब वहां पर लिखा है कि उन्होंने भविष्यद्वाणी भी की।*"और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न–भिन्न भाषा बोलने और भविष्यद्वाणी करने लगे"* (प्रेरितों के काम 19:6)। यह मानना सुरक्षित होगा कि ऐसा कई स्थानों में हुआ होगा, भले ही उसके विषय में हमारे लिए लिखा नहीं गया है।

6) स्त्री और पुरुष दोनों प्रार्थना करते थे और भविष्यद्वाणी करते थे। हम यह कुरिन्थियों की कलीसिया में देखते हैं (1 कुरिन्थियों 11:4–5)। यदि महिलाओं का स्थानीय कलीसिया में भविष्यद्वाणी करना गलत था, तो पौलुस ने आरम्भ में ही उसकी अनुमति नहीं दी होती। यरूशलेम की कलीसिया का सुसमाचार प्रचारक फिलिप्पुस, जो कैसरिया में रहता था, उसकी चार कुवांरी बेटियां थीं जो भविष्यद्वाणी करती थी। *"उसकी चार कुंवारी पुत्रियां थी, जो भविष्यद्वाणी करती थीं"* (प्रेरितों के काम 21:9)।

7) मसीह की कलीसिया को दिए गए उसके वरदानों में भविष्यद्वक्ता का वरदान कलीसिया की उन्नति के लिए दिया गया था। इस वरदान को कलीसिया से हटाया नहीं गया है।*"उसने कितनों को प्रेरित नियुक्त करके, और कितनों को भविष्यद्वक्ता नियुक्त करके, और कितनों को सुसमाचार सुनाने वाले नियुक्त करके, और कितनों को रखवाले और उपदेशक नियुक्त करके दिया"* (इफिसियों 4:11, 1 कुरिन्थियों 12:28)। भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के लोगों को भविष्यद्वाणी करने हेतु सुसज्जित करते हैं।

8) स्वर्गदूतों का उपयोग भी परमेश्वर की ओर से संदेश लाने के लिए किया गया है। हम दोनों नियमों में इस बात को देखते हैं।

9) पवित्र आत्मा के भविष्यात्मक और अलौकिक कार्य जारी रहेंगे, भले ही महाक्लेश के दौरान वहां दो गवाह होंगे (पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता, सम्भवतः हनोक और एलिय्याह) जो भविष्यद्वाणी करेंगे और सामर्थी कार्य और अद्‌भुत चमत्कार करेंगे (प्रकाशितवाक्य 11:3–6)।

आज की कलीसिया

हम अंतिम दिनों में जी रहे हैं जब परमेश्वर सब प्राणियों पर, स्त्री और पुरुषों पर अपना आत्मा उण्डेल रहा है, सभी उम्र के लोग दर्शन, स्वप्न देखेंगे, और भविष्यद्वाणी करेंगे (प्रेरितों के काम 2:17–18)। आत्मा का भविष्यद्वाणी का कार्य कलीसिया के द्वारा अभिव्यक्त करना जारी है : (अ) भविष्यद्वाणी के वरदान के द्वारा जिसका उपयोग सभी विश्वास कर सकते हैं (1 कुरिन्थियों 12:7–11), (ब) सदस्यता कर्तव्यता के रूप में भविष्यद्वाणी करने वाले विश्वासी (रोमियों 12:6) और (क) भविष्यद्वक्ता का सेवा वरदान (इफिसियों 4:11)।

वर्तमान दिनों की कलीसिया भविष्यद्वक्ता की सभी अभिव्यक्तियों में चलेगी जो हम पवित्र शास्त्र में देखते हैं और उससे बढ़कर अभिव्यक्तियों में। पिछले दिनों की महिमा पहले के दिनों की महिमा से अधिक होगी।

इस अध्याय में, हम भविष्यद्वाणी के वरदान के प्रकटीकरण की मूल जानकारी प्रदान करते हैं। हम भविष्यद्वाणी के सभी पहलुओं पर विचार नहीं करेंगे। भविष्यद्वाणी और भविष्यद्वक्ता के अधिक विस्तृत अध्ययन के लिए, कृपया एपीसी प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक "न्दकमतेजंदकपदह जेम च्तवचीमजपब" पढ़ें जो विनामूल्य डाऊनलोड के लिए इस पते पर उपलब्ध है : apcwo.org/publications

परिचालन

सभी विश्वासी जो पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हैं (पवित्र आत्मा में बपतिस्मा पाए हुए हैं) भविष्यद्वाणी कर सकते हैं, वस्तुतः, हम सभों को भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहना चाहिए।

1 कुरिन्थियों 14:1,3,5,31,39

1 प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

3 परंतु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है।

5 मैं चाहता हूं कि तुम सब अन्य भाषाओं में बातें करो, परंतु अधिकतर यह चाहता हूं कि भविष्यद्वाणी करो। क्योंकि यदि अन्यान्य भाषा बोलनेवाला कलीसिया की उन्नति के लिए अनुवाद न करे, तो भविष्यद्वाणी करनेवाला उससे बढ़कर है।

31 क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं।

39 इसलिए हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो।

1 कुरिन्थियों 14:1 के अनुसार, हम सभों को प्रेम का अनुसरण करना चाहिए। बाकी वचन भी हमें लागू होता है। हम सभों को आत्मिक वरदानो की इच्छा रखना है और विशेषकर भविष्यद्वाणी करने की। सभी विश्वासी भविष्यद्वाणी कर सकते हैं ताकि सभी सीख सकें और सभों को प्रोत्साहन प्राप्त हो सके (वचन 31)। प्रेरित पौलुस सभी विश्वासियों को यह प्रोत्साहन देकर कि वे भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहें, आत्मा के वरदानों पर अपनी शिक्षा समाप्त करता है (वचन 39)।

भविष्यद्वाणी का वरदान लोगों के जीवनों को आशीष देने और समृद्ध बनाने हेतु ईश्वर प्रेरित वचन देता है और उन्हें बल, प्रोत्साहन, और शांति अर्थात सांत्वना प्रदान करता है। अक्सर यह वरदान "गिफ्ट

पैक" अर्थात उपहार के पुलिंदे के साथ अन्य वरदानों के साथ प्रगट होगा (उदाहरण, ज्ञान के वचन, बुद्धि के वचन के साथ आदि)।

हमें भविष्यद्वाणियों को तुच्छ नहीं समझना है। हम सभी बातों को परखते हैं और जो अच्छा है उसे थामे रहते हैं। *"आत्मा को न बुझाओ। भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो। सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रहो"* (1 थिस्सलुनीकियों 5:19–21)।

भविष्यद्वाणी को सदस्यता वरदानों के रूप में भी सूचीबद्ध किया गया है। यह भविष्यद्वाणी का वरदान होगा जो मसीह की देह में विश्वासी के कार्य के साथ होता है। हम यहां पर यह भी सीखते हैं कि हम हमारे विश्वास के अनुपात में भविष्यद्वाणी करते हैं। *"और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे"* (रोमियों 12:6)।

यहां पर भविष्यद्वाणी के वरदानों के कुछ उपयोगों पर एक संक्षिप्त सूची दी गई है :

1) यीशु क्या कह रहा है यह प्रगट करने हेतु और उसकी ओर संकेत करने हेतु, अर्थात उसे ओर उसके विषय में गवाही देने के लिए। यीशु की गवाही – यीशु जो कहता है और करता है, वह सत्य जो यीशु प्रगट करता है, और वह सत्य जो उसकी ओर संकेत करता है – सारी भविष्यद्वाणी की प्रेरणा है। *"और मैं उसको दण्डवत करने के लिए उसके पांवों पर गिरा। उसने मुझ से कहा, "देख, ऐसा मत कर, मैं तेरा और तेरे भाइयों का संगी दास हूं, जो यीशु की गवाही देने पर स्थिर हैं; परमेश्वर ही को दण्डवत कर; क्योंकि यीशु की गवाही भविष्यद्वाणी की आत्मा है"* (प्रकाशितवाक्य 19:10)। "गवाही" शब्द के लिए ग्रीक भाषा में प्रयुक्त शब्द "उंतजनतपं" गवाह द्वारा प्रस्तुत किया गया प्रमाण या

सबूत, प्रतिवेदन, सत्य है। प्रकाशितवाक्य 1:2 और 9 के अनुसार "यीशु की गवाही" उसे दी गई गवाही है।

2) बल, प्रोत्साहन और शांति अर्थात सांत्वना के लिए। *"परंतु जो भविष्यद्वाणी करता है, वह मनुष्यों से उन्नति, और उपदेश, और शान्ति की बातें कहता है"* (1 कुरिन्थियों 14:3)। हम भविष्यद्वाणी के द्वारा लोगों की और कलीसिया की उन्नति करते हैं (1 कुरिन्थियों 14:4–6)।

3) किसी को विशिष्ट क्षेत्र में कार्य करने हेतु प्रेरित करने के लिए। *"जब वे उपवास के साथ प्रभु की उपासना कर रहे थे, तो पवित्र आत्मा ने कहा, "मेरे निमित्त बरनबास और शाऊल को उस काम के लिए अलग करो, जिसके लिए मैंने उन्हें बुलाया"* (प्रेरितों के काम 13:2)।

4) उस क्षमता को प्रगट करने हेतु जो परमेश्वर ने व्यक्ति में रखी है। *"वह उसे यीशु के पास लाया। यीशु ने उस पर दृष्टि करके कहा, "तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है, तू केफा (जिसका अनुवाद है, पत्थर) अर्थात् पतरस कहलाएगा।"* (यूहन्ना 1:42)।

5) परमेश्वर व्यक्ति के साथ जो बोल रहा है उसकी पुष्टि के लिए।

6) विशिष्ट बात या व्यक्ति के लिए प्रार्थना की प्रेरणा देने हेतु।

7) क्या करना चाहिए इस विषय में मार्गदर्शन और निर्देशन देने के लिए। *"पतरस तो उस दर्शन पर सोच ही रहा था कि आत्मा ने उससे कहा, "देख, तीन मनुष्य तेरी खोज में हैं। इसलिए उठकर नीचे जा, और बेखटके उनके साथ हो ले; क्योंकि मैं ही ने उन्हें भेजा है"* (प्रेरितों के काम 10:19–20)।

8) व्यक्ति या समुदाय में सुधार लाने के लिए।

9) पवित्र शास्त्र में अभिनव अंतर्दृष्टि प्रदान करने हेतु। *"तब उसने उनसे कहा, "हे निर्बुद्धियों, और भविष्यद्वक्ताओं की सब बातों पर विश्वास करने में मन्दमतियों! क्या अवश्य न था, कि मसीह ये*

दुख उठाकर अपनी महिमा में प्रवेश करे?" तब उसने मूसा से और सब भविष्यद्वक्ताओं से आरम्भ करके सारे पवित्र शास्त्रों में से, अपने विषय उन्होंने आपस में कहा, "जब वह मार्ग में हम से बातें करता था, और पवित्र शास्त्र का अर्थ हमें समझाता था, तो क्या हमारे मन में उत्तेजना न उत्पन्न हुई?" (लूका 24:25–27,32)।

"फिर उसने उनसे कहा, "ये मेरी वे बातें हैं जो मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमसे कही थीं, कि अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं और भजनों की पुस्तको में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों।" तब उसने पवित्र शास्त्र बूझने के लिए उनकी समझ खोल दी" (लूका 24:44–45)।

10) आने वाली घटनाओं (अवसर, खतरे आदि) के विषय में विश्वासियों को सचेत करने के लिए ताकि वे कदम बढ़ाने हेतु तत्पर हो जाएं। *"उन्हीं दिनों में कई भविष्यद्वक्ता यरूशलेम से अन्ताकिया में आए। उनमें से अगबुस नामक एक ने खड़े होकर आत्मा की प्रेरणा से यह बताया कि सारे जगत में बड़ा अकाल पड़ेगा और वह अकाल क्लौदियुस के समय में पड़ा। तब चेलों ने ठहराया कि हर एक अपनी अपनी पूंजी के अनुसार यहूदिया में रहनेवाले भाइयों की सेवा के लिए कुछ भेजे। और उन्होंने ऐसा ही किया; और बरनबास और शाऊल के हाथ प्राचीनों के पास कुछ भेज दिया"* (प्रेरितों के काम 11:27–30)।

11) आगे आने वाले खतरों की चेतावनी देने के लिए। *"और अब देखो, मैं आत्मा में बन्धा हुआ यरूशलेम को जाता हूं, और नहीं जानता, कि वहां मुझ पर क्या क्या बीतेगा? केवल यह कि पवित्र आत्मा हर नगर में गवाही दे देकर मुझ से कहता है, कि बन्धन और क्लेश तेरे लिए तैयार हैं"* (प्रेरितों के काम 20:22–23)। *"और चेलों को पाकर हम वहां सात दिन तक रहे। उन्होंने आत्मा के सिखाए पौलुस से कहा, कि यरूशलेम में पांव न रखना"* (प्रेरितों के काम 21:4)। *"जब हम वहां बहुत दिन रह चुके, तो अगबुस नामक एक भविष्यद्वक्ता यहूदिया से आया। उसने हमारे पास आकर पौलुस*

का पटका लिया, और अपने हाथ पांव बान्धकर कहा, "पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस मनुष्य का यह पटका है, उसको यरूशलेम में यहूदी इसी रीति से बान्धेंगे, और अन्यजातियों के हाथ में सौपेंगे" (प्रेरितों के काम 21:10–11)।

12) भेद या रहस्य प्रगट करने हेतु ताकि लोग परमेश्वर की ओर खींचे जाएं। *"परंतु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे। और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है"* (1 कुरिन्थियों 14:24–25)।

13) अच्छी लड़ाई लड़ने के लिए। *"हे पुत्र, तीमुथियुस, उन भविष्यद्वाणियों के अनुसार जो पहले तेरे विषय में की गई थी, मैं यह आज्ञा सौंपता हूं कि तू उनके अनुसार अच्छी लड़ाई को लड़ता रहे"* (1 तीमुथियुस 1:18)।

14) लोगों को उनकी सेवकाई में/उनके पदों पर नियुक्त करने हेतु और आत्मा की अगुवाई के अनुसार आत्मिक वरदान देने हेतु। *"उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह"* (1 तीमुथियुस 4:14)।

15) *बहुत से लोगों, और जातियों, और भाषाओं, और राजाओं"* के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों की घोषणा करने हेतु (प्रकाशितवाक्य 10:11)।

भविष्यद्वाणी कैसे प्राप्त की जाती है

पवित्र आत्मा हमारे आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग हमें भविष्यद्वाणी का वचन सुनाने के लिए कर सकता है। इसलिए पवित्र आत्मा हमारे आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा जो प्रगट करता है उसके साथ हमें समन्वय बनाए रखने की ज़रूरत है।

भविष्यद्वाणी में, परमेश्वर अक्सर संदेश देने के लिए कल्पनाचित्रों – दर्शन या दृश्य और प्रतीकों का उपयोग करता है। इसलिए जो वह दिखा रहा है उसे सही रीति से समझने और उसका अर्थ बताने की ज़रूरत है।

होशे 12:10
मैंने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कीं, और बार बार दर्शन देता रहा; और भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा दृष्टांत कहता आया हूं।

पवित्र आत्मा की ओर से भविष्यद्वाणी प्राप्त करने हेतु सहायता पाने के लिए हम एक सरल प्रार्थना करना–जानना–भविष्यद्वाणी करना वाली पद्धति बताते हैं। यह आरम्भ करने का एक सरल तरीका है। बाद में, ऐसा समय होगा जब पवित्र आत्मा आप पर मण्डराएगा, तब आप जानने–भविष्यद्वाणी करने की ओर बढ़ेंगे।

1. प्रार्थना करें

भविष्यद्वाणी करें। पवित्र आत्मा से भविष्यद्वाणी के वचन के लिए या आपके द्वारा भविष्यद्वाणी के प्रगटन के लिए बिनती करते हुए आरम्भ करें ताकि आप आत्मा की इच्छा के अनुसार, भविष्यद्वाणी का वचन दे सकें। उसके बाद जिस व्यक्ति या समूह की आप सेवा करने की इच्छा रखते हैं, उनके लिए प्रार्थना करना शुरू करें। आप आशीष की सामान्य प्रार्थना से आरम्भ कर सकते हैं।

2. जानें या समझें

जब आप प्रार्थना करते हैं, तब सुनें और समझें कि परमेश्वर का आत्मा क्या बताना चाहता है, और वह किसे बताना चाहता है। जैसा कि हमने पहले के अध्याय में देखा, पवित्र आत्मा आपकी आत्मा के द्वारा आपको बता सकता है। अपना संदेश आपको सुनाने के लिए वह एक या एक से अधिक तरीके अपना सकता है। एक शांत धीमा आंतरिक विचार या गवाही। जानकारी जो आपकी आत्मा में उमड़ पड़ती है। आपकी

अंतरात्मा में जानना। चित्र या तस्वीरें जो आपकी आत्मा में उभरकर आती हैं। एक शब्द, उसके बाद वाक्य, उसके बाद अनुच्छेद। भौतिक संवेदनाएं। पवित्र शास्त्र के वचनों, भागों को रेखांकित करना। नाम, संख्या आदि प्रगट करना।

3. भविष्यद्वाणी

पहचानें कि क्या पवित्र आत्मा आपसे बातें कर रहा है। यदि वह बोल रहा है, तो वह संदेश बताएं। पहला जो शब्द आपको प्राप्त होता है उसके साथ कदम बढ़ाएं और जब आप उस शब्द को कहते हैं, तो सम्भवतः आपको पवित्र आत्मा की ओर से और शब्द तथा और जानकारी मिलती जाएगी। यदि आपको पवित्र आत्मा की ओर से कोई विशिष्ट संदेश नहीं मिलता, तो ठीक है। केवल प्रार्थना करें और उस व्यक्ति को आशीष दें।

भविष्यद्वाणी के वचन बोलने से पहले जो कुछ आप प्राप्त कर रहे हैं उसे प्रमाणित करने हेतु जल्दी से जांच करें

जब आपको दूसरों को (व्यक्ति या सभा को) बताने के लिए संदेश प्राप्त होता है, तो उस संदेश को बताने से पहले जो कुछ प्राप्त कर रहे हैं उसे प्रमाणित करने हेतु जल्दी से उसकी आप जांच कर सकते हैं। जो कुछ आप समझ रहे हैं उसकी जांच करने के कुछ तरीके यहां दिए गए हैं :

1. जो कुछ आप प्राप्त कर रहे हैं क्या वह परमेश्वर के लिखित वचन से समन्वय रखता है?

पवित्र आत्मा पवित्र शास्त्र का लेखक है (2 तीमुथियुस 3:16) और जो कुछ उसने पहले से अपने लिखित वचन में स्थापित किया है, उसका वह कभी खण्डन नहीं करेगा। आत्मा और वचन आपस में सहमत होते हैं। *"और जो गवाही देता है, वह आत्मा है; क्योंकि आत्मा सत्य है"* (1 यूहन्ना 5:7)। उदाहरण के तौर पर, जो 'गवाही' उस विश्वासी को जो

विवाहित है, अपने वैवाहिक जीवन के प्रति विश्वासयोग्य पत्नी को तलाक देने की आज्ञा देता है, परमेश्वर के वचन का खण्डन है। और इसलिए ऐसी भविष्यद्वाणी नहीं दी जानी चाहिए।

2. क्या मैं इसे प्राप्त करते समय परमेश्वर की उपस्थिति, अभिषेक, और प्रेरणा को महसूस करता हूं?

क्या आप व्यक्तिगत तौर पर परमेश्वर की उपस्थिति, उसके अभिषेक और प्रेरणा का एहसास रखते हैं? क्या आपकी आत्मा में शांति और आश्वासन है? यदि "है" तो आप भविष्यद्वाणी के वचन बोलने के लिए आगे बढ़ सकते हैं। दूसरी ओर, यदि आपको रोका जाता है या आपकी आत्मा में आपको उस बात के विषय में सचेत किया जाता है जिसकी ओर पवित्र आत्मा आपका ध्यान आकर्षित कर रहा है तो रुक जाएं। अपने आपको रोककर रखें। उस संदेश को न दें।

3. क्या वह बल, प्रोत्साहन और शांति देता है?

जैसा कि हमने 1 कुरिन्थियों 14:3 में देखा कि भविष्यद्वाणी उस व्यक्ति या व्यक्तियों या समूह को जिन्हें संदेश दिया जाएगा, बल, प्रोत्साहन और शांति या सांत्वना देती है। भले ही वहां चेतावनी, सुधार, दिशा निर्देश या भविष्यद्वाणी हो, वह हमेशा आशा, धार्मिकता, शांति और आनंद प्राप्त करने हेतु मार्ग दिखाएगी। *"क्योंकि परमेश्वर का राज्य खानापीना नहीं; परंतु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है,"* (रोमियों 14:17)।

4. क्या मेरा आत्मा शुद्ध है, पक्षपात और पूर्वाग्रह से मुक्त है?

कभी–कभी जब बहुत सारी भावनाएं शामिल होती हैं, पक्षपात, पूर्वाग्रह या अन्य भावनाएं शामिल होती हैं तब आपको बहुत सावधान रहने की ज़रूरत है, जो कुछ आप समझ रहे हैं उन पर इन भावनाओं का प्रभाव न पड़ने दें। उदाहरण के तौर पर, यदि आपके मन में उन लोगों के प्रति पूर्वाग्रह है जो चित्र विचित्र केशभूषा रखते हैं, नाक, कान छिदाते हैं, गोदना गुदाते हैं, तो आप उन लोगों को कठोर शब्दों में डांटना चाहेंगे,

चाहेंगे कि वे पश्चाताप करें। परंतु हो सकता है कि पवित्र आत्मा उस व्यक्ति को यह कहने की इच्छा नहीं रखता। इसलिए आपको वास्तव में अपनी आत्मा को शुद्ध रखना है और आपकी प्राणिक पूर्वाधारणाओं के प्रभावों से मुक्त रखना है, ताकि पवित्र आत्मा जो कुछ कह रहा है उसे आप स्पष्ट रूप से समझ सकें। यदि आपको लगता है कि आप अपने ही पूर्वाग्रह और पक्षापात की भावना से अभिभूत हो रहे हैं, तो प्रार्थना करें, पवित्र आत्मा से बिनती करें कि इन बातों को हटाकर रखने में वह आपकी सहायता करे और आप स्पष्ट रूप से समझ सकें कि वह उस व्यक्ति के लिए क्या चाहता है।

भविष्यद्वाणी कैसे प्रस्तुत करें

लोगों के सामने भविष्यद्वाणी प्रस्तुत करते समय, निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखें :

1) भविष्यद्वाणी को व्यक्त करने के कई तरीके हैं। आप उसे बोल सकते हैं, उसे लेकर प्रार्थना कर सकते हैं, उसे गा सकते हैं, उसे कर सकते हैं, उसे लिख सकते हैं, उसका चित्र बना सकते हैं, उसे रंग सकते हैं, उसके अनुसार जी सकते हैं। उस पद्धति का चयन करें जिसके विषय में आपको लगता है कि पवित्र आत्मा आपकी अगुवाई कर रहा है या जो आप देख रहे हैं, वह उस अवसर के लिए उत्तम है।

2) उस संदेश को सुनाने हेतु जिन शब्दों को आप चुनेंगे, आपकी आवाज़ का स्वर और जब आप संदेश प्रस्तुत करते हैं, वह सबकुछ आपके नियंत्रण में है। *"क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं। और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है"* (1 कुरिन्थियों 14:31–32)।

3) वह समय, जब आप भविष्यद्वाणी प्रस्तुत करते हैं आपके नियंत्रण में है। प्रकटीकरण का प्रस्तुतीकरण प्रकटीकरण के समान ही

महत्वपूर्ण है। आत्मा के प्रति संवेदनशील बने रहें और जब वह आपको ऐसा करने हेतु प्रेरित करता है, तब कार्य करें।

4) दूसरों को आपको परखने की या जांचने की अनुमति दें। सभी प्रकार की भविष्यद्वाणी को परखा जाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 14:29–30; 1 थिस्सलुनीकियों 5:20–21)। इसलिए हमेशा भविष्यद्वाणी प्राप्त करने वाले को प्रोत्साहन दें कि जो कुछ आपने उनसे कहा है, उसे वे परखें। दान देने वाला सिद्ध है और वरदान भी सिद्ध है – परंतु जिस पात्र या माध्यम के द्वारा वरदान दिया जाता है, वह सिद्ध नहीं है। इसलिए, उस संदेश में उस व्यक्ति के अपने विचार और कल्पनाएं होंगी। इसलिए, सभी भविष्यद्वाणियों को परखने की ज़रूरत है।

5) आपकी भविष्यद्वाणी के साथ "प्रभु यों कहता है" या "प्रभु कहता है" जैसे वाक्यांशों का प्रयोग करने की जल्दबाजी न करें। उसके बदले, बेहतर मात्र यह कहना होगा, "मुझे मेरी आत्मा में महसूस होता है..." या "मुझे लगता है कि प्रभु आपके लिए मेरे हृदय में यह डाल रहा है..." आदि... क्योंकि इससे भविष्यद्वाणी प्राप्त करने वाले को आप जो कह रहे हैं, उसे परखने का मौका मिलता है। प्रभु की ओर से प्राप्त सही शब्द का प्रभाव पड़ेगा।

6) याद रखें कि हम आंशिक रूप से जानते हैं और हम आंशिक रूप से भविष्यद्वाणी करते हैं (1 कुरिन्थियों 13:9)। कभी–कभी वह संक्षिप्त शब्द हो सकता है, और कभी–कभी आप बहुत कुछ प्राप्त करते हैं।

7) भविष्यद्वाणी अन्य वरदानों के साथ प्रगट हो सकती है। इसलिए अन्य वरदानों के साथ आगे बढ़ें जो परमेश्वर का आत्मा भविष्यद्वाणी के वचन के साथ प्रगट करना चाहता है।

8) स्पष्ट शब्दों और सरल भाषा में बताएं ताकि जो कुछ कहा जा रहा है उसे व्यक्ति या लोग समझ सकें। *"इसी प्रकार यदि निर्जीव वस्तुएं भी, जिनसे ध्वनि निकलती है जैसे बांसुरी, या बीन, यदि*

उनके स्वरों में भेद न हो तो जो फूंका या बजाया जाता है, वह कैसे पहचाना जाएगा? और यदि तुरही का शब्द साफ न हो, तो कौन लड़ाई के लिए तैयारी करेगा?" (1 कुरिन्थियों 14:7–8)।

9) भविष्यद्वाणी सम्बोधित की जा सकती है :

- लोगों को
- छोटे समूह को
- बड़ी कलीसियाई सभा को
- भविष्यद्वक्ताओं के समूह के द्वारा – लोगों के लिए भविष्यद्वाणी की सेवकाई करने वाले भविष्यद्वक्ता सेवकों की टीम (1 तीमुथियुस 4:14)

छोटे समूह में भविष्यद्वाणी के वरदानों का प्रयोग करने हेतु निर्देश

1) उन्नति के लिए वरदानों का उपयोग करें, लोगों को लज्जित करने के लिए, या उनका नाश करने के लिए या उन पर दोष लगाने के लिए नहीं (1 कुरिन्थियों 14:3,5,12,16,17)।

2) प्रत्येक को सहभाग लेने दें।*"क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं"* (1 कुरिन्थियों 14:31)।

3) आपके छोटे समूह के अगुवे की ओर से प्राप्त निर्देशों और उचित क्रम का पालन करें। एक समय में दो या तीन लोग सेवा करें और दूसरे उनका पूरा होने तक इंतज़ार करें और उसके बाद दूसरे या दो या तीन सेवा करें।

1 कुरिन्थियों 14:29–33,39–40

29 भविष्यद्वक्ताओं में से दो या तीन बोलें, और शेष लोग उनके वचन को परखें।

30 परंतु यदि दूसरे के पास जो बैठा है, कुछ ईश्वरीय प्रकाश हो, तो पहला चुप हो जाए।

31 क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाणी कर सकते हो, ताकि सब सीखें, और सब शान्ति पाएं।
32 और भविष्यद्वक्ताओं की आत्मा भविष्यद्वक्ताओं के वश में है।
33 क्योंकि परमेश्वर गड़बडी का नहीं, परंतु शान्ति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है।
39 इसलिए हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो।
40 पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।

4) दूसरों को अनुमति दें कि वे आपको परखें और आपमें सुधार लाएं। उसी तरह, यदि कोई गलती करता है, तो उसे प्रेम से सुधारें (1 थिस्सलुनीकियों 5:19–21)।

आप उद्धार न पाए हुए व्यक्ति (अविश्वासी) की भी भविष्यद्वाणी के द्वारा सेवा कर सकते हैं

1 कुरिन्थियों 14:24–25
24 परंतु यदि सब भविष्यद्वाणी करने लगें, और कोई अविश्वासी या अनपढ़ा मनुष्य भीतर आ जाए, तो सब उसे दोषी ठहरा देंगे और परख लेंगे।
25 और उसके मन के भेद प्रगट हो जाएंगे, और तब वह मुंह के बल गिरकर परमेश्वर को दण्डवत करेगा, और मान लेगा कि सचमुच परमेश्वर तुम्हारे बीच में है।

जैसा कि पिछले अध्याय में बताया गया है, आत्मा के वरदानों का उपयोग किसी को भी सेवा प्रदान करने के लिए किया जा सकता है, जिसमें वे लोग भी शामिल हैं जो उद्धार पाए हुए नहीं हैं। आत्मा के वरदान कहीं भी प्रगट किए जा सकते हैं, मात्र कलीसिया की आराधना सभा में नहीं। आप उसे सड़कों पर भी ले जा सकते हैं! हम आत्मा के वरदानों के साथ लोगों को सुसमाचार सुना सकते हैं और उनके मध्य सेवकाई कर सकते हैं। भविष्यद्वाणी लोगों के हृदयों को स्पर्श कर सकती है, उन्हें जानने दें कि परमेश्वर उन्हें पहचानता है और उनकी

परवाह करता है, और यह बात उन्हें मसीह में विश्वास करने हेतु प्रेरित कर सकती है (भविष्यद्वाणी के वरदान के साथ सुसमाचार प्रचार)।

'ज्योतिषी' बनने का प्रयास न करें

लोग ज्योतिषियों के पास इसलिए जाते हैं ताकि वे जो सुनना चाहते हैं, सुन सकें। दूसरे विश्वासियों को ज्योतिषी के रूप में आपका उपयोग करने की अनुमति न दें (भविष्यद्वाणी का वरदान या आपके द्वारा कार्य करने वाले प्रकटीकरण के कोई भी वरदान)

जादूटोना न करें

जादूटोना मुख्य रूप से आत्मिक सामर्थ या आत्मिक अधिकार का उपयोग कर लोगों को नियंत्रित करने का, उनके साथ चालाकी करने का प्रयास करना है। इसीलिए हम सारी भविष्यद्वाणी और अन्य प्रकटीकरण के वरदानों के अन्य वरदानों को पाने वालों के सामने रखते हैं कि वे उन्हें जांचें, परखें और यदि उन्हें ग्रहण करने हेतु अपने आपको स्वतंत्र महसूस करते हैं, तो उन्हें ग्रहण करें। भविष्यद्वाणी के वचनों के द्वारा लोगों को नियंत्रित करने और उनके साथ चालाकी करने की कोशिश न करें।

10

बुद्धि का वचन (Word of Wisdom)

बुद्धि के वचन का वरदान परमेश्वर की ईश्वरीय और असीम बुद्धि का एक अंश है जो अलौकिक रूप से विश्वासी को दिया जाता है जो परमेश्वर के मन, उद्देश्य और इच्छा को प्रगट करता है। बुद्धि के वचन का उपयोग इन बातों के लिए किया जाता है

- समस्या सुलझाने हेतु
- क्या कदम उठाना है यह जानने हेतु,
- भविष्य में क्या होने वाला है यह जानने हेतु,
- किसी अवधारणा या कल्पना की रचनात्मक, कलात्मक, वैज्ञानिक, बौद्धिक अभिव्यक्ति को प्रगट करने हेतु
- और बहुत कुछ।

शब्द या वचन वाक्य का भाग होता है। इसे बुद्धि के वचन का वरदान कहा जाता है और इसलिए वह परमेश्वर की असीम बुद्धि का एक छोटा–सा अंश है जो हमें अलौकिक रीति से दिया जाता है ताकि निकट परिस्थिति को सम्बोधित करे।

बुद्धि के वचन का वरदान प्राप्त बुद्धि से भिन्न होता है जो अनुभव और शिक्षा से हासिल किया जाता है। प्राप्त बुद्धि महत्वपूर्ण है और हमें प्रोत्साहन दिया गया है कि हम भक्तिमान लोगों से बुद्धि या परामर्श प्राप्त करें (नीतिवचन 11:14; 15:22; 19:20; 20:18)। परंतु बुद्धि के वचन का वरदान अलौकिक रीति से पवित्र आत्मा द्वारा दिया जाता है और किसी भी विश्वासी के द्वारा प्रगट किया जा सकता है फिर उसके पास अनुभव या शिक्षा हो या न हो।

नीचे बाइबल से कुछ उदाहरण दिए गए हैं।

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

यूसुफ – स्वप्नों का अर्थ बताना और उपाय प्रदान करना

पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण होकर, यूसुफ फिरौन का स्वप्न बता पाया और उसके बाद क्या करना है इस विषय में वह उपाय भी बता पाया (उत्पत्ति 40:1–23; उत्पत्ति 41:1–38)।

बसलेल – ईश्वरप्रेरित रचनात्मकता

पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण होकर, बसलेल मिलापवाले तम्बू के लिए जड़ने के लिए रत्न जवाहिरों का काम करने, लकड़ी के खोदने और उन सब प्रकार के कामों को करने हेतु रचनात्मक और कलात्मक कारीगरी के कार्य कर पाया (निर्गमन 31:1–5)।

दाऊद – ईश्वर प्रेरित शिल्पकारी

दाऊद एक चरवाहा, संगीत वादक, योद्धा था। उसके पास शिल्पकारी का कोई अनुभव नहीं था। परंतु पवित्र आत्मा से प्रेरित होकर, दाऊद ने मंदिर का नक्शा बनाया जिसका निर्माण सुलैमान करने वाला था (1 इतिहास 28:11–12,19)।

यहेजकेल – दर्शनों में भविष्य में स्थानांतरण

"फिर वह मुझ को उस फाटक के पास ले गया जो पूर्वमुखी था। तब इस्राएल के परमेश्वर का तेज पूर्व दिशा से आया; और उसकी वाणी बहुत से जल की घरघराहट सी हुई; और उसके तेज से पृथ्वी प्रकाशित हुई। और यह दर्शन उस दर्शन के तुल्य था, जो मैंने उसे नगर के नाश करने को आते समय देखा था; और उस दर्शन के समान, जो मैंने कबार नदी के तीर पर देखा था; और मैं मुंह के बल गिर पड़ा। तब यहोवा का तेज उस फाटक से होकर जो पूर्वमुखी था, भवन में आ गया। तब आत्मा ने मुझे उठाकर भीतरी आंगन में पहुंचाया; और यहोवा

का तेज भवन में भरा था। तब मैंने एक जन का शब्द सुना, जो भवन में से मुझ से बोल रहा था, और वह पुरुष मेरे पास खड़ा था। (यहेजकेल 43:1–6)।

दानिय्येल – स्वप्नों को प्रगट करना और उनका अर्थ बताना और आने वाली घटनाओं के विषय में भविष्यद्वाणी करना

नबुकद्नेस्सर ने जो स्वप्न देखा उसे दानिय्येल प्रगट कर पाया (ज्ञान के वचन का उदाहरण) और उसके बाद उसने उस स्वप्न का अर्थ बताया और आने वाली घटनाओं के विषय में बताया। उसने ऐसा अन्य अवसरों पर भी किया। दानिय्येल के पास एक स्वर्गदूत भी आया जो उसके लिए समझ ले आया और उसने उसे आनेवाली बातों के विषय में बताया (दानिय्येल 2:17–49; दानिय्येल 4:4–27; दानिय्येल 5; दानिय्येल 9:20–27; दानिय्येल 10–12)।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

मजूसी – स्वप्न में चेतावनी पाई कि वे वापस हेरोदेस के पास न जाएं

"और स्वप्न में यह चेतावनी पाकर कि हेरोदेस के पास फिर न जाना, वे दूसरे मार्ग से होकर अपने देश को चले गए।" (मत्ती 2:12)।

यूसुफ – स्वप्न में स्वर्गदूत द्वारा मिस्र देश जाने हेतु चेतावनी पाई

"उनके चले जाने के बाद देखो, प्रभु के एक दूत ने स्वप्न में यूसुफ को दर्शन देकर कहा, "उठ, उस बालक को और उसकी माता को लेकर मिस्र देश को भाग जा; और जब तक मैं तुझ से न कहूं, तब तक वहीं रहना; क्योंकि हेरोदेस इस बालक को ढूंढ़ रहा है ताकि उसे मरवा डाले" (मत्ती 2:13)।

यीशु – जब कर देने के विषय में सवाल किया गया

फरीसी यह पूछकर यीशु को फंसाना चाहते थे कि कैसर को कर देना उचित है या नहीं। यदि यीशु ने 'हां' कहा होता, तो फरीसी यह कह

सकते थे कि यीशु ने रोमियों का समर्थन किया है और यहूदियों का विरोधी है और उसके बाद वे यहूदियों को उसके विरोध में कर सकते थे। यदि यीशु ने 'नहीं' कहा होता, वे उसे रोमियों के हाथ सौंप सकते थे, यह कारण देकर कि यीशु रोमी सरकार के विरोध में विद्रोह में नेतृत्व कर रहा है।

उसने उनसे पूछा, "यह मूर्ति और नाम किसका है?" उन्होंने उससे कहा, "कैसर का।" तब उसने उनसे कहा, "जो कैसर का है, वह कैसर को दो और जो परमेश्वर का है, वह परमेश्वर को दो।" यह सुनकर उन्होंने अचम्भा किया, और उसे छोड़कर चले गए" (मत्ती 22:15–22; मत्ती 22:41–46 भी देखें)।

पौलुस – मकिदुनिया जाने हेतु निर्देश

"और पौलुस ने रात को एक दर्शन देखा कि एक मकिदुनी पुरुष खड़ा हुआ उससे बिनती करके कहता है कि पार करके मकिदुनिया आ और हमारी सहायता कर। उसके यह दर्शन देखते ही हमने तुरंत मकिदुनिया जाना चाहा, यह समझकर कि परमेश्वर ने हमें उन्हें सुसमाचार सुनाने के लिए बुलाया है" (प्रेरितों के काम 16:9–10)।

पौलुस – जहाज पर तूफान आने पर परिणाम की घोषणा करता हुआ

और जब बहुत दिनों तक न सूर्य, न तारे दिखाई दिए, और बड़ी आंधी चल रही थी, तो अन्त में हमारे बचने की सारी आशा जाती रही। जब वे बहुत उपवास कर चुके, तो पौलुस ने उनके बीच में खड़ा होकर कहा, "हे लोगो, चाहिए था कि तुम मेरी बात मानकर क्रेते से न जहाज खोलते, और न यह विपत्ति और हानि उठाते। परंतु अब मैं तुम्हे समझाता हूं कि ढाढ़स बान्धो; क्योंकि तुममें से किसी के प्राण की हानि न होगी, केवल जहाज की। क्योंकि परमेश्वर, जिसका मैं हूं, और जिसकी सेवा करता हूं, उसके स्वर्गदूत ने आज रात मेरे पास आकर कहा कि, हे पौलुस, मत डर; तुझे कैसर के सामने खड़ा होना अवश्य है। और देख, परमेश्वर ने सब को जो तेरे साथ यात्रा करते हैं, तुझे

दिया है। इसलिए, हे सज्जनो, ढाढ़स बान्धो; क्योंकि मैं परमेश्वर की प्रतीति करता हूँ कि जैसा मुझ से कहा गया है, वैसा ही होगा। परंतु हमें किसी टापू पर जा टिकना होगा।" (प्रेरितों के काम 27:20–26)।

पवित्र शास्त्र के लेखन के लिए

इसी कारण मैं पौलुस जो तुम अन्यजातियों के लिए मसीह यीशु का बन्धुआ हूं– यदि तुमने परमेश्वर के उस अनुग्रह के प्रबन्ध का समाचार सुना हो, जो तुम्हारे लिए मुझे दिया गया, अर्थात् यह कि वह भेद मुझ पर प्रकाश के द्वारा प्रगट हुआ, जैसा मैं पहले संक्षेप में लिख चुका हूं, जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहां तक समझता हूं, जो और अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है, अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। और मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ के प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना" (इफिसियों 3:1–7)।

परिचालन / कार्य

यहां पर अनुप्रयोग के कुछ क्षेत्र दिए गए हैं जहां पर बुद्धि के वचन का वरदान उपयोगी हो सकता है। यह सम्पूर्ण सूची नहीं है।

1) लोगों को सलाह देना और मूल कारण पहचानने में और परमेश्वर के उपाय को प्राप्त करने में सहायता करना।

2) वचन की सेवकाई, कौन–सा वचन, कब देना है और यह किस प्रकार देना है यह जानना।

3) सपनों का अर्थ बताना।

4) कारोबार / कार्यस्थल की समस्याएं सुलझाना।

5) मुश्किल जीवन परिस्थितियों (उदाहरण, कानूनी, ज़मीन–जायदाद के विवाद, परिवार के मामले, आदि) के समाधान ढूंढ़ना।

6) भविष्य के विषय में निर्णय लेना, कौन–सी कार्यवाही करना है (रणनीति) और उसके लिए कैसे तैयारी करना।

7) किसी भी क्षेत्र में अभिकल्पना प्रस्तुत करना।

8) किसी भी क्षेत्र में समाधान प्रस्तुत करना।

9) पूर्वकथन करना और जानना कि आर्थिक और अन्य विपणन कैसे बदलने वाले हैं और ऐसे बदलावों के लिए कैसे तैयारी करना है।

बुद्धि का वचन कैसे प्राप्त होता है

पवित्र आत्मा हमें बुद्धि का वचन देने के लिए किसी भी आत्मिक ज्ञानेंद्रिय का उपयोग कर सकता है। यहां पर एक सक्षिप्त सूची है। स्मरण रखें कि इनमें से कई (और अन्य कई) दूसरों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और आपको इन्हें एक साथ जोड़ने की और स्पष्ट रूप से यह बताने की ज़रूरत है कि आप क्या प्राप्त कर रहे हैं।

पवित्र शास्त्र का सजीव होना

पवित्र आत्मा वचन या पवित्र शास्त्र के भाग को संजीवित कर सकता है और वह अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है जो आपने पहले नहीं देखी है और उसे उस परिस्थिति के लिए जिसे सम्बोधित करने की ज़रूरत है प्रासंगिक बनाती है।

अंदर से जानना

आपके श्रवण के ज्ञानेंद्रिय के माध्यम से, पवित्र आत्मा एक शब्द, एक वाक्य, या एक बड़ी जानकारी का 'डाऊनलोड' आपकी आत्मा में देता है। आपके केवल जानते हैं और आप बोलने लगते हैं।

आप एक शब्द, अनेक शब्द या वाक्य देखते हैं

ऐसा समय होता है जब पवित्र आत्मा एक शब्द या शब्दों की श्रंखला या वाक्य देता है। आप इन शब्दों को आपकी आत्मा की आंखों से 'देखते' हैं। उदाहरण के तौर पर, जब किसी व्यक्ति के लिए आप प्रार्थना करते हैं तब आप उनके भविष्य के सम्बंध में या उन्हें अध्ययन के जिस क्षेत्र के लिए तैयारी करना चाहिए उसके सम्बंध में 'परिपोषण' शब्द देख सकते हैं।

ईश्वर प्रेरित, बिना सोचे समझे कही हुई बातें

ऐसा समय हो सकता है जब आप बोलना आरम्भ करते हैं और आप एक प्रेरणा को अनुभव करते हैं। और आप ऐसी बातों को बोलना आरम्भ करते हैं जिनके विषय में आपने पहले कभी सोचा नहीं था। जब आप बोलते रहते हैं, तब विचार और कल्पनाएं आती रहती हैं और जब यह पूरा हो जाता है, तब ऐसा होता है कि आप उस परिस्थिति के लिए परमेश्वर के मन को प्रगट कर देते है या स्वप्न का अर्थ प्रगट करते हैं।

स्वप्न या दर्शन

बुद्धि के वचन सपनों या दर्शनों के माध्यम से भी प्रगट किए जा सकते हैं। आप जाग उठते हैं और जान लेते हैं कि आपने स्पप्न देखा था जहां पर आप इस बात विषय में स्पष्ट निर्देश पाते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आप करें या किसी समस्या के समाधान के विषय में। दर्शन किसी भी समय में आ सकते हैं, जब आप जागते हैं या सोते हैं। दर्शनों में, आप देखते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है कि आप करें या क्या होने वाला है जिससे आप सही कदम उठाने के लिए तैयार हो सकते हैं। स्वर्गदूत भी स्वप्न और दर्शनों में प्रगट होते हैं और संदेश ले आते हैं।

संदेश लाने वाले दूत

हम देखते हैं कि स्वर्गदूतों ने दानिय्येल, यूसुफ, और पौलुस को और अन्य कई लोगों को दर्शन दिया और विपत्ति से कैसे बचना चाहिए या बाहर निकलना चाहिए इस विषय में संदेश सुनाए।

बुद्धि का वचन कैसे बताएं

जबरदस्ती न करें, विवश न करें या कार्य करने की मांग न करें

बुद्धि का वचन जिसके लिए लोगों को कार्य करने की आवश्यकता होती है (उदाहरण, उनके भविष्य के विषय में, उनकी शिक्षा, उनके करियर आदि के विषय में), बोलते समय बड़ी नम्रता और अधीनता के साथ उसे बताएं, और उसके बाद उन्हें प्रोत्साहन दें कि वे परमेश्वर को व्यक्तिगत तौर पर खोजें और जो कुछ परमेश्वर उनसे कहता है, वह करें। उन पर ज़बरदस्ती न करें, उन्हें विवश न करें या यह मांग न करें कि जो उन्हें बताया गया है वह उन्हें करना ही है।

स्पष्ट करें और आवश्यक यत्नशीलता और तत्परता को प्रोत्साहन दें

परमेश्वर द्वारा दी गई प्रत्येक कल्पना को कुशलतापूर्वक कार्यान्वित करने की आवश्यकता होती है। बुद्धि के वचन पर बुद्धि, तत्परता और परिश्रम के साथ अमल करें। इसलिए जब आप समस्या को सुलझाने वाला बुद्धि का वचन लोगों के सामने रखते हैं, तब लोगों को प्रोत्साहन दें कि वे उसका सम्पूर्णता के साथ अनुसरण करें, दृढ़ बने रहें और उसके लिए यत्न करें। आपने समस्या को सुलझाने हेतु परमेश्वर की ओर से बुद्धि का वचन कह दिया इसका अर्थ यह नहीं है कि वे लापरवाह और आलसी बने रहें और उस पर कार्य किए बिना ही अपेक्षा करें कि सबकुछ अपने आप हो जाएगा।

दूसरों को यकीन दिलाने के लिए दबाव न डालें

कभी–कभी बुद्धि के वचन को सामुहिक मान्यता या टीम के अन्य कई लोगों की ओर से सहमति, या आप जो अधिकारी हैं उनकी ओर से

मान्यता की ज़रूरत होती है। इस विषय में सहभागी अन्य लोगों का आदर करें। परमेश्वर को उनके हृदय में कार्य करने दें कि जो कुछ आपने बताया है वह उत्तम समाधान या सही कार्यविधि है। जो कुछ आपने पाया था उसे देकर आपने अपनी भूमिका निभाई। दूसरों को यकीन दिलाने का दबाव या ज़िम्मेदारी महसूस न करें। आपने जो कुछ बताया है उसे यदि दूसरे स्वीकार नहीं करते, तो उनका न्याय न करें, उन्हें भला–बुरा न कहें या उनकी बुराई न करें।

अन्य कुछ विचार

हम ज्ञान के वचन को बोल सकते हैं इसका अर्थ यह नहीं है कि हमें सीखना नहीं है, अपने आपको शिक्षित करना, प्रशिक्षित और सुसज्जित करना नहीं है।

उसी तरह यह दिखावा न करें कि आपके पास सारी बुद्धि है और आपको दूसरों से परामर्श, शिक्षा, निर्देश और सुधार पाने की आवश्यकता नहीं है।

11

ज्ञान का वचन (Word of Knowledge)

परिभाषा

ज्ञान के वचन का वरदान ईश्वरीय ज्ञान के एक अंश का अलौकिक प्रकाशन है जो भूतकाल और वर्तमान की घटनाओं को प्रगट करता है।

ज्ञान का वचन या शब्द

- व्यक्ति (या व्यक्तियों) को यह ज्ञान देता है कि परमेश्वर उन्हें जानता है और उनसे गहराई से प्रेम करता है।
- परमेश्वर क्या कर रहा है इस विषय में हमें जानकारी देता है। उदाहरण, चंगाई के विषय में ज्ञान का वचन उस रोग या स्थितियों के विषय में प्रगट करता है जिसे परमेश्वर उस समय चंगा करता है।
- भूतकाल की समस्याओं या परिस्थितियों को प्रगट करता है जिन्हें सुलझाने, चंगा करने हेतु परमेश्वर सम्बोधित करता है।
- इस समय हो रही घटनाओं, लोगों के कार्यों को परमेश्वर प्रगट करता है ताकि हम उचित प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकें।
- और बहुत कुछ।

शब्द वाक्य का एक भाग है। इसे ज्ञान के शब्द या वचन का वरदान कहा जाता है और इसलिए वह परमेश्वर के असीम ज्ञान का एक छोटा अंश है जो वह हमें अलौकिक रूप से देता है ताकि विशिष्ट उद्देश्य को पूरा कर सके। ज्ञान के वचन का वरदान उस किसी भी जानकारी पर आधारित नहीं होता जो आप पहले से जानते हैं। वह स्वाभाविक रूप से प्राप्त जानकारी या ज्ञान नहीं है।

यहां पर बाइबल से कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

शमुएल और शाऊल के गधे

शाऊल ने अपने पिता के खोए हुए गधों को ढूंढ़ने में कुछ दिन बिता दिए। अंत में वह किसी दर्शी के पास जाकर सहायता प्राप्त करने का निर्णय लेता है और शमुएल के पास आता है। शमुएल शाऊल को बताता है, *"और तेरी गदहियां जो तीन दिन हुए खो गई थीं उनकी कुछ भी चिन्ता न कर, क्योंकि वे मिल गई"* (1 शमूएल 9:20)।

एलीशा और गेहजी

एलीशा के सेवक गेहजी ने नामान से झूठ बोला और अपने लिए नामान से बहुत सी वस्तुएं प्राप्त की और उन्हें अपने घर में छिपा लिया। *"और वह भीतर जाकर, अपने स्वामी के सामने खड़ा हुआ। एलीशा ने उससे कहा, हे गेहजी, तू कहां से आता है? उसने कहा, तेरा दास तो कहीं नहीं गया। उसने उससे कहा, जब वह पुरुष इधर मुंह फेरकर तुझसे मिलने को अपने रथ पर से उतरा, तब वह पूरा हाल मुझे मालूम था; क्या यह समय चांदी वा वस्त्र वा जलपाई वा दाख की बारियां, भेड़–बकरियां, गाय–बैल और दास–दासी लेने का है? इस कारण से नामान का कोढ़ तुझे और तेर वंश को सदा रहेगा। तब वह हिम सा श्वेत कोढ़ी होकर उसके सामने से चला गया"* (2 राजा 5:25–27)।

एलीशा सीरिया के राजा की युद्ध योजनाएं प्रगट करता है

"और अराम का राजा इस्राएल से युद्ध कर रहा था, और सम्मति करके अपने कर्मचारियों से कहा, कि अमुक स्थान पर मेरी छावनी होगी। तब परमेश्वर के भक्त ने इस्राएल के राजा के पास कहला भेजा, कि चौकसी कर और अमुक स्थान से होकर न जाना क्योंकि वहां अरामी चढ़ाई करनेवाले हैं। तब इस्राएल के राजा ने उस स्थान को, जिसकी चर्चा करके परमेश्वर के भक्त ने उसे चिताया था, भेजकर, अपनी रक्षा

की; और इस प्रकार एक दो बार नहीं वरन बहुत बार हुआ। इस कारण अराम के राजा का मन बहुत घबरा गया; सो उसने अपने कर्मचारियों को बुलाकर उनसे पूछा, क्या तुम मुझे न बताओंगे कि हम लोगों में से कौन इस्राएल के राजा की ओर का है? उसके एक कर्मचारी ने कहा, हे मेरे प्रभु! हे राजा! ऐसा नहीं, एलीशा जो इस्राएल में भविष्यद्वक्ता है, वह इस्राएल के राजा को वे बातें भी बताया करता है, जो तू ने शयन की कोठरी में बोलता है" (2 राजा 6:8–12)।

दानिय्येल राजा के स्वप्नों को प्रगट करता है

"दानिय्येल ने राजा को उत्तर दिया, जो भेद राजा पूछता है, वह न तो पण्डित, न तन्त्री, न ज्योतिषी, न दूसरे भावी बतानेवाले राजा को बता सकते हैं, परंतु भेदों का प्रगटकर्त्ता परमेश्वर स्वर्ग में है; और उसी ने नबूकदनेस्सर राजा को जताया है कि अन्त के दिनों में क्या क्या होनेवाला है। तेरा स्वप्न और जो कुछ तू ने पलंग पर पड़े हुए देखा, वह यह है: हे राजा, जब तुझ को पलंग पर यह विचार हुआ कि भविष्य में क्या क्या होनेवाला है, तब भेदों को खोलनेवाले ने तुझ को बताया, कि क्या क्या होनेवाला है। मुझ पर यह भेद इस कारण नहीं खोला गया कि मैं और सब प्राणियों से अधिक बुद्धिमान हूं, परंतु केवल इसी कारण खोला गया है कि स्वप्न का फल राजा को बताया जाए, और तू अपने मन के विचार समझ सके।" (दानिय्येल 2:27–30)।

जो बातें हो रही थीं उन्हें देखने के लिए यहेजकेल को दर्शनों में और आत्मा में दूसरे स्थान पर ले जाया गया

"उसने हाथ सा कुछ बढ़ाकर मेरे सिर के बाल पकड़े; तब आत्मा ने मुझे पृथ्वी और आकाश के बीच में उठाकर परमेश्वर के दिखाए हुए दर्शनों में यरूशलेम के मन्दिर के भीतर, आंगन के उस फाटक के पास पहुंचा दिया जिसका मुंह उत्तर की ओर है; और जिस में उस जलन उपजानेवाली प्रतिमा का स्थान था जिसके कारण द्वेष उपजता है। फिर वहां इस्राएल के परमेश्वर का तेज वैसा ही था जैसा मैंने मैदान में देखा

था। उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के सन्तान, अपनी आंखें उत्तर की ओर उठाकर देख। सो मैंने अपनी आंखें उत्तर की ओर उठाकर देखा कि वेदी के फाटक की उत्तर की ओर उसके प्रवेशस्थान ही में वह डाह उपजानेवाली प्रतिमा है।तब उसने मुझसे कहा, हे मनुष्य के सन्तान, क्या तू देखता है कि ये लोग क्या कर रहे हैं? इस्राएल का घराना क्या ही बड़े घृणित काम यहां करता है, ताकि मैं अपने पवित्रस्थान से दूर हो जाऊं; परंतु तू इन से भी अधिक घृणित काम देखेगा" (यहेजकेल 8:3–6) यहेजकेल 8:7–17; यहेजकेल 11:1–4; यहेजकेल 11524–25; यहेजकेल 37:1–4 भी देखें।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

यीशु की नतनएल से भेंट

"यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, "देखो, यह सचमुच इस्राएली है; इसमें कपट नहीं।" नतनएल ने उससे कहा, "आप मुझे कहां से जानते हैं?" यीशु ने उसको उत्तर दिया, "उससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के नीचे था, तब मैंने तुझे देखा था।" नतनएल ने उसको उत्तर दिया, "हे रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं; आप इस्राएल के महाराजा हैं।" (यूहन्ना 1:47–49)

यीशु सामरी स्त्री के अतीत के बारे में कुछ प्रगट करता है

"यीशु ने उससे कहा, "जा, अपने पति को यहां बुला ला।" स्त्री ने उत्तर दिया, "मैं बिना पति की हूं।" यीशु ने उससे कहा, "तू ठीक कहती है कि मैं बिना पति की हूं। क्योंकि तू पांच पति कर चुकी है, और जिसके पास तू अब है, वह भी तेरा पति नहीं; यह तू ने सच कहा है। स्त्री ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे ज्ञात होता है कि आप भविष्यद्वक्ता हैं। तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैंने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?" (यूहन्ना 4:16–19,28–29)

यीशु अपने चेलों को गधा लाने भेजता है

"ये बातें कहकर वह यरूशलेम की ओर उनके आगे आगे चला। और जब वह जैतून नामक पहाड़ पर बैतफगे और बैतनियाह के पास पहुंचा, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहकर भेजा, सामने के गांव में जाओ, और उसमें पहुंचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ, बन्धा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोलकर लाओ। और यदि कोई तुमसे पूछे कि क्यों खोलते हो, तो यह कह देना कि प्रभु को इसकी आवश्यकता है।" जो भेजे गए थे, उन्होंने जाकर जैसा उसने उनसे कहा गया था, वैसा ही पाया" (लूका 19:28–32)।

पतरस, हनन्याह और सफीरा

पतरस वह रकम जानता था जिसमें वह भूमि बेची गई थी और उन्होंने कुछ पैसा अपने पास रख लिया था।

हनन्याह को शाऊल की सेवा करने भेजा गया था

परमेश्वर ने हनन्याह को शाऊल का पता दिया और उस दर्शन के विषय में बताया जो शाऊल ने देखा था। *"दमिश्क में हनन्याह नामक एक चेला था, उससे प्रभु ने दर्शन में कहा, "हे हनन्याह!" उसने कहा, "हां, प्रभु। तब प्रभु ने उससे कहा, "उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है, और यहूदा के घर में शाऊल नाम एक तारसी को पूछ ले; क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है।" और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए"* (प्रेरितों के काम 9:10–12)।

कुरनेलियुस के स्वप्न में एक स्वर्गदूत आता है और उसे नाम, शहर और पता देता है

"कैसरिया में कुरनेलियुस नामक एक मनुष्य था, जो इतालियानी नामक पलटन का सूबेदार था। वह भक्त था, और अपने सारे घराने समेत परमेश्वर से डरता था, और यहूदी लोगों को बहुत दान देता, और

बराबर परमेश्वर से प्रार्थना करता था। उसने दिन के तीसरे पहर के निकट दर्शन में स्पष्ट रूप से देखा कि परमेश्वर का एक स्वर्गदूत उसके पास भीतर आकर कहता है, "हे कुरनेलियुस! उसने उसे ध्यान से देखा, और डरकर कहा, "हे प्रभु, क्या है?" उसने उससे कहा, "तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण के लिए परमेश्वर के सामने पहुंचे हैं। और अब याफा में मनुष्य भेजकर शमौन को, जो पतरस कहलाता है, बुलवा ले। वह शमौन चमड़े का धन्धा करने वाले के यहां पाहुन है, जिसका घर समुद्र के किनारे है" (प्रेरितों के काम 10:1–6)।

पौलुस का अंतिम भोज का प्रकाशन

पौलुस अंतिम प्रभुभोज के समय उपस्थित नहीं था, परंतु उसने प्रकाशन में जो कुछ हुआ था, जो कुछ कहा गया था उसका वर्णन पाया। *"क्योंकि यह बात मुझे प्रभु से पहुंची, और मैंने तुम्हें भी पहुंचा दी, कि प्रभु यीशु ने जिस रात वह पकड़वाया गया रोटी ली, और धन्यवाद करके उसे तोड़ी, और कहा, "यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है; मेरे स्मरण के लिए यही किया करो। इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा भी लिया, और कहा, "यह कटोरा मेरे लोहू में नई वाचा है; जब कभी पीओ, तो मेरे स्मरण के लिए यही किया करो"* (1 कुरिन्थियों 11:23–25)।

कार्य या परिचालन

यहां पर लागूकरण के कुछ क्षेत्र हैं जहां ज्ञान के वचन का वरदान उपयुक्त हो सकता है। यह सम्पूर्ण सूची नहीं है।

1) लोगों को यह महसूस करने दें कि परमेश्वर उन्हें जानता है और उनसे प्रेम करता है।

2) समस्याओं को सुलझाने में सहायता करना (जो खो गया है उसे पाना, किस बात से हानि हो रही है यह प्रगट करना, उदाहरण पैसों की हेराफेरी करने वाले लोग)।

3) पाप और समझौते के क्षेत्रों को प्रेम से सम्बोधित करने के द्वारा कायलियत और पश्चाताप लाना।

4) ऐसी किसी बात को प्रगट करना जो भूतकाल में हुई थी और उनके वर्तमान को प्रभावित कर रही है ताकि हम जानें कि उस समस्या को कैसे सुलझाना है।

5) अन्य वरदानों के साथ सेवा करते समय परमेश्वर जो कर रहा है उसे प्रगट करना, उदाहरण के तौर पर, चंगाइयों के वरदान, सामर्थ के काम।

ज्ञान के वचन को कैसे ग्रहण करना है

पवित्र आत्मा ज्ञान के वचन को हमें बताने के लिए हमारे किसी भी आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों को उपयोग कर सकता है। यहां पर कुछ सर्वाधिक सामान्य पद्धतियां प्रस्तुत की गई हैं जिससे विश्वासी ज्ञान के वचनों को ग्रहण करने का अनुभव प्राप्त करे। परमेश्वर आपके साथ बातें करने हेतु नए और रचनात्मक मार्गों का उपयोग कर सकता है। हमारे लिए ज्ञान का वचन बोलने हेतु पवित्र आत्मा बाहरी बातों का भी उपयोग कर सकता है। ध्यान रखें कि इनमें से कई (और अन्य तरीके) अन्य वरदानों के साथ मिलकर काम कर सकते हैं और आपको इन्हें एक साथ जोड़ना है और आप जो कुछ पा रहे हैं उसे स्पष्ट रूप से निवेदन करना है।

शब्दों, वाक्यों या सूचना को सुनना या देखना

आपकी आत्मा से आप आपके मन में शब्द, शब्दों या वाक्यों को आते हुए देख सकते हैं। कभी–कभी ये भी बाहरी प्रतीत होते हैं – ऐसे शब्द जिन्हें आप लोगों 'पर' देख सकते हैं, या उनके चेहरे पर, या उनके पीछे आदि 'लिखा' देख सकते हैं। आप एक शब्द या वाक्य 'सुन' सकते हैं या मात्र जानकारी प्राप्त कर सकते हैं जो आपकी आत्मा के अंदर से आती है।

अंदरूनी छाप

आप विशिष्ट भौतिक दशा या जीवन की परिस्थिति (उदाहरण, आर्थिक समस्या, तलाक, आत्महत्या, आदि) के विषय में स्पर्श के आत्मिक ज्ञानेन्द्रिय के माध्यम से कुछ प्रकाशन प्राप्त करते हैं।

चित्र और तस्वीरें

आपको चित्र या चित्रों का क्रम या सिनेमा के समान दृश्य दिखाई देते होंगे जो विभिन्न शारीरिक दशाओं या रोगावस्थाओं को प्रगट करते हैं। परमेश्वर जिन रोगों या परिस्थितियों को सम्बोधित करना चाहता है, उन्हें वह चंगा करना चाहता है। उदाहरण के तौर पर, आप शरीर के एक अंग को देख सकते हैं (उदाहरण, हृदय, कोहनी, कलाई, गर्दन) या आप शरीर की बाहरी आकृति के किसी भाग पर ज़ोर देख सकते हैं। आप अन्य किसी भी वस्तु, स्थान या जीवन की परिस्थिति को देख सकते हैं (उदाहरण, कार्यस्थल, क्षेत्र को दिखाने वाला कार्यालय, कार दुर्घटना, आदि)। आप लोगों के नामों को दिखाने वाले अक्षरों को एक साथ आते हुए देख सकते हैं, पता, जन्मतिथि आदि दिखाने वाली संख्याओं को एक साथ देख सकते हैं।

वर्तमान परिस्थिति का वर्णन करने हेतु पवित्र शास्त्र की किसी घटना को रेखांकित करना

कभी–कभी परमेश्वर का आत्मा पवित्र शास्त्र की किसी घटना को रेखांकित कर सकता है और किसी व्यक्ति या समूह की ओर संकेत करते हुए उसे रेखांकित कर सकता है। उदाहरण, यूसुफ पर झूठा आरोप लगाया गया था, इस समय आपमें से कोई हो सकता है जो उनके जीवन में समान परिस्थिति से होकर गुज़र रहा होगा।

भौतिक संवेदन या अनुभव

आपके शरीर के किसी हिस्से में तेज़ दर्द या संवेदना हो सकती है (झुनझुनाहट, जलना, फड़कना, आदि)। यह परमेश्वर है जो आपको

सचेत करता है कि वह आपके शरीर के उस भाग में समस्याओं को चंगा कर रहा है। सावधान रहें कि आपकी अनुभूति का कारण आपके अपने शरीर की दशा न हो। उदाहरण के तौर पर, यदि आपके बाए कान में अक्सर दर्द रहता है, तो आप उसे ज्ञान के वचन के रूप में नहीं देंगे, भले ही आपको वह दर्द सभा के दौरान क्यों न हुआ हो।

कुछ सेवक बताते हैं कि कैसे कभी–कभी उनका अपना भौतिक शरीर कुछ क्षणों के लिए उन्हें भौतिक रोगों को महसूस करता है जिससे दूसरा व्यक्ति पीड़ित होगा, उदाहरण, उनके शरीर के किसी भाग पर कुछ क्षण के लिए गांठ आकर फिर अदृश्य हो सकती है, या उनकी दृष्टि कुछ समय के लिए धुंधली हो सकती है या उनका कान कुछ समय के लिए बंद हो सकता है। उसके बाद वे जिन लोगों की सेवा कर रहे हैं, उनकी इन रोगावस्थाओं के विषय में बोलते हैं।

ईश्वर प्रेरित बोली

किसी के साथ बोलते समय या प्रार्थना करते समय या खड़े रहते समय, जीवन की परिस्थिति, समस्या या स्वास्थ्य स्थिति के विषय में आपके मुंह से शब्द निकल पड़ते हैं जिनके विषय में आपने सोचा भी नहीं।

स्वप्न और दर्शन

आपके पास स्वप्न या दर्शन हो सकते हैं जिनमें आप अपने आपको ऐसी बातें कहते हुए या करते हुए सुनते हैं, या आप देखते हैं कि परमेश्वर कुछ विशिष्ट प्रकार के लोगों की सेवा कर रहा है। यह दूसरा तरीका है जिसके द्वारा परमेश्वर आपको उस कार्य को करने के लिए तैयार करता है जो आपने वास्तव में आपके स्वप्न या रात के दर्शन में देखा। आप दर्शन देख सकते हैं जिसमें आप अतीत की बातों को देखते हैं और आप बता सकते हैं कि क्या हुआ। आप ऐसा दर्शन भी देख सकते हैं जिसमें आप आत्मा में यात्रा करते हैं (भौगोलिक रूप से,

भूतकाल में या वर्तमान समय में) और लोगों और स्थानों और घटनाओं को देख सकते हैं जैसे वे होती हैं (या हुई हैं) और जो आप देखते हैं उसे आप बताते हैं।

संदेश देने वाले स्वर्गदूत

स्वर्गदूत परमेश्वर की ओर से कुछ विशिष्ट जानकारी ले आ सकते हैं।

परंतु रात को प्रभु के एक स्वर्गदूत ने बन्दीगृह के द्वार खोलकर उन्हें बाहर लाकर कहा, जाओ, मन्दिर में खड़े होकर, इस जीवन की सब बातें लोगों को सुनाओ" (प्रेरितों के काम 5:19–20)। *"फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, "उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्जाह को जाता है, और जंगल में है"* (प्रेरितों के काम 8:26)।

व्यक्तिगत अनुभव या परिस्थिति

ऐसा समय होता है जब परमेश्वर आपको आपके अपने व्यक्तिगत अनुभव के विषय में या दूसरे व्यक्ति के अनुभव का जिसे आप जानते हैं, स्मरण दिलाता है और उसका उपयोग उस व्यक्ति के विषय में जानकारी देने के लिए करता है जिसकी आप सेवा कर रहे हैं।

ईश्वर प्रेरित लेखन

जब आप लिखते हैं या रोजनामचा लिखते हैं तब परमेश्वर आपको प्रेरणा दे सकता है और बाद में इनका उपयोग लोगों के विशिष्ट शब्दों के द्वारा सेवा करने हेतु किया जा सकता है।

ईश्वरीय रचनाएं (सेट अप्स)

परमेश्वर असामान्य परिस्थिति, आपको दिखाई देने वाले साईन बोर्ड या विज्ञापनों का, संदेश लिखे हुए कार के स्टिकर्स आदि का उपयोग आपको उन बात के विषय में सचेत करने के लिए करता है जो वह

आपसे कहना चाहता है। परमेश्वर प्रतिदिन के जीवन की साधारण बातों का उपयोग आपका ध्यान आकर्षित करने और आपको संदेश देने के लिए कर सकता है। परंतु होने वाली सभी बातों को उसका संदेश न मानें। पवित्र आत्मा के प्रति संवेदनशील बनें और जब वह बोलता है, तब सुनें। परंतु मात्र कल्पना न करें या मनगढंत बातों को तैयार न करें, क्योंकि यह आपको 'डरपोक' और 'विचित्र' बनाएगा।

नवीन, व्यक्तिगत और रचनात्मक तरीके

परमेश्वर को कुछ ही तरीकों से बातें कर सकता है यह कहकर उसे सीमित करना असम्भव है। हमेशा उन नए मार्गों के लिए तैयार रहें जिनके द्वारा वह आपसे बात करता है।

ज्ञान के वचन को कैसे बांटें

हम क्या कहते हैं और उसे किस प्रकार कहते हैं यह महत्वपूर्ण है। यहां पर ज्ञान के वचन को बांटने हेतु कुछ व्यावहारिक निर्देश हैं।

आप जो कुछ बताते हैं उसे प्रेम और सौम्यता के साथ कहें

जब आप ज्ञान का वचन लेकर लोगों के पास जाते हैं, तब डरने, भयभीत होने के बजाय या निराश होने के बजाय, लोग राहत, प्रेम महसूस करें और यीशु से भेंट करने हेतु खींचे जाएं। इसलिए इस प्रकार कुछ कहने के बजाय कि "परमेश्वर ने स्वर्ग से मुझसे बातें की और मुझे दिखाया कि आपकी पीठ के निचले हिस्से में दर्द है," आप उनसे प्रेम से पूछ सकते हैं, "क्या आपकी पीठ के निचले हिस्से में दर्द है?" उनके "हां" कहने के बाद, आप उनके लिए प्रार्थना करने की बात कह सकते हैं। उनके चंगा होने के बाद, सम्भवतः वे आपसे पूछेंगे कि आपने कैसे जाना। उस समय आपको उनसे यीशु के विषय में बातें करने का उत्तम अवसर प्राप्त होगा।

जो कुछ आपको प्रगट किया जा रहा है उसमें स्पष्ट और निश्चित रहें

वचन जितना स्पष्ट होगा, उतना ही वह आपके और दूसरे व्यक्ति के अंदर विश्वास को बढ़ाएगा। जब आप बोलते हैं, तब प्रार्थना करते रहें, परमेश्वर से और विवरण मांगें और सचेत रहें।

जब कभी सम्भव हो उसे प्रमाणित करें

आप उस व्यक्ति से पूछ सकते हैं कि जो कुछ आपने कहा वह सच था या नहीं। सभा में आप लोगों से कह सकते हैं कि वे हाथों को उठाकर दिखाएं जो इस बात का दर्शक होगा कि जो कुछ आपने कहा है, वह एक या उससे अधिक लोगो से सम्बंधित है। ध्यान रखें कि कभी–कभी लोग शर्म महसूस करते हैं और डर जाते हैं और हो सकता है कि इस कारण वे आपको प्रतिक्रिया न दें। यदि कोई प्रतिक्रिया नहीं देता है, तो निराश न हों। विश्वासयोग्य बने रहें और कदम बढ़ाएं।

लोगों के प्रति प्रेम की खातिर खतरा मोल लें

ज्ञान का वचन देना वास्तव में खतरा मोल लेना है। परंतु फिर भी खतरा मोल लें। लोगों का डर, धमकियां, असफल होने का भय आपको रोकने न पाए। सबकुछ प्रेम की खातिर करें।

गलतियां करना उचित है। सीखें और आगे बढ़ते रहें।

याद रखें कि हम सभी पवित्र आत्मा की ओर से सुनना सीख रहे हैं और हम गलतियां करेंगे। सीखते रहें। और सटीकता, और विवरण के लिए प्रयासरत रहें। समस्या परमेश्वर के साथ या उसके वरदान के साथ नहीं है, परंतु जब हम यह सीखने का प्रयास करते हैं कि उसकी ओर से कैसे प्राप्त करना है, तब समस्या हमारे साथ होती है।

12

आत्माओं की परख
(Discerning of Spirits)

परिभाषा

आत्माओं की परख का वरदान अलौकिक रूप से लोगों की आत्माओं या आत्मिक जगत में देखने (समझने, जानने, महसूस करने) की योग्यता है। यह हमें कई तरह से सहायता करता है :

- कौन–सी बात परमेश्वर की ओर से है और कौन–सी बात परमेश्वर की ओर से नहीं है
- लोगों की आत्माओं को, उनके उद्देश्यों और इरादों को पहचानना
- प्रभु क्या कर रहा है, स्वर्गदूतों की गतिविधियां आदि देखना
- शैतान क्या योजना बना रहा है और कर रहा है, किस प्रकार की आत्माएं लोगों को परेशान कर रही हैं यह देखना
- और बहुत कुछ।

आत्माओं को परखने का वरदान **आत्मिक विवेक** से भिन्न है। बुद्धि के समान आत्मिक विवेक परिपक्वता और परमेश्वर के साथ हमारे अनुभव से आता है। परंतु आत्माओं की परख का वरदान आत्मिक जगत में देखने हेतु समय के विशिष्ट क्षण में दिया जाता है। आत्माओं की परख का वरदान सभी विश्वासियों के लिए उपलब्ध है, फिर उनका आत्मिक स्तर चाहे जो हो।

आत्माओं की परख का वरदान **संदेही, छिद्रान्वेषी और आलोचनात्मक** होने से भिन्न है। कुछ लोगों का स्वभाव संदेही, छिद्रान्वेषी और आलोचनात्मक होता है। वे सारे जीवन की ओर और

अपने आसपास के लोगों की ओर इन्हीं भिंगों से देखते हैं। यह आत्माओं की परख का वरदान नहीं है।

यहां पर बाइबल से कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

एलीशा के सेवक ने अपनी आंखें खोलकर देखा

"भोर को परमेश्वर के भक्त का टहलुआ उठा और निकलकर क्या देखता है कि घोड़ों और रथों समेत एक दल नगर को घेरे हुए हैं। और उसके सेवक ने उससे कहा, हाय! मेरे स्वामी, हम क्या करें? उसने कहा, मत डर; क्योंकि जो हमारी ओर हैं, वह उनसे अधिक हैं, जो उनकी ओर हैं। तब एलीशा ने यह प्रार्थना की, हे यहोवा, इसकी आंखें खोल दे कि यह देख सके। तब यहोवा ने सेवक की आंखें खोल दी, कि एलीशा के चारों ओर का पहाड़ अग्निमय घोड़ों और रथों से भरा हुआ है" (2 राजा 6:15–17 ।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

यीशु प्रगट करता है कि नतनएल किस प्रकार का व्यक्ति है

"यीशु ने नतनएल को अपनी ओर आते देखकर उसके विषय में कहा, "देखो, यह सचमुच इस्राएली है; इसमें कपट नहीं। नतनएल ने उससे कहा, "आप मुझे कहां से जानते हैं? यीशु ने उसको उत्तर दिया, "उससे पहले कि फिलिप्पुस ने तुझे बुलाया, जब तू अंजीर के पेड़ के नीचे था, तब मैंने तुझे देखा था।" नतनएल ने उसको उत्तर दिया, "हे रब्बी, आप परमेश्वर के पुत्र हैं; आप इस्राएल के महाराजा हैं" (यूहन्ना 1:47–49)।

यीशु उनके विचारों को जानकर

जब यीशु ने झोले के मारे हुए व्यक्ति को चंगा किया (मत्ती 9:1–7), तब बाइबल कहती है, "यीशु ने उनके मन की बातें जानकर कहा, "तुम लोग अपने अपने मन में बुरा विचार क्यों कर रहे हो?" (वचन 4)

यीशु और पतरस – जानकारी का स्रोत पहचानकर

प्रभु यीशु ने पतरस के बोलने में उसकी जानकारी का स्रोत जान लिया। एक ही क्षण में, पतरस ने स्वर्गीय पिता से यह प्रकाशन प्राप्त किया कि यीशु कौन है (मत्ती 16:16–17), और दूसरे क्षण पतरस उस बात को बोल रहा था जिसकी प्रेरणा शैतान ने दी थी, यीशु को क्रूस पर चढ़ने से मना करना (मत्ती 16:22–23)।

यीशु ने जान लिया कि उस स्त्री को बंधन में रखनेवाली निर्बलता की आत्मा है

"सब्त के दिन वह आराधनालय में उपदेश कर रहा था। और देखो, एक स्त्री थी जिसे अठारह वर्ष से एक दुर्बल करनेवाली दुष्टात्मा लगी थी, और वह कुबड़ी हो गई थी, और किसी रीति से सीधी नहीं हो सकती थी। यीशु ने उसे देखकर बुलाया, और कहा, "हे नारी, तू अपनी दुर्बलता से मुक्त हो गई।" तब उसने उस पर हाथ रखे, और वह तुरन्त सीधी हो गई, और परमेश्वर की बड़ाई करने लगी" (लूका 13:10–13)।

यीशु ने शैतान की युक्तियों को जान लिया

प्रभु यीशु ने जान लिया कि शैतान आत्मिक जगत में क्या करने की योजना बना रहा है। उसने पतरस के लिए प्रार्थना की और उसे पहले से ही चिता दिया। *"शमौन! हे शमौन! देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेहूं के समान तुम्हें फटके। परंतु मैंने तेरे लिए बिनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे; और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना"* (लूका 22:31–32)।

कार्य या परिचालन

यहां पर लागूकरण कुछ क्षेत्र हैं जहां पर आत्माओं की परख का उदाहरण उपयोगी हो सकता है। यह सम्पूर्ण सूची नहीं है।

1) लोगों की सेवा करते समय समस्या के वास्तविक स्रोत के रूप में दुष्टात्माओं को पहचानना

सिद्ध दुरात्मा या परिचित आत्मा वह आत्मा है जो व्यक्ति, स्थान या वस्तु से 'परिचित' हो गई है। परिणामस्वरूप उसने वहां बसेरा डाल दिया है और अपना प्रभाव दिखाती है। व्यक्ति में, वह आत्मा जीवनशैली, मनोभाव, विचारशैली, आचरण को प्रभावित करती है और उस व्यक्ति के जीवन में बदलाव को रोकती है।

छुटकारा पाने की और प्रवेश के द्वारों को पश्चाताप द्वारा बंद करने की आवश्यकता है (अवसर न देना, विरोधी जीवनशैली आदि का चुनाव करना)।

2) छुटकारे के दौरान, यह जानते हुए कि क्या और दुष्टात्माएं छिपी हुई हैं और उन्हें निकालने की आवश्यकता है।

3) सही और झूठे सेवकों को, सत्य के आत्मा और शिक्षा में भूल की आत्मा को पहचानना

4) लोगों के हृदय के सही उद्देश्य को पहचानना और बाहरी रूप और पाखंड को पहचान लेना।

5) आत्मिक संसार में परमेश्वर क्या कर रहा है यह पहचानना और उसके अनुसार अपना स्थान लेना।

6) स्वर्गदूतों को पहचानना और वे क्या कर रहे हैं यह जानना।

7) शैतान क्या कर रहा है यह जानना और प्रार्थना और आत्मिक युद्ध के द्वारा उनका सामना करना।

आत्माओं की परख के वरदान को कैसे ग्रहण किया जाता है

पवित्र आत्मा हमारे आत्मिक ज्ञानेन्द्रियों में से किसी का भी उपयोग कर आत्माओं की परख का वरदान दे सकता है। यहां पर कुछ तरीके दिए गए हैं।

आपकी आत्मा में एक जांच

आपको आत्मा में एक जांच, एक अस्वस्थ भावना महसूस हो सकती है। आप जानते हैं कि परमेश्वर आपको सचेत कर रहा है कि कुछ तो ठीक नहीं है और आपको कार्रवाई करने की ज़रूरत है। उसके बाद प्रार्थना करें और परमेश्वर से बिनती करें कि परमेश्वर आपको बताए कि आप उस प्रकार क्यों महसूस कर रहे हैं और वह क्या चाहता है कि आप करें।

आत्मा में आनंद और सहभागिता का बोध

कभी–कभी आप किसी के साथ बातचीत करते समय पवित्र आत्मा में एक विशेष सम्बंध का बोध, 'धार्मिकता, शांति और आनंद' की अनुभूति करते हैं। आप कभी–कभी आपकी आत्मा में उनकी आत्मा के स्वभाव (जिस प्रकार के व्यक्ति वे हैं) का बोध महसूस करते हैं। परमेश्वर आपको यह जानने में सहायता कर रहा है कि वे किस प्रकार के लोग हैं और उसके राज्य के उद्देश्यों के लिए वह क्या चाहता है कि आप उनके लिए करें।

यह जानना कि विशिष्ट प्रकार की आत्मा कार्य कर रही है

परमेश्वर आपकी आत्मा में यह ज्ञान डाल सकता है कि उस व्यक्ति में किस प्रकार की दुष्टात्माएं कार्य कर रही है या उसे प्रभावित कर रही हैं। आप मात्र जानते हैं – परमेश्वर ने यह आपकी आत्मा को प्रगट किया है। आप इन दुष्टात्माओं को नाम लेकर बुला सकते हैं और यीशु के नाम का अधिकार लेकर और पवित्र आत्मा की सामर्थ से जो कुछ वे कर रहे हैं, उन्हें नाश कर सकते हैं।

कार्य करने वाली भिन्न प्रकार की आत्माओं के विषय में एक या अनेक शब्द

कभी–कभी ऐसा होता है, जब आपकी आत्मा में शब्द (नाम, विशेषताएं, कार्य) आते हैं जो पहचानते हैं कि किस प्रकार की दुष्टात्माएं कार्य कर

रही हैं। अब आप इन दुष्टात्माओं पर अधिकार ले सकते हैं और जो कुछ वे कर रहे हैं उन कामों को नष्ट कर सकते हैं।

एक दृश्य जो दिखाता है कि आत्मिक संसार में क्या हो रहा है

पवित्र आत्मा आपको जो बातें हो रही हैं उनका दृश्य (दर्शन) दिखाता है। आपकी आत्मा की आंखें यह देखती हैं, शायद घटनाओं का क्रम प्रगट होता है, जहां पर आप आत्मिक जगत में होने वाली बातों को देखते हैं, जहां पर स्वर्गदूतों और दुष्टात्माओं और सम्बंधित लोगों पर उनका कार्य प्रगट होता है। आप जानते हैं कि उस व्यक्ति (व्यक्तियों) की कैसे सेवा करें और और आत्मिक जगत में जो कुछ हो रहा है उनके साथ व्यवहार करके उनके जीवन में बदलाव लाने हेतु क्या करें।

आत्मिक जगत का अचानक बोध

आपकी आत्मा को आपके आत्मिक जगत में होने वाली बातों के विषय में अचानक बोध होता है। आप स्वर्गदूतों की गतिविधि को, या शत्रु की दुष्ट योजनाओं को पहचानते हैं। परमेश्वर तब चाहता है कि आप उसके अनुसार प्रत्युत्तर दें। या तो उसे धन्यवाद दें और उसके स्वर्गदूतों की सेवकाई को स्वीकार करें जो आपकी सेवा के लिए भेजे गए हैं, या दुष्टात्माओं पर अधिकार प्राप्त करें, उन्हें डांटें और जो वे करने का प्रयास करते हैं, उन कामों को नष्ट करें।

आत्मिक जगत में जो हो रहा है उसे सुनना

आत्मिक जगत में जो कुछ होता है उसे आपका आत्मा 'सुनता है' – कार्य, हलचल, वार्तालाप, आदि। उदाहरण के तौर पर, *"फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नाम तराई में फैल गए। जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उसने कहा, चढ़ाई न कर; उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के सामने से उन पर छापा मार। और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब यह जानकर फूर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे*

आगे अभी पधारा है। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद गेबा से लेकर गेजेर तक पलिश्तियों को मारता गया" (2 शमूएल 5:22–25)।

स्वप्नों के द्वारा

स्वप्नों के माध्यम से परमेश्वर समय से पहले उन बातों को प्रगट कर सकता है जो आत्मिक जगत में घटित होती हैं। ताकि आप कार्य करने और आवश्यक बातों को करने के लिए तैयार हो जाएं।

जो कुछ हो रहा है उसे देखने के लिए आपकी आत्मा की आंखों का खुल जाना

पवित्र आत्मा देखने के लिए आपकी आंखों को खोल देता है। मानो आपका आत्मिक मनुष्य आपकी स्वाभाविक आंखों से झांककर देखता है, परंतु स्वाभाविक से परे आत्मिक जगत में देखता है।

आत्मिक जगत में स्थलांतर

परमेश्वर आपको योग्यता दे सकता है कि आप दर्शनों में या आत्मिक स्थलांतर के द्वारा आत्मा में यात्रा कर सकें और व्यक्ति पर, परिवार पर, लोगों के समूह पर या शहर आदि पर आत्मिक जगत में गतिविधि को दिखा सकें।

हाथ में भौतिक एहसास

कभी–कभी आपको आपके हाथ में कुछ संवेदना हो सकती है (उदा. गर्माहट, आग, झनझनाहट, आदि) जिसका उपयोग परमेश्वर आपको दुष्टात्मा की उपस्थिति को दिखाने के लिए कर सकता है। परमेश्वर के कुछ सेवकों ने बताया है कि परमेश्वर ने उनकी सेवकाइयों में इस प्रकार कार्य किया है।

गंध और स्वाद के आत्मिक बोध के माध्यम से

जैसा कि मैंने पिछले अध्याय में बताया है, परमेश्वर विशिष्ट गंध/स्वाद की पहचान आपको दिलाएगा और उसके बाद आपको विशिष्ट समझ

देगा कि वह क्या बता रहा है। **उत्तम स्वाद/सुगंध** का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया जा सकता है हम जो कर रहे हैं उससे परमेश्वर प्रसन्न है, परमेश्वर उपस्थित है; परमेश्वर का अभिषेक कार्य कर रहा है; परमेश्वर चंगाई देने हेतु कार्य कर रहा है; परमेश्वर सांत्वना देने के लिए कार्य कर रहा है, परमेश्वर विशिष्ट प्रकार की ज़रूरत आदि को पूरा करने हेतु कार्य कर रहा है। **अप्रिय स्वाद/गंध** आपको यह दर्शाने हेतु एक चेतावनी होती है कि जो कुछ हो रहा है उस विषय में सचेत रहें (उदाहरण, झूठी शिक्षा का प्रचार किया जा रहा है, दुष्टात्मा की सामर्थ, भरमाने वाली आत्माएं, कार्य करने वाली अशुद्ध आत्माएं, आदि), ताकि आप उस परिस्थिति से बाहर निकलें (उदाहरण, अभी निकलें, आपको यहां रहने की ज़रूरत नहीं है, इन लोगों के साथ व्यवहार मत करना, आदि)।

आत्माओं की परख के द्वारा जो कुछ प्राप्त हुआ है उसका उपयोग कैसे करें या उसे कैसे प्रगट करें

सामान्य तौर पर आत्माओं की परख का वरदान इसलिए आवश्यक होगा कि पवित्र आत्मा आपको जो कुछ प्रगट कर रहा है उसके उत्तर के रूप में आप कारवाई करें, कुछ करें। यहां पर नमूने के तौर पर एक संक्षिप्त सूची दी गई है कि किस प्रकार आत्माओं की परख के वरदान के माध्यम से प्राप्त सूचना का उपयोग किया जाता है।

आपको व्यक्ति के लिए छुटकारे की सेवा करना पड़ सकता है

यदि आप उस प्रकार की आत्माओं को जानते हैं जिनके साथ आपको व्यवहार करने की ज़रूरत है, तो इन दुष्टात्माओं को नाम लेकर बुलाएं, उन्हें निकालें और जो कुछ वे कर रहे हैं उन कामों को यीशु के नाम के अधिकार का उपयोग कर और पवित्र आत्मा की सामर्थ से नष्ट करें। उसी प्रकार यह सुनिश्चित करने के लिए कि सभी दुष्टात्माएं उस व्यक्ति को छोड़ कर चली गई हैं, आत्मा के प्रति संवेदनशील बने रहें ताकि छुटकारा पूरा हो।

जिस प्रकार की आत्माएं कार्य कर रही हैं, उन पर आपको अधिकार लेने की ज़रूरत पड़ सकती है

यदि आत्मा ने आपको प्रगट किया है कि विशिष्ट प्रकार की आत्माएं विशिष्ट परिस्थिति में या लोगों के किसी समूह पर कार्य कर रही हैं, तो उन आत्माओं पर अधिकार प्राप्त करें। उस परिस्थिति में उनके कार्य को रोक दें। यीशु के नाम में उनके कामों को नाश करें। उनके बुरे प्रभाव को निकाल फेंकें। परिस्थिति पर या लोगों पर परमेश्वर का वचन कहें। उस परिस्थिति में परमेश्वर के राज्य के प्रभाव को भेजें।

आपको किसी बात को आगे बढ़ने से रोकने की ज़रूरत पड़ सकती हैं

यदि परमेश्वर का आत्मा शत्रु के उद्देश्य, योजना, व्यवस्था या कार्यप्रणाली को प्रगट करता है, तो उस पर कार्यवाही करें और उनके प्रयासों से उसे आगे बढ़ने से रोकें। शत्रु के तम्बू में गड़बड़ी की घोषणा करें। उनके प्रयासों को बांधें और रद्द करें। यीशु के नाम के अधिकार का उपयोग कर उन्हें तितर–बितर कर दें। परमेश्वर का वचन कहें, राज्य के प्रभाव को मुक्त करें और परमेश्वर से बिनती करें कि विशिष्ट परिस्थिति में उनके कामों को करने हेतु उसके दूतों को भेजने के लिए परमेश्वर से बिनती करें।

परमेश्वर आपको जो दिखाता है उस विषय में प्रार्थना करें

कभी–कभी परमेश्वर क्या हो रहा है इस विषय में हमें सतर्क करता है ताकि हम उस विषय के लिए पहले से प्रार्थना करें कि उसमें शामिल लोगों की रक्षा हो। प्रभु यीशु ने पतरस के लिए और उसका विश्वास फिर स्थापित हो इसके लिए प्रार्थना की यह इसका एक उदाहरण है (लूका 22:31–32)।

अपने आपको तैयार करें और अपना स्थान ग्रहण करें

आत्मिक क्षेत्र में होने वाली बातों के विषय में परमेश्वर आपको प्रगट कर सकता है ताकि आप तैयार हो सकें और स्वाभाविक क्षेत्र में उस

पर अमल करने हेतु अपना स्थान ले सकें। इसका उत्तम उदाहरण राजा दाऊद के जीवन की एक विशिष्ट घटना है, जहां पर उसने सेना के चलने की आहट सुनी – आत्मिक जगत में हो रहा कार्य, तब वह स्वाभाविक क्षेत्र में आगे बढ़ा। *"फिर दूसरी बार पलिश्ती चढ़ाई करके रपाईम नाम तराई में फैल गए। जब दाऊद ने यहोवा से पूछा, तब उसने कहा, चढ़ाई न कर; उनके पीछे से घूमकर तूत वृक्षों के सामने से उन पर छापा मार। और जब तूत वृक्षों की फुनगियों में से सेना के चलने की सी आहट तुझे सुनाई पड़े, तब यह जानकर फूर्ती करना, कि यहोवा पलिश्तियों की सेना के मारने को मेरे आगे अभी पधारा है। यहोवा की इस आज्ञा के अनुसार दाऊद गेबा से लेकर गेजेर तक पलिश्तियों को मारता गया।"*

परमेश्वर ने आपको जिन लोगों के विषय में सचेत किया है उनके साथ व्यवहार करने से आपको बचने की ज़रूरत हो सकती है

यदि परमेश्वर आप पर लोगों के हृदय के गलत इरादों को प्रगट करता है तो आपको आगे उनके साथ व्यवहार करने से बचने की ज़रूरत पड़ सकती है ताकि आप अपने आपको उन लोगों के साथ उलझाने से बचा सकते हैं।

आपको कुछ लोगों से दूर चले जाने की ज़रूरत हो सकती है

यदि परमेश्वर का आत्मा आपको सचेत करता है कि कुछ बातें वहां की जा रही हैं और कही जा रही हैं और गलत आत्माएं उस परिस्थिति में कार्य कर रही हैं, इसलिए आपको वहां नहीं रहना चाहिए, तो आपको उक्त समूह के लोगों से दूर हो जाने की ज़रूरत पड़ सकती है।

गलत माध्यम (दुष्टात्मा) की ओर से दिए गए "भविष्यद्वाणी" के वचन के साथ सहमत होने से इन्कार करें

कभी–कभी जब व्यक्ति भविष्यद्वाणी का वचन देता है, तब वह वास्तव में गलत आत्मा (भावी कहने वाली आत्मा, भय का आत्मा, जादूटोना, नियंत्रण आदि) के प्रभाव में कार्य करता है, तब परमेश्वर का आत्मा आपको सचेत करता है कि आप वह 'भविष्यद्वाणी' का वचन स्वीकार करने से इन्कार करें और उससे सहमत न हों। आप उस वचन का इन्कार करें और उसे आपके जीवन में स्थान या प्रभाव देने से इन्कार करें।

13

चंगाई के वरदान (Gifts of healing)

परिभाषा

चंगाई के वरदान परमेश्वर का अलौकिक कार्य है जिसका परिणाम बीमार व्यक्ति की भौतिक या भावनात्मक चंगाई में होता है।

चंगाइयों के वरदान मेडिकल डॉक्टर के कार्य के समान नहीं होते जो औषधी के द्वारा चंगाई पर आधारित होते हैं।

शरीर और मन की समस्याएं कई कारणों से उत्पन्न होती हैं, और कुछ परिस्थितियों में कई कारक उसके पीछे कार्यरत होते हैं : जन्म के समय कुछ दोष, आनुवंशिक समस्याएं स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही या दुर्व्यवहार, दुर्घटना या घाव, जैविक/दैहिक समस्याएं, उसी तरह दुष्टात्माओं का कार्य।

एन के जे व्ही में बहुलता (सब प्रकार की बीमारियों से चंगाई) और विविधता (कई भिन्न तरीके जिनके द्वारा अलौकिक चंगाइयां प्रगट होती हैं या दी जाती हैं) को दर्शाने के लिए दुगने बहुवचन का "वरदानों", "चंगाइयों" का उपयोग किया गया है।

परमेश्वर कई तरह से चंगा करता है, जिनमें से एक है चंगाइयों के वरदानों के द्वारा। अलौकिक चंगाइयां कैसे घटित होती हैं इसका यदि वर्गीकरण किया जाए, तो हम तीन सम्भवनीय वर्गों का उल्लेख कर सकते हैं :

(अ) परमेश्वर में व्यक्तिगत विश्वास और उसके वचन के द्वारा (ब) चंगाई के अभिषेक और चंगाई के वरदानों के द्वारा (क) परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा के द्वारा।

व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा	चंगाई के अभिषेक और चंगाइयों के वरदानों के द्वारा	परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा के द्वारा
यहां पर व्यक्ति परमेश्वर के वचन पर विश्वास करता है और उनके व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा प्राप्त करता है, जैसे मरकुस 11:22–24।	यहां पर चंगाई का अभिषेक और चंगाई के वरदान व्यक्ति के द्वारा कार्य करते हैं और बीमार व्यक्ति को चंगाई दी जाती है।	परमेश्वर लोगों से स्वतंत्र रूप से, सार्वभौम तरीके से कार्य करता है और लोग चंगे होते हैं। लोग विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं, उसी तरह जिन लोगों के पास आवश्यक तौर पर विश्वास नहीं होता वे भी चंगे होते हैं।
सेवक वचन सिखाता है, लोगों में विश्वास को बढ़ाने में सहायता करता है और विश्वास में लोगों को सेवा प्रदान करता है। परस्पर विश्वास उस व्यक्ति के लिए परमेश्वर की चंगाई प्राप्त करता है।	अधिकतर उदाहरणों में, बीमार व्यक्ति को भी विश्वास रखना आवश्यक होता है। परंतु, कुछ अपवाद हैं और जिन लोगों के पास विश्वास नहीं होता वे भी कभी–कभी सार्वभौम तरीके से चंगाई पाते हैं।	परमेश्वर की उपस्थिति और महिमा का स्वागत अक्सर गहन स्तुति और आराधना, और प्रत्याशा के उच्च बोध के द्वारा किया जाता है।

हमें तीनों पद्धतियों में चंगाई की सेवा करना सीखना है और जैसे परमेश्वर कार्य करना चाहता है उसके अनुसार उसके साथ आगे बढ़ना है। विश्वासियों के नाते हम सभी को यह जानना है कि हम अपनी स्वयं की चंगाई कैसे प्राप्त करें और परमेश्वर में और उसके वचन में अपने व्यक्तिगत विश्वास के द्वारा अपना स्वास्थ्य कैसे बनाए रखें।

अक्सर हो सकता है चंगाई पाने वाला कि अपने सक्रिय विश्वास का उपयोग न करता हो – और फिर भी जब कोई उनके लिए प्रार्थना की सेवा करता है और उस व्यक्ति के द्वारा चंगाई के वरदान प्रगट होते हैं, तब वे चंगे हो जाते हैं। सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र में अलौकिक चंगाई के अनेक उदाहरण हैं। इस विषय पर अधिक विस्तृत अध्ययन के लिए, कृपया ए. पी. सी. प्रकाशन की विनामूल्य पुस्तक "चंगाई और छुटकारे की सेवा करना" देखें जो इस पते पर डाऊनलोड के लिए उपलब्ध है : **apcwo.org/publications.**

यहां पर कुछ उदाहरण हैं :

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

अबिमेलेक की पत्नी और सेवकों का बांझपन से चंगा होना

अब्राहम ने अबिमेलेक, उसकी पत्नी और दासियों के लिए प्रार्थना की। तब उन्हें संतान हुई (उत्पत्ति 20:17)।

परमेश्वर ने अपने आपको अपने लोगों के चंगाईकर्ता के रूप में प्रगट किया

मिस्र से निर्गमन के बाद, उनकी जंगल की सम्पूर्ण यात्रा के दौरान, लोग उत्तम स्वास्थ्य पाकर सुरक्षित थे। परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ यह वाचा बांधी थी कि वह उनका चंगा करने वाला परमेश्वर है और उसने उन पर अपना वाचा का नाम प्रगट किया : यहोवा राफा (निर्गमन 15:26)। अत्यंत दिलचस्प बात यह है कि बाइबल में लिखा है कि जब वे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता में चल रहे थे, तब उनके सारे गोत्रों में एक भी बीमार व्यक्ति नहीं था।,

भजनसंहिता 105:37
तब वह अपने गोत्रियों को सोना चांदी दिला कर निकाल लाया, और उनमें से कोई निर्बल न था।

नहेम्याह 9:21

चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पांव में सूजन हुई।

भजनसंहिता 107:19–20

19 तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह सकेती से उनका उध्दार करता है;

20 वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।

नामान कोढ़ी का चंगा किया जाना

नामान ने भविष्यद्वक्ता के वचन के अनुसार किया और चंगाई प्राप्त की। *"तब एलिशा ने एक दूत से उसके पास यह कहला भेजा, कि तू जाकर यरदन में सात बार डुबकी मार, तब तेरा शरीर ज्यों का त्यों हो जाएगा, और तू शुद्ध होगा। परंतु नामान क्रोधित हो यह कहता हुआ चला गया, कि मैंने तो सोचा था, कि अवश्य वह मेरे पास बाहर आएगा, और खड़ा होकर अपने परमेश्वर यहोवा से प्रार्थना करके कोढ़ के स्थान पर अपना हाथ फेरकर कोढ़ को दूर करेगा! क्या दमिश्क की अबाना और पर्पर नदियां इस्राएल के सब जलाशयों से उत्तम नहीं है? क्या मैं उनमें स्नान करके शुद्ध नहीं हो सकता हूं? इसलिये वह जलजलाहट से भरा हुआ लौटकर चला गया। तब उसके सेवक पास आकर कहने लगे, हे हमारे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कोई भारी काम करने की आज्ञा देता, तो क्या तू उसे न करता? फिर जब वह कहता है, कि स्नान करके शुद्ध हो जा, तो कितना अधिक इसे मानना चाहिये। तब उसने परमेश्वर के भक्त के वचन के अनुसार यरदन को जाकर उसमें सात बार डुबकी मारी, और उसका शरीर छोटे लड़के का सा हो गया; और वह शुद्ध हो गया"* (2 राजा 5:10–14)।

राजा हिज्कियाह की चंगाई

परमेश्वर ने चंगाई देने के लिए भविष्यद्वक्ता यशायाह को राजा हिज्कियाह के पास भेजा और उसकी उम्र पन्द्रह वर्ष बढ़ा दी। इस मामले में दिलचस्प बात यह है कि परमेश्वर ने अंजीर की टिकिया का उपयोग विश्वास के कार्य के रूप में किया जिससे हिज्कियाह को उसकी चंगाई प्राप्त करने में सहायता मिली। *"कि लौटकर मेरी प्रजा के प्रधान हिजकिय्याह से कह, कि तेरे मूलपुरुष दाऊद का परमेश्वर यहोवा यों कहता है, कि मैंने तेरी प्रार्थना सुनी और तेरे आंसू देखे है, देख, मैं तुझे चंगा करता हूं; परसों तू यहोवा के भवन में जा सकेगा। और मैं तेरी आयु पन्द्रह वर्ष और बड़ा दूंगा। और अश्शूर के राजा के हाथ से तुझे और इस नगर को बचाऊंगा, और मैं अपने निमित्त और अपने दास दाऊद के निमित्त इस नगर की रक्षा करूंगा। तब यशायाह ने कहा, अंजीरों की एक टिकिया लो। जब उन्होंने उसे लेकर फोड़े पर बान्धा, तब वह चंगा हो गया"* (2 राजा 20:5–7)।

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

यीशु की सेवकाई

चारों सुसमाचार व्यक्तियों के और लोगों के कई उदाहरण बताते हैं जहां पर लोगों ने यीशु मसीह की सेवकाई के द्वारा चंगाई प्राप्त की। प्रभु यीशु मसीह पवित्र आत्मा के अभिषेक में होकर चंगाई करता था। जितने लोग उसके पास विश्वास से आए उन्होंने चंगाई और छुटकारा पाया। उनके पास आवश्यक तौर पर विश्वास नहीं था, परंतु उनमें से कुछ लोगों की भी सेवा की गई और उन्होंने चंगाई पाई, जैसे बैतहसदा के झील पास वाला व्यक्ति (यूहन्ना 5) या यूहन्ना 9 में जन्म से अन्धे व्यक्ति की चंगाई। प्रभु यीशु ने कई तरह से सेवकाई की। उसने बीमारों पर हाथ रखे। लोगों ने उसे छूआ। उसने आज्ञा का वचन कहा। उसने लोगों को चंगा घोषित किया और उन्हें विश्वास के साथ घर जाने के लिए कहा। उसने लोगों को ऐसा काम करने के लिए कहा जो वे नहीं कर पाते। उसने कुछ असामान्य कार्य किया जैसे लोगों को

अपनी थूक से छुआ या अपनी थूक के साथ मिट्टी सानकर उसे अन्धी आंखों पर लगाया, आदि। यीशु ने सब प्रकार की बीमारियों और रोगों को चंगा किया।

मत्ती 11:4–5

4 यीशु ने उत्तर दिया, "जो कुछ तुम सुनते हो और देखते हो, वह सब जाकर यूहन्ना से कह दो –

5 कि अन्धे देखते हैं और लंगड़े चलते फिरते हैं; कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं और बहिरे सुनते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है"।

यूहन्ना 20:30–31

30 यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए।

31 परन्तु ये इसलिए लिखे गए हैं, कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ।

प्रारम्भिक कलीसिया

प्रारम्भिक कलीसिया के प्रेरित और विश्वासी कइयों को चंगाइयां और छुटकारे की सेवा प्रदान करते थे। इनमें से कुछ विशिष्ट चंगाइयां हमारे लिए लिखी गई हैं। एक जन्म से लंगड़ा व्यक्ति जो उस दशा में चालीस वर्षों से था तुरंत चंगा हो गया (प्रेरितों के काम 3)। उन्होंने प्रार्थना कि कि परमेश्वर चंगा करने के लिए अपने हाथ को बढ़ाए और यीशु मसीह के नाम में चिन्ह और अद्‌भुत कार्य हों (प्रेरितों के काम 4:29–30)। हम देखते हैं कि लोगों की भीड़ यरूशलेम को आती है और वे अपने बीमारों को ले आते हैं और परमेश्वर उनमें से प्रत्येक को चंगाई और छुटकारा देने के लिए पतरस की छाया का उपयोग करता है (प्रेरितों के काम 5:14–16)। जब विश्वासी सताव के कारण दूसरे शहरों में तितरबितर हो गए, तब उन्होंने जाकर हर स्थान में मसीह का प्रचार किया और उनके साथ चंगाइयां और आश्चर्यकर्म होते थे (प्रेरितों के काम 8:6–7; प्रेरितों के काम 11:21)। चंगाइयां और आश्चर्यकर्म

प्रेरितों के कार्य में और नई कलीसियाओं के रोपन में अत्यंत महत्वपूर्ण थे। परमेश्वर ने पौलुस के द्वारा असामान्य चंगाइयां की। जब उससे रूमाल और अंगोछे लेकर बीमारों पर रखे जाते थे, तब वे चंगे होते थे और छुटकारा पाते थे (प्रेरितों के काम 19:11–12)। कलीसिया जानती थी कि प्रभु की मेज में सहभागी होना आशीष का प्याला था जो चंगाई और दीर्घायु ले आता था (1 कुरिन्थियों 11:17–34)। जो कोई बीमार होता वह कलीसिया के प्राचीनों को बुलाता कि उनकी चंगाई के लिए विश्वास की प्रार्थना करे (याकूब 5:14–15)।

परिचालन या कार्य

चंगाइयों के वरदान व्यक्ति की चंगाई और भावनात्मक स्वास्थ्य तथा कल्याण को पुनर्स्थापित करने में सहायक सिद्ध होते हैं। कई चंगाइयां तुरंत और तत्काल होती हैं, उसी तरह जब काफी समय में बाद चंगाइयां होती हैं, तो आनंद मनाएं।

पवित्र आत्मा किस प्रकार चंगाइयों के वरदानों को भेजना आरम्भ करता है

परमेश्वर क्या कर रहा है जानना

पिता जो कर रहा था उसे यीशु ने देखा और उसने भी वही किया (यूहन्ना 5:19)। इसीलिए उसने बेतहसैदा की झील के पास उस मनुष्य को चंगा किया। अक्सर सभा में सेवकाई करते समय या व्यक्तिगत तौर पर किसी से बातें करते/सेवा करते समय आपके पास यह ज्ञान होता है कि परमेश्वर चंगा करना चाहता है या विशिष्ट परिस्थितियों को चंगाई देना चाहता है।

ज्ञान के वचनों के द्वारा

किसी सभा में सेवा करते समय या लोगों के साथ व्यक्तिगत तौर पर बातें करते समय परमेश्वर ज्ञान के वचनों के द्वारा विशिष्ट रोगों को जिन्हें वह चंगा करना चाहता है, प्रगट करता है। इन ज्ञान के वचनों

को आप बोलते हैं जो विशिष्ट स्थितियां या रोग हो सकते हैं या शरीर के विशिष्ट क्षेत्र जहां पर वह उस क्षण स्पर्श करता है। इससे विश्वास में उन्नति होती है और लोग चंगाई प्राप्त करते हैं।

परमेश्वर की चंगा करने वाली उपस्थिति और अभिषेक को पहचानना

सभा के दौरान, आपको परमेश्वर की चंगा करने वाली उपस्थिति और चंगाई के अभिषेक का एहसास होता है। प्रभु की सामर्थ चंगा करने हेतु उपस्थित होती है (लूका 5:17)। आप उसके अनुसार सेवा करने लगते हैं। लोग विश्वास से अभिषेक को प्राप्त करते हैं, उस स्त्री के समान जिसने यीशु के वस्त्र की छोर को छुआ (मरकुस 5:25–34) या उस भीड के समान जिसने यीशु को छुआ और वे चंगे हो गए (लूका 6:19)।

लोक विश्वास और अपेक्षा से मांग करते हैं

परमेश्वर लोगों के हृदयों की अपेक्षा और विश्वास का उत्तर देता है। इसलिए जब लोग अपेक्षा और विश्वास के साथ परमेश्वर की ओर देखते हैं और उन्हें सेवा प्रदान करने हेतु मानव पात्र के रूप में उनके पास आते हैं, तब परमेश्वर उनकी ज़रूरत को पूरा करने हेतु चंगाइयों के वरदानों को भेजता है। आप देखते हैं कि उनके पास चंगाई पाने हेतु विश्वास है और परमेश्वर उनके विश्वास के उत्तर स्वरूप कार्य करता है।

चंगाइयों के वरदानों को कैसे प्रगट करें

आप परमेश्वर को जो करते हुए देखते हैं उसकी घोषणा करें

जब आप अपनी आत्मा में जानते हैं कि परमेश्वर चंगाई तथा छुटकारा देने के लिए लोगों के समूह के बीच या व्यक्ति पर मंडरा रहा है, तब जो कुछ परमेश्वर आपको आत्मा में दिखाता है उसकी आप घोषणा करते हैं। इससे लोगों के हृदय में विश्वास संजीवित होता है और परमेश्वर चंगाइयों के उन विशिष्ट वरदानों और आश्चर्यकर्मों को भेजने के द्वारा आपको जो दिखाता है उसकी पुष्टि करता है। पतरस ने

पहचाना कि परमेश्वर ऐनियास के लिए क्या कर रहा था और परमेश्वर उसके लिए जो कर रहा था उसकी उसने यह घोषणा की : *"और ऐसा हुआ कि पतरस हर जगह फिरता हुआ उन पवित्र लोगों के पास भी पहुंचा, जो लुद्दा में रहते थे। वहां उसे एनियास नामक लकवे का मारा हुआ एक मनुष्य मिला, जो आठ वर्ष से खाट पर पड़ा था। पतरस ने उससे कहा, "हे ऐनियास! यीशु मसीह तुझे चंगा करता है; उठ, अपना बिछौना बिछा।" तब वह तुरन्त उठ खड़ा हुआ। और लुद्दा और शारोन के सब रहने वाले उसे देखकर प्रभु की ओर फिरे" (प्रेरितों के काम 9:32–35)।*

ज्ञान के वचनों को प्रगट करना

आप ज्ञान के वचनों को कहते हैं जो परमेश्वर का आत्मा आपको दे रहा है। आप जो कहते हैं उसे लोग ग्रहण करते हैं और वे विश्वास के द्वारा परमेश्वर के साथ सम्बंध बनाते हैं और परमेश्वर चंगाइयों के वरदान के द्वारा जो प्रगट करता है उसे वे ग्रहण करते हैं।

विश्वास और प्रार्थना के द्वारा

ऐसा समय होता है जब आप लोगों पर केवल हाथ रखते हैं और प्रार्थना तथा सिर पर तेल मलकर के द्वारा या चंगाई की आज्ञा देकर उन्हें सेवा प्रदान करते हैं। यह ऐसा समय भी होता है जब पवित्र आत्मा लोगों को चंगा करने हेतु चंगाइयों के वरदानों को प्रगट करता है।

लोगों को उनके विश्वास के अनुसार कार्य करने हेतु प्रेरित करना

पौलुस जब प्रार्थना कर रहा था, तब इस लंगड़े व्यक्ति के मन में विश्वास उत्पन्न हुआ। पौलुस ने जान लिया कि परमेश्वर उसके हृदय में क्या कर रहा है और उसने उसे उसके विश्वास के अनुसार कार्य करने की आज्ञा दी : *लुस्त्रा में एक मनुष्य बैठा था, जो पांवों का निर्बल था। वह जन्म ही से लंगड़ा था, और कभी न चला था। वह पौलुस को बातें करते सुन रहा था और इसने उसकी ओर टकटकी लगाकर देखा*

कि इसको चंगा हो जाने का विश्वास है। और ऊंचे शब्द से कहा, "अपने पांवों के बल सीधा खड़ा हो।" तब वह उछलकर चलने फिरने लगा" (प्रेरितों के काम 14:8–10)।

वह चंगाई का वरदान था या आपके विश्वास के कारण या उस दूसरे व्यक्ति के कारण यह चंगाई हुई या क्या परमेश्वर सार्वभौमिक तौर पर अपनी उपस्थिति और महिमा में कार्य कर रहा था, इसमें उलझे न रहें। परमेश्वर की इच्छा और हमारी इच्छा बीमारों को चंगा होते हुए देखना है। इसलिए इस सत्य में आनंदित हों कि वह व्यक्ति चंगा हो गया और सारी महिमा परमेश्वर को दें।

14

सामर्थ के काम (Working of Miracles)

परिभाषा

सामर्थ के कामों का वरदान प्रकृति के क्रम, जीवन की परिस्थितियों, घटनाओं और मानव योग्यता में अलौकिक हस्तक्षेप है, जिसका परिणाम उस रूप में होता है जिसका वर्णन केवल आश्चर्यकर्म के रूप में किया जाता है। इसमें आश्चर्यजनक रूप से आपूर्ति होना, रचनात्मक चंगाई (उदाहरण : ऑपरेशन द्वारा जो अंग हटा दिए गए थे उनका वापस अलौकिक रूप से पुनःस्थापित किया जाना, प्रत्यारोपणों का गायब हो जाना, आदि), प्राकृतिक नियमों का उल्लंघन और अलौकिक घटनाएं या घटनाओं का बदलना। आश्चर्यकर्म का अंतिम फल लोगों की ज़रूरतें पूरी होती है, खोए हुए प्रभु की ओर फिरते हैं और परमेश्वर की महिमा होती है।

बाइबल परमेश्वर की पुस्तक है जिसने लोगों के मध्य आश्चर्यकर्म किए। नया नियम और पुराना नियम दोनों में आश्चर्यकर्म बड़ी संख्या में हैं। परमेश्वर बदला नहीं है, उसने अपनी सामर्थ खोई नहीं है और आज भी आश्चर्यकर्मों को करता है। सामर्थ के कामों का वरदान है विश्वासी के द्वारा पवित्र आत्मा का उसकी आश्चर्यकर्म की सामर्थ को प्रगट करना।

यहां पर कुछ आश्चर्यकर्म दिए हैं जिन्हें हम पवित्र शास्त्र में पाते हैं।

बाइबल से उदाहरण : पुराना नियम

सारा के बांझ होने पर भी अब्राहम और सारा को उनकी वृद्धावस्था में इसहाक हुआ।

मूसा

- मिस्र में आश्चर्यकर्म
    - लाल समुद्र को दो भागों में बांटना
    - कड़ुवे पानी को मीठा बनाना
    - रोज़ मन्ना और बटेर दिए गए
    - चट्टान से पानी

यहोशू

- यरदन नदी का जल दो भागों में बंटना
- यरीहो की दीवारों का गिरना
- सूर्य और चंद्रमा पूरे दिन आकाश में स्थिर रहे

शिमशोन का अलौकिक रूप से सामर्थ प्राप्त शारीरिक बल

एलिय्याह

- कई दिनों तक प्रतिदिन दो बार कौआ रोटी और मांस लाता था
- सारपत की विधवा का तेल और आटा बढ़ गया
- विधवा के बेटे को मृतकों में से जिलाना
- स्वर्ग से आग उतर कर बलिदान को भस्म करती है
- तीन वर्षों के अकाल के पश्चात वर्षा
- घोड़ों के रथों से आगे दौड़कर जाना
- स्वर्गदूत द्वारा दी गई रोटी और पानी के एक समय के भोजन पर 40 दिनों तक जीवित रहना
- यरदन नदी को दो भागों में बांटना

एलीशा

- यरदन नदी को दो भागों में बांटना

- यरीहो के पानी का चंगा होना
- विधवा के कर्ज़ को दूर करने के लिए एक कुप्पी में तेल का बढ़ना
- बांझ शूनेमी स्त्री को आश्चर्यजनक रूप से संतान
- शूनेमी स्त्री के मृत बच्चे को जिलाना
- साग में से घातक विष को शुद्ध करना
- सौ पुरुषों को बींस रोटियां खिलाईं
- नामान को कोढ़ से चंगाई
- कुल्हाड़ी का पानी पर तैरना
- मृत व्यक्ति का शव एलीशा की हड्डियों से छू गया और वह जिन्दा हो गया

एशाय

- सूर्य की छाया दस अंश पीछे हो गई

बाइबल से उदाहरण : नया नियम

यीशु

- पानी का दाखरस
- हमलावर भीड़ में बिना हानि के निकल जाना
- रोटी और मछलियों को बढ़ाना और पांच हज़ारों को खिलाना
- आन्धी को शांत करना
- पानी का दाखरस
- पानी पर चलना
- मछलियों का आश्चर्यजनक रूप से जाल में आना
- मछली के मुंह में सिक्का
- गूंगे को चंगा करना

पतरस की छाया से लोग चंगे हुए

पौलुस

- कुछ समय के लिए एलिम जादूगर को अन्धा कर दिया
- रूमाल और अंगोछों को लोगों पर रखने के द्वारा असामान्य आश्चर्यकर्म, लोग चंगे हुए और छुड़ाए गए
- माल्टा द्वीप पर सांप के काटने पर भी हानि नहीं

कार्य

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, आश्चर्यकर्म का अंतिम फल लोगों की ज़रूरतों को पूरा करना, खोए हुओं को प्रभु की ओर लाना और यीशु मसीह को महिमा देना है।

चिन्ह, चमत्कार, आश्चर्यकर्म और पवित्र आत्मा के वरदान जो संदेश प्रचार किया गया है उसकी 'गवाही देते हैं।'

इब्रानियों 2:3–4

3 तो हम लोग ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिंत रहकर कैसे बच सकते हैं, जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई, और सुननेवालों के द्वारा हमें निश्चय हुआ?

4 और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिन्हों, अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा इसकी गवाही देता रहा।

परमेश्वर सब प्रकार के आश्चर्यकर्म कर सकता है और करेगा, उन बातों को भी जिनके विषय में अब तक देखा और सुना नहीं गया था, वे भी। इसलिए वह जिस प्रकार के आश्चर्यकर्मों को हमारे मध्य में करेगा उन्हें हमें सीमित नहीं करना है।

सामर्थ के कामों के वरदान को कैसे प्राप्त किया जाता है

सामर्थ के कामों के वरदान का कार्य भी चंगाइयों के वरदान के समान ही है :

परमेश्वर क्या कर रहा है यह जानना

अक्सर जब व्यक्तिगत तौर पर आप किसी आराधना सभा में सेवकाई करते हैं या बोलते/सेवा करते हैं, तब आपको यह ज्ञान मिलता है कि परमेश्वर विशिष्ट आश्चर्यकर्मों को करना चाहता है।

ज्ञान के वचनों के द्वारा

परमेश्वर विशिष्ट वरदानों को प्रगट करता है जिन्हें वह भेजना चाहता है। आप इन्हें ज्ञान के वचन कहते हैं। ये ज्ञान के वचन व्यक्ति के जीवन की विशिष्ट परिस्थितियों का वर्णन करते हैं जिन्हें परमेश्वर बदल देता है। इससे विश्वास में उन्नति होती है और लोग अपना आश्चर्यकर्म पाते हैं।

परमेश्वर की सामर्थ के काम करने वाली उपस्थिति और अभिषेक को पहचानना

आराधना के दौरान आपको परमेश्वर की आश्चर्यकर्म करने वाली सामर्थ और सामर्थ के कामों का अभिषेक उपस्थित होता है। आप उसके अनुसार सेवकाई करने लगते हैं। परमेश्वर जो कुछ करता है उसके प्रतिउत्तर के रूप में लोग आचरण करते हैं।

लोग अपेक्षा और विश्वास के साथ मांग करते हैं

लोग अपेक्षा और विश्वास के साथ यह इच्छा रखते हुए आते हैं कि परमेश्वर उनके जीवन की परिस्थिति में हस्तक्षेप करे और उनके लिए सामर्थ के कामों को भेजे।

सामर्थ के कामों के वरदान को कैसे प्रगट करें

सामर्थ के कामों के वरदान को प्रगट करना चंगाइयों के वरदानों को प्रगट करने के समान ही है।

आप परमेश्वर को जो करते हुए देखते हैं उसे घोषित करें और लोगों को उसके अनुसार कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करें

जब पवित्र आत्मा आश्चर्यकर्म (आश्चर्यकर्मों) के विषय में प्रगट करता है, तब वह आश्चर्यकर्म करेगा, आपको केवल उसे घोषित करना है। लोगों से कहें कि उसके अनुसार कार्य करें। उदाहरण के तौर पर, यीशु ने इस प्रकार कुछ कहा कि मटकों को जल से भर दो, और उसके बाद निकालकर लोगों को बांट दो। या उसने पांच रोटियां और दो मछलियां लीं, धन्यवाद दिया और चेलों से कहा कि वे लोगों को बांटने लगें। उसने पतरस से कहा कि वह जाकर मछली पकड़े और उसके मुंह में सिक्का देखे।

परमेश्वर जिस प्रकार के आश्चर्यकर्म कर रहा है उसके लिए ज्ञान के वचनों को कहें

ज्ञान के वचनों के द्वारा पवित्र आत्मा उन परिस्थितियों के विषय में विशिष्ट बातें प्रगट करेगा जिसमें से लोग गुज़र रहे हैं और यह भी बताएगा कि इन परिस्थितियों को बदलने के लिए परमेश्वर क्या करेगा। आप उन ज्ञान के वचनों को स्पष्ट रूप से कहें। लोग प्रोत्साहित होंगे और विश्वास के द्वारा ग्रहण करेंगे और परमेश्वर के सामर्थ के कामों को या आश्चर्यकर्मों को उनके जीवनों में अनुभव करेंगे।

विश्वास और प्रार्थना के द्वारा परमेश्वर की आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ को प्रगट करें

आप लोगों के साथ मिलकर उनकी विशिष्ट परिस्थिति के लिए प्रार्थना कर सकते हैं और विश्वासियों के रूप में हमें दिए गए अधिकार का

उपयोग करते हुए आप उनकी परिस्थितियों में परमेश्वर के सामर्थ के कामों की घोषणा करें और उन्हें प्रगट करें। जो व्यक्ति सेवा कर रहा है/सामर्थ के कामों को प्रगट कर रहा है और जो व्यक्ति प्राप्त कर रहा है, दोनों को विश्वास में कार्य करना है और आश्चर्यकर्म घटित होंगे।

गलातियो 3:5
इसलिए जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है?

लोगों को उनके विश्वास के अनुसार आचरण करने हेतु प्रेरित करना

हम पवित्र शास्त्र में पाते हैं कि परमेश्वर ने अक्सर लोगों को निर्देश दिए और चाहा कि वे विश्वास से उन निर्देशों का पालन करें। जब लोगों ने उन निर्देशों के अनुसार कार्य किया, तब आश्चर्यकर्म घटित हुए। परमेश्वर आज भी उसी तरह कार्य करता है। परमेश्वर का आत्मा आपका मार्गदर्शन करेगा कि आप विशिष्ट निर्देश दें और जब लोग उसके अनुसार कार्य करेंगे, तब उनकी जीवन परिस्थिति में वे सामर्थ के कामों को प्राप्त करेंगे।

हम परमेश्वर को संदूक में सीमित नहीं कर सकते या उस पर प्रतिबंध या सीमाएं नहीं निर्धारित कर सकते कि परमेश्वर किस प्रकार के आश्चर्यकर्म करेगा। परमेश्वर जो कुछ करने का चुनाव करता है और जो करने से वह प्रसन्न होता है, वह सब कुछ वह कर सकता है और करेगा। *"हमारा परमेश्वर तो स्वर्ग में है; उसने जो चाहा वही किया है"* (भजनसंहिता 115:3)। उसके लिए कुछ भी असम्भव या कठिन नहीं है। *" हे प्रभु यहोवा, तू ने बड़े सामर्थ और बढ़ाई हुई भुजा से आकाश और पृथ्वी को बनाया है! तरे लिये कोई काम कठिन नहीं है"* (यिर्मयाह 32:17)। हमें केवल उसके साथ आगे बढ़ने के लिए तैयार रहना है और जो वह हम पर प्रगट करना चाहता है उसकी घोषणा करना है।

15

विश्वास का वरदान (The Gift of Faith)

परिभाषा

विश्वास का वरदान विश्वासी के हृदय में विश्वास का अलौकिक दान है ताकि वह विशिष्ट परिस्थिति में या समय के विशिष्ट क्षण में आश्चर्यकर्म के लिए परमेश्वर पर भरोसा करे। विश्वास का वरदान सामान्य तौर पर चंगाइयों के वरदानों के साथ और सामर्थ के कामों के वरदानों के साथ सम्बद्ध होता है और कार्य करता है ताकि किसी कार्य को पूरा करे।

आत्मा का वरदान परिपोषित या विकसित विश्वास से भिन्न है, जो समय के साथ व्यक्ति ने परमेश्वर में संवर्धित किया है (रोमियों 12:3, 2 थिस्सल. 1:3)। विश्वास का वरदान सामान्य तौर पर अस्थायी होता है (विशिष्ट समय और परिस्थिति के लिए), जबकि परमेश्वर में आपके व्यक्तिगत विश्वास को आप समय के साथ जीवन के विशिष्ट क्षेत्र में बढ़ाते हैं। अतः, विश्वास के वरदान के परिचालन के अंतर्गत की गई घोषणा परमेश्वर के वचन में आपके व्यक्तिगत विश्वास की घोषणा करने से भिन्न है।

विश्वास का वरदान सम्भावना नहीं है। यह मानकर चलना नहीं है कि परमेश्वर आपके लिए कुछ करेगा, केवल इसलिए क्योंकि आपने उसकी इच्छा की है।

पवित्र शास्त्र में, जब कभी हम विश्वास के असामान्य प्रदर्शन और आश्चर्यकर्मों को देखते हैं, तब यह कहना सुरक्षित होगा कि उस आश्चर्यकर्म के होने के लिए परमेश्वर पर विश्वास करने में सहभागी व्यक्ति (व्यक्तियों) के हृदय में विश्वास की अलौकिक प्रेरणा वहां होना चाहिए।

यहां पर पवित्र शास्त्र से कुछ उदाहरण दिए गए हैं :

बाइबल के उदाहरण : पुराना नियम

मूसा और मिस्र तथा जंगल की यात्रा में आश्चर्यकर्म

सभी आश्चर्यकर्म या सामर्थ के काम जो मूसा ने किए वे उसके हृदय में अलौकिक विश्वास के उण्डेले जाने के परिणामस्वरूप हुए होंगे ताकि परमेश्वर ने उसे जो करने के लिए कहा था, उसे वह करे। जितनी बार उसे परमेश्वर की ओर से विशिष्ट वचन प्राप्त हुआ, उतनी बार उसका हृदय निःसंदेह रूप से इस विश्वास से भर गया होगा कि आश्चर्यकर्म होगा ही। उसने पूरी रीति से यह जानते हुए परमेश्वर की लाठी आगे बढ़ाई कि परमेश्वर ने जो कुछ कहा है वह उसकी आंखों के समक्ष घटित होगा। और हमेशा ही ऐसा हुआ।

यहोशू और सूर्य का रुक जाना

यह आश्चर्यकर्म पहले कभी देखा नहीं गया था। वह पहले कभी हुआ नहीं था। मूसा के द्वारा भी नहीं। और फिर भी उस दिन, जो कुछ यहोशू ने किया उसे करने हेतु उसका हृदय ढाढ़स, साहस और विश्वास से अलौकिक रूप से भर गया होगा। *"और उस समय, अर्थात् जिस दिन यहोवा ने एमोरियों को इस्राएलियों के वश में कर दिया, उस दिन यहोशू ने यहोवा से इस्राएलियों के देखते इस प्रकार कहा, हे सूर्य, तू गिबोन पर, और हे चन्द्रमा, तू अय्यालोन की तराई के ऊपर थमा रह।। और सूर्य उस समय तक थमा रहा, और चन्द्रमा उस समय तक ठहरा रहा जब तक उस जाति के लोगों ने अपने शत्रुओं से पलटा न लिया। क्या यह बात याशार नाम पुस्तक में नहीं लिखी है कि सूर्य आकाश मण्डल के बीचोबीच ठहरा रहा, और लगभग चार पहर तक न डूबा? न तो उससे पहले कोई ऐसा दिन हुआ और न उसके बाद, जिसमें यहोवा ने किसी पुरुष की सुनी हो; क्योंकि यहोवा तो इस्राएल की ओर से लड़ता था" (यहोशू 10:12–14)।*

बाइबल के उदाहरण : नया नियम

हम नए नियम में कई लिखित उदाहरण पाते हैं जो प्रभु यीशु की सेवकाई के द्वारा और उसके चेलों की सेवकाई के द्वारा हुए, मृतक जिलाए गए, लंगड़े और लकवे से पीड़ित चंगे हो गए और असामान्य आश्चर्यकर्म हुए। इन सभी उदाहरणों में, यह मानना सुरक्षित है कि सेवा करने वालों के हृदयों में अलौकिक विश्वास उण्डेला गया था, जिसके परिणामस्वरूप चंगाई या आश्चर्यकर्म हुए।

कार्य

विश्वास का वरदान निश्चित समय में हमारे हृदयों में विश्वास का अलौकिक रूप से उण्डेला जाना या विश्वास की अलौकिक प्रेरणा है। विश्वास का वरदान सामान्य तौर पर चंगाइयों के वरदानों और सामर्थ के कामों के वरदानों के साथ सम्बद्ध होता है और कार्य करता है। विश्वास का वरदान अन्य वरदानों के साथ सम्बद्ध होता है जो हमें ऐसे क्षेत्रों में जाने हेतु प्रेरित करता है जहां हम अक्सर नहीं जाते।

पवित्र आत्मा विश्वास का वरदान कैसे देता है

विश्वास का वरदान और प्रकाशन के अन्य वरदान

हम सभी हमारे विश्वास के अनुपात में (रोमियों 12:6), भविष्यद्वाणियां करते हैं और प्रकाशनों के अन्य वरदानों में (ज्ञान का वचन, बुद्धि का वचन, भविष्यद्वाणी, आत्माओं की पहचान) कार्य करते हैं। अतः हम प्रकाशन के विवरण के एक निश्चित स्तर में कार्य करते हुए आश्वस्त महसूस करते हैं। परंतु जब इन प्रकाशन के वरदानों के साथ विश्वास का वरदान कार्य करता है, तब हम सामान्यतया जिन बातों के अभ्यस्त थे, उनकी तुलना में विस्तार, यथार्थता और विशिष्टता के और ऊंचे स्तर में सेवा करते हुए पूर्णतया नए स्तर में कार्य करते हैं। हम पवित्र आत्मा को अनुमति देते हैं कि वह हमें प्रकाशनों के वरदानों के परिचालन में नए क्षेत्रों में ले जाए।

विश्वास का वरदान और चंगाइयों के वरदान

चंगाई की सेवा करने के कई तरीके हैं और अक्सर हम ऐसा परमेश्वर के वचन में विश्वास के द्वारा करते हैं। परंतु, जब विशिष्ट चंगाई के होने के लिए उस विशिष्ट क्षण में, विश्वास का अलौकिक वरदान हमारे हृदय को भर देता है, तब सामान्यतया हम जिस बात के अभ्यस्त होते हैं, उससे परे जाकर उस कार्य को पूरा करने हेतु हियाव के साथ बोलते और कार्य करते हैं।

विश्वास का वरदान और सामर्थ के काम

विश्वासी होने के नाते, हम सभी परमेश्वर के वचन में विश्वास का उपयोग करते हुए और उसकी प्रतिज्ञाओं के आधार पर, जीवन की परिस्थितियों के ऊपर सारे अधिकार और प्रभुता का उपयोग करते हैं। ऐसे मामलों में परमेश्वर हमारे विश्वास के उत्तर के रूप में कार्य करता है। विश्वास का वरदान सामर्थ के कामों के वरदान के साथ मिलकर हमें ऐसी बातें बोलने और घोषित करने हेतु प्रेरित करता है जिन पर हम सामान्य परिस्थितियों में विचार करने का साहस नहीं करेंगे। परमेश्वर की सामर्थ प्रगट होती है और असामान्य आश्चर्यकर्म घटित होते हैं।

विश्वास के वरदान को कैसे प्रगट करें

जैसा कि पवित्र शास्त्र में लिखित आश्चर्यकर्मों के विषय में देखते हैं, लोगों ने उस विश्वास के अनुसार हियाव से बोला और कार्य किया जो उनके हृदयों में उण्डेला गया था। अतः जब आप जान लेते हैं कि विश्वास का वरदान भेजा जा रहा है, आपका हृदय अलौकिक विश्वास से परिपूर्ण हो रहा है, तब जो कुछ परमेश्वर प्रगट करता है उसकी हियाव के साथ घोषणा करें, उसे बोलें। परमेश्वर जो बोल रहा है उसके अनुसार हियाव के साथ कार्य करें। इससे विश्वास का वरदान भेजा जाता है और परमेश्वर का कार्य पूरा होता है। यीशु को महिमा मिलेगी!

16

आत्मा के वरदानों में बढ़ते जाना

इस अध्याय में, हम कुछ व्यवहारिक उपायों की चर्चा करेंगे। यदि सुसंगत रूप से उनका उपयोग किया गया, तो वे आत्मा के वरदानों में उन्नति करने में हमारी सहायता करेंगे।

1. हमेशा प्रेम से प्रेरित रहें

1 कुरिन्थियों 12:31
क्या सब अनुवाद करते हैं? तुम बड़े से बड़े वरदानों के धुन में रहो!

1 कुरिन्थियों 14:1
प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

प्रत्येक कार्य लोगों के प्रति और परमेश्वर के प्रति प्रेम से प्रेरित होकर करें। प्रेम में चलें, आत्मिक वरदानों की लालसा करें, विश्वास में कदम बढ़ाएं।

गलत उद्देश्यों से आत्मा के वरदानों में बढ़ने का प्रयास न करें, अर्थात, मान्यता की ज़रूरत, आत्म–समर्थन, अहंकार, दूसरों के साथ प्रतियोगिता आदि।

2. आत्मा के वरदानों की आग्रह के साथ लालसा रखें

1 कुरिन्थियों 12:31
परन्तु मैं तुम्हें और भी सब से उत्तम मार्ग बताता हूं।

1 कुरिन्थियों 14:1,12,39,40
1 प्रेम का अनुकरण करो, और आत्मिक वरदानों की भी धुन में रहो, विशेष करके यह कि भविष्यद्वाणी करो।

12 इसलिए तुम भी जब आत्मिक वरदानों की धुन में हो, तो ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो।
39 इसलिए हे भाइयो, भविष्यद्वाणी करने की धुन में रहो और अन्य भाषा बोलने से मना न करो।
40 पर सारी बातें सभ्यता और क्रमानुसार की जाएं।

परमेश्वर प्रत्येक विश्वासी के लिए चाहता है कि वह आत्मा के वरदानों को प्रगट करे। प्रतिदिन के जीवन में आत्मा के वरदानों की इच्छा रखें। स्मरण रखें, आत्मा के वरदानों को कहीं भी, किसी भी स्थान में, किसी भी समय प्रगट किया जा सकता है : आपके घर में, आपकी पाठशाला या कॉलेज या कार्यस्थल में, किसी भी समय जब आप लोगों की सेवा करते हैं। आत्मा के प्रकटीकरण की इच्छा रखें। पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें और बिनती करें कि वह सभी वरदानों को भेजे। यदि आपको लगता है कि विशिष्ट ज़रूरत को पूरा करने हेतु विशिष्ट वरदानों की ज़रूरत है, तो आत्मा के उन विशिष्ट वरदानों की इच्छा रखें।

3. आपमें परमेश्वर के जो वरदान हैं उन्हें चमकाएं

1 तीमुथियुस 4:14
उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

2 तीमुथियुस 1:6–7
6 इसी कारण मैं तुझे सुधि दिलाता हूं, कि तू परमेश्वर के उस वरदान को जो मेरे हाथ रखने के द्वारा तुझे मिला है, चमका दे।
7 क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं, परंतु सामर्थ, और प्रेम, और संयम की आत्मा दी है।

वरदान आलस्य, भय/संदेह, लापरवाही आदि के कारण निष्क्रिय बने रहते हैं। अन्य अन्य भाषाओं में प्रार्थना करने के द्वारा आपके अंदर के वरदानों को चमकाएं। आपके जीवन के माध्यम से वरदानों के

प्रकटीकरणों के लिए परमेश्वर से बिनती करने के द्वारा अपने वरदानों को चमकाएं। अभियाचना करने के द्वारा वरदानों को चमकाएं – अपने आपको ऐसी परिस्थितियों में रखकर जहां आपको लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने हेतु आत्मा के वरदानों की आवश्यकता है। हर समय अपने आत्मिक जीवन में दृढ़ बने रहें। आप परमेश्वर के वचन, प्रार्थना, और व्यक्तिगत आज्ञाकारिता के जीवन के अनुपालन के द्वारा परमेश्वर के साथ सहभागिता और निकटता का सुसंगत जीवन बनाए रखने के द्वारा ऐसा कर सकते हैं।

4. सामंजस्य बनाए रखें

गलातियों 5:25
यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।

आत्मा में चलने का अर्थ आत्मा के साथ कदम मिलाकर चलना है। हमेशा ऐसे चलें कि आप आत्मा के साथ सामंजस्यता बनाए रखें। सचेत रहें और पवित्र आत्मा की सुनें। अपेक्षा करें कि आत्मा आपसे बातें करे, आप पर मंडराए, आपकी अगुवाई करे, आपका मार्गदर्शन करे, आदि। पवित्र आत्मा के साथ निरंतर सहभागिता बनाए रखें। पाप और अधर्म से दूर रहें।

5. शांत और स्थिर बने रहें

यशायाह 11:2
और यहोवा की आत्मा, बुद्धि और समझ की आत्मा, युक्ति और पराक्रम की आत्मा, और ज्ञान और यहोवा के भय की आत्मा उस पर ठहरी रहेगी।

गिनती 11:25–26
25 तब यहोवा बादल में होकर उतरा और उसने मूसा से बातें कीं, और जो आत्मा उसमें थी उसमें से लेकर उन सत्तर पुरनियों में समवा दिया; और जब वह आत्मा उनमें आई तब वे नबूवत करने लगे। परंतु फिर और कभी न की।

26 परंतु दो मनुष्य छावनी में रह गए थे, जिनमें से एक का नाम एलदाद और दूसरे का मेदाद था, उनमें भी आत्मा आई; ये भी उन्हीं में से थे जिनके नाम लिख लिये गये थे, पर तम्बू के पास न गए थे, और वे छावनी ही में नबूवत करने लगे।

आना, उतर आई इन शब्दों के लिए इब्रानी में 'दनंबी' शब्द है जिसका अर्थ है, स्थिर रहना, बने रहना, शांत रहना, स्थिर हो जाना, वास करना।

लोगों पर आत्मा के मंडराने का उल्लेख करने के लिए एक शब्द का उपयोग किया गया है 'आना।' क्योंकि पवित्र आत्मा हम पर उतर आता है, व्यावहारिक दृष्टि से, 'स्थिर होना' हमारे लिए महत्वपूर्ण है, हमारी आत्मा में शांत और निश्चल अवस्था में होना, भले ही हमारे चारों और बहुत शोर और गड़बड़ी क्यों न हो। सारे विकर्षणों, गड़बड़ियों और आपको उत्तेजित करने वाली बातों के विरोध में आपके मन की रक्षा करें। अपनी आत्मा में शांत और स्थिर रहें।

6. आत्मा की प्रेरणा से साहस का कदम बढ़ाएं

प्रेरितों के काम 11:12
तब आत्मा ने मुझ से उनके साथ बेखटके हो लेने को कहा, और ये छः भाई भी मेरे साथ हो लिए और हम उस मनुष्य के घर में गए।

आत्मा आपके आत्मा के ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा और अन्य माध्यमों से जिनके द्वारा वह आपसे बातें करता है, जो कुछ कह रहा है उसे ग्रहण करें। आत्मा के साथ संवाद स्थापित करें और पहचानें कि वह क्या चाहता है कि आप करें। उसके बाद पवित्र आत्मा जो करने हेतु आपकी अगुवाई कर रहा है उसके प्रति समर्पित हों। जैसी वह आज्ञा देता है उसके अनुसार बोलें या कार्य करें। वचन भेजें। व्यक्ति की सेवकाई करें। सामान्य तौर पर, जब आप पहले कुछ निर्देशों को पूरा करने हेतु कदम बढ़ाते हैं और जब आप सेवा करते हैं, तब पवित्र आत्मा आपको

और निर्देश देगा। आत्मा की इच्छा के अनुसार आत्मा के वरदानों में आगे बढ़ते जाएं और उनका उपयोग करें।

जब वह हम पर उतर आता है, तब हमारा उत्तर होना चाहिए : **कार्य करना, बोलना, उसे समर्पित होना**

प्रकाशन. उक्त वचन. विश्वास का कार्य त्र आत्मा का प्रकटीकरण

और सामर्थ आपके पास पहले से जो सामर्थ है उसके उपयोग से प्राप्त होती है।

7. खतरा मोल लें

1 थिस्सलुनीकियों 5:19–21
19 आत्मा को न बुझाओ।
20 भविष्यद्वाणियों को तुच्छ न जानो।
21 सब बातों को परखो; जो अच्छी है उसे पकड़े रहो।

जब आत्मा हमारी अगुवाई करता है और हमें प्रोत्साहित करता है, तब हमें आत्मा को बुझाना नहीं है। आप जितना अधिक कदम बढ़ाने और खतरों को मोल लेने के लिए तैयार रहते हैं, उतने अधिक आप अपने आपको पवित्र आत्मा के लिए उपलब्ध बनाते हैं, तथा आप और प्रकाशन देख पाएंगे। जब आप जान लेते हैं कि पवित्र आत्मा कुछ कहने या करने के लिए आपकी अगुवाई कर रहा है या आपको प्रेरित कर रहा है, तो 'कारण को अलग हटाकर रखने' के लिए तैयार हो जाएं (अपने दिमाग को मार्ग से हटाएं)। पवित्र आत्मा जो कहता है उसमें से प्रत्येक बात हमारी बुद्धि या तर्क के अनुरूप नहीं होगी। यहीं आपको कदम बढ़ाना है और खतरा मोल लेना है।

स्मरण रखें, यह आपकी ख्याति के लिए नहीं है। यह परमेश्वर की महिमा करने और लोगों की सेवा करने के लिए है। अपने आपके

लिए मर जाएं। पवित्र आत्मा के वरदानों में सेवा करने के द्वारा आप अपने आपके लिए कुछ करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं। आप यहां पर मात्र परमेश्वर की महिमा करने और लोगों की सेवा करने के लिए हैं।

8. अभ्यास करें, अभ्यास करें, अभ्यास करें

2 तीमुथियुस 2:21
यदि कोई अपने आपको इनसे शुद्ध करेगा, तो वह आदर का बर्तन, और पवित्र ठहरेगा; और स्वामी के काम आएगा, और हर भले काम के लिए तैयार होगा।

पात्रों के रूप में, हमें उपयोगी बनने और तैयार रहने और तैयार किए जाने की ज़रूरत है। उपयोगी बनने और तैयार किए जाने का भाग है सुसज्जित और प्रशिक्षित होना। वरदान परमेश्वर की ओर से आए। परंतु हम प्रशिक्षण पा सकते हैं, परिपक्व हो सकते हैं और पवित्र आत्मा के साथ मिलकर कार्य करने हेतु अपनी योग्यता को सिद्ध बना सकते हैं, ताकि उसकी सामर्थ को और बेहतर तथा उत्तम रीति से प्रगट कर सकें। भले ही आपसे गलतियां हों, आप गड़बड़ाने लगें, फिर भी हताश न हों। इच्छा करते रहें और कदम बढ़ाते रहें – दूसरे शब्दों में, अभ्यास करते रहें।

9. प्रत्येक अनुभव से सीखें

आत्मा के वरदानों को प्रगट करते समय अपने अनुभवों पर मनन करें। अपनी सफलताओं से और असफलताओं से भी सीखें। सफलताओं पर उन्नति करते जाएं और इससे पहले आप से जो गलतियां हुईं उनसे बचें।

10. विश्वास में बढ़ें

रोमियो 12:6
और जबकि उस अनुग्रह के अनुसार जो हमें दिया गया है, हमें भिन्न–भिन्न वरदान मिले हैं, तो जिसको भविष्यद्वाणी का दान मिला हो, वह विश्वास के परिमाण के अनुसार भविष्यद्वाणी करे।

गलातियों 3:5
इसलिए जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम में सामर्थ के काम करता है, वह क्या व्यवस्था के कामों से या विश्वास के सुसमाचार से ऐसा करता है?

वरदान विश्वास से प्रगट होते हैं। आप परमेश्वर के वचन में मनन करने के द्वारा, परमेश्वर अन्य लोगों के द्वारा कैसे कार्य करता है इस विषय में और कहानियां सुनने के द्वारा, और अलौकिक रीति से परमेश्वर के प्रकटीकरण के लिए परमेश्वर का अनुसरण करने वाले लोगों की संगति में रहने से विश्वास में उन्नति करते हैं। अपने विश्वास को उन्नत रखें। मनन करें और परमेश्वर के अभिषेक पर, पवित्र आत्मा की सामर्थ पर और आत्मा के वरदानों पर परमेश्वर के वचन की घोषणा करें।

11. उपवास के साथ प्रार्थना करें

जितना अधिक आप प्रार्थना करेंगे उतना अधिक आप परमेश्वर से सुनेंगे और अधिक विस्तार के साथ सुनेंगे। नया दाखरस रखने वाली नई मशकें बिना उपवास और प्रार्थना के नहीं आतीं। अन्य अन्य भाषाओं में बहुत प्रार्थना करें।

12. प्रकाशन (Impartation) प्राप्त करें

रोमियो 1:11
क्योंकि मैं तुमसे मिलने की लालसा करता हूं कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूं, जिससे तुम स्थिर हो जाओ।

1 तीमुथियुस 4:14
उस वरदान से जो तुझ में है, और भविष्यद्वाणी के द्वारा प्राचीनों के हाथ रखते समय तुझे मिला था, निश्चिन्त मत रह।

परमेश्वर के वरदान परमेश्वर की ओर से आते हैं। वही एकमात्र स्रोत है। *"जब तक मनुष्य को स्वर्ग से न दिया जाए, तब तक वह कुछ नहीं पा सकता"* (यूहन्ना 3:27)। परंतु परमेश्वर हमारे जीवनों में विद्यमान वरदानों पर और दान और अभिषेक को सक्रिय बनाने (आरम्भ करने) और प्रदान करने हेतु लोगों को उपयोग करता है। उत्प्रेरण या प्रकाशन पाना आपके जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के बल और आयामों में और सामर्थ जोड़ता है। ऐसा हाथों को रखने और प्रार्थना के द्वारा, उनकी सेवकाई के द्वारा ग्रहण करने से (उनके प्रचार को सुनने, उनकी पुस्तकों को पढ़ने आदि) और संगति से होता है (उनकी निकट संगति में कार्य करने से)।

13. आपके कार्य और अभिषेक में बढ़ें

प्रत्येक विश्वासी का एक कार्य है जिसके लिए परमेश्वर अनुग्रह और साथ में वरदान देता है। वरदान सदस्यता के कार्यों और सेवा पदों को सक्षम बनाते हैं। जैसे जैसे आप आपके कार्य में बढ़ते जाएंगे, वैसे–वैसे आप देखेंगे कि परमेश्वर के दान और वरदान भी आपके जीवन में बढ़ते जा रहे हैं। आपकी सेवकाई के कार्य के लिए अभिषेक में बढ़ौतरी आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण में बढ़ौतरी उत्पन्न करती है।

17

वरदानों को प्रगट करने हेतु उचित नींव

जब हम आत्मा के अधिकाधिक प्रकटीकरणों को पाने का प्रयास करते हैं, तब हमें यह सावधानी भी रखना है कि हम मज़बूत बुनियाद बनाए रखें जहां से हम कार्य करते हैं। इस अध्याय में, पवित्र आत्मा के वरदानों में आगे बढ़ते समय, हम कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों के विषय में मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं जिनका हमें पालन करना है। इनमें से कई ऐसी हैं जिन्हें उन स्त्री और पुरुषों के जीवनों में देखा गया है जिन्हें परमेश्वर ने वर्तमान समय में तथा कलीसिया के इतिहास में बहुतायत से उपयोग किया। हम उनकी सफलताओं से और उनके द्वारा की गई गलतियों से भी सीख सकते हैं। इन इन्हें अपने हृदयों में आत्मसात करें।

1. प्रभु के साथ जो रिश्ता है उससे कार्य करें, पद्धतियों और तकनीकों के आधार पर नहीं

यूहन्ना 15:4–5

4 "तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुममें; जैसे डाली यदि दाखलता में बनी न रहे, तो अपने आप से नहीं फल सकती, वैसे ही तुम भी यदि मुझ में बने न रहो तो नहीं फल सकते।

5 "मैं दाखलता हूं, तुम डालियां हो; जो मुझ में बना रहता है, और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते।

आत्मा के वरदान किस प्रकार कार्य करते हैं इस विषय में सिखाया जाना और प्रशिक्षण प्राप्त करना अच्छा है, परंतु यह स्मरण रखें कि राज्य की प्रत्येक बात राजा के साथ व्यक्तिगत सम्बंध पर आधारित है। दृढ़ हो जाएं और प्रभु के साथ आपके व्यक्तिगत रिश्ते में

और निकटता में निरंतर बढ़ते जाएं। पद्धतियों और कार्य से नहीं, परंतु रिश्ते के माध्यम से कार्य करें।

2. परमेश्वर में आपकी पहचान में दृढ़ हों

वरदानों के द्वारा जीवन न बिताएं। आत्मा के वरदान आपको परिभाषित नहीं करते या आपका वर्णन नहीं करते। ये केवल साधन हैं जिनका उपयोग हम लोगों की सेवा के लिए करते हैं। आपकी पहचान वरदानों में या जिन कार्यों में आप आगे बढ़ते हैं, उनमें आधारित न करें। हमेशा उस परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत चालचलन के आधार पर जीएं, जिनके आप हैं और आप मसीह में जो हैं।

परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, परमेश्वर आपके निकट है आदि महसूस करने हेतु यदि आपको आत्मिक प्रकटीकरणों की ज़रूरत है, तो आप अपनी पहचान वरदानों में आधारित कर रहे हैं। यह गलत है। आप वही हैं जो परमेश्वर अपने लिखित वचन में कहता है कि आप हैं।

यदि आप चाहते हैं कि आपको अच्छा महसूस हो इसलिए अन्य लोग आपके वरदानों के विषय में सुनें, तो आप अपनी पहचान आपके वरदान पर आधारित कर रहे हैं। यह असुरक्षा का चिन्ह है।

जो लोग तिरस्कार की समस्या से जूझ रहे हैं, वे आत्मा के वरदानों में कार्य करने की प्रतिक्रिया के रूप में प्रशंसा की आशा करते हैं। अच्छा होगा कि हम तिरस्कार से चंगाई पाएं, और परमेश्वर में स्वास्थ्य और सुरक्षा के स्थान से कार्य करें।

मूल्य और कार्य के बीच के अंतर को पहचानें। परमेश्वर में आपका मूल्य उन वरदानों पर आधारित नहीं है जो आपके द्वारा कार्य कर रहे हैं। आत्मा के वरदान आपके द्वारा केवल इसलिए व्यक्त होते हैं कि आपको दूसरों की सेवा करने में सहायता करें, और वे आपके मूल्य को परिभाषित नहीं करते।

3. मसीह समान चरित्र प्रगट करें

इफिसियों 4:15

वरन् प्रेम से सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएं।

फलों के साथ वरदानों को परोसें। आत्मा में चलना यह सुनिश्चित करता है कि हमारे जीवन आत्मा का फल लाते हैं। जब हम आत्मा में चलते हैं, आत्मा का फल लाते हैं, और साथ ही साथ आत्मा के वरदानों को प्रगट करते हैं, तो हम इस तरह से सेवा कर पाने में सक्षम होते जिससे लोग सहज हमारे जीवनों के द्वारा ग्रहण कर पाएं।

मसीह सदृश्य चरित्र वाला आपका जीवन लोगों में भरोसा उत्पन्न करता है। लोगों के मध्य आप जितना भरोसा प्राप्त करते हैं, उतना अधिक वरदानों में कार्य करने हेतु आप स्वतंत्रता और विश्वास का उपयोग कर सकते हैं।

यीशु का अनुसरण करें। आत्मा के वरदानों में आगे बढ़ते समय यीशु को प्रगट करें।

आपके हृदय की और आपके उद्देश्यों की रक्षा करें। वह हमेशा परमेश्वर की महिमा के लिए हो। स्वार्थ को मार्ग से दूर करें। इसका सम्बंध आपसे नहीं है! इसका सम्बंध परमेश्वर से और लोगों से है। अपनी बढ़ौतरी के लिए आत्मिक वरदानों का उपयोग न करें। सस्ती लोकप्रियता, आत्मोन्नति, ईर्ष्या या प्रतियोगिता से दूर रहें। प्रेम आपकी मुख्य प्रेरणा हो।

लोगों की भावनाओं के साथ न खेलें। उत्तेजनात्मक प्रचार, सनसनी, भावनाओं को उभारना, झूठे दावे करना और झूठे वायदे करना आदि बातों से बचें। अतिशयोक्तिपूर्ण बयानों से बचें। अपनी अति आत्मिकता को प्रोत्साहन देने वाले बयान करने से बचें (यूहन्ना 7:18)।

प्रकाशन से अधिक बुद्धि के उच्च मूल्य को समझें, क्योंकि बुद्धि के बिना, प्रकाशन का गैर–इस्तेमाल होता है।

4. सही सिद्धांत (शिक्षा) का पालन करें। सुधार के लिए तैयार रहें। सीखने के लिए तैयार रहें।

1 तीमुथियुस 4:16
इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा तो तू अपने, और अपने सुननेवालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।
इब्रानियों 13:9
नाना प्रकार के और ऊपरी उपदेशों से न भरमाए जाओ, क्योंकि मन का अनुग्रह से दृढ़ रहना भला है, न कि उन खाने की वस्तुओं से जिनसे काम रखनेवालों को कुछ लाभ न हुआ।

अजीब और विभिन्न प्रकार की शिक्षाओं को अपनाना 'खराब भोजन' खाने के बराबर है जो आपके लिए लाभदायक नहीं होगा और आपको हानि भी पहुंचा सकता है।

परमेश्वर के वचन की मुख्य और आवश्यक शिक्षा के साथ बने रहें और उस शिक्षा के साथ बने रहें जो आपको मसीह की समानता में परिपक्व होने में सहायता करती है (इब्रानियों 6:1–2)। इससे आप लम्बे समय तक सुरक्षित रह सकते हैं।

यीशु का उदाहरण अपनाएं। उसने तरस खाया, परमेश्वर के वचन का प्रचार किया और सिखाया, बीमारों को चंगा किया, दुष्टात्माओं को निकाला, आत्माओं को जीता और शिष्य बनाए। उसने हमें आज्ञा दी है कि हम वही काम करें ताकि परमेश्वर के तरस को प्रगट कर सकें, आत्माओं को जीत सकें और शिष्य बना सकें। अतः सभी आत्मिक प्रकटीकरणों में, हमें यीशु को महिमान्वित होते हुए देखने की, लोगों को उद्धारदायक विश्वास में आते हुए, शिष्यों के रूप में दृढ़ होते हुए देखने की और उनके प्रति परमेश्वर की करूणा को अनुभव करते हुए देखने की ज़रूरत है। अतः लोगों की ज़रूरतों को पूरा करने वाली चंगाइयों,

छुटकारे और आश्चर्यकर्मों का अनुसरण करें जो लोगों की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

परमेश्वर के वचन के अपने व्यक्तिगत अध्ययन में बढ़ना और सही शिक्षा में दृढ़ होना आपको इस बात को परखने में सहायता करेगा कि आप क्या प्राप्त कर रहे हैं (अर्थात प्रकाशन के वरदान) और गलत शिक्षा को आगे बढ़ाने से रोकेगा।

कुछ सामान्य गलतियों से बचें :

श्रेष्ठता का भ्रम और अहंकारोन्माद : इस विचार में धोखा खाना कि हम बहुत सामर्थी बन गए हैं, बहुत महत्वपूर्ण हैं। हमने कलीसिया के इतिहास में देखा है कि जॉन अलेक्ज़ैंडर डोवी जैसे लोगों ने अपने आपको एलिय्याह भविष्यद्वक्ता करके घोषित किया था, आदि।

उद्धारकर्ता की मानसिकता : मानो आप ही वह व्यक्ति होंगे जिसका उपयोग परमेश्वर प्रत्येक व्यक्ति को छू लेने के लिए करेगा, आपके पास सारे उत्तर हैं, और आप के बिना लोग जी नहीं सकते।

सैद्धान्तिक भूल : आप जो कुछ सिखाते हैं और प्रचार करते हैं उसे परमेश्वर की पूर्ण मनसा के साथ प्रमाणित करें। परमेश्वर आपको सामर्थी प्रकाशनों में उपयोग करता है इसका अर्थ यह नहीं है कि आप मन में आने वाली किसी भी बात का प्रचार कर सकते हैं। विलियम ब्रैनहैम् को परमेश्वर ने भले ही बड़ी सामर्थ के साथ इस्तेमाल किया, फिर भी जीवन के बाद वाले क्षणों में वह अपने प्रचार और वचन की शिक्षा में भूल कर बैठा।

नव युग की शिक्षा : बाइबल के सत्य को नव युग, पूर्वी गुढ़वाद और अन्य बाइबल विपरीत आत्मिक शिक्षाओं के साथ न मिलाएं।

याद रखें, अलौकिक हमेशा ही असाधारण नहीं होता। असाधारण की तलाश में अलौकिक को खो न बैठें (1 राजा 19:9–14)।

लिखित वचन हमारे लिए सनातन जीवित वचन को प्रगट करता है। *"तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है"* (यूहन्ना 5:39)। सनातन वचन का हमारा प्रकाशन उसके लिखित वचन के माध्यम से आता है। सनातन वचन के किसी भी प्रकाशन को लिखित वचन के प्रकाश में प्रमाणित किया जाए। सनातन वचन का प्रकाशन जो आत्मा के द्वारा आता है, वह लिखित वचन से भी सहमत होना चाहिए (1 यूहन्ना 5:7)।

सीखने के लिए तैयार रहें, सुधार के लिए तैयार रहें।

भजनसंहिता 141:5
धर्मी मुझ को मारे तो यह कृपा मानी जाएगी, और वह मुझे ताड़ना दे, तो यह मेरे सिर पर का तेल ठहरेगा; मेरा सिर उस से इन्कार न करेगा। लोगों के बुरे काम करने पर भी मैं प्रार्थना में लवलीन रहूंगा।

भजन 141 दाऊद का भजन है। हम दाऊद के हृदय को देखते हैं जो धर्मी से सुधार पाने के लिए तैयार रहता था। दाऊद ने इसका उल्लेख 'उत्तम तेल' के रूप में किया। यह उसके जीवन को आशीषित करता था और समृद्ध बनाता था और हमारे लिए भी यही करेगा।

5. आत्म–सयंम बढ़ाएं

गलातियों 5:22–23
22 पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज,
23 कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम हैं; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।

आत्म–संयम अपने आप पर शासन करने की, अपने आपको पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में रखने की योग्यता है, न कि भावनात्मक

या शारीरिक आवेश बह जाना। उदाहरण के तौर पर, आपको भविष्यद्वाणी का संदेश अपने आप तक रोककर रखने की ज़रूरत हो सकती है, जब तक कि उसे बताने का सही समय न आए।

वरदानों को प्रगट करने की आपकी इच्छा में अभिमानी न बनें। यदि परमेश्वर कुछ करने हेतु आपकी अगुवाई करता है, तो उसे करें। अन्यथा, अपने उत्साह पर संयम रखें और बुद्धि को शासन करने की अनुमति दें। उदाहरण के तौर पर : यदि परमेश्वर बोल रहा है, तो भविष्यद्वाणी करें। अन्यथा आत्म–संयम का उपयोग करें और शांत रहें। जब आत्मा प्रेरित करता है, तो साहस के साथ कदम बढ़ाएं, खतरा मोल लें और विश्वास के साथ आगे बढ़ें। हमेशा परमेश्वर की ओर से प्राप्त बुद्धि के साथ चलें।

6. किसी उत्तम स्थानीय कलीसियाई समुदाय में बढ़ें

हम एक देह, परिवार, सेना का अंग हैं। परमेश्वर ने हमें बनाया है और हमें इस तरह से बनाया है कि हम दूसरों पर निर्भर हैं। अतः उत्तम रीति से जुड़े रहें और उत्तम स्थानीय कलीसिया में उत्तम स्वस्थ रिश्तों में रहें।

कोई भी स्थानीय कलीसिया सिद्ध नहीं है। परंतु स्मरण रखें, कि परमेश्वर हमारे आसपास के लोगों की असिद्धताओं को उपयोग करता है ताकि हम में जो अपरिपूर्णता वह देखता है, उसे सिद्ध बनाए।

यशायाह 65:8
यहोवा यों कहता है, जिस भांति दाख के किसी गुच्छे में जब नया दाखमधु भर आता है, तब लोग कहते हैं, उसे नाश मत कर, क्योंकि उसमें आशीष है; उसी भांति मैं अपने दासों के निमित्त ऐसा करूंगा कि सभों को नाश न करूंगा।

नया दाखरस गुच्छों में पाया जाता है – एक अकेले अंगूर में नहीं। ऐसे वातावरण में बढ़ें जहां आत्मा के वरदानों का पोषण होता है, जहां लोगों को प्रेम के साथ सुधारा जाता है और आत्मा की बातों में परिपक्व होने के लिए उनका मार्गदर्शन किया जाता है और आत्मा के प्रकटीकरणों को मुक्त करने की आज़ादी उन्हें दी जाती है।

बसे रहें। यहां वहां भटकते न रहें। पवित्र आत्मा का वर्णन हवा और पानी के रूप में किया गया है – विश्वासी जीवित पत्थर है। पवित्र आत्मा "कार्य करता है", विश्वासी को "रोपा जाना है", "जड़ पकड़ना है", "स्थापित होना है।"

उन लोगों के साथ सही रिश्ते में चलें जो आपके अगुवे हैं।

इब्रानियों 13:17
अपने अगुवों की मानो; और उनके आधीन रहो, क्योंकि वे उनके समान तुम्हारे प्राणों के लिए जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

ऑल पीपल्स चर्च के साथ साझेदारी करें

ऑल पीपल्स चर्च स्थानीय कलीसिया के रूप में सम्पूर्ण भारत में सुसमाचार प्रचार करते हुए, विशेषकर उत्तर भारत में, उसकी सीमाओं से परे सेवा करता है। उसका विशेष लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवकाई के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। जवानों के लिए कई प्रशिक्षण सम्मेलन, मसीही अगुवों के लिए सभाओं का सम्पूर्ण वर्ष भर आयोजन किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकों की कई हजारों प्रतियां अंग्रेजी में और अन्य कई भारतीय भाषाओं में विनामूल्य वितरीत की जाती हैं, उसके पीछे उद्देश्य यह है कि विश्वासियों को वचन और आत्मा में उन्नति प्रदान करें।

हम आपको निमंत्रण देते हैं कि एक समय का दान भेजकर या मासिक आर्थिक दान भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ साझेदारी करें। सम्पूर्ण राष्ट्र में इस कार्य के लिए जो भी रकम आप भेज सकते हैं, उसके लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ रहेंगे।

आप अपने दान चेक/बैंक ड्रॉट के माध्यम से ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर के नाम पर हमारे कार्यालय के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा हमारे बैंक खाते के विवरण का उपयोग कर आप अपना योगदान सीधे बैंक में डाल सकते हैं।

Account Name: All Peoples Church
Account Number: 0057213809
IFSC Code: CITI0000004
Bank: Citibank N.A., No. 5, M.G. Road, Bengaluru, Karnataka 560001

कृपया ध्यान दें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफसीआरए परमिट नहीं है और इस कारण केवल भारतीय नागरिकों के बैंक योगदान ही स्वीकार किए जा सकते हैं। अपना दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से लिखें कि आप एपीसी सेवकाई के किस क्षेत्र के लिए दान भेजना चाहते हैं। अतिरिक्त जानकारी के लिए कृपया इस स्थान को भेंट दें ***apcwo.org/give***

उसी तरह, हमारे लिए और हमारी सेवकाई के लिए जब भी हो सके, प्रार्थना करना न भूलें।

धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

1. जागृति में कलीसिया
2. एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है
3. प्रत्येक काम का एक समय
4. प्राचीन चिन्ह
5. आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान
6. काम के प्रति बाइबल का रवैया
7. यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्धनों को तोड़ना
8. बदलाव
9. आदर संहिता
10. अपनी बुलाहट से समझौता न करें
11. आशा न छोड़ें
12. ईश्वरीय द्भपा
13. पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना
14. नींवें ट्रैक 1
15. आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना
16. परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना
17. परमेश्वर एक भला परमेश्वर है
18. परमेश्वर का वचन
19. अपने पास्टर की कैसे सहायता करें
20. सच्चाई
21. राज्य के निर्माता
22. कलह रहित जीवन जीना
23. खुला हुआ स्वर्ग
24. हमारा छुटकारा
25. निंदा नहीं!
26. मन की जीत
27. परमेश्वर का भवन
28. समर्पण की सामर्थ
29. परिशद्ध करने वाले की आग
30. परमेश्वर का छुड़ानेवाला हृदय
31. ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा
32. अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ
33. हम भिन्न हैं
34. हम मसीह में कौन हैं
35. कार्यस्थल पर महिलाएं
36. जड़ पर कुल्हाडी रखना
37. विवाह और परिवार
38. बेदारियां, परमेश्वर की मुलाकातें और कार्य
39. चंगाई और छुटकारे की सेवा करना

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पीडीएफ संस्करण विनामूल्य डाऊनलोड के लिए हमारी कलीसिया के वेबसाईट पर **apcwo.org/publications** उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की आपकी विनामूल्य मुद्रित प्रति प्राप्त करने हेतु, **bookrequest@apcwo.org** इस पते पर ई–मेल करें या पत्र लिखें।

वैसे ही, विनामूल्य ऑडियो और विडियो संदेशों, संदेश की टिप्पणियों, **(apcwo.org/sermons)** टी.वी. कार्यक्रमों **(apcwo.org/tv)** और अन्य कई संसाधनों के लिए हमारे चर्च के वेबसाईट को भेंट दें।

सप्ताहांत स्कूल

बैंगलोर में होने वाले सप्ताहांत स्कूल, जीवन और सेवकाई के विशिष्ट क्षेत्रों में विश्वासियों को प्रशिक्षित और सुसज्जित करने हेतु तैयार किए गए हैं। इन्हें सुविधा के अनुसार सप्ताह के अंत में (शनिवार/रविवार), सुबह 10 से भाम 5 बजे तक लिया जाता है। सप्ताहांत स्कूल सभी कलीसियाओं के और सभी डिनॉमिनेशन के सभी विश्वासियों के लिए हैं, जो प्रशिक्षण पाने और सेवकाई के लिए तैयार होने में रूचि रखते हैं। नीचे सप्ताहांत स्कूलों की सूची दी गई है जो इस समय आयोजित किए जा रहे हैं।

भविष्यद्वक्ता की सेवकाई का सप्ताहांत स्कूल
चंगाई और छुटकारे का सप्ताहांत स्कूल
आत्मा के वरदानों के प्रकटीकरण पर सप्ताहांत स्कूल
प्रार्थना और मध्यस्थी का सप्ताहांत स्कूल
आंतरिक स्वास्थ्य का सप्ताहांत स्कूल
जीवन–शैली सुसमाचार प्रचार का सप्ताहांत स्कूल
परमे वर कार्य कर रहा है पर सप्ताहांत स्कूल
शहरी मिशन और कलीसिया रोपण पर सप्ताहांत स्कूल
मसीही पक्ष समर्थन (Christian Apologetics) पर सप्ताहांत स्कूल
कृपया वर्तमान समय–सारणी और ऑन लाईन पंजीयन हेतू इस वेबसाईट को भेंट दें : **apcwo.org/weekendschool**

मसीही अगुवों की सभा का आयोजन करें

ऑल पीपल्स चर्च पासबानों, स्थानीय कलीसियाई अगुवों, मसीही संस्थाओं के अगुवों और मसीही सेवकाई में सेवारत अन्य लोगों के लिए आत्मा से अभिशिक्त सुसज्जीकरण एवं सहायता प्रदान करते हैं। अभिशिक्त शिक्षा, आत्मा की अगुवाई से प्रेरित सेवकाई एवं इम्पार्टेशन के अलावा, हमारी टीमें सहभागियों के साथ व्यक्तिगत वार्तालाप और चर्चा करती हैं। प्रत्येक मसीही अगुवों की सभा खास तौर पर दो से तीन दिनों की होती है जो विशिष्ट विषयों पर केंद्रित होती हैं। सहभाग लेने वाले वहां से नवीनीकरण प्राप्त कर, सामर्थ पाकर एवं अधिक प्रभाव तथा प्रभावकारिता के लिए सुसज्जित होकर वहां से जाएंगे। मसीही अगुवों की सभाएं विशिष्ट तौर पर स्थानीय कलीसिया, मसीही सेवकाई, मिशन संस्था या कलीसियाओं के डिनॉमिनेशनल मुख्यालयों और पासबानों द्वारा अपने क्षेत्रों में या अपने नेटवर्क या डिनॉमिने ान के अंतर्गत आयोजित किए जाते हैं। आयोजक संस्था सभा का खर्च तथा सहभागियों को निमंत्रित करने का खर्च वहन करेगी। ऑल पीपल्स चर्च अपनी सेवकाई टीम को स्थानीय अगुवों की महासभा में भाग लेने वाले सहभागियों की सेवा हेतु भेजेगा।

कुछ विशय जिनके सम्बंध में हमारी टीमें सामान्य रूप से सेवकाई प्रदान करती हैं:

- बेदारी, आत्म–जागृति, और परमे वर के कार्य
- उपस्थिति और महिमा
- राज्य के निर्माता
- समतल भूमि
- परमे वर का भवन
- प्रेरित और भविष्यद्वक्ता की सेवकाई
- चंगाई और छुटकारे की सेवकाई करना
- आत्मा के वरदान
- विवाह और परिवार
- संतों को तैयार करना और व्यावसायिक स्थानों में परिवर्तन

अतिरिक्त जानकारी एवम् मसीही अगुवों की सभा के लिए विषयों की वर्तमान सूची हेतु, कृपया इस वेबसाईट को भेंट दें : **apcwo.org/CLC**

मसीही अगुवों की सभा की समय–सारणी एवं योजना के लिए कृपया हमें इस पते पर ईमेल करें : contact@apcwo.org

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एपीसी में हम परमेश्वर का सम्पूर्ण वचन बिना किसी समझोते के साथ पवित्र आत्मा के अभिषेक और प्रकाशन के साथ प्रस्तुत करने के प्रति समर्पित हैं। हमारा विश्वास है कि अच्छा संगीत, रचनात्मक प्रस्तुति, बुद्धिमानीपूर्ण पक्ष समर्थन, समकालीन सेवकाई की तकनीकें, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि पवित्र आत्मा के चिन्हों, चमत्कारों, आश्चर्यकर्मों और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ वचन की घोषणा करने की परमेश्वर द्वारा नियुक्त पद्धति का स्थान नहीं ले सकते (1 कुरिन्थियों 2:4, 5; इब्रानियों 2:3, 4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारी पद्धति पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा आवेश लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह सदृश्य परिपक्वता है।

हमारा मुख्यालय बैंगलोर में है, परंतु ऑल पीपल्स चर्च की भारत की अन्य कई स्थानों में शाखाएं हैं। ऑल पीपल्स चर्च की वर्तमान सूची और सम्पर्क सूचना के लिए कृपया हमारे वेबसाईट को भेंट दें : **www.apcwo.org/locations** या इस पते पर ई–मेल भेजें : contact@apcwo.org

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने– आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है–जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

Notes

Notes

DOWNLOAD THE FREE APP!

Search for
"All Peoples Church Bangalore"
in the App or Google play stores.

Available on the App Store

ANDROID APP ON Google play

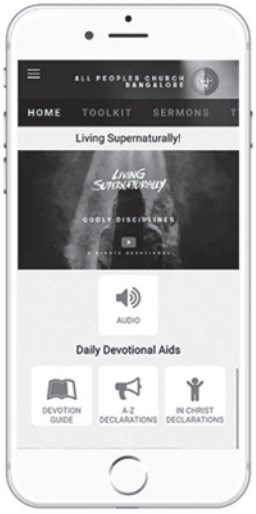

A daily 5-minute video devotional.
A daily Bible reading and prayer guide.
5-minute Sermon summary.
Toolkit with Scriptures on various topics to build faith and information to share the Gospel.
Resources with sermons, sermon notes, TV programs, books, music and more.

IF YOU LOVE IT, TELL OTHERS ABOUT IT!

ऑल पीपल्स चर्च
बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र

ऑल पीपल्स चर्च बाइबल कॉलेज और सेवा प्रशिक्षण केंद्र (एपीसी–बीसी) भारत के बैंगलोर में आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त, सक्रिय सेवकाई में सहभागी प्रशिक्षण और सिद्धांत की दृष्टि से सही एवं परमेश्वर के वचन के बौद्धिक दृष्टि से प्रेरणादायक अध्ययन के साथ पवित्र आत्मा की अलौकिक सामर्थ में सेवकाई के लिए तैयारी प्रदान करता है। हम सेवकाई के लिए सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में विश्वास करते हैं और ईश्वरीय चरित्र, परमेश्वर के वचन में गहरी बुनियाद, और चिन्ह, चमत्कारों और आश्चर्यकर्मों पर ज़ोर देते हैं – सब कुछ प्रभु के साथ निकट रिश्ते से प्रवाहित होता हुआ।

एपीसी–बीसी में सही शिक्षा के अतिरिक्त, हम प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर के प्रेम, पवित्र आत्मा का अभिषेक और उपस्थिति और परमेश्वर के अलौकिक कार्य पर बल देते हैं। कई युवा स्त्री और पुरुषों ने प्रशिक्षण पाया है और उनके जीवनों में परमेश्वर की बुलाहट को पूरा करने हेतु उन्हें बाहर भेजा गया है।

निम्नलिखित तीन पदवियां दी जाती हैं :

Theology and Christian Ministry (C.Th.) में एक वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Theology and Christian Ministry (Dip.Th.) में दो वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
Bachelor in Theology and Christian Ministry (B.Th.) में तीन वर्षीय प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

हर सप्ताह के दिन, सोमवार से शुक्रवार तक सुबह 9 से दोपहर 1 बजे तक कक्षाएं ली जाती हैं, विद्यार्थी, नौकरीपेशा लोग, और गृहिणियां सभी इन कक्षाओं में भाग ले सकते हैं और 1 बजे के बाद अपने काम पर जा सकते हैं। वहीं रहने की इच्छा रखने वाले स्त्रियों और पुरुषों के लिए अलग–अलग हॉस्टेल सुविधाएं हैं। विद्यार्थी हर सप्ताह दो से पांच बजे तक क्षेत्रीय कार्य, विशेष सेमिनारों में, दोपहर के समय में प्रार्थना और आराधना में समय व्यतीत करते हैं। दोपहर की सभाएं घर से आने वाले विद्यार्थियों के लिए वैकल्पिक हैं। सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहन दिया जाता है कि वे सप्ताह के अंत में एक या उससे अधिक स्थानीय कलीसियाओं में सेवा करें।

कॉलेज, विभिन्न कार्यक्रमों, पाठ्यक्रमों के विषय में अधिक जानकारी के लिए, और आवेदन पत्र डाऊनलोड करने के लिए कृपया इस साईट को भेंट दें : **apcwo.org/biblecollege**

एपीसी–बीसी को द नैशनल एसोसिएशन
फॉर थियोलॉजिकल एक्रेडिटेशन (नाटा)
द्वारा मान्यता प्राप्त है।

प्रभु की इच्छा सभी विश्वासियों के लिए है कि वे जो वह है उसकी गवाही देने हेतु पवित्र आत्मा की सामर्थ से परिपूर्ण हों और उस सामर्थ को प्रगट करें। हमें हर स्थान में और हर समय उसके गवाह बनना है। चाहे विद्यार्थी हो, ग्रहणी, उद्यमी, खिलाड़ी, डॉक्टर, इंजिनियर, वैज्ञानिक, वकील, सरकारी अधिकारी, सामाजिक कार्यकर्ता, जो भी हो – हमारा पेशा चाहे जो हो – हम जहां पर हैं वहीं यीशु मसीह की गवाही देने हेतु आत्मा के वरदानों को प्रगट कर सकते हैं। आत्मा के वरदान हमारे "औजारों की संदूक" के समान हैं, जिनमें हमें पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्रगट करने हेतु साधन दिए गए हैं, ताकि जहां कहीं हम जाएं, प्रभु यीशु की महिमा हो, लोगों के जीवन छू लिए जाएं, उनमें सेवा प्राप्त हो और उनमें बदलाव आए। पवित्र आत्मा अपनी इच्छा के अनुसार इन वरदानों को बांटता है और प्रगट करता है। परंतु उसके सहकर्मी होने के नाते, हमें इन वरदानों की तीव्र लालसा करना है और सीखना है कि हम इन वरदानों के प्रति कैसे समर्पित हों, कैसे सहकार्य करें, और उन्हें उचित रीति से कैसे प्रगट करें, ताकि लोग अपनी इच्छा के अनुसार सेवा प्राप्त कर सकें और यीशु की महिमा हो। अक्सर, क्योंकि हम नहीं जानते कि पवित्र आत्मा के साथ कैसे सहयोग करना है, हमारे द्वारा होने वाली उसकी अभिव्यक्तियों को हम या तो बुझा देते हैं, उसे दुखी करते हैं, या उसका विरोध करते हैं।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617
Email: contact@apcwo.org
Website: apcwo.org